ाढ़

श्री राधा सरसबिहारिणी नम: ॥

6724

द्वितीय भाग

श्री सरस सागर

श्री सरस माधुरी शरण जी महाराज

❀ श्रीमन्निकुञ्जविहारिणे नमः ❀

श्री

श्री १००८ श्री सरसमाधुरी जी महाराज

रचित-

श्री सरस सागर

द्वितीय भाग

प्रकाशक :

श्री शुक चरणदासीय साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट

जयपुर

नवीन संस्करण
१०००

सन् १९९१

न्यौछावर
रु. ३२)

मुद्रक :
मदरलैण्ड प्रिंटिंग प्रेस, बीस दुकान, जयपुर

।। श्री राधा सरस विहारिणे नमः ।।

प्रकाशकीय

श्री सरस सागरजी का द्वितीय भाग सर्व प्रथम श्रीमान् पं० राधेश्याम जी महाराज ने सन् १९४० में प्रकाशित किया था । इस भाग में श्री श्री १००८ श्री सरसमाधुरी शरण जी महाराज द्वारा रचित पद सब वर्षोत्सव, रास लीला व अष्टयाम आदि सम्बन्धित एकत्रित हैं इसलिये यह पुस्तक श्री शुक चरणदासी सम्प्रदाय आश्रित वैष्णवों के लिये ही नहीं बल्कि सब सम्प्रदायों के वैष्णवों तथा रास-धारियों के लिये बड़ी लाभदायक है । यह पुस्तक कुछ समय से उपलब्ध नहीं हो रही थी इसलिये यह पुस्तक श्री शुक चरणदासी साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित की जा रही है । इस शुभकार्य में निम्न महानुभावों ने आर्थिक सेवा देकर अपना सहयोग प्रदान दिया है—

(१) श्री सतीश चन्द्र जी लोईवाल	२०००)
(२) श्री गिरराज जी फत्रोड	२०००)
(३) श्री छिगनलाल जी चितलांगा	२०००)
(४) श्री भंवरलाल जी कामदार	२०००)
(५) श्री हरी शरणदास जी	१०००)

इस सहयोग व उनके प्रयास के लिये मैं उनको धन्य-वाद देता हूं । इसकी छपाई के लिये भी श्री विष्णु कुमार

जी भार्गव ने कागज रियायती दर पर देकर अपना सहयोग प्रदान किया है जिसके लिये ट्रस्ट उनको धन्यवाद देता है। मैं श्री सुभाष चन्द्र भार्गव को भी इस ग्रन्थ को समय से छपाई करने के लिये धन्यवाद देता हूं।

इस पुस्तक के प्रकाशन में काफी सावधानी बरती गई है मगर अशुद्धियां रहना स्वाभाविक है इसलिये पाठकगणों से नम्र निवेदन है कि जो भी अशुद्धियां उनकी निगाह में आवें ट्रस्ट को सूचित करने का कष्ट करें ताकि अगले प्रकाशन में वे अशुद्धियां ठीक की जा सके।

कुछ और ग्रन्थ जैसे श्री सरस सागरजी तृतीय भाग, श्री गुरुभक्तिप्रकाश भी उपलब्ध नहीं हो रहे हैं। उनको प्रकाशित करने के लिये भी ट्रस्ट विचार कर रहा है। इस लिये सब भक्तजनों से प्रार्थना है कि वे उचित आर्थिक सेवा देकर अपना सहयोग प्रदान करें।

दासानुदास
कृष्ण जीवन भार्गव
सभापति
श्री शुक चरणदासीय
साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट
शारदा भवन, जयपुर

श्री सरस जयन्ती महोत्सव
श्रावण कृष्णा अमावस्या
सं० २०४८ विक्रम

।। श्रीशुक श्यामचरणदासो जयतिः ।।

परिचय

श्री युगल सरकार के नित्य विहार रस में छके हुए दिव्य माधुर्य्य और उज्ज्वल शृंगार रस के निधि "यथा नाम तथा गुण" इस उक्तिको चरितार्थ करने वाले, परमहंस मुकुटमणि साक्षात् श्री नंद नंदन स्वरूप जगत गुरु श्री श्री १००८ श्रीशुक मुनि राज महाप्रभु के तथा आपके परम प्रिय शिष्य रसिक सन्तशिरोमणि श्री श्री १००८ श्री श्यामचरणदासाचार्य्य महाराज के परम लाडिले और श्री श्री १०८ श्री स्वामी बलदेवदास जी महाराज के परम कृपा पात्र, गौड विप्र कुल भूषण साक्षात् श्री प्रेम मूर्त्ति गुरुवर श्री १०८ श्री स्वामी सरसमाधुरी शरणजी महाराज का प्रादुर्भाव ग्वालियर राज्यान्तर्गत मंदसोर ग्राम में पं० श्रीमहादयालजी महाराज सरसूबा के सुपुत्र महाभागवत पं० श्री घासीरामजी के घर में श्रावण कृष्णा ३० संवत् १९१२ को सायं काल के समय हुआ।

आपके बाल्य काल की लीलाएँ व चमत्कारों को विस्तार के भय से अधिक न लिख कर केवल इतना ही लिखा जाता है कि आपकी सब चर्याएं अलौकिक थीं, आप का समय भगवत् भागवत् सेवा ही में व्यतीत होता था। आप अपने ननिहाल माताजी के साथ अलवर

राज्यान्तर्गत बहादरपुर में विराजे । आपकी माताजी भी उपरोक्त (श्री शुक मुनि) सम्प्रदाय आश्रित थीं । आप पर श्री आचार्य्य पादों की विशेष कृपा थी । आप की रुचि भी इस संप्रदाय के सिद्धान्तों की विलक्षणता सर्वदेशिकता तथा साधक और सिद्ध के लिये सरल उपायों के महत्वों को समझ कर इस ही ओर हुई ।

श्री बहादरपुर श्री श्यामचरणदासाचार्य्य महाप्रभु का ननिहाल होने के कारण इस संप्रदाय के स्थानों में एक मुख्य स्थान गिना जाता है । यहां के महंत श्री डंडोतीरामजी महाराज की परम्परा में है जिनके सम्बन्ध में यह बात प्रसिद्ध है कि श्री श्यामचरणदासाचार्य्य महाराज के यश को सुन कर आप कनक दंडवत् देते हुए देहलीगये और इसही कारण आप को "श्री दंडोतीराम" नाम प्रदान किया गया ।

इस स्थान में अच्छे २ संत वैष्णव आया करते थे और महीने महीने भर ठहरते थे और भजन भाव कथा सत्संग आदि की खूब चरचा रहती थी । श्रीसरसमाधुरी जी महाराज वहां नित्य पधारते थे । एक समय आपको वहां श्रीबलदेवदासजी महाराज का, जो श्रीलुकसर स्थान के महन्त श्रीस्वामी रामरूपजी महाराज के थांभेसे संबंध रखने वाले श्री स्वामी ठाकुरदास जी महाराज के परम कृपा

पात्र थे दर्शन हुआ। दर्शन करते ही प्राचीन संस्कारों की जागृति हुई। उनकी भोली भाली सरल स्वभाव वाली सोने की चोंपों द्वारा मंद मुसकान करती हुई गौर छवि आप के हृदय में खुब गई, देदीप्यमान विशाल भाल पर श्री ज्योति और पीताम्बर धारी भेष पर आपने तन मन धन वारही दिया। शरणागति प्राप्त कर भजन भावना, संत सेवा, नवधा प्रेमापरा भक्ति का जीवों को आस्वादन करवाकर अनंत जीवों का आपने उद्धार किया। श्रीसाम्प्रदायिक ग्रन्थों का प्रकाशन कर और श्री आचार्य जन्म महोत्सव मनाना तथा श्री प्रिया प्रीतम को विविध भांति लड़ाना सिखाकर आप ने संसार को पावन कर दिया।

आपने श्री हरि गुरु भक्ति प्रचार को अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य समझ कर जयपुर में अन्य आचार्यों के भी जन्म महोत्सव मनाने की अलौकिक शैली चलाई और इन महोत्सवों को मनाये जाने में विशेष भाग लेकर और जन्म बधाई इत्यादिक की रचना करके आपने अपने विशाल हृदय और विलक्षण उदारता का परिचय दिया जो आदर्श भागवतों के लिये परम आवश्यक है।

आपने अपनी इहलौकिक लीला मार्घशीर्ष शुक्ला १४ संवत् १९८३ को समाप्त की। आपकी रचनाओं का एक अनुपम भण्डार है जिसका यह द्वितीय भाग रसिक

भक्त जनों के आस्वादनार्थ छप कर तय्यार हो गया है। श्री सरसमाधुरीजी महाराज का जीवन चरित्र विस्तार से श्री सरस सागर प्रथम भाग में छप चुका है।

आपकी रचना रसमई और भावपूर्ण होने के अतिरिक्त 'प्रसाद' गुण से खाली नहीं है। आपकी रचना में एक अद्भुत चमत्कार यह है कि पद पदांत के पठन पाठन तथा गायन से वह दृश्य जिसका वर्णन उन पदों में है हृदय को आँखो के सामने आ उपस्थित होता है। आप की वाणी उन रसिक प्रेमी भावुकों को परम लाभकर है जो अपने भावरूप में अष्ट प्रहर छके रहकर श्री लीला पुरुषोत्तम की रहस्य मई लीला का निरंतर आस्वादन करना चाहते हैं। आपकी वर्णन शैली बडी ही अद्भुत है। दिव्य सौन्दर्य के वर्णन में आप अद्वितीय हैं, आपके शब्द भाव के स्पष्ट चित्र हैं।

आप कहीं बृज भाषा कहीं खडी बोली का प्रयोग करते हैं। बहुत से पदों में हिंदी और उर्दू मिली हुई हिन्दुस्तानी भाषा का अनुपम आनंद है। हिंदुस्तानी भाषा को सर्वप्रिय बनाने की चेष्टा करके मानो आपने धर्म प्रचार के अतिरिक्त राजनैतिक ग्रन्थी को सुलझाने का भी प्रयत्न किया है।

आपकी लेखनी में जादू का असर है। जिस विषय

पर हाथ डाला बस अद्भुत रंग की वर्षा कर दी। आपके गुरु महिमा, आचार्य्य महिमा, श्री प्रिया प्रीतम के शृंगार, माधुरी, लीला, विनय, रहस्य के पद आपके हृदय की विशालता के प्रमाण हैं।

आप मुख्यतः माधुर्य्य मिश्रित शृंगार रस के परम उपासक हैं अतः आपकी रचना में इसही रस की भरमार है। आपकी विनयावलि में करुणा रस की झड़ी लग जाती है और आपके सिद्धान्त की माझों में शांत रस का चमत्कार नजर आता है।

आपने सब प्रकार के रसिक भक्तों के आस्वादनार्थ सब प्रकार के रसों को पुष्ट करने वाली श्री भगवत् की नित्य लीलाओं का अनुपम वर्णन किया है।

आप स्वयं श्री निज वृन्दावन के उपासक हैं जो त्रिपाद विभूति में है, अमायिक है, हद्द बेहद से विलक्षण है, जहां चारों तरफ श्रीयमुनाजी का रसमय सलिल शोभा दे रहा है, जहाँ अचेतन व मायिक कोई वस्तु ही नहीं है, जहाँ केवल प्रिया प्रीतम, स्वयं धाम, श्रीयमुना जी व केवल तत्सुख सुखी अहर्निश लाड़ लड़ाने वाली सखियां ही हैं।

आपके सेव्य स्वरूप अजन्मा, अवतारी अवतार से परे, स्वकीया परकीया भाव रहित, नित्य पूर्णकिशोर अवस्थावाले, द्विभुज, श्रीराधाकृष्ण हैं, जो सदैव नित्य

विहार ही में मग्न रहते हैं। आपके विहार में स्थूल मान विरह आदि का लेश भी नहीं है।

पाठक वृन्द से आग्रह पूर्वक नम्र विवेदन है कि वह इस बात को सावधानी से समझलें कि आपकी उपासना में प्राकृतिक कोई वस्तु ही नहीं है, श्री राधाकृष्ण प्राकृतिक स्त्री पुरुष से नहीं है, इनका स्वरूप तो निर्गुण सगुण से परे है जो अकथनीय है, यहां प्राकृतिक काम की गन्ध भी नहीं है।

आपके अष्टयाम आदिक में वर्णन की हुई सब सामग्री दिव्य रसमय व अमायिक है। आप का धाम, सेव्यस्वरूप, लीलाएं केवल उन्हीं महाभागों को प्राप्त हो सक्ती हैं जिनपर आपकी तनिक कृपा दृष्टि हो। आपकी सारी उपासना एकमात्र अनुभव गम्य है जिसको कि श्री आचार्य्य पादों ने दुर्लभाति दुर्लभ वर्णन किया है।

सांसारिक विषयादिकों की अवहेलना श्रीभगवत् नाम रूप लीला धामके आनन्द में अष्ट प्रहर डूबे हुए रहना, अष्टसिद्धि नवनिद्धि, मुक्ति तक को ठुकरा देना और श्रीहरिरस में छक जाना ही आपके नजदीक मानव जीवन को सार्थक बनाना है।

आप गायन कला के भी बडे प्रेमी थे। आपके पद सभी राग रागनियों में गाये जाते हैं। इस संग्रह में

(१) श्रीवर्षोत्सव, (२) श्रीनिकुंज विलास (३) श्री अष्टयाम सेवा पद्धति (४) भागवत महिमा (५) सत्संग महिमा (६) सिद्धान्त प्रकरण (७) वैराग्य मन शिक्षा उपदेश के अनुपम पद भक्त जनों के आनंदार्थ प्रकाशित किये जाते हैं। आशा है भक्त भागवत रसिक संत वैष्णव इनके पठन पाठन गायन से परमानंद का लाभ प्राप्त करेंगे और प्रकाशकों को अपनाकर श्रीयुगल सरकार की अनुपायिनी भक्ति का वर प्रदान करेंगे।

श्रीसरससमाज अपने नवयुवकवृन्द शिरोमणि परम रसिक और गुरु निष्ठ श्री उत्तमचन्दजी महेश्वरी तथा श्री बा० बालकृष्णजी श्रीवास्तव पर अपनी परम प्रसन्नता तथा गौरव प्रकट करता है कि जिनके सराहनीय परिश्रम से इस ग्रन्थका प्रकाशन बडी सुगमता से हो सका।

इस सम्बन्ध में हम पं० पुरुषोत्तमजी शास्त्री जो श्री पं० हरिहरजीमहाराज प्रसिद्ध श्रीमद्भागवत महापुराण के अद्वितीय वक्ता के पौत्र रत्न हैं अत्यन्त आभारी हैं और रहेंगे। आपने इस ग्रन्थ के प्रकाशन आदि कार्यों में प्रसन्नता तथा उत्साह पूर्वक हमारा हाथ बंटाया।

हमारा परम सौभाग्य है कि जयपुर के गौरव तथा भारतवर्ष के अग्रगण्य विद्वद्वर श्री महामहोध्याय पं० गिरधर जी शर्मा अध्यक्ष संस्कृत कालेज जयपुर ने हमारी

प्रार्थना पर ध्यान देकर इस ग्रन्थ की प्रस्तावना लिखने का परिश्रम करना कृपा पूर्वक स्वीकार किया। हम आपके प्रति अपनी कृतज्ञता के भाव यथार्थ रूप से प्रगट करने में अपने को असमर्थ समझते हैं। श्री सरस समाज आप की इस अनुपम कृपा का अनन्त काल तक गुणगान करता रहेगा।

श्री महामहोपाध्याय जी ने प्रस्तावना में संकेत किया है कि कहीं कहीं पूरी सावधानी से काम करने पर भी छापे की गलतियाँ रहगई हैं, आशा है पाठकवृन्द उनकी ओर ध्यान न देकर व जन सुधार कर पढ़ने की कृपा करेंगे, आगे के भागों में इन बातों का विशेष ध्यान रक्खा जावेगा।

रसिक भक्त वृन्द की चरण रज का उपासक दासानुदास—

गोविन्द प्रसाद श्रीवास्तव

प्रोफेसर महाराजा कालेज, जयपुर।

।। श्री ।।

दो शब्द

भक्तिमार्ग में गान को बहुत बड़ा महत्व दिया गया है। इसका कारण यह है कि अनुराग से चित्त की एकाग्रता हो जाने का ही नाम भक्ति है, और चित्त की एकाग्रता के लिए गान जितना उपयोगी है, वैसा दूसरा कोई साधन नहीं है। गान की ही यह प्रत्यक्ष महिमा है कि अत्यन्त चञ्चल हरिण भी अपनी चौकड़ी भूल कर सिर नीचा किए स्तब्ध खड़ा रह जाए, और अत्यन्त तमोगुणी सर्प भी सिर हिलाता हुआ सत्वगुण के परिणाम आनन्द में मग्न दीख पडे। उत्तम गान के समय विज्ञ और अज्ञ सब प्रकार के मनुष्यों को आत्मविस्मृति और जगद्विस्मृति कम से कम कुछ क्षणों के लिए हो जाना एक अनुभव सिद्ध बात है, जो कि वर्षों तक ध्यान लगाने के परिश्रम से भी होती दिखाई नहीं देती। इसीलिए विद्वान् महात्माओं का कथन है कि :—

यथा नयति कैलासं न गङ्गा न सरस्वती।
तथा नयति कैलासं नगं गान सरस्वती ।।१।।

अर्थात् गङ्गा सरस्वती आदि पवित्र तीर्थ भी इतने शीघ्र और ऐसे अचूक रूप से कैलास वैकुन्ठ आदि अपने इष्टदेव के धामों को प्राप्त नहीं करा सकते, जितने कि शीघ्र और अचूक रूप में यह गान विद्या पुरुष को अपने इष्टदेव के समीप ले जाती है। भगवान् याज्ञवल्कने भी अपनी स्मृति में लिखा है कि गान्धर्व शास्त्र का विद्वान् बिना परिश्रम ही मोक्ष पा लेता है :—

वीणा वादन तत्वज्ञः स्वर शास्त्र विशारदः।
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्ष मार्गं नियच्छति ।।

भक्तिशास्त्र के परमाचार्य भगवान् नारद ने और सब साधनों को छोड़ कर इस गान विद्या को ही तो अपनाया है। ठीक भी है भक्ति परमानन्द रूपा है, और गान आनन्द का प्रधान चिह्न है। भक्तों के लक्षण बताते हुए श्री मद्भागवत में भी कहा गया है कि.--

क्वचिद्रुदन्त्यच्युत चिन्तया क्वचि—
द्धसन्ति गायन्ति च निवृता इति ।।

(जिन में सच्चा भगवत्प्रेम उत्पन्न हो गया है, वह भक्त लोग कहीं अपने प्यारे के स्मरण में रोते हैं, कहीं हँसते हैं और कहीं कृतकृत्यता से परमानन्द मग्न होकर गाते हैं) भगवान स्वयं भी तो आज्ञा करते हैं कि--

नाहं वसामि वैकुन्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ।।

(मैं न वैकुन्ठ में रहता हूं न योगियों के हृदय में रहता हूं किन्तु जहां मेरे भक्त इकट्ठे होकर गाते हैं वहीं मैं उपस्थित रहता हूँ)

ब्रज गोपिकाओं ने सब उपायों से खिन्न होकर गोपिका गीत के बल पर ही भगवान् कृष्ण को प्रगट किया, और मीराबाई ने भी गान के पदों से ही अपने आपको भगवद्स्वरूप में लीन किया।

यह स्मरण रखने की बात है कि यह गानविद्या जैसा ऊपर की ओर लेजाने का अचूक साधन है वैसाही गिराने का भी एक खास रास्ता है। हजारों ही क्यों, लाखों मनुष्य इसी राग रग की लत में बरबाद होते और अपने कुलों को कलंकित करते भी देखे जाते हैं। चित्त को एकतरफ खैंच लेना राग का काम है, अब उसके एकाग्र चित्त में जैसे भी संस्कार डाले जांय वैसाही मनुष्य बन

जायगा। सांसारिक निकृष्ट भोग विलास के संस्कार भी राग रङ्ग के द्वारा खूब उभाडे जा सकते हैं और भगवत्प्रेम जैसे दुर्लभ पदार्थ को प्राप्त करने के लिए भी उत्तम सस्कारों का संचय इसी गान विद्या के द्वारा किया जा सकता है। संसार में कहावत प्रसिद्ध है कि 'गाना रोना सब ही को आता है।" यह ऐसा शौक है कि इस से खाली कोई कठिनता से ही मिलेगा। छोटा, बडा, रईस, गरीब, उजड्ड विद्वान् सब ही एकान्त में अपने मनोविनोद के लिए कुछ 'ताना-रीरी' करही लेते हैं। इसी लिए भक्तिमार्ग के आचार्यों नें ऐसे सुलभ साधनों से काम लेना बहुत उपयुक्त समझा। संखिया (विष) जो कि प्राण हरण करने वाली वस्तु है, उसे ही पुट पाक से शोधित कर प्राण रक्षा का मुख्य साधन बना लेना उत्तमोत्तम वैद्य की एक खास कला है। इस ही तरह बिगाडने वाली वस्तु को ही सुधार के काम लेना भक्तिमार्ग के आचार्यों की जगत् पर अद्भुत कृपा है। इस ही कृपा के वशीभूत होकर श्रीवल्लभ सम्प्रदाय के मुख्य प्रचारक श्री सूरदास जी आदि 'अष्ट छाप' के विद्वान् आचार्यों ने गान के पदों में भक्तिमार्ग का खूब प्रवाह बहाया है और श्री चैतन्य महाप्रभु आदि ने भी गानात्मक कीर्तन के प्रचार को ही अपना लक्ष्य माना है। इन आचार्य महानुभावों का उद्देश्य यही था कि गान विद्या का रुख विषय प्रवृत्ति की ओर से हटा कर भगवद्भाव की ओर कर दिया जाय। इसमें वे पूर्ण रूप से सफल भी हुए। भगवद्भावमय गेय साहित्य इतना और इतने ऊँचे दरजे का उनने तैयार कर दिया कि गान रसिक यवनादिकों को भी उसभक्ति भाव पूरित साहित्य की ओर झुकना ही पड़ता है।

अर्थ प्रधान विलासितामय इस युग में सच्चा भगवत्प्रेम अत्यन्त ही कठिन है विरले ही भाग्यवान आजकल इसके अधिकारी

मिलेंगे। जो यत्र कुत्र कुछ अधिकारी मिलते हैं, उनको भी पूर्वोक्त आचार्यों के साहित्य से लाभ उठाना बड़ा कठिन है। बिना विद्या में परिश्रम किए उस उच्च कक्षा के साहित्य में प्रवेश पाना और उसका आनन्द लेना हो ही नहीं सकता और विद्या आजकल की दूसरी ही है। इन पुरानी विद्याओं में अब परिश्रम करताही कौन है ? इससे बहुत से साधारण अधिकारी भक्तों की ऐसी अभिलाषा रहती है कि ऐसा साहित्य हाथ लगे जो सरल भी हो और भगवद्-भावमय भी हो। उनकी अभिलाषा पूर्ण करने को आज भी परोप-कारी विद्वान् भक्त परिश्रम करते ही हैं।

ईश्वर कृपासे जयपुर सदा से विद्या, धर्म भगवद्भक्ति आदि में गणनीय ही रहा है। इस समय में भी यहां कई एक भावुक भक्त हो चुके हैं व आगे होने की भी पूर्ण आशा है। ऐसेही महापुरुषों में से एक "सरसमाधुरी" उपनाम वाले श्री शिवदयालजी महाराज भी अभी कुछ ही दिन पूर्व यहां विद्यमान थे। आपने न केवल जीवन काल में ही कीर्तन, उत्सव, उपदेश आदि के द्वारा भगवद्भक्ति का प्रवाह बहाया किन्तु भगवद्भक्तिमय सरल साहित्य प्रकट कर भविष्य के लोगों के कल्याण का भी अविच्छिन्न स्रोत प्रकट कर दिया। आपकी सरस गीतियों का यह बहुत बड़ा संग्रह 'प्रथम भाग के रूप में अभी ३—४ वर्ष पहिले प्रकाशित हो चुका है और दूसरा उतना ही बडा संग्रह यह द्वितीय भाग के रूप में भावुक भक्तों के सामने आरहा है। अधिक विस्तार न कर हम इसके सम्बन्ध में इतना ही कहना चाहते हैं कि इस ग्रन्थ का अध्ययन करने पर इसका श्री सरस सागर' नाम और कर्त्ता का सरस माधुरी उपनाम दोनों ही पूर्ण रूप से सार्थक दिखाई देते हैं। इन भिन्न भिन्न प्रकार के पदों और रागों में सरलता के साथ प्राचीन साहित्य का सा आनन्द पूर्णरूप से प्राप्त होता है, और भगवद्भक्ति का समुद्र

उमड पडता है । सरसमाधुरी जी' का भाषा पर पूर्ण अधिकार है, आपकी भाषा भावमय होती हुई भी सरलता को नहीं छोडती । ब्रज भाषा खडी बोली, उर्दू और मारवाडी या जयपुरी, इन चारों भाषाओं का उपयोग आपने किया है, और सब में अच्छी सफलता पाई है । अधिक भाग ब्रज भाषा ही में है ।

इस द्वितीय भाग में वर्ष भर के उत्सवों पर गाने योग्य पदों का अनूठा संग्रह है । वसन्त से आरम्भ किया गया है, उसमें होली का बहुत विस्तार है-सब प्रकार के अधिकारियों के उपयुक्त होलियाँ लिखी गई हैं. और खूब लिखी गई है । हिण्डोला, जन्मोत्सव, विवाहोत्सव आदि का भी विस्तृत और सरस जमाव है । वर्ष भर के उत्सव समाप्त कर आगे अष्टयाम, भागवत महिमा सत्संग महिमा आदि का भी विस्तृत और रोचक निरूपण है । उदाहरण के लिये दो, तीन पद यहां उद्धृत किए जाते हैं ।

।। होरी राग काफी ।। पृष्ट १६ ।।

श्री गुरु हुए सहाई । फाग लीला दरसाई ।।

सुरत सुहागन अति बड़भागन अनुभव से समझाई ।
दे गागर अनुराग रंग की, अपने संग लगाई ।।
सुमति सखि मोह मिलाई ।
सुखमन कुंज गली अति सीधी, सोइ निज राह बताई ।।
चली चाव सों सहज जहाँमें, बात भली बनि आई ।
महा मन में मगनाई ।।
परम प्रकाश उजास अनूपम, तेजपुंज छवि छाई ।
ताके पार अमरपुर पिय को, जहां मोहि पहुँचाई ।।

निरख मन मोद बढ़ाई ।
ऋतु बसन्त जहाँ रहत निरंतर, ललित लता सुखदाई ।।
फूले फूल अनेक रंग के, फूली अंग न माई ।
देखि निज दगन लुभाई ।।
नाना कुंज पुंज रस की जहाँ, बसत सखी समुदाई ।
बीच बनो रंग महल मनोहर, राजत जुगल जहांई ।।
बजत अनहद अधिकाई ।।
मच रह्यो खेल मंजु मंदिर में, अबिर गुलाल उडाई ।
चलत प्रेम पिचकारी चहुँदिशि, केसर रंग भराई ।
रीझ भीजत हरषाई ।।
श्री शुक सखी श्यामचरणदासी, मिली हिये लिपटाई ।
'सरसमाधुरी सतगुरु के संग, अद्भुत मौज मनाई ।
हुलसि यह होरी गाई ।।

।। पद राग सोरठा ।। (पृष्ठ ७२)

आज सिजारारी रैंन रसीली सरसबिहारी म्हारे महलां आसी
रस छकियो मोहन मनबसियो हँसकर हेली म्हांने हिवड़ेलगासी
सखी सहेली म्हारा मनरी मेली, भाग सुहाग गीत मित गासी
सरसमाधुरी अधर सुधारस, रसिक छबीलो म्हाने भुज भर पासी

(पृष्ठ २२६)

रस समुद्र श्रीराधेप्यारी, मो मन मीन बनायो ।
नाभि भँवर में पर्यो प्रेम बस, निकसत नहीं डुबायो ।।

राधावल्लभ नाम रसिकनी तुम किरपा ते पायो ।
सरसमाधुरी शरण करण सुख, तुमरे हाथ बिकायो ।।

इन गीतियों के उद्धृत करने में हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि यह गीतकाएँ सर्वोत्कृष्ट हैं हमें तो इस संग्रह में एक से एक पद, एक से एक राग सर्वोत्कृष्ट ही प्रतीत होता है । जहाँ भगवद्-भाव का साम्राज्य है, वहां अपकृष्ट होने ही क्यों लगा ? केवल रिवाज पूरो करने को २-३ गान उद्धृत किये गये हैं । भावुक भक्त और साहित्य रसिकों को पुस्तक का एक एक अक्षर बड़े चाव से पढ़ना चाहिये उन्हें अद्भुत आनन्द प्राप्त होगा यह हमारा विश्वास है ।

इन पदों की रचना कर श्री सरसमाधुरी जी ने जैसा लोक पर अनुग्रह किया हैं, वैसाही इसके प्रकाशक पं० राधेश्याम शर्मा जी आदि का भी चिर स्मरणीय उपकार है, जिनने गुरुभक्ति और लोकानुग्रह के वशीभूत होकर इतना परिश्रम किया ।

इसके मुद्रण के सम्बन्ध में हमें एक बात कहना है । छन्दों और गीतिकाओं में 'वजन' एक मुख्य वस्तु है । इन में शब्दों को इसी रूप में रखना चाहिये जिसमें कि वजन न बिगड़े । शब्दों के शुद्ध रूप की अपेक्षा 'वजन' पर ध्यान अधिक रहना चाहिए इस पुस्तक में कहीं कहीं तो ऐसा ही किया गया है, किन्तु कहीं कहीं शब्द के शुद्ध रूप का आदर कर 'वजन' की बेपरवाही करदी गई है । जैसा कि आरम्भ के ही दोहे में 'श्री शुकमुनि महाप्रभु' यहां छन्द बिल्कुल नहीं बैठता । यहां अगर 'मुनि' का मुनी और 'प्रभु' का प्रभू लिखा जाता तो वजन बैठ जाता । इसी तरह पृष्ट ४ में 'रसिकन मिल हरि रस अमृत पी' और वृथाश्वांस गुमावे रे में 'अमृत' का 'अम्पृत' और 'श्वांस' का साँस' लिखा जाए तबही

वजन जमता है अस्तु पाठक सज्जन वजन बैठाकर हां पढ़ेंगे ऐसी आशा है। मैं चाहता हूँ कि इस 'सरसकृति' के प्रचार द्वारा इस कराल काल में जनता का भगवद्भक्ति लाभ से उद्धार हो और प्रकाशकों का परिश्रम पूर्णतया सफल हो।

वसन्त पञ्चमीं
सम्वत १९९६ वि०
१३ फरवरी १९४०

गिरधर शर्मा चतुर्वेदी-
महामहोपाध्याय
अध्यक्ष
महाराजा संस्कृत कालेज, जयपुर।

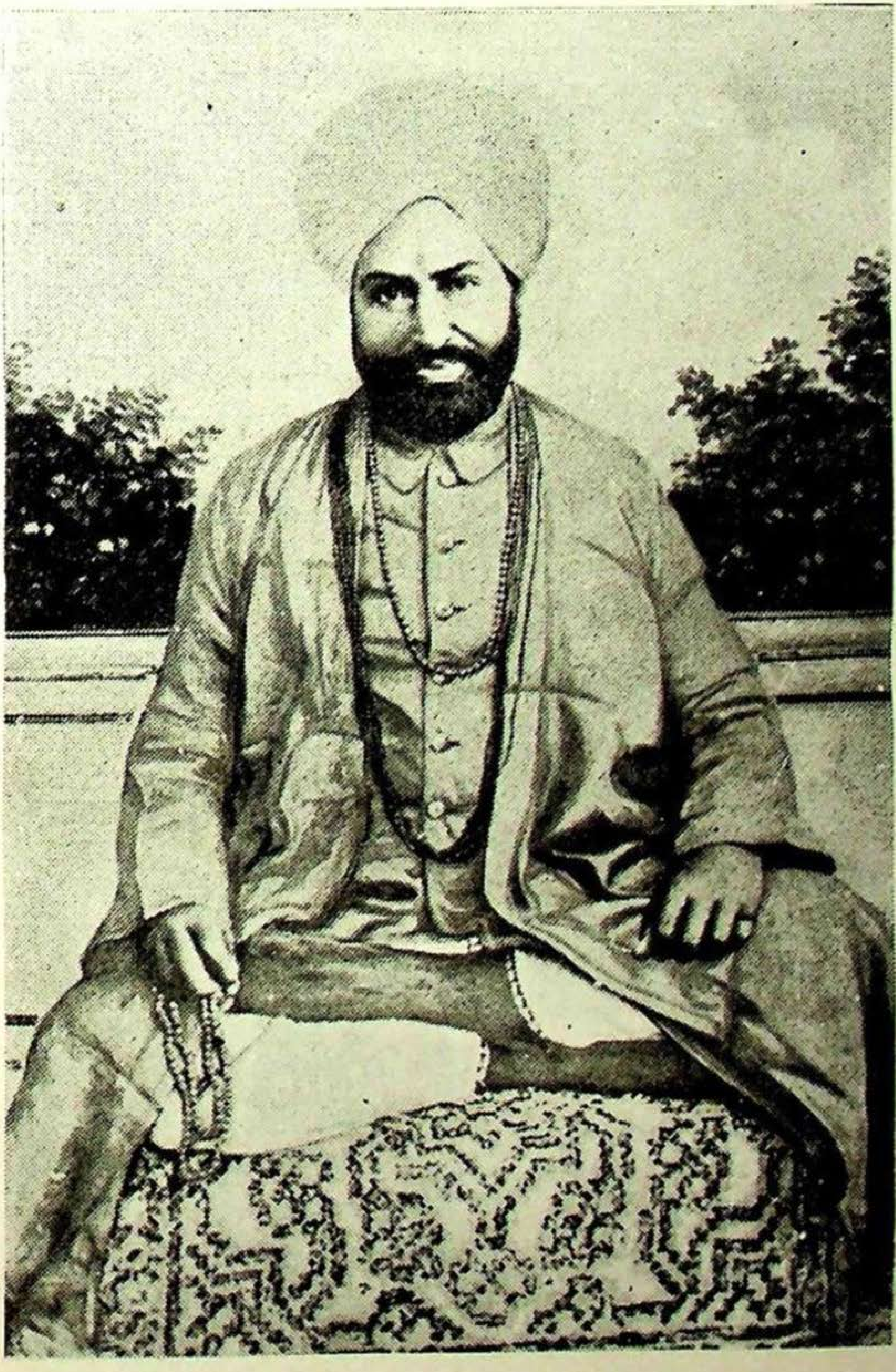

श्री श्री १००८ श्री सरस माधुरी शरण जी महाराज

॥ 'श्री सरस सागर' द्वितीय भाग ॥

॥ विषय सूची ॥

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
बसन्त के पद पृष्ठ ५ से १४ तक	
आज बसंत पंचमी आली दम्पति०	५
आज बिहारिन संग बिहारी खेल०	११
खेलैं कुञ्ज बिहारी बसंत आज	१४
खेल बंसत फाग श्री दम्पति, राज०	१३
खेलत हिल मिल दम्पति बसंत	१०
खेल बसंत रास रस माते नृत्तत०	११
जय श्री कृष्ण अंश किशोर मूरति०	१
नीको बंसत दिन आज वीर	६
प्रिया प्रिय बसंत खेलत आवैरी	१२
होरी के पद पृष्ट १५ से ६५ तक	
अलग हट खेल होरी सुन बिहारी	२९
अरी एरी मैं तो पनिया भरन०	४७
अष्ट अलिन के यूथ अनेकन, वय०	५४
आज हमारी सरस कुञ्ज दोउ, होरी०	४९
आज भलो दिन गोरी, महल में०	३८
आज जुगलवर होरी मचाई	३३
ऋतु बसंत में कंथ कामिनी करत०	५४
कुञ्जवृन्दावन जुगलवर ने भली०	२९
कुंवर किशोरी काना भूल मुझको०	६२
खेलत हिल मिल फाग जुगलवर	२२
खेलत सरस बिहारी होरी	४४
खेलन फाग आप के संग में प्यारी०	५३

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
खेले हैं फाग श्यामा श्याम सजनीं०	५५
मिलि हो कब शुक अली अलबेली	४
रसिकनी कंत वसंत खिलायो	६
राजै निकुञ्ज श्री राधे श्याम	८
सखियन सरस बसंत बधाई	५
सरस बसंत सरस सुखदाई ऋतु०	६
सुन विनय किशोरी नवल बाल	७
श्री शुक मुनिमहाप्रभु विनय सुनो०	१
श्री शुकदेव कुञ्जरस वरन्यो	४
श्री नवनिकुञ्ज दम्पति नरेश	१३
खेलैं फाग राधेश्याम सखी फागन में	५६
गली रङ्गीली में रङ्ग बरसे	४०
चल चल रे अनारी तोसों कही में०	४२
चिरजीवो जुगल लाल प्यारी	६०
छल बल कर छैल गहो गोरी	३०
छांडो डगर हमारी श्याम हम देंगी०	३४
छाँडों गैल छैल नहिं गारी मैं सुना०	४०
छैल होरी को हरि बन आयो	५१
जुगल बिहारी गाऊँ सुमिर मन०	२३
जुगल वर रची रंग होरी	२७
जुगल वर हिलमिल खेलत फाग	२८
जुगल किशोर किशोरी, कुञ्ज०	३७
जुगल वर हिल मिल प्रीत पगे	६१
जुगल निकुञ्ज विलासी सुनो बिन०	६४
ठाडे रहो रसिक मन मोहन नीको०	५३
तूने तो मेरी रङ्ग से बिगारी सारी०	४२

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
देन उरहनो ग्राई	४३
दैया नन्द के ने धूम होरी में मचाई हे	२४
धूंधर छई गुलाल चहूँ दिश	५५
नरतन फागन भागन पायो	२२
नन्द लला होरी खेलन ग्रायो	३९
नंद के निलज कहा होरी खेल जाने तू	४१
पकरे हैं प्यारी पिया ग्राली ग्राज०	२५
पिचकारियां न मारो सैंयाँ श्याम०	५६
प्रिया पिय छवि लखि छकन छकाइ	६१
फाग माँहि ग्रनुराग भरे पिय	५५
फाग खेल खिलवार प्रिया पिय	६०
बड भागन नव नारी	१९
बनि ग्राई वर्षा ऋतु होरी	२५
बिन होरी खेले श्याम तुम्हें जाने०	४६
बीन मृदंग चंग सारंगी करतालन०	५४
बैयां झक झोरी मोसे खेलिये न०	२४
बृन्दावन कुंजन मैं होरी	३२
भागन सों सखी फागन ग्रायो	३१
भोर उठ बैठे जुगल दयाल	६१
मत मारो पिचकारी सारी रंग०	४८
मदन मोहन मतवारो छैल	२६
मद मातो महीना होरी को	३२
मन भावन मम प्यारी	२०
मन मोहन मचाई मोसे होरी हो	४८
मनवा मूढ ग्रनारी	४८
मोहन सों मन उरभयो मेरो	३१

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
मोसे मिलजा तनिक गोरी	५२
रसिया सरस बिहारी	३५
रोके मत मोहन दधि दानी	५२
रंग रंगीली होरी खेल मेरी०	१७
रंगूगी रंग में तुम्हें आज श्याम०	५७
लाल तुम अटपटे ख्याल खलन०	२६
लेवोरी पकर सखी श्याम भाग०	४१
श्री गुरु के गुण गावे	१५
श्रीगुरू हुए सहाई	१६
श्री राधावरकुञ्जविहारी खेलत होरी हो	४५
सखीरी खेलैं राधा मोहन फाग	५७
सखीरी रसिया सरस बिहारी	४७
सलोनो सांवरो होरी खेलत श्यामा०	२६
सोरह सखी खरी सेवा मे	५४
संग सखाले आये खेलन बरसाने हरि	३६
हरिसों होरी खिलावे	२२
हिल मिल राधा सरस बिहारी०	५८
होरी खेलत सरस सतगुरु के संग	१६
होरी खेलन जानी	२१
होरी खेल न जानों	३३
होरी खेलत जुगल जनुना के तीर	४४
होरही कुंजमें चल देख सखीरी होरी	५२
होरी में वरजोरी करूंगी	३०
होरी हैं दिन चारी	१८

श्री फूलडोल के पद पृष्ठ ६६ से ७० तक

चंदन चोकी पर धरर्यो० (दीहावली)	६९

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
झूलवत डोल प्रियाको प्यारो	६७
झूलत डोल रसिक दम्पति व	६६
झूलत डोल जुगक्ष सरकार	६८
झूलत डोल लाल पिय प्यारी	६९
झूलत फूलडोल सुखरासी	६७
डोल झूल होरी श्रम हरिये	६६
फूलडोल झूलत दोउ फूले	६८
श्री शुक मुनि उर ध्यान धर (दोहा)	६६
सखियन वन फल भोग लगाये	७०

श्री सिजारा के पद पृष्ट ७१ से ७३ तक

आज सिजारारी रैंन रसीली	७२
आज सिजारारी रैंन सुहावन	७३
कुँवर नंदजी का श्री महाराज	७२
मदन मोहन मनहरण बिहारी जू	७३
रची छै राधे मँहदी थाके नीकी	७१
सिंजारो श्यामा सोयो सुन्दर थाथे	७१
सिजारारो सुन्दर दिन छै आज	७१

श्री गणगोर उत्सव पृष्ट ७४ से ८० तक

आरती कुंज नृपति की कीजे	७९
आया छै प्यारी प्रीतम कुंज बिहारी	७८
किशोरी प्यारी भानुदुलारी आवो०	७५
गवर पूजन चली आज राधिका०	७४
छबीली छबि गोरल राज तिहारी	७६
जुगलवर करो जी सैंन सुख चैंन	८०
जुगलवर जीमो जीवन प्राण	७९

प्रथम पंक्ति	पृष्ट नं०
धन धन गोरल जी थाँका ईसर छैजी०	७६
यहां ही रहो यहां ही रहो यहां ही०	७७
रंगीली राधे गोरल पूजन चालाँ	७६
रसीली राधे रसिया छैल गुमानी	७८
श्यामाजी थांकी सजी छै सलोनी०	७४
सजी छै श्यामा सुन्दर गौर तिहारी	७५
सहेल्यो म्हारी चालांजी पूजन गणगौर	७६

श्री रंगीली पंचमी के पद ८१ से ८३ तक

भोजन करत भांवते प्यारे	८२
रगीली पांचैं लागे छे म्हाने प्यारी	८१
रंगीली पांचैं रंग रह्यो सरसाय	८१
रंग पंचमी आरती वारी	८२
सैन भवन गवने पिय प्यारी	८२

श्री राम जन्मोत्सव ८४ से ८६ तक

अवधपुर प्रगटे राम कुमार	८५
अवध में आनन्द अतिही छायो	८५
अवध में मंगल उमग्यो आज	८५
आज नृप दशरथ के आनन्द	८४
दूध आरोगत राम सुखदाई	८६
नृप दशरथ के बजत वधाई	८४
पौढे पलना अवध बिहारी	८६

अक्षयतृतीया चंदनशृंगार ८७ से ८९ तक

आजअद्भुत दंपति छवि छाई	८८
करत आरती बृज की नारी	८९
चन्दन सेज सोये मिल दम्पति	८९
जुगल कीनों चन्दन शृंगार	८७

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
पावत भोग किशोर किशोरी	८८

'श्री जानकी नवमी उत्सव' ९० से ९३

आरती जनक लली की कीजै	९३
जगक नन्दनी प्रगट भई है	९१
जनक नृपति घर मंगल०	९०
निमि नृप सदन बधाई बाजे	९२
प्रगट भई जनक भवन सियप्यारी	९०
पय पीवत है जनक दुलारी	९३
मिथिलापुर में मंगल माई	९१

'श्री नवका विहार के पद' ९४ से ९६

अहाहा आज जमुना की जुगल	९४
करत आरती मिल सहचारी	९६
नाव में बैठे जुगल बिहारी	९५
ललित नाव चढ़ चतुर शिरोमणि	९४
सखियन बनफल भो०	९६

'श्री जलकेली के पद' ९७ से १०२

आज आली जल विहार लख लीजे	१०१
करैं जलकेलि हिल मिल के०	९९
जल केली दम्पति विस्तारी	९७
जल की केलि करैं सरकार०	९८
जुगलवर जल की केलि करैं	१००
जुगलवर वारि बिहार करैं	१०२
देखो तुम आज सखी जल केली	१०२
देख सखी दम्पति जलकेली	९८
विहरत जल विहार पिय प्यारी	१०१

प्रथम पंक्ति	पृष्ट नं०
'श्रीफूल श्रृंङ्गार आदि उत्सव' १०३ से ११६	
ए माए राधे श्याम सुजान फूल०	११२
ऋतु फल भोम पावत पिय प्यारी	११५
किया फूल श्रृंगार जुगल ने	१०४
खस बंगले विहरत दम्पति वर	११६
जुगल वर बैठे फूल तिवारी	१०६
दम्पति के अंग फूलों का अनुपम०	११२
फूलमण्डली जुलग विराजे	१०४
फूल मण्डली सरस सँवारी	१०५
फूलबंगले बिराजे पिय प्यारी	१०६
फूल को बंगला सुन्दर सोहे	१०७
फूल को महल महा मन भावन	१०७
फूल की बारादरी बनाई	१०८
फूल के बंगले विराजे फूल से प्यारी पिया	१०९
फूल आरती अलिन उतारी	११५
फूल बंगले बैठे दोउ फूल	११०
फूल श्रृंगार प्रिया प्रीतम ने	१११
फूल सेज सोये पियप्यारी	११३
बैठे खस बंगले दम्पतिवर	११६
बिराजे सखी बंगले सरस बिहारी	१०५
बंगले राज रहे फूलन के दोउ०	१११
बंगले राज रहे रंगभीने दोउ०	११०
युगल कर बैठ फूल श्रृंगार	११४
राधिका श्याम श्रृंगार फूलन करे	१०८
राजे फूलों के बंगले जुगल सरकार	१०३

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
श्री रथ यात्रा इत्यादि के पद ११७ से ११९	
आज सखी रथ में पिय प्यारी	११७
निहारो आली रथ बैठे पिय प्यारी	११८
निहारो सखि रथ की शोभा आज	११८
पालकी राजैं जुगल बिहारी	११९
रथ चढ रसिक बिहारी प्यारी	११७
श्री सरस झूलन मलार १२० से १७८	
अरी एरी झूलत दोउ रंग भरे	१४६
अलि गण हिल मिल जुगल झुलावें	१७६
आई घटा घुमड घन कारी	१२०
आज आली दम्पति झूलेंरी	१५८
आज जुगल सरकार सखी हिल०	१३१
आज तिथि मावस है हरियारी	१५१
आज दिन अनुपम मङ्गल कारी	१७३
आयो आली घुमड मेघ धनश्याम	१२१
आयाछे म्हांके सरस बिहारी पावणा	१५५
आवोजी रसीला श्याम सुजान	१७०
किशोरी पिय पे झूलत आई	१४५
किशोरी रावे झूलन नन्द किशोर	१७७
कुंज सो बन बिहरन दोऊ जावें	१२४
कुंज हिंडोलना हो झूलत सरस०	१३४
घन श्याम घटा नभ छाय रही	१२६
घुमड घन घूम घूम बरसे	१४१
चलो पिय गहवर बनकी ओर	१२८
जुगल की झूलन निरख नवेली	१४०
जुगल वर भीजत बनतें आवत	१२५

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
जुगल वर झुक झुक झोटा लेत्	१३६
जुगल वर झूलत हैं रसमाते	१७१
झमक झूलत झूले युगचन्द	१६३
झूले कुंज बिहारी लाल ललित०	१२६
झूलें लडेती लाल मिल सखियां०	१३२
झूलत रसिक राधे श्याम	१३७
झूलत कृष्ण राधे सग	१३८
झूम झूम झुक बरसे बदरिया	१४२
झूलत गोपाल हिंडोलने	१४७
झूलत हिंडोरे राधा सरस बिहारी	१४६
झूले नंद नंद प्यारो प्यारी भानु०	१६०
झूलत छबीले दोउ देखो छबि०	१६०
झूलत जुगल हँसि मन हरत	१६१
झूलत राधिका नंदलाल	१६२
झूले झूलत श्री लाडिली	१६५
झूलत श्री राधे घन श्याम	१६६
झूले झूलें जुगल सरकार०	१६७
झूलत नवनिकुंज में प्यारे	१७२
झूलन पधारो प्यारे राधे श्याम	१७४
झूलत लाडिली नन्दलाल	१७५
झूलि झूले से उतरे प्यारे	१७७
तीज सावन शुकला सुख कारी	१५३
देखोरी दम्पति मिलआली झूलत	१३५
देखोरी दोउ मिल आली झुलत	१३५
देखो झूलैं हिंडोरे लाल लली	१३७
देखोरी सिंजारो प्यारो अति सजो	१५१

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
दम्पति भाव हिंडोरे झुलैं	१३८
नट खट नन्द कुमाररे झोटा दीजे०	१३२
पवित्रा पहरत प्रीतम प्यारी	१५५
पवित्रा अति सुन्दर सुख दाई	१५६
परम प्यारी पावस ऋतु आई	१२०
परम प्यारो तीजाँरो त्योहार	१५३
प्रिया पिग पानस ऋतु अभिराम	१२१
प्यारी झुलिये हिंडोरे मनहर्ष बढाय	१४४
पूनम पुण्य दिवस अति नीको	१७४
बरसत सावन मेघ सुहावन	१३६
बरसत बलि जाऊँ बादर प्यारे	१६४
मास सावन मन भावन आयो	१३०
मानो मानोनू बिहारी प्यारे	१४३
मास सावन यह सुन्दर आयो	१७५
ये दोउ झूलत फूल हिंडोरे	१४४
रस भरे झूलत रसिक बिहारी	१५६
रसिक संग झूलत राधे रानी	१४१
राजत जुगल शिकोर किशोरी	१२३
राधा सरस विहारी लाल हिल मिल०	१२७
रूप घटा श्री राधे प्यारी	१२२
रंग हिंडोरे री झुलें सरस बिहारी	१४८
लगत फीके घन बिन घनश्याम	१७०
लडेती लाल हिंडोरे झुलै	१५८
सुख सखी झूला सरस रचायो	१३३
श्याम आये श्यामा लखलीजे	१३२
श्याम घन निरखत जुगल किशोर	१२५

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
श्याम सों श्यामा मिलन पधारो	१२४
श्याम घन नेह मेह वरसाय	१२७
श्याम सलोने मेरे घर आव	१७१
श्री कुन्ज बिहारी लाल कुन्ज०	१६८
श्री राधा सरस बिहारी झूले झूलना	१३०
सखी श्री सरस बिहारी जी	१५०
सखी मोहे लेचल बन संकेत	१२६
सरस सावन मन भावन आयो	१२७
सघन ऋतु सावन की सुखदाई	१२९
सघन ऋतु सावन की घन घोर	१३९
सलोनी लागे आज सिजारारी रैन	१५२
सहेल्यो म्हारी निरखो न तीज प्यारी	१५४
सावन मास सुहावन सजनी	१३४
सावन सरस सुहावन सजनी	१३६
सावन तीज सुहावन लागे	१५४
सावन सरस सुहावन झूलत	१५७
सावन की सुन्दर जामिनी	१६६
सैंयां मेरो गयोरी विदेशवा	१४६
सुघर दोऊ सरस रङ्ग सरसावैं	१२३
सुहायौ सैंयो सावन सरस०	१५२
सुनोजू पिय प्यारी अरज यह हमारी	१७२
हमारे माई श्यामाजू सरदार	१२२
हमारी हेली स्वामिनि परम दयाल	१२२
हरित लतन में हिल मिल हेली	१३६
हरति हिंडोरे झूलें सखी०	१५९
हिंडोरे झूले राधा सरस गोपाल	१६३

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
हिंडोरे भूलत पिय प्यारी मिल ग्राज	१६७
हिंडोरे हेली भूलत जुगल किशोर	१५७
हिंडोरे हेली भूलत दम्पति ग्राज	१६२
हिल मिल जुगल भुलावोरी	१४२
हँसि भूलिये हिंडोरे राधे प्यारी	१४३
श्री कृष्ण जन्म महोत्सव १७६ से १६४	
ग्राज दिन ग्रतिही मंगलकारी	१८७
ग्राज सखी वृज में बजत वधाई	१८८
ग्रानन्द वधाई रो माई ग्राज नन्द के	१६२
करत ग्रारती वृज की बाला	१६३
गोकुल में गोविंद प्रगट भये	१८५
चलो मिल नन्दभवन में ग्राली	१८६
चलो सखी नन्द महर घर ग्राज	१७६
जन्मे हैं नन्द के घर०	१७६
निरखन चलो नवेली छवि नन्दलाल की	१६०
नन्द घर उमग वधाई वाजे	१८२
नन्दघर पुरुषोत्तम प्रगटाये	१८४
नन्दघर ग्रद्भुत ग्रानन्द माई	१८६
नन्दघर बाजत रंग बधाई	१६१
नन्द घर बाजत रंग बधैयां	१८६
नन्द रानी सुन्दर सुत जायो	१८०
परम धन पायो यशोदा रानी	१६०
प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान	१८१
प्रगटे श्री कृष्णचद्र मोहन माधव०	१८६
पलना भूलत नन्द दुलारो	१६२
पलना भूलत श्री नन्द लाल	१८३

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
पलना झूलत सरस बिहारी	१८०
पौढे पलना बाल बिहारी	१९४
बधाई छाई गोकुल में	१८५
बाल भोग लगावति मैया	१९३
यशोदा रानी नेग हमारो दीजे	१८४
लाल को लखि जसुमत हरषावे	१८३
सखीरी सब आवो बधाई गावो	१९१
सखीरी सब मिल मंगल गावो	१८८

श्री राधा जन्म महोत्सव १९५ से २०७

आज दिन है अतिही सुखकारी	२००
आज तो बधाई बाजे द्वारे भानु०	२०१
आरती श्री राधे की करिये	२०६
किशोरी जू को कीरति माय खिलावे	२०४
किशोरी जू कौ कीरति दूध पिलावे	२०६
जन्म दिन आज भलो माई०	१९८
धनि धनि आज महल में आनन्द	१९५
प्रगटी वृषभानु भवन स्वामिनी०	१९६
पलना झूलत राधे प्यारी	१९५
बधाई नीकी बाज रही	२००
बधाई बरसाने में बाजे	२०४
बधाई बजत रंगीली आज	२०५
ब्रज नारी सब मिल आवोरी	२०१
बरसानों सरसानों माई	२०२
बरसाने में आज बधाई	२०३
भानु घर बाजे बधाई होत मंगल चार	१९७
रावल में राधे प्रगटाई	२०३

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
श्री वृषभान नगर बरसाने	१९७
शयन करत श्री राधे प्यारी	२०७
सखीरी जनमी है श्री राधा	२०१
श्री सांझी उत्सव के पद २०८ से २१२	
किशोरी सांझी सुकर सँवारी	२०८
निहारो सांझी छवि आली	२१२
प्रियाजू सांझी रची नवीनी	२०८
रची सांझी सुन्दर सकुमारी	२१०
सलोनी सांझी आज बनाई	२११
सखिन संग प्यारी बीनत फूल	२०९
सांझी नव निकुंज की कीन्ही	२११.
'श्री दशहरा महोत्सव' २१३ से २१४	
आरती करत कौशल्या मैया	२१४
दशहरा आज सुदिन त्योहार	२१३
पावत भोग राम सिया प्यारी	२१४
'रास महोत्सव' २१५ से २५९	
अघर धर बन्शी श्याम बजाई	२३३
आज दोउ निरतत पिय प्यारी	२४१
आज सखी रास में जुगल राजे	२४५
आज नीके नचत कंत और कामिनी	२४५
आज हरि नीको रास रचायो	२४९
आज सखीं पूनो शरद सुहावन	२५०
कोऊ अली अतरदान ले ठाडी	२२१
कुंज बिहारिनि तेरो दूलहा	२२७
कुंज पधारो राधे सरस बिहारी	२५८
कुँवर किशोर छबीले छैला	२२९

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
गलबैंया दे युगलवर (दोहावलो)	२१५
गलबैंवां दे रतन खिहासन	२१६
गहे परस्पर कर पल्लव दोउ०	२२८
चलो रास रचावें गावें बजावे०	२३६
जयति जय जयति श्री प्रिया०	२३४
झुण्ड सखिन के हिल मिल आवें०	२२१
ठाडे रहिये रसिक बिहारी०	२३०
देखे में आज रास करत राधिका०	२३७
दोउ करत रंगीले रास रंग	२४४
दृग सों दृगजोरे श्री दम्पति	२२४
दृगन ओट छिन होत दोउतब	२२४
दृगन तीर की चोट चतुर दोउ	२२५
नचत रास में मोहन गोरी	२५५
नचत सखी सुन्दर श्याम सलोना	२५५
नटवर गति नाचत नई नई	२५४
नाचें गावे ब्रज नारी बिहारी	२३५
निकट आय हरषाये श्याम सखी	२२२
निरतत नवेले श्यामा श्याम	२३८
निरतत रास में रसिया रंगीला०	२५७
निरतो नवेली नागरी हिल मिल	२३९
नृत्यत आज रास में रसिया	२४६
नृत्यत आज नवल नागर नट	२४७
नृत्यत प्यारी सरसबिहारी	२४७
नृत्यत नवल नागरी नागर	२४८
नृत्यत युगल निकुंज बिहारी	२५०
नृत्यत राधा सरस बिहारी	२५६

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
नृत्यत रास रसिकनी रसिया	२५४
प्राण वल्लभे प्यारी राधे	२३०
पिया की विनय सुन राधिका०	२१७
प्रीतम प्यारी सखियां सारी०	२१७
प्रिया ओर शुकसखी सुहावन०	२२०
प्यारी पे आशक्त श्याम घन०	२२५
प्रेम प्रशंसी वंशी लेके	२२६
प्यारी के जीवन धनप्यारो०	२२६
प्रीतम रसिक मुकुट मणि	२२८
पौढे मिल रसिक रमण पियप्यारी	२५९
बन बन बांके बिहारी लाल०	२३७
वजाई ऐसी बन्शी सरस बिहारी	२३१
बलिहारी बोलन पर वारी	२२३
बन्शी बजाय गयोरी मन मोहन नन्द०	२१९
बन्शी बट छैयां जमुनातट मनमोह०	२३२
बाजो बन बैरन बांसुरी	२३१
वीन मृदंग चंग सारंगी	२२२
मनोहर मुरली श्याम बजाई	२१६
मन मोहलिया श्याम ने०	२३३
मसक अंक चन्चल अंचल गहि	२५३
मिलारी मिलारी बिहारी गुइयां सूरत०	२५३
मिले रहत चाहत पुनि मिलने	२२३
मैं चेरो तेरो श्री राधे	२२९
मोहन मदन सदन सुखमां के	२२७
मोहन बांसुरी बजावे सुनों०	२५२

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
रचायो हरिने वृन्दावन रस रासा	२१८
रस समुद्र दोउ प्रीतम प्यारी	२२४
रस समुद्र श्री राधे प्यारी	२२९
रसिक मुकुट मन मोहन सोहन	२३०
रसीली वंशी रसिक बजाई	२३२
रसिक दोउ करत रास रंग	२३९
रसिकनी रसिया रास करैं	२४२
रसिक रास में रस प्रगटावे	२५१
रसिक रसीली खेलत रास	२५६
राधा बल्लभ रंग महल में	२२२
राधे रसिक बिहारी हेली	२४८
रास में रंग आज बरसे	२४०
रास में निरतत दिलजानी	२४१
रास में निरतत छैल छली	२४२
रास करत पिय रंग बढावें	२४४
रास में श्री राधे जू गावें	२४८
रंगीली राधे बीना लेकर गावें	२४०
लाल लाडिली रास करें री	२५१
शरद रैंन कियो रास कन्हाई	२४९
श्यामा श्याम निकुंज महल में	२२६
श्री शुक सखी श्याम चरण दासी	२२०
श्रीयुत कुंज बिहारिनि राधे	२२१
श्री वृन्दावन चन्द चतुर	२२७
श्री राधा प्यारी सुकुमारी	२२८
श्री राधे संग नचत प्यारी	२५३

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
सलोने श्याम अँगना में वंशी बजा०	२३१
सिरपर मोर मुकुट सज सुन्दर	२२०
सुनप्यारी तेरो रिझवारी	२२३
सुन सखो प्रीति अलौकिक०	२२५
हिल मिल करोरी श्याम संग रास	२३६

श्री दीपावली उत्सव पृष्ट २६३ से २६४

अद्‌भुत आज दिवारी प्यारी	२६३
आज दिवारी को दिन पावन	२६४

।। श्री अन्नकूट उत्सव ।।

अन्नकुट भोग पावत पिय प्यारी	२६५

श्री विवाह महोत्सव २६६ से २६२ तक

आज रंगीली रैंन भली है	२६१
आरती जुगल चन्द पर वारी	२८६
आलीरी सलोने दोऊ कुँवर आजे०	२६१
कङ्कन पिय सों खुलतन हेली	२८७
कगंना सजा करमें अतिही सोहन	२७२
नवल बना बनरी ब्याहन आया	२७६
नेग गारी को बनरे दीजे	२८४
पलंग पर बैठे प्रीतम प्यारी	२८८
प्यारी ने खोल्यो पिय कङ्कण	२८८
वना दिलदार वे नन्द का कुमार वे	२७०
वनाजी थांकी करी न जाय बडाई	२८१
वनाजी प्यारे बनरी की बलजैंये	२८१
वनाजी नैंक बनरी नैंन निहारो	२८१
वनाजी प्यारे बनरी छवि लखलीजे	२८२

प्रथल पंक्ति	पृष्ठ नं०
वनाजी प्यारे सुनिये बिनती मोरी	२८२
वनाजी सुनो सूरत श्याम तुम्हारी	२८२
वनाजी थांकी को करसके बडाई	२८३
बनाजी प्यारे कोन पुण्य तप कीनो	२८३
बनार्जी प्यारे भाग तुम्हारो जागो	२८३
बनाजी थाने गारी रंगीली गांवां	२८५
वनाजी थांकी कांई मनवार करां जी	२८५
वना बनी फलका पर राजै	२८८
बनाजी थांकी अँखियां छै अल०	२९१
वनी की छबि आली लख लीजे	२७७
बनी क वनी अदा अलबेली	२७९
बनी जू की छबि लखि के भई वारी	२७७
वनी जू के सीस सेहरा सोहे	२७८
बनीजू की शोभा अधिक बनी	२७८
बनी सखी बनरी प्यारी राधा	२७८
बनी बिहारिन वनरी बांकी	२७९
वनी म्हाने प्यारी लागे हे	२८०
बनाजी थांका नैंना छै रतनारा	२९०
बनेकी अँखियां जादूगारी	२७३
वने की छबि मनमां हि वसी	२७३
बनेकी बात सभी बनआई	२७५
बने की वनी बनी अति नीकी	२७९
बने पर अलि मिल टोना करिये	२८६
बने पर जादू कीन्हो आली	२८६
बने पर ऐसा टोना कीन्हो	२८६

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
बने पर सखियन जादू डाला	२८७
बन्शी धर ब्रज चन्द बिहारी०	२६९
बिहारी प्यारा बांका बना बना	२७५
बिहारी बना सबही के मन भाया	२७६
भयो जादू बस सरस बिहारी	२८७
मेरा मन बनरे ने हरलीना	२७४
रंगीला सखी बनडा बन्शी वाला	२७४
श्याम शिर पर सेहरा कैसा सजा०	२७१
श्री राधावर छैल छबीला	२७२
सखीरी ग्राज रँगीली रैन	२९०
सलोना बना बेदरदी दिलजानी	२८४
सजनी श्याम बना ग्रति बांका	२७४
सितमगर बनरे तेरे नैना	२८४
सैयो हे म्हारी नन्द नन्दन ब्रज	२६९
हमारे प्यारे दम्पति प्राण ग्रधार	२९०

श्री खिचडी भोग के पद

ग्राज खिचरी जैंवत पिय प्यारी	२९५
खिचरी जुगल बिहारी पावें	२९५

श्री सरस निकुंज विलास २९९ से ३१६

श्री ग्रष्टयाम सेवा भावना विलास ३१९ से ३९५

श्री मंगला भावना विलास दोहावली	३१९
श्री बन शोभा निहारन भावना ,,	३२२
श्री स्नान कुंजकी ,, ,,	३२३
श्री शृंगार कुंजकी ,, ,,	३२४
श्री राज भोग कुंज ,, ,,	३२६
उत्थापन ,, ,,	३२८

प्रथम पंक्ति			पृष्ठ नं०
वन बिहार	,,	,,	३२६
संध्या समय की	,,	,,	३३१
श्री रास	,,	,,	३३१
सैंन भोगकी	,,	,,	३३२
सैंन कुंज की	,,	,,	३३३
श्री युगलबिहार भावना दोहावली			३३५
श्री उज्ज्वल शृंगार रस भावना०			३३६
अचवन करत नवल पिय गोरी			३६७
अलसाने दम्पति क नैना			३८६
आज नीके नचत कन्त अरु०			३८८
आज सखि रास में जुगल राजे			३८७
आसरो श्याम चरणदास चरण को			३९५
उत्थापन सखी करें आरती			३७१
करत कलेऊ प्रीतम प्यारी			३५६
करत शृंगार आरती आली			३५८
कीजिये जुगललाल आराम			३६८
कुंज द्वार ललना अरु लालन०			३५३
कुंज भवन के आँगन दम्पति			३५३
कुंज शृंगार सदन में दोऊ०			३५६
कृपासिंधु सतगुरु प्रभो (दोहावली)			३४३
चिरजीवो श्री युगल बिहारी			३६३
चोसर खेलत सारन चलिके			३६२
चोचर खेल रचो पिय प्यारी			३६३
छबीले दोऊ छबि सो कुंज बिराजे			३६२
जयति जयति राधाकृष्ण किशोर०			३४३
जय शुक सखी श्यामचरणदासी			३४४

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
जय वृन्दावन चन्द छबीले	३५१
जय जय युगवर रास रसीले	३८९
जागो जुगललाल बलिजाऊँ	३४६
जागे जुगल उनीदे नैंना	३४७
जागे जीवन प्राण जुगलवर	३६९
जागे जुगल अलिन के प्यारे	३७०
जैंवत हिल मिल जुगलबिहारी	३५०
जैंवत जुगल रसिक पिय गोरी	३६६
जैंति जय जैंति श्री प्रियां प्राणेश्वरी	३८५
दम्पति की प्रीत रीत सजनी कुछ०	३४९
देखोरी छबि जुगल ललन की	३४८
दो चोकी गादी बिछा० (दोहावली)	३६४
दूध आरोगत कुंज बिहारी	३८४
नचत रास में मोहन गोरी	३८६
नित्य नवकुंज मे मोद मंगल करो	३९३
निरखोरी छबि जुगल अंक की	३४७
प्यारी के गुण गावत प्यारो	३८१
प्रिया पीय बन छबि नैंन निहारें	३७४
प्रिया तन ऋतु बसन्त छबि छाई	३५७
पिया की विनय सुन राधिका	३८३
पीवत बार बार अलि पानी	३७१
पौढे मिलि रसिकरमण पियप्यारी	३९२
पोढे रंग महल पिय गोरी	३९२
फूल आरती कर हुलसावें	३६७
फूल फूल देखत फुलवाई	३५४
फूल सेज सोये प्रिय प्यारी	३६८

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
वन शोभा निरखन को गमने	३७२
वन बिहरत पिय लाल लली	३७५
वन तें बनि ग्राये पिय प्यारी	३७६
वन ते ग्रावत कुंज भवन में	३७६
ब्यारू ग्रारोगत रसरासी	३८३
ब्यारू करत किशोर किशोरी	३८२
ब्यारू करत युगल दयाल	३८३
ब्यारू करत युगल सुखयाई	३८४
ब्यारू पावत प्रीतम प्यारी	३८२
बिहरत गहवर बन पिय प्यारी	३७३
बिहरत नजर बगीची लालन	३५४
बीरी सरस सखी रच दीनी	३६७
भरोसो श्री शुक मुनि को भारी	३९५
भोगश्रृंगार युगल मिल पावें	३५८
भोजन करत भांवते प्यारे	३६५
भोर भई जागो बलिजाऊँ श्याम०	३४६
मम जीवन धन मदन मनोहर०	३४९
महल ग्राँगन ठाडे पिय प्यारी	३५३
महल को ग्रानन्द कह्यो न जावे	३७९
मणि मय मंजुल थाल में (दोहा)	३५६
मेरा मन मधुकर ग्रंतन जाय	३५९
मंजु कुंज सुख पुंज सदन में	३५५
मंगल ग्रारती हर्ष उतारी	३५१
मंगल मय भोगप्रिया प्रीतम०	३५०
युगल छवि ग्राज ग्रनोखी लागे	३६१
युगल छवि निरखो नयन नवेली	३६१

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
युगल की झांकी है रङ्ग भीनी	३६१
युगल छवि नैनन बीच बसी	३६१
युगल के अंगन पट पहिराये	३५५
युगल के नयन छई अलसान	३५२
युगल वर कर शृङ्गार विराजे	३५७
युगलवर वन छवि देखत डोलें	३७४
युगल छवि देखे ही बनि आवे	३८०
युगल छवि निज नैनन मैं धारो	३८०
युगल के अङ्ग छई अलसान	३८६
युगल जीवन विनय०	३६४
युगल को अलि बांधो कसि जूरो	३५५
रसीले दोउ रस की केलि करैं	३६०
रमेरी मेरे मन में राधे श्याम	३६०
रसिक दोउ करत रास रस रंग	३८६
रसिक विहारी व्यारू पावें	३८३
रसभोगी रस लोभी रसिया	३६६
राज भोग जैंवत पिय प्यारी	३६४
राजत हैं दोउ रंग रंगीले	३७१
राज भोग दम्पति मिलि पावें	३६६
रास करत प्रिय सरस बिहारी	३८७
रङ्ग महल के द्वार सुकरले०	३४५
रंगीले दोऊ रंग भरे बतरावें	३५६
रंगीली राधे बीना लेकर गावें	३८१
रंगीले रंग बिलसो रंग भरी रैन	३६१
ललन दोऊ ललित लता तर ठाडे	३७५

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ न०
लेकर बीन किशोरी गावें	३८१
बय किशोर लावन्य० (दोहावली)	३४५
श्यामा लखे श्याम सकुचाये	३६४
श्यामा महल श्याम संग आई	३६०
सलौने लागें नवल किशोर किशोरी	३६०
सघन वन बीथिन करत बिहार	३७३
सखियन बनफल सरस मँगाये	३७६
सखी छबि निरखो श्यामा श्याम	३८०
सुनहु किशोरी जीवन मोरी	३४८
सुमन सेज पोढे मिलि दम्पति	३९२
सैन भोग भर लाई थारी	३९१
सैन कुञ्ज में शुक सखी (दोहावली)	३९०
सोय उठे दम्पति सुख रासी	३७०
सोय उठं त्रतीय पहर (दोहावली)	३६९
सन्ध्या आरती सखिन उतारी	३७८
सन्ध्या भोग थार सखि लाई	३७८
सन्ध्या समय सुहावनी (दोहावली)	३७७
हमारी हेली जीवन युगल बिहारी	३६०
होडबदी रतिकी रंग भीनी	३६३
होड हारकी मांगत प्यारी	३६३

श्री सन्त महिमां ४०५ से ४१० तक

कहा भयो बहु सीखी विद्य०	४०७
नेह नगर में बसें निरन्तर०	४०९
बच्छा के नित संग संग धावत०	४१०
बन्ध मुक्त दोनों को तज के०	४०९

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
मिले मोहे सन्त सहचरी भेष०	४०५
मिले सजाती अपना कोई०	४०६
रसमें मगन रसिक जन निशदिन	४०८
रसिकन की रसरीति निराली०	४०६
रसिक अनन्य जगत में विरले	४०७
रसिक रँगीले भावक रस के	४०८
सबते बडे कहावे सोई०	४०८
समझ रमज रसिकों की कोई	४०७
हरि गुण के सन्त गवैया	४०५
है यह रसिकन की सम्पति	४०६

"श्री सतसंग महिमां" पृष्ठ ४१३ से ४२३ तक

अनुभव योग्य वैष्णव सोहे०	४१८
केवल भोजन ज्ञान हुए से	४१८
कृष्णहि साधन कृष्ण प्रयोजन	४१६
गोपी जन की रती समर्था	४१६
जगत में भक्ति बड़ी सुखदानी	४१५
जानत प्रीति की रीति बिहारी	४१४
जितने है मत पंथ जगत में	४१६
जो कोई जग में प्रेम दिवाने	४१४
जोंलों जग मायक शरीर सों	४१६
दीपक बुझे तेल बिन पूरे०	४१६
प्रेम भक्ति एकहु पलक० (दोहावली)	४१३
बिन सत्संगति रंग लागे नहिं	४१६
बिना लखे प्यारी प्रीतम के	४१७
मन जब जक्त वासना भूले	४१६

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
लगन लगाय लड़िली लालन	४१७
शांत दास्य वात्सल्य सख्य रस	४१८
सबसे उत्तम कहे वैष्णव०	४१७
सेवक सो सेवा करे० (दोहावली)	४१३
भगवत सेवा अपराध (दोहावली)	४२०

सिद्धान्त प्रकरण पृष्ठ ४२७ से ४७८ तक

अगुन सगुन दोउ नाम श्याम के	४५३
अवलम्बन तजदेहि०	४५०
अहंब्रह्म अहमक बकते हैं०	४५१
अहंब्रह्म कह ईश्वर निंदे०	४५३
अर्चा द्वारा प्राप्ति सबकी०	४६३
अति अल्पज्ञ जीव मायावश०	४६४
अविश्वास अरु अरुचि प्रसंगति	४६६
अति सन्निकट बसे हरि ताके	४६७
आफताव के तेज नूर से	४५२
आल्हादिनी श्रीमती शक्ति	४७७
ईश्वर अंश जीव अविनाशी	४५२
ईश्वर जितने जीव जक्त में	४६०
ईश्वरत्त्व को भाव विरोधी	४६६
ईश्वर संग ईश्वरी माया	४७१
उलट लगे मन श्याम	४५०
एक देह सम्बन्ध कहाके	४७१
अन्तर काष्ठ अग्नि व्यापक है	४६८
कर्म ज्ञान अरु भक्ति प्राप्ति०	४६६
करी भक्ति निष्काम जिन्होंने	४५८

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
करें भावना अष्टयाम की	४५९
कही वेखरी जागृत वाणी	४६८
करें मन्त्र उपदेश गुरुजो	४६९
काम कर्म अरु गुण स्वभावयुत	४७२
किरण सूर्य से जुदा न हो छिन	४७३
कोई कहे बडा निरगुण है	४५४
कृपा पात्र सोई जन जगमे	४६४
कृष्ण कृपा से सभी वनि आवे	४४४
कंसादिक शिशुपाल असुर	४६०
गन्नेका जो मूल इसी विधि	४७५
गुण अनन्त सयुक्त ताहि शठ०	४५३
गावें श्यामा श्याम को ध्यावें	४४६
चश्मों से जो चमन लखा	४५४
चार वेद से भेद अलहदा	४७१
चारों मुक्ति जहाँ कर जोरे	४७२
चेतनत्व आत्मत्व और शेषत्व	४६६
चौबे चला होन को छब्बे	४५७
चौसर की बाजी खेलन में	४६०
चौरासी जम दण्ड नर्क दुख	४६१
जयति जयति शुकसखी जयति	४२९
जय जय श्री जुगल बिहारी	४४२
जयति जयति शुकसखी चरनदासी०	४२९
जनम लियो जगमें तेनें प्राणी हरि०	४३०
जलके कहे तृषा नहि भाजे	४५७
ज्यों दीपक में प्रगट चांदना	४६७

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
ज्यों आदर्श मांहि लखा निज	४६८
जीवन मुक्ति हुये जो प्रानी	४४४
जुगलविहारी गाऊँ सुमिर मन मोद०	४३०
जैसे ईख उसही से रस से	४५५
जोरी जुगलकिशोर की अति सुन्दर	४४८
जोगी जंगम थकी रहे (छप्पय)	४४६
जोग वशिष्ट वशिष्ट न भाषा	४५१
जोगी साधन साध्य श्याम है	४५८
जोगी जोग जुगति कर अपनी	४५६
जह प्रत्यक्ष आवेश विराजे	४७६
झूठा कहे जक्त वो बुधजन	४६२
ठाकुर राधेश्याम हमारे	४४३
त्वं पद अक्षर जीव कहावे	४७२
तीन अवस्था तीन तन श्रीगुरु गम०	४४६
दम्पति नाम रटे निशि वाग्र	४२८
दर्जा प्रथम फना फिल्ला का	४६५
दिव्य देह इन्द्रिय प्रभु देवें	४७०
देशानन्तर और विरह वनान्तर	४७३
द्वापरयुग पच्चीस वर्ष	४७१
धन धन कहे मिले धन नाही	४५७
नर्क त्रास चौरासी दुख	४६१
नाम रूप लीला ललित	४४७
नामरु धामरु लीला	४२८
नित्य मुक्त पार्षद प्रभु	४६७
पर कहिये गोलोक नाथ	४६४

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
पर प्रभू की प्राप्ती नहिं	४६३
पर अव्यक्त अचिंत अगोचर	४६३
पर अत्यन्त सुतन्त्र कहावे	४६२
पद निर्वाण दात्री मुक्ति	४५७
परमातम पुरुषोत्तम प्यारा	४३६
पूरन आतम ज्ञानी से	४७३
प्रथम जान ये दुतिय व्यूह	४६२
प्रथम दूध से दही जमा	४५५
प्रेम भक्ति सीपी सम जानों	४५६
प्रेम सहित हरि सेवा किये	४७०
प्रेम सिंधु उमगे (दोहा)	४२७
बल ऐश्वर्य ज्ञान और शक्ति	४६५
बासुदेव शंकरशरण समझो	४६४
बिहारी तेरी लीला की वलिहार	४७३
ब्रजगोपी लींला रस ओपी	४७३
भजन भावके मध्य समझले	४७४
भक्ति योग से दास भाव हो	४६२
भक्तों की रक्षा करने को	४७५
भाव मांहि विक्षेप न दीखे	४५८
भाव भये ते रति हिय उपजे	४७०
मरकट सुवन मात उर लिपटत	४५४
मथुरा द्वारावती आदि में	४७७
मत्स कूर्म बाराह	४७६
माया में मखलूत नहीं गुन यों०	४५३
माया काम अरु भर्म गति	४४६

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
मार्जार अपने बच्चों को	४५५
मिश्री को चखना अच्छा	४५६
मुक्ति चाह तज मुक्त हुये हमें बन्धन०	४५१
मूल करम से अधिक बढाना	४५६
मैथुन और मानसी शृष्टि	४७५
मैथुन शृष्टि कर्म अधिकारी	४७४
मन्त्र रूप मूरति श्री हरि की	४६६
रसिक हमारी जात	४४६
रसिक हमारे प्राण धन	४४६
रजधानी ब्रन्दाविपिन राजा०	४४८
रसिक सन्त हरि गुरुन में जाको०	४४८
रज्जू में सर्प भ्रान्त मिथ्या	४७७
रज गुण रूप जानिये ब्रह्मा	४६५
राधिका बल्लभ ध्यान धरो	४२९
राजा का दीवान मुसाहिब	४७२
लगन जिनकी दम्पति सों लागी	४३१
लय समझो निद्रा आलस को	४७४
लीलात्मक भगवत रूप	४७०
वह मुरशद गुरु पीर जिन्होंने सत सिद्धा०	४५२
वय किशोर नायका नायक	४६१
व्यापक ब्रह्म अनीह अमायक	४५९
विषयानन्द प्रथम कहियत है	४५९
विष्णु अंश से कृष्ण अवतरे	४६९
शास्त्र श्रवन जो ज्ञान हुआ	४६५
शालिग्राम प्रथम पूजा	४७५

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
सूक्ष्म किये ग्रहार सतोगुण	४७४
श्री मत वेदव्यास को नन्दन	४३६
श्री शुक सम्प्रदाय ग्राश्रित जन	४४०
श्री कृष्ण कृष्ण नहीं गाया	४३५
श्री ललिता बीरो देहि	४७८
सगुण ब्रह्म में चार भेद	४७६
सर्व ग्रंग में दूध गऊ के	४६८
सबको कृपारूप ह्वं प्रगटे	४६३
सखी हम दम्पति रहस उपासी	४४०
सर्वेश्वर श्री सरस बिहारी	४३७
सब धामन ते सोहनो	४४७
सम्प्रदाय श्री शुक सखी	४४५
स्वगत भेद से प्रगट भये हैं	४७६
स्वः सिद्ध रूप है भावका	४५८
स्वयं श्याम पूरन पुरुषोत्तम	४६६
स्वांति बूद सीपी में पड़	४५५
स्वांति बून्द का प्यासा चातक पी पी०	४५६
सोना संग सुहागा मिलिके	४६१
हद से बेहद खोज किये से	४६७
हमारी माई श्यामा जू सरदार	४४५
हमरी हेली स्वामिनि श्यामा प्यारी	४४१
हमारे श्री दम्पति सुखरास	४३६
हमारे प्यारे राधासरस बिहारी	४४१
हमारे सखि इष्ट निकुंज बिहारी	४४२
हमारे जुगल बिहारी प्रान	४३४

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
हमारो महल महा सुख दाई	४३३
हमारो श्री हरि से अनुराग	४३७
ज्ञानी कहे मुक्ति के तालिव	४६०

वैराग, मन शिक्षा व उपदेश ४८० से ५२६

अष्ट सिद्धि नव निद्धि लुभाने०	५०२
अति वलवन्त जान हरि माया काहू०	५०६
अमरपुर चल वसिये भाई	४६५
आशिक होकर इश्क कमावे सो०	५०१
आलिम से वे इल्म बने खुद को तज०	५०३
इश्क बाजों से मिलाकर इश्क जो०	५२६
करो मन नित्य अनित्य विचार	४८८
करो विश्वास मन मेरे	४६०
कहा भयो जो नरतन पायो	५०६
क्रियमान जाग्रति में उपजे स्वप्त भोग	५०७
कुंजविहारी हमारे है जीवन	५१७
कुंज बिहारी से यारी करी सखी	५१८
कृष्ण प्यारा रे मन तू भजले बा०	४८५
गायो ना राधा गोविंद	४६३
गायो ना बिहारी चित लायो ना०	५१५
गुणातीत तुरिया अतीत अक्षरातीत०	५०४
चोरी जारी हिंसा जानों तन त्रिय०	५०७
चौथी कहो अवस्था तुरिया जिसके०	५०४
छुटे प्राण जाग्रति के मांहीं	५०४
छोड़ दिये मत पन्थ दुनी के प्रेम०	५०१

प्रथम पंक्ति	पृष्ट नं०
जगत यह ठग नगरी निरधार	४८१
जगत को झूठो है सब ख्याल	४८१
जगत यह जान रैन का सपना	४८२
जगत में सकल बटाऊ लोग	४८२
जगत में रहना है दिन चार	५१२
जाग जाग जो हरिगुण गावे	५१०
जागो प्यारे हरिगुन गावो	५१५
जिह्वा जप कर जाग्रति जीते	५०७
जो आशिक हैं श्याम सनम के	५०३
जो कोऊ कुंज विहारी गावे	५१४
जो तू हरि से मिलाचाहे पहिले०	५०२
जो सेवा श्री युगल की (दोहा)	४९९
जो हरि भजे भाव दृढ कर के	५०६
तन के तीनो पाप यह समझो सन्त०	५००
तुरिया ब्रह्मानन्द सिंधु में प्रेम कसक०	५०५
तू हरि को सुमिर रे	५१२
तू हरि गुन गारे	५१२
थोडा जीवन जक्त में (दोहा)	४८३
धर मन राधिका पद ध्यान	४८७
ध्यान धरो सुमिरन करो (दोहा)	४९९
नटने सुन्य समाधि लगाई	५०५
नसीहत नेक के मसले सुने जिसको०	५२०
परारब्ध भोगतव्य अटल जिसके	५०६
परमानन्द रूप पिय प्यरा परम०	५०५
परमपरा गुरु धर्म नहिं कये कम०	५००

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
वसो मन वृन्दावन की गलियाँ	४६२
वातें यह उपदेश की प्यारे मन०	४६७
वृथा जन्म जग में जिन लीनों	५१०
वेशक अपने इष्टदेव के हम पूरे०	५०२
भक्ति हरिकी गर न की तो क्या०	५२४
भगवत का घर बड़ी दूर है	५१६
भज मन राधे प्यारी कृष्ण कन्हाई रे	४६४
भज मन श्री राधे गोविंदा	४८६
भज मन श्री राधे गोपाल	४८६
भज मन राधा सरस बिहारी	४८७
भजरे मन मेरे राधेश्याम श्याम श्यामा	४६८
भजन बिन नर मरघट को भूत	५१३
भजन बिन नर सब पशू समान	५१३
भजोरे मन सुन्दर श्याम कन्हैया	४६०
भरोसो हरि को रख मन भाई	५२१
मन तू कर मोहन सों प्रीत	४६२
मन भावन मम प्यारी सखी सुन०	५०७
मुखसे जुगल नाम जप करना	५०६
मोनी अरु मज्जूब जिन्होंसे मुतलक०	५०२
मोन होय जपिये गुरु मंतर	५०७
रट मन राधिका दिन रैन	४८७
रट मन राधिका उठ प्रात	४८८
रसिक रंगीलो की संगति में	४६१
रसिक मिल रस की बतियाँ कीजे	४६५
प्रेम सिंधु गोविन्द प्रभू का जिसका०	५०६

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
राधिका कृष्ण को नैंन लखो	५१७
राधिका कृष्ण रंगीले लगें	५१७
राधे कृष्ण कृष्ण श्री राधे	४९१
राधे गोविंद के गुन तुम गाये जावोजी	५२३
विधवा नारी अंग निज	५००
श्याम के गुन गाय मनुवा	४८६
श्यामसुन्दर के गुनों को ए दिला०	५२२
शरन श्री वृन्दावन की जइये	५०६
श्री हरि सो मिल जावे अरे मन	४९६
श्री गोविन्द २ गावरे	५१९
स्वसरूप सुख रूप समझ के	५०५
स्वांति बूंद जो परे सीप में	५०४
सतगुरु ने निज ज्ञान दिया०	५१८
समझ सोच लेरे मन सूरख	४९४
सब सँशय तज भज मन मेरे	४९१
समझ मन श्री हरि क्यों नहिं गावे	५२०
सरस विहारी सलोने लगे	५१६
सांवरे दिलदार ही से प्यार करना०	५२३
सुनले मन मूढ दिवाना रे	४९३
सुन मन मित्र सिखावन मेरी	४८३
सुन मेरी सुरता बुलाई विहारी	५१४
सुख समूह श्यामा श्याम गुन गान में	५११
सुमिर मन श्रीहरि वारम्बारा	४८४
संचित अरु प्रारब्ध कर्म	५०३
हमें अब चलना है निज धाम	४९७

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ नं०
हरदम हरी मुमरो मन मेरा	४८५
हमको योग समाधि सांख्य मत ज्ञान	५०१
हम ज्ञानी हम ध्यानी मौनी	५०३
हरी से जो मिला चाहे	५२५
हिर्स हवा तज दीन दुनी	५०१
हिंसा जूआं मांस मद	४९९

———

❀ श्री राधा सरस विहारिणेनमः ❀

॥ श्री सरस सागर ॥

द्वितीय भाग

दोहा

श्री शुक मुनि महा प्रभु, विनय सुनो चित लाय ।
कृपा करो भव दुख हरो, देहु प्रेम हरषाय ॥
सुमरु दंपति रैंन दिन, आँसू दृगन बहाय ।
गद गद स्वर रोमांच हो, तन मन सुधि बिसराय ॥
रसिकन सँग निस दिन रहूं, गांऊ गुन मन लाय ।
ललित लाडली लाल को, निज दृग लेउँ बसाय ॥
सेवक मोको जानके, लीजे निकट बुलाय ।
सेवा चरण सरोज की, दीजे मोहि बताय ॥
सिवकाई श्री अंग की, करु हिये हुलसाय ।
सरवस धन सेवा गिनूँ, स्वर्ग मुक्ति बिसराय ॥
नित निरखूं छवि माधुरी, अति ही प्रीति लगाय ।
बाँकी झाँकी दृग बसे, चित इत उत नहिं जाय ॥
तन में मन में नैन में, बसो लाडले आय ।
सरस माधुरी ध्यान में, दीजे नाथ छकाय ॥

॥ ध्यान मंगल श्रीश्यामचरणदासजी ॥

जय श्रीकृष्ण अंश किशोर मूरत गौरवरनजु सुन्दरम् ।
श्याम बाल विसाल सिर पर दिव्य दमक मनोहरम् ॥

भाल तिलक अनूप अद्भुत भौंह कमान सुहावनम् ।
नैंन हरि के ध्यान माते भक्त जन मन भावनम् ।।
नासा सुहावन कान गुञ्ज कपोल शोभा अधिक ही ।
जुगल मूंछ मरोर बांकी सो सुछवि जाय न कही ।।
अधर अरुण नवीन दाड़िम दसन बिच मिस्सी लगी ।
मन्द मुसकावन सुहावन जोति मुख की जग मगी ।।
सीस फैंटा जरी तामधि चूँच टोपी की फबी ।
श्री मुख महाराज छवि निधि कह सके नाहीं कवी ।।
कंठ तुलसी माल गल फुलहार पहरें जानिये ।
पीत चोला अंग तापर गूदरी शुभ मानिये ।।
जुगल कर तिन मांहि पोंहची करा कनक पिछानिये ।
हाथ मेंहदीं सो रंगे गूंठी अंगुरियन मानिये ।।
कटि सजैं कोपीन तापर पीतांबर शोभित महा ।
दहने पग जंजीर बायें कंगना अति खुब रहा ।।
चरण अंबुज अरुण दोऊ उपमा तिन कहिये कहा ।
ध्यान तिनको कर अमित जन दरस प्रभु हरि का लहा ।।
च्यवन ऋषि कुल केतु कलिमल हरण धर्म धुरंधरम् ।
भक्त शोभन वंश भूषन प्रागदास उजागरम् ।।
मुरली सुत रनजीत स्वामी दीनबन्धु दयाकरम् ।
कुंजो नंदन जक्त बंदन कोटि काम मनोहरम् ।।
ब्रह्म आतम सर्व व्यापी सर्वमय अपरापरम् ।

सत चेतन आनन्द घन हरि ईश सुख के सागरम् ।।
कठिन काल कराल कलयुग धर्म खण्ड निहारिया ।
प्रगट धर अवतार नर तन भक्ति हरि विस्तारिया ।।
ग्राम डहरे जन्म लीनो इन्द्रप्रस्थ पधारिया ।
शुकतार श्री शुकदेव मुनि मिल जक्त के जिय तारिया ।।
ज्ञान भक्ती योग और वैराग नाव बनाइया ।
भौ सागर के बीच डारी हंस पार लँघाइया ।।
जीव अनंत प्रबोध आतम रुप सबन लखाइया ।
चौरासी कर्म काल तिनके मेट पद पहुँचाइया ।।
बैठ सिंहासन सुखासन ज्यों जगत पति साइयां ।
परम पूरन प्रेम प्रभु के भक्त जन सुख दाईयां ।।
भागवत मत मथन करके भेष अधिक चलाइया ।
आप आचारज बने शुक संप्रदा प्रगटाइया ।।
द्वार बावन संप्रदा शुक जक्त में यश छाइया ।
संत महंत अनंत चरनावत वैष्णव कहलाइया ।।
श्री चरणदास भक्त निवास के जो ध्यान मांहि समाइया ।
पायो परम पद सुलभ ही दुख जन्म मरन मिटाइया ।।
साधु साहिब एक ही हैं भेद नाहिं सुझाइया ।
भक्ति और भगवंत माहीं भिन्न ना दरसाइया ।।
यह ध्यान श्री चरणदास गुरु बल्देवदास बताइया ।
शिवदयाल होय निहाल हित सों ध्यान मंगल गाइया ।।

॥ राग विहाग ॥

मिल हो कब शुक अलि अलबेली ।
तुम दरशन बिन व्याकुल निशि दिन, कल न परत तलबेली ॥
श्री श्यामा के संग रंग सो, ले जिन चरन सहेली ।
कब निरखूंगी निज नैनन ते, करत कृष्ण सों केली ॥
रोय रोय जल झरत दृगन ते, सींच विरह की बेली ।
छाय रही छतियन के ऊपर, रोंम रोंम में फैली ॥
लोक वेद की लाज गवांई, सकुच त्याग खुल खेली ।
सरस माधुरी दरशन दीजे, नागरि नवल नवेली ॥

अथ बसंत के पद ॥

राग बसंत तथा बहार ॥

श्री शुकदेव कुंजरस बरन्यो, ताको निसदिन गावरे ।
ध्यान धार उरराख भावना, दम्पति को दुलरावरे ॥
सहचरिरुप समझि मन दृढ़कर, सेवाकर चित चावरे ।
उत्थापन तें आदि सैन लों, बिधिवत कर सुख पावरे ॥
रसिकन मिल हरिरस अमृत पी, विषयानंद नसावरे ।
श्रीगुरु में सत राखि नेह नित, सतसंगत मन लावरे ॥
जुगलनाम जिह्वासों जपिये, बृथा न श्वास गुमावरे ।
हरि भक्तन सों सांचो नातो, छल को छांडि निभावरे ॥
आन बन्यों संजोग भाग्य सों, चूक न ताकों बावरे ।
सरसमाधुरी निज बृन्दावन, बस तजि अंत न जावरे ॥

सखियन की मन अभिलाष परस्पर ॥

पद बंसत ॥

आज बसंतपंचमी आली, दम्पति फाग खिलावेंरी ।
चलें सकल हिलमिल सब सजनी, आनंन मंगल गावेंरी ॥
मदन महोत्सव सरसभलो दिन, सुंदर साज सजावेंरी ।
कंचन कलश पूरि जमुना जल, आंम मँजरी लावेंरी ॥
पीत वस्त्र सों ढांप प्रेमसों, तापर हुलसि धरावेंरी ।
अगर कुमकुमां चोवा चंदन, केसर रंग बनावेंरी ॥
नाना रंग गुलाल थाल भर, प्यारी पीय खिलावेंरी ।
धूप दीप धर करें आरती, बीन मृदंग बजावेंरी ॥
गाय बजाय रिझाय जुगलको, रंग छिरकें छिरकावेंरी ।
सरसमाधुरी रीझि भीजि के, उरआनंद बढावेंरी ॥

राग बसंत ॥

सखियन सरस बसंत बधाई ।
हिल मिल हरिसों खेलन आई ॥
नौसत साज सिंगार सुअँगन, नवलकिशोरी सब उठ धाई ।
हँस मुसकावत हरष बढावत, गावत ताल मृदंग बजाई ॥
सारंगी सुर मिली मनोहर, भाव बतात करत चतुराई ।
पहुँची आय महल वृन्दावन, हो हो होरी धूम मचाई ॥
बैठे जहां लाडिलीलालन, अतिशय अबिर गुलाल उडाई ।

केसर रँग भरके पिचकारी, सनसुख पियके चतुर चलाई ।।
चोवा चँदन छिरकत अंगन, छवि छैला लख रही छकाई ।
ले रोरी दौरी पिये ओरी, गालन लालन गुलच लगाई ।।
पकर जकर भुजभर भामिन तब,प्यारी के दिये चरन पराई।
हम हारे मुख सो कहो प्यारे, नहीं छोडेगी तुमें नाच नचाई।।
श्रीश्यामा मुसकाय मंद तब, सरसमाधुरी निकट बुलाई ।
रींझि दई उरमाल लाडिली,सो सुख मुख वर नो र्नाहि जाई।।

पद बहार ।।

नीको बंसत दिन आज वीर ।
खेलत फाग मुदित पिय प्यारी, सोंधे भीजे सुभग चीर ।।
चोवा चंदन चरच परस्पर, लै गुलाल फेंकत अबीर ।
लता पता सब लाल भई हैं, केकी कोयल लाल कीर ।।
गावत राग बसंत रंगीली, संग सखिन की जुरी भीर ।
नाना रंग छूटत पिचकारी, बहत त्रिबिधि सुखमय समीर ।
मन भाये सखियन फल पाये, मिटी सकल तन अतन पीर ।
सरस माधुरी मुदित भई मन, दंपति सुख में भयो सीर ।।

पद बंसत ।।

सरस बसंत सरस सुख दाई ऋतु बसंत सरसाईरी ।
सरस फूल फूले श्रीवृंदावन लता सरस छवि छाइरी ।।
सरस बिहारी राधे प्यारी, सरस सखी समुदाईरी ।

सरस मृदंग सरस बीना ध्वनी सरस तान मिलि गाईरी ।
नाचत नारि सरस भेदनसों दंपति सरस रिझाईरी ।।
गागरि सरस सरस रँग केसरि पिय पर सरस ढुराईरी ।
छीन सरस पीताम्बर सजनी सारी सरस उढ़ाईरी ।।
लहँगा सरस कंचुकी हिय कसि नकबेसर पहिराईरी ।
अंजन सरस आँजि दृग लालन नीकी नारि बनाईरी ।
गुलचे सरस गाल लालनके करी सरस मन भाईरी ।
सरस रुप लखि सरस माधुरी मनमें अति मगनाईरी ।।

राग बहार ।।

सुन विनय किशोरी नबल बाल ।
खेलन बसंत आये गोपाल ।।
लै संग सखा बहु ग्वाल बाल ।
भर भर अबीर फेंटन गुलाल ।।
नांचें गावें नवकरत ख्याल ।।
महोचंग मजीरा डफ मृदंग ।
सारंगी सुंदर लियें चंग ।।
छबि निरखि रही नहिं तन सँभाल।।
तुम चलो लाडिली सखिन साथ ।
खेलिये फाग सँग प्राणनाथ ।।
गुलचो कपोल कर देवो ताल ।।
ललितादिक आली लई बोल ।
रंग गागरि केसर लई घोल ।।

चोवा चंदन भर लिये थाल ।।
सनमुख पहुंची जब सखिन भीर ।
लखि लाल भये मन में अधीर ।।
होहोरी कहि श्री नंदलाल ।।
दोउ ओर उड़ी अतिशय गुलाल।
मानो बादर छागये लाल लाल ।
मारत पिचकारी अंग बाल ।।
लिये पकर जकर लंपट किशोर ।
नटखट कपटी पिया चित चोर ।।
करसों गुलचावत कलित गाल ।।
बाढो आनंद अतुलित अपार ।
बरणत नहिं पावत शेशपार ।।
दे खड़े युगलवर अंकमाल ।।
मन भाये मनोरथ लिये पाय ।
रस बिबस रहे दंपति छकाय ।।
लखि सरस माधुरी भइ निहाल।।

बसंत बहार

राजैं निकुंज श्रीराधेश्याम ।
श्री वृंदावन अनुपम सुधाम ।।
चहुंदिस फुलवारी रहीफूल ।
तहां ललित लता रही सघन भूल।।
बोलत बिहंग दपति सुनाम ।।

जहां रस माते अलि करत गुंज ।
छाई ऋतु बसंत आनंद पुंज ।।
लगी अतिलौनी मंजरी आम ।।
मद मांती कोयलिया रही कूक ।
सुन उठत कलेजे मदनहूक ।।
गावत अनुरागिनि बिबिधि बाम ।।
चंदन बंदन छिरकत सुवास ।
चोवाचरचत अंगन हुलास ।।
छबि देख लजाने रती काम ।।
निरततहैं दोऊ नवकिशोर ।
मुख मंद हँसन लियो चित्तचोर ।।
नैनन सुरमा सार्यो ललाम ।।
कुमकुम केसर रंगकन अनूप ।
फबिरहे मुखांबुज जुगल भूप ।।
सखि निरखि बिकी बिन मोल दाम ।।
रह्यो कलित कपोलन रचि गुलाल ।
अधरन बीरी रचि रही लाल ।।
लखि सरस माधुरी लह्यो आराम ।।

राग बसंत

रसकनी कंत बसंत खिलायो ।
सुरति रंग अस्नान कराके नेह अंग अँगुछायो ।।

प्रेम प्रीति पहराय बस्त्र वर अंग अनूप सजायो ।
अभरन आलिंगन अंग अंगन चुम्बन चोवा लगायो ।
सुख आसन बैठाइ भली विधि भाव भोग भुगतायो ।
अधरामृत अचवाय लाडिली रसिया रसिक रिझायो ।।
कलकपोल मुख बीरी दीनी अतर अनंग रमायो ।
हिय में फूल हर्ष भुज हरवा पिय गरवा पहिरायो ।।
जगमग रूप सँजोय आरती परम प्रकाश जनायो ।
बंक बिलोकन हेरिफेरि हँसि परमानंद बढायो ।।
श्रमकन बिंदु बदन पर सूचित शंखोदक छिरकायो ।
सरस माधुरी रसबस करके रसिया छकनि छकायो ।।

राग बहार ।।

खेलत हिलमिल दम्पति बसंत ।
लियें संग सखी सहचरि अनंत ।।
फेंटनि भर अबिर गुलाल बाल ।
कंचन पिचकारी अति रसाल ।
मारत तक तन में मृदु हसंत ।।
लियें अतर अरगजा चोवानार ।
मुख मलत मनोहर कर सुप्यार ।
लपटत झपटत कामिनी कंत ।।
कोउ नाचत गावत कर आनंद ।
बीना मृदंग बजवत उपंग ।

सारंगी चंगी कर लसंत ।।
रह्यो बृन्दाबन ऋतुराज भूल ।
नूतन पल्लव रहे फूल फूल ।
लखि सरस माधुरी द्दग फसंत ।।

राग बसंत ।।

खेल बसंत रास रस मांते नृत्तत नवल बिहारी ।
संग लियें श्रीराधेस्वामिनि अनगिन नवला नारी ।।
भरे उछाह बोल होहो री थेइ थेइ बचन उचारी ।
हस्तक भेद भाव बहुबिधि कर तांन तालगति न्यारी ।।
वीन मृदंग चंग सारंगी मिलि बाजत इकसारी ।
पग घुँघरू छुम छुननन छुनकत मृदु मुसिकन अतिप्यारी।।
भृकुटि कमान बांन नैनन के हियतक मारत कारी ।
नाक बुलाक अधरपर लटकत अलक झलक घुंघरारी ।।
मुकुट चंद्रिका कुंडल झलकनि लट छूटी सटकारी ।
सरस माधुरी जुगलचंद की छबि लखि भइ मतवारी ।।

राग बसंत ।।

आज बिहारिन संग विहारी खेल वसंत मचायो ।
दोऊ रूप रंगीले रसिया साज अनूप सजायो ।।
रती मदन मद मर्दन अंगन पट भूषण पहरायो ।
मस्तक तिलक तमोल अधर पर द्दग अँजन अति भायो ।।
पुलकत मुलकत रसके मांते मद गज चलनि लजायो ।
कंचन कर पिचकारी लीने तिनमें रंग भरायो ।।

तक तक मारत कोउ न हारत उर आनँद बढायो ।
केसर चंदन बूका बंदन मुख ऊपर लपटायो ।।
हँसि हेरनि में मन हरि लीनो, पिय बिन मोल बिकायो ।
गाल गुलाल लगाय लाडिली, प्रीतम हिय हरषायो ।।
तब प्यारी सुकुमारी रंग लै, प्यारे पै ढरकायो ।
मानहु नीलमणी गिरि ऊपर, कंचन बादर छायो ।।
सखी सहेली साज बाज ले, दम्पति गाय रिझायो ।
सरस माधुरी लखि त्रण तोरत, चित नहिं चलत चलायो ।।

पद बहार

प्रिया पिय बसंत खेलत आवेंरी ।
रूप समुद्र रसिक चूड़ामणि, मंद मंद मुसक्यावेंरी ।।
पीतइ बसन नवीन झीन तन, सुँदर सरस सुहावेंरी ।
मुकुट चंद्रिका मस्तक राजें, भालतिलक मन भावेंरी ।।
छूटी अलक कपोलन ऊपर, अधरबिंब दुति पावेंरी ।
बेसर और बुलाक नाक में, अलियन चित्त चुरावेंरी ।।
नैन मैन मद गंजन रंजन, चितवन चोट चलावेंरी ।
शुचि विधुबदन सदन शोभा को, रस अमृत बरसावेंरी ।।
लैकर कमल उभय पिच-कारी, रँगभरि रसिक चलावेंरी ।
मृगमद केसर चन्दन चरचे, उर आनंद बढ़ावेंरी ।।
भीजे चोली चीर पिछोरी, मृदुल गात लपटावेंरी ।
निरखिछकितभइभामिनिसंगकी, बिनही मोल बिकावेंरी ।।

अबिर गुलाल उड़ाय चायसों, हो हो धूम मचावेंरी ।
लपट झपट अंकन भर भेटत, ताप अनंग नसावेंरी ।।

पीवत अधर मधुर मादक दोउ, रस बस बिबस छकावेंरी ।
सरस माधुरी संग सहेली, लखि छवि हिया सिरावेंरी ।।

पद बसंत राग बहार ।

श्रीनवनिकुंज दम्पति नरेश, राजत बसंत ऋतुतहँ हमेश ।
गौर श्यामछबि शोभाधाम, लखि रूपलजाने रतीकाम ।
नखशिख भूषन अति नवल भेष ।
लिये कर गुलाल के थाल वाल, चोवाचंदन चरचतरसाल ।।
छिरकत तन दोउन अति सुदेश ।
शोभित सखियन के यूथसाथ, लिये बीन मृदंगन चंगहाथ ।
गावतनृत्तत भर हियआवेश ।।
यह सुख सर्वोपरि रसविहार, कहै सरसमाधुरी कहि प्रकार ।
गुनगात न पावत पार शेष ।।

बसंत राग ।।

खेल बसंत फाग श्रीदम्पति, राजत है रंग भीनेरी ।
अति अनुराग भरे मदमांते, गलबंया दोउ दीनेरी ।।
रूप रंगीले, छैल छबीले, रति अनंग छबि छीनेरी ।
मंद हँसानि दृगबंक बिलोकनि, सबके मन हरि लीनेरी ।।
छलकत छटा प्रेम प्रति अंगन, नितही नेह नवीनेरी ।
सरस माधुरी पिय प्यारी पर, सरबस वारण कीनेरी ।।

आशीर्वाद बसंत बहार ।।

खेलै कुँजबिहारी बसंत आज ।।
लै सँग सखी मंजरी अनगिन, बीन मृदंग बजाय बाज ।।
लाल गुलाल रंग पिचकारी, कुम कुम केसर सजे साज ।।
छिरकत छबिसों सकल परस्पर, कियो प्रेममइ सुख समाज।।
रीझि रिझाय गाय गुण गोरी, झकझोरी रस लेन काज ।।
ऐसे ही नित सरस माधुरी, श्रीवृंदावन करो राज ।।

इति बसंत ।

अथ मन शिक्षा उपदेश की होरी

प्रथम श्रीगुरुमहिमा

॥ होरी राग काफी ॥

श्रीगुरु के गुन गावे, जुगल के जो मन भावे ॥
हरि गुरु एक समझ कर सज्जन, निशदिन लगन लगावे ।
सेवे चरनकमल श्रद्धाकर, अहँकार छिटकावे ।
दीनता चित में लावे ॥
धन्य भाग अपने कर जाने, नितनव भाव बढावे ।
रहै सदा गलतान ध्यान में, प्रेम पदारथ पावे ।
प्रिया पिय कंठ लगावे ॥
प्रीति रीत युत करे, महोत्सव सर्बस भेंट चढ़ावे ।
आज्ञा भंग करे नहिं कबहीं, कर जोरे शिर नावे ।
सकल सुख संपति पावे ॥
गुरु के बचन वेद कर समझे, निश्चय निज उर लावे ।
प्राणन से प्यारे गुरुजाने अमर लोक को जावे ।
जहां सों बहुर न आवे ॥
जीवन मुक्त होय जगमांही, धनि धनि लोक कहावे ।
सरसमाधुरी रंग महल बस, हियमांही हुलसावे ।
निरखि छबि बलि बलि जावे ॥

।। श्री होरी राग काफी ।।

होरी खेलत सरस सतगुरु के संग ।
जहां बरस रह्यो, आँनद को रंग ।।
ज्ञान ध्यान की केसर घोरी, पिचकारी छूटत उमंग ।
भाव भवन में खेलन लागी, छिरके पिय प्यारी के अंग ।।
बुद्धिबिवेक बजत डफढोलक, प्रेम प्रीति की बीन चंग ।
पांच पचीसों गावनलागी, मार कियो मनको मृदंग ।।
सुरत निरत सखी नांचन लागी गुनातीत गतिताधिलंग ।
माया काल मूरछा खाई, कायर हो भागो अनंग ।।
अमर नगर में धूम भई है उलट बहें जहां जमुन गंग ।
जीवन मुक्ति मिलो फल फगवा, सरसमाधुरी जीत जंग ।।

होरी राग काफी ।।

श्रीगुरु हुवे सहाई, फाग लीला दरसाई ।।
सुरत सुहागन अति बड़ भागन, अनुभव से समझाई ।।
देगागरि अनुराग रंगकी, अपने संग लगाई ।
सुमति सखि मोहि मिलाई ।।
सुखमन कुंजगली अति सीधी' सोइ निज राह बताइ ।
चली चावसो सहज जहाँ में, बात भली बनि आई ।
महामन में मगनाई ।।
परमप्रकाश उजास अनूपम, तेजपुंज छबि छाई ।

ताके पार अमरपुर पिय को, जहां मोहि पहुँचाई ।
निरख मन मोद बढाई ।।
ऋतु बसंत जहां रहत निरंतर, ललित लता सुखदाई ।
फूले फूल अनेक रंग के, फूली अंग न माई ।।
देखि निज दृगन लुभाई ।।
नाना कुंज पुंजरस की जहां, बसत सखी समुदाई ।
बीच बनो रंग महल मनोहर, राजत जुगल जहाँई ।
बजत अनहद अधिकाई ।।
मचरह्यो खेल मंजु मंदिर में, अबिर गुलाल उडाई ।
चलत प्रेम पिचकारी चहुँदिसि, केसर रंग भराई ।।
रीझ भीजत हरषाई ।।
श्रीशुक सखी श्यामचरणदासी, मिली हिये लिपटाई ।
सरसमाधुरी सतगुरु के संग, अद्भूत मौज मनाई ।
हुलसि यह होरी गाई ।।

मनशिक्षा चेतावनी होरी राग काफी ।।

रंग रँगीली होरी, खेल मेरी सुरता गोरी ।।
सदा सुहागनि तू बड भागनि सुन सखि बतियां मोरी ।
अमर नगर तेरो पिया वसत है, तू चल वाही ठौरी ।।
फिरत कैसें भइ बौरी ।।
ज्ञान ध्यान कर अबिर कुमकुमां, प्रेम को रंग भरोरी ।

प्रीति पोटली मार पिया पै, नेह गुलाल की झोरी ।।
बजा अनहद घन घोरी ।।

सुमरन सार सीख सतगुरु सों, जप जिय जतन करोरी ।
भाव महल में भेंट पिया सों, बिछुरन फेर न होरी ।।
चूक मत औसर कोरी ।।

श्रीसत गुरु बलदेव दयानिधि, चरन शरन में तोरी ।
सरस माधुरी मोहि दिखाई, गौर साँवरी जोरी ।।
नहीं तिन सम कछु औरी ।।

होरी काफी ।।

होरी है दिन चारी, खेल खुल फाग पियारी ।
घूँघट भरम उधार सखीरी, लोक लाज तज सारी ।
सुमति सहेली के सँग चलरी, दीजे कुमति बिसारी ।।
शरण सतगुरु की आरी ।।

सुरत सासरे की कर सजनी, पीहर तजदेदारी ।
ममता मेल उतार घरबसी, शील सरोवर न्हारी ।।
जनम नहिं बारम्बारी ।।

नौधा भक्ति पहर पट भूषण, सुरमां सरस लगारी ।
नथ नित नेम नासिका सजिले, हित मुख पान चबारी ।।
महल बालम के जारी ।

प्रीति कुंज सुख पुंज सुहावन, जित श्री जुगल बिहारी ।
ज्ञान गुलाल उड़ा अलबेली, प्रेम चला पिचकारी ।।

रागनी आनंद गारी ।।
बिपति बियोग मिटे बहु दिनको, सुख संजोग अपारी ।
सरसमाधुरी श्याम राधिका, उज्वल रस अधिकारी ।।
रहै निसदिन मतवारी ।।

होरी काफी ।।

बड़ भागन नवनारी, बात सुन मेरी प्यारी ।।
ऋतु बसंत गुनवंत कंत सँग, खेल फाग सुकुमारी ।
सज शृंगार नख सिख अलबेली, आनँद उमग अपारी ।।
राग होरी के गारी ।।
संसारी परिवार संग को, त्याग भाग इत आरी ।
रसिकन मिल रसकी चरचाकर, होजा रसमतवारी ।।
प्रेम लेकर पिचकारी ।।
मचिरह्यो खेल मानसी मंदिर, ठाढे कृष्ण खिलारी ।
घूँघट भरम खोल सनमुख हो, देहु नेह की गारी ।।
नाँचि पायल छुमकारी ।।
सतगुरु सखी संग में तेरे, मन में मत सकुचारी ।
लाज छाड़ लै पकर लालको, जो हैं रसिक बिहारी ।।
दाव चूके मतदारी ।।
सदा सुहाग लेहु फल फगुवा, नित बिनोद सुखकारी ।
सरसमाधुरी निज सेवा कर, रहो दंपति की लारी ।।
ब्रह्मसुख जिस पर वारी ।।

होरी काफी ।।

मन भावन मम प्यारी सखी, सुन बात हमारी ।
बहुत जुगन सों भटकत डोले, निज घर सुरति बिसारी।।
यह परदेश पिछान छबीली, निश्चय लेहु बिचारी ।।
भरम सब दूर भगारी ।।
सुधि तेरी कर रह्यो साँवरो, समझ सोच चित दारी ।
चलि चलिरी प्यारी प्रीतम ढिग, पल पल होत अँवारी ।।
ढील नहिं नेंक लगारी ।।
सदाँ बसंत रहत बालमघर, फूल रही फुलवारी ।
महल मनोहर रत्न जटित, जहाँ जगमग जोति अपारी।।
निरखि छबि न्यारी न्यारी ।।
झुंड अनेक जहां सहचरिगन, वे किशोर तनवारी ।
भूखन बसन सजे प्रति अंगन, चमक दमक अति भारी ।।
सकल सेवा अधिकारी ।।
रास रंग कौतूहल नितप्रति, नृत्त गाँन सुखकारी ।
रीझ रीझ रसिया बोलत मुख, गलबैंयाँ दे डारी ।।
काम रति तापर वारी ।।
निस दिन नये नये जहाँ उत्सव, नइ नइ बिपिन बहारी ।
बिलसन परमानंद प्रेम रस, जाको अन्त न पारी ।।
समझ मन में हुलसारी ।।
ले सम्बन्ध नाम अरु सेवा, सीख भावना सारी ।

श्रीगुरु परमदयाल कृपा बल, प्रीत रीत पढ़ जारी ।।
जुगति तोहि दइ है बतारी ।।
नित बिहार श्रुतिसार सर्व पर, तत्सुख निज हिय छारी ।
सरसमाधुरी दम्पति के सँग, नित नइ मौज मनारी ।।
कहों तोंहि बारम्बारी ।।

होरी काफी ।

होरी खेल न जानी, सखी तू भई है दिवानी ।।
काम क्रोध अरु लोभ मोह मद, इनतें रति मति ठानी ।
बिमुखन की संगत नित कीनी, रहस रीति नहिं जानी ।
मनमुखी बोलत बानी ।
श्रीगुरु सूं नहि मिली गर्बीली, मैली बुधि भरमानी ।
बिभिचारी बाज़ारी तिनकी, बात सही कर मानी ।
यही तेरी नादानी ।।
मान मनी मन में नित राखे, गिनें न आप समानी ।
बिना दीनता दुरगति तेरी, स्थिर बुद्धी नहिं आनी ।
जुगन जुग तू भटकानी ।।
जोग जज्ञ जप तप ब्रत संजम, बिन गुरु फलकी हानी ।
बिन विश्वास नहीं सुख सुपने, वेद पुरान बखानी ।
बात यह नाहीं छानी ।।
मान कही मेरी मन भावन, पतिब्रत धारि सयानी ।

सरसमाधुरी पिय मनमानी, तेरे सम नहिं आनी ।
होय तू निज पटरानी ।।

होरी काफी ।।

नरतन फागन भागन पायो ।।
सतगुरुसों मिलि हरिसँग होरी,खेल भलो अवसरबनि आयो।।
नरक त्रास जमदंड भुगत के, चौरासी में बहु भटकायो ।
हरि की भक्ति करी नहिं भोंदू, हीरा सो यह जन्म गमायो।।
बिषै स्वाद इन्द्री बस भूलो, काम क्रोध सों मोह लगायो ।
परनारी परधन हरिबे कूं, निसिदिन अपनो चित चलायो।।
ध्यान धनी को कबहु न कीनों,सुत नारी सों नेह सवायो ।
सेवा करी न गुरु संतन की, राँड़न भाँड़न द्रब्य लुटायो ।।
श्रीसतगुरु बहु प्रीति प्यार कर,बारम्बार तोहिं समझायो ।
सब तज भजि भगवंत बिहारी, सरसमाधुरी भेद बतायो ।।

होरी काफी ।।

हरिसों होरी खिलावे, सखी सो मोमन भावे ।।
परनारी परधन को तजिके, निज घर चित्त लगावे ।
पांच पचीस पकर रसबस कर, बिषयानंद नशावे ।
भजन आनन्द बढ़ावे ।।
ब्रह्मानंद निरस नहिं छूवे, प्रेमहि माहिं छकावे ।
परमानन्द कहावे सोई, सबके हाथ न आवे ।।
ताहि बिरलोजन पावे ।

निरगुण गुणसों हीन छांड़ के, सगुण ब्रह्मकों ध्यावे ।
चार मुक्ति चरणन ठुकरावे, प्रीतम सन्मुख जावे ।
सुहागिनि सोई कहावे ।।
रसिकिन को सत्संग दिवस, निशि बिमुखन कों बिसरावे ।
एक अनन्य लिये पति ब्रत दृढ़, इत उत चित न चलावे ।
पिया तब कंठ लगावे ।।
श्रीस्वामी बलदेवदास गुरु, रहस्य रीति समझावे ।
सरसमाधुरी शरण श्याम की, तिनके गुण गण गावे ।
चरणदासी कहलावे ।।

होरी काफी ।।

जुगलबिहरी गाऊँ, सुमर मन मोद वढ़ाऊँ ।।
दंपति इष्ट मिष्ट है मेरे, जिनको ध्यान लगाऊँ ।
रहों लगन में मगन रैन दिन, दोउनकों दुलराऊँ ।
दरस करके पुलकाऊँ ।।
भूलूं देह गेह सुधि सगरी, भक्ति भाव प्रगटाऊँ ।
रहों सदा लवलीन भजन में, सेवा कर हुलसाऊँ ।
सहचरी रूप बनाऊँ ।।
निरखत रहों रंक के धन ज्यों, छबि लखि नांहि छकाऊँ ।
लीला ललित निकुंज भवन की, ताही सों मन लाऊँ ।
अंत नहिं चित्त डुलाऊँ ।।
रसिक जनन सों रहो निरंतर, संगत कर सुखपाऊँ ।

सरसमाधुरी बृन्दावन बस, और कहीं नहिं जाऊँ।
बिनय कर जोरि सुनाऊँ ।।

अथ ब्रज की होरी ॥

होरी राग पीलू बरवा ।।

बैया झकझोरी मोसे खेलिये ना ऐसी होरी।
मानो जू छबीले छैला, खेलिये ना ऐसी होरी ।।
मसकत कुच मोहे जान लंगर भोरी।
निठुर निलज काहे, मोतियन माला तोरी ।।
रंग पिचकारी मारी, चूनरी बिगारी सारी।
चलरे अनारी काहे मलत कपोल रोरी ।।
भरिये न अंकवारी, देउंगी मैं प्यारे गारी।
सरसबिहारी तोसों हारी कहूं करजोरी ।।

यथा होरी ।।

दैया नंद के ने धूम होरी में मचाई है।
ऊधमी अनीतो सखी, बड़ो औट पाई है ।।
घेरे ब्रजनारी रंग बरजोरी देवे डारी।
बड़ो झगरारी लोक लाजहू मिटाई है ।।
नांचे गावे तोरे तान नैना मटकावे आन।
निपट नादान यासों कछु ना बसाई है।
हंसिहहरावे इठलावे अरु हाहा खावे।
आय अररावे ऐसी करत ढिठाई है ।।

सरस पकर लाल चूमो आली याके गाल ।
करे ना कुचाल बात येही मन भाई है ।।

होरी यथा ।।

पकरे हैं प्यारी पिया आली आज फाग में ।
मचि रही होरी गोरी बृंदाबन बाग में ।।
घेर लिये लाल मुख मसली गुलाल बाल ।
गुलचे हैं गाल बस कीने अनुराग में ।।
नांच लै नचाये अंग अंग छिरकाये साज ।
बाजहू बजाये रंग छायो अति राग में ।।
सरसबिहारी लिये निज उरधारी नारी ।
यह सुख भारी लिख्यो सखियन के भाग में ।।

होरी राग काफी ।।

बनि आई बरषा ऋतु होरी ।।
खेलत रंग रंगे पिय प्यारी,नंद नंदन वृषभानु किशोरी।।
घन घनश्याम भामिनीदामिनी,बरसत रँग पिचकारिन सोंरी।
अबिर गुलाल घटा अति उमड़ी,केसरि कीच मची चहुँओरी।।
पिक सुर राग अलापति आली,नच मयूर गति जोबनजोरी।
मधुर मृदंग गरजि सुनि सजनी,बीन भीन सुर झर सर सोरी।
सुरति हिंडोरे झूलति झुकिझुकि डारि दोऊ गलबैया डोरी।।
मचकी मचकि लेत मिलि लालन, झरत फूल बेंनीदुहुँ ओरी।
धूंधरि धुंध माहीं दुरि दम्पति, पीवत है अधरन रसकोरी।।

नैन निहार बिहार जुगल छबि, सरसमाधुरी रंग में बोरी।।

होरी राग सिंदूरा ।।

लाल तुम अटपटे ख्याल खेलन लागेहो ।

नित नई करत कुचाल ।।

होहो कहि होरिके दिनन में, रोकत ब्रज की बाल ।
हंसि हंसि कसि कसि लेत भुजन भरि, मींडत बदन गुलाल।
अबिर अचानक दियो दृगन में, फेंको मूंठि सँभाल ।
सरसमाधुरी कही न मनोगे, तौ गुलचौंगी में गाल ।।

होरी राग सारंग ।।

सलौनों सांवरो होरी खेलत श्यामा संग ।।
लाल गुलाल लगावत गालन, मनमें अधिक उमंग ।।
पिचकारी मारत मनमोहन, तक तक अलियन अंग ।
चोली चूनरि चोवा चरचत, भरि भरि लेत उछंग ।।
गाजत ताल मृदंग झांझ डफ, बीन बांसुरी चंग ।
गावत राग धमार सखी सब, नचत नबेले ढंग ।।
गुलचे चतुर शिरोमणि सखियन, छिरके बहुबिधि रंग ।
सरसमाधुरी रस बिहार लखि, लाजै रती अंनग ।।

होरी सोरठ राग ।।

मदनमोहन मतवारो छैल, मोसों नित आ अटकेरी ।
संग सखा लिये ब्रज गलियन में घरघर भटकेरी ।।
बरजोरी लै छीन कमोरी, माखन गटकेरी ।

जातसहे नहिं ऊधम आछो, नागर नटकेरी ।
पनघट गैल रोकि ह्वै ठाढ़ो, नेक न सटकेरी ।
चोली मसकि धरनि पर मेरी, गगरी पटकेरी ।
घूंघट खोल बोल हो होरी, सनमुख मटकेरी ।
गलमें बैंयां डार हार होय, छतियन लटकेरी ।
सखी सहेली खड़ी हँसत, याहे कोई न हटकेरी ।
सरसमाधुरी छबि छलियाकी, हिय में खटकेरी ।

राग सोरठ ॥

जुगलबर रची रंगहोरी, सलौनी सखियां संग गोरी ।
इत मोहन हँसि रसिया गावे, डफ को लेकर चपल बजावे
मूठि गुलाल उड़ाय करे, लालन चितकी चोरी ॥
भरि पिचकारी पिय रिझवारी, श्यामा के सनमुख तक मारी
भीजि गई सिर सारी, कचुकी रंग माहिं बोरी ॥
धाई श्रीबृषभानुदुलारी, गहि पकरे पिय कुंजबिहारी ।
गुलचे गाल लाल के प्यारी, मुख मोडोरोरी ॥
सहचरि सकल झुंड मिलि आई ।
चोवा चन्दन चरचि सिहाई ।
सीस श्यामके रंग कमोरी, सब सखियन ढोरी ॥
या सुख को ऋषि मुनि जन तरसें
यह छबि नैनन सों नहिं दरसे ॥
सरसमाधुरी सतगुरु किरपा, लखी ललित जोरी ॥

यथा होरी ।।

जुगुलबर हिलमिल खेलत फाग ।
सरस निकुंज पुंज सुख सजनी, श्रीवृन्दाबन बाग ।।
मृदु मुसकात प्रिया अरु प्रीतम, दोउन मन अनुराग ।
चितवत्त प्रेम भरे चित चोरत, हिये लगन हित लाग ।।
लाल गुलाल मलत मुख आली, चरचत पुष्प पराग ।
चोवा चंदन छिरकत छबि सों, लोक लाज कुल त्याग ।।
चूनरि चोली भीजी प्यारी, पिय की पचरँग पाग ।
आनंद उमग्यो अधिक परस्पर, गावत रसके राग ।।
अधर पान आलिंगन चुम्बन, फगुवा लियो सुहाग ।
सरसमाधुरी या होरी में, जगे सखिन के भाग ।।

राग सारंग होरी ।।

खेलत हिममिल फाग जुगलबर ।
श्रीवृंदावन रंगमहल में, राधे मोहन मदन मनोहर ।।
केसर रँग पिचकारी मारत,हँसि हुलसत मुसकात परस्पर ।
उड़त अबीर गुलाल चहूंदिसि, श्वेत लाल मनु छाये बादर।।
बाजत ताल मृदंग झाझ डफ,सारंगी सुर ताल अधिक तर।
गावत सखी बोलि हो होरी, नचत भाव दरसावत सुन्दर।।
सरसमाधुरी आय अचानक लिये पकर पिय गहे भुजन भर।
चरण पराये प्यारी जूके, लिये लगाय लाडली निजगर ।।

होली पीलू बरवा ।।

कुंज वृंदावन जुगलबरने भली होरी रची ।
रंग पिचकारी कुमकुमा मार दोऊ दिस मची ।।
पोटली फेंके गुलालों की अजब अंदाजसे ।
सहचरी सारी रंगी रंग में नहीं कोई बची ।।
बीन और मिरदंग बाजे बिबिधि ले गावें अली ।
बोल हो होरी सखी जन जूथ में गतिलै नची ।।
देख सुरनारी बिहारी के रंगीले फाग को ।
मनमें ललचाई लुभाई अप्सरा रंभाशची ।।
क्या सलोनी श्याम श्यामा की मनोहर छबि छटा ।
सरस के दिल में किशोरी कृष्ण की जोरी जची ।।

होरी राग ग़ज़ल ।।

अलग हट खेल होरी सुन बिहारी ।
चलेगी ह्यां नहीं खटपट तुम्हारी ।।
चलावोगे जो पिचकारी ज़राभी ।
बहुतसी खाओगे तुम हमसे गारी ।।
न रोको गैल बांके छैल बनके ।
नये आये कहां के तुम खि-लारी ।।
नचाके नैन मटकाते हो मुखको ।
हैं महज़ तकरार की बातें ये सारी ।।

नहीं चलनेकी चतुराई यहां कुछ ।
सखी सबहीं हैं हम बरसाने वारी ।।
पकड़के तुमको मुख चूमेंगी हिलमिल ।
न समझो झूठ बातें सच हमारी ।।
बना के रूप नारी का नचावें ।
बजावेंगी सभी हँसहँस के तारी ।।
कपोलों पे मलाले हम से रोरी ।
अँजा ले आँख काजल सुन अनारी ।।
सरस दोगे नहीं फगवा हमारा ।
छिना लेंगी कमरिया तेरी कारी ।।

होली सारंग ।।

छल बल कर छैल गहो गोरी ।
पकर प्रेम सो श्यामसुंदर को मुखपर मसलौ री रोरी ।।
गुलचो गाल लाल के सब मिल, नारि बनावो बरजोरी ।
नांच नचाय नवल नागर को, बोलो री हो हो होरी ।।
ले गुलाल कर थाल सखी री, अबिर उड़ावो भर झोरी ।
सरसमाधुरी मदनमोहन को, केसर रंगमें बोरो री ।।

होरी सारंग ।।

होरी में बरजोरी करोंगी ।
काढ़ूं कसर आज सब दिन की,नखसिख पियतोहेरंगभरोंगी।
गुलचों गाल लाल मैं तेरे, फेंट पकर अति ही झगरोंगी ।।

रंग कमोरी ढोर सीस पर, हो हो कहि कहि नांहि टरोंगी।।
अंजन आँजि चपल आँखिन में, मुख चोवा लपटाय धरोंगी।
पहिराऊं चोली अरु चूनरि, कटि लहँगा सजि नांहि डरोंगी।।
पग परसाय प्राणप्यारी के, सँग नचाय रस सिंधु ढरोंगी।
सरसमाधुरी मनभायो करि, अंकमें कसिकें लिपट लरोंगी।।

यथा होरी ।।

भागन सों सखि फागुन आयो ।
मन भायों मैं करिहों अपनो अति उत्तम अवसर बनिआयो।।
होरी मिसि मिलि हों मोहनसों,भरों अंक यहि मोंहि सुहायो।
हुलसोंगी हिय में सुनि सजनी, मनहुँ रंक अतुलित धनपायो।।
नाचि गाय गुलचाय चतुरको, बरसाऊं रसरंग सवायो।
पिय को हिय को हार करूंगी,जाको जस सब ब्रज में छायो।।
रस बस करिहों रसिक छैलकों, जाने मोसों नेह लगायो।
खंजन से दृग अंजन सारों, जाकों निरखि अनंग लजायो ।।
बरिहों बालम कुंजबिहारी, जो मेरे जिय मांहि समायो।
सरसमाधुरी मिलि रसिया सों अनत नहीं चितचले चलायो।।

यथा होरी ।।

मोहन सों मन उरभयो मेरो ।
सुरझायो सुरझे नहिं सजनी, मैं सखि जतन कियो बहुतेरो ।।
मारग में मोहि मिल्यो रसिकवर, नंदनँदन ब्रजचंद उजेरो।
हँसिचितवनिमें छीन लियोचित, करलीनो निज अपनोचेरो।।

लै पिचकारी सनमुख ठाढ़ो, कुंज गली में आ मोहिं घेरो ।
मसकि अंक अधरन रसलीनों, कीनो हित मोसों बहुतेरो ।।
मैंहूं मली गुलाल लाल मुख, गागरी रँग अँग पिय पर गेरो ।
चूमि कपोल चतुर चंचल के, दसन छाप दै कियो निबेरो।।
बैरिनि सास ननदियादारी, करो भलें गुरुजन उर झेरो ।
खुलि खेलोंगी सरसमाधुरी, लोक लाज को त्यागि बखेरो ।।

होरी सारंग ।।

मदमातो महीना होरी को ।।
प्रेम उमंग बजाय चंग को, गावत रसिक किशोरी को ।
घाट बाट रोकत ब्रजवाला, खोलत घूंघट गोरी को ।।
गाल गुलाल लगावत मोहन, काम करत बरजोरी को ।
सरसमाधुरी श्याम सीस पर, ढोरत रंग कमोंरी को ।।

होरी सारंग रसिया ।।

ब्रंदाबन कुंजन में होरी ।
खेल रहे हिलमिल पिय प्यारी मलत परस्पर मुख रोरी ।।
पिचकारी तनमें तक मारत, अबिर उड़ावत भरझोरी ।
हो हो बोलबंक चितवन कर, करे जुगल चित की चोरी ।।
चोवा चंदन चरचतदम्पति, गागरि रंग सीस ढोरी ।
लपटझपट गहि लेत भुजनभर, छतियन लगत नवलगोरी ।।

साज बजावत नाचत गावत, सहचरि संग फिरें दौरी ।
सरसमाधुरी यह सुख सजनी, निरखि छकी अँखिया मोरी ।।

होरी राग काफी ।।

होरी खेल न जानो, बृथा झगरो मत ठानों ।
रोकत गैल छैल छलिया बन, काहू की नहिं मानो ।
बरजोरी रोरी मुख मींडत, रहस रीत न पिछानो ।
बात अटपटी बखानों ।।
सीखलेहु पहले हम से तुम, रिसकर भौंह न तानो ।
जो नहि मानोगे मनमोहन, तोंको करें जनानों ।
सजें तन तिय को बानो ।।
गुलचें गाल गुलाल मलें मुख, रहु लंगर छिनछानों ।
छीन लेंहि करतें पिचकारी, हमसें परो न पानों ।
भयो तू फिरे दिवानों ।।
श्रीराधे सरदार हमारी, जिनको पुर बरसानों ।
सरसमाधुरी सूघो करिहें, तू है मन मस्तानों ।
आय हमसों उरझानों ।।

होरी राग काफी ।।

आज जुगुलबर होरी मचाई ।।
नन्दनँदन बृषभानु नंदनी, सुंदर रूप निकाई ।
मृदु मुसकात मनोहर दोउ, लखि रति मदन लजाई ।

निरखि छबि नैन सिराई ।।
संग समूह लियें सहचरिगन, छोड़त रंग पिचकाई ।
गावत गीत प्रीति .प्रगटावत, बीन मृदंग बजाई ।
नचत बहुभाव बताई ।।
उड़त गुलाल अबिर चहुँदिसतें, केसर कीच कराई ।
रंग बरसत सखि रंग महल में, ज्यों साँवन झरलाई ।
रीझि भीजे सुखदाई ।।
प्यारी पीय परस्पर हिल मिल, लिपट मिले ललचाई ।
प्रेम भरे पीवत अधरामृत, सखियां छकनिछकाई ।
अधिक मन में मगनाई ।।
जोगी जन सुपने नहिं पावें, सुन्य समाधि लगाई ।
सरतमाधुरी रसिकनके हित, रस लीला प्रगटाई ।
नेति जो वेदन गाई ।।

होरी राग काफी ।।

छांड़ो डगर हमारी, श्याम हम देंगीगारी ।।
घाट बाट नित रोकत टोकत, यह कहा बानि तिहारी ।
संग लग्यो लंगर डोलत है, शरम सकुच सब डारी ।
लिये कर रंग पिचकारी ।।
भंडुआ भयो फिरत गलियन, में नाच बजावत तारी ।
लंपट जार लवार जगत को, है तू निपट अनारी ।
कहै तोहें कोंन खिलारी ।।

वंश उजागर कियो नंद के, नितले रार उधारीं।
कहा खाय जायो जसुमति ने, अति चंचल झगरारी।
लाज कुलकानि बिसारी ।।
लाल गुलाल मलेंगी मुख पर, गुलचेंगी मिल सारी।
धोखे औरन के मत रहियो, हम बरसाने वारी ।।
सुनो तुम कुंज बिहारी ।।
छीनें लकुट मुकट पीतांबर, मसके भर अँकवारी।
सरसमाधुरी कलित कपोलन, चूमेंगी सब नारी।
चले कुछ नाँहि तुम्हारी ।।

होरी राग काफी ।।

रसिया सरसबिहारी, मेरी अंगिया रंग डारी ।।
आय अचानक छैल छलीतक, मारी रंग पिचकारी।
फेर निसंक अंकभर मसकी, रसकी दीनोगारी।
गई सखि लाज हमारी ।।
मैं हूं लपट झपट लंपटको, पकर बनाई नारी।
लहँगा ललित कंचुकी हिये कसि, सुरंग उढ़ाई सारी।
सजाई नथ भलकारी ।।
कोउ सखि काजर नैन लगायो, ले गुलाल कर डारी।
गुलचे गाल लाल के अलियन, बिहँसि बजाई तारी।
नचाये चतुर खिलारी ।।
परसे चरन लली के ललान, बहुत करी मनुहारी।

छांड़ो मोहि मय कर प्यारी, मैं तुम्हरे बलीहारी।
हा हा हि बचन उचारी ।।
धनि व्रजमंडल धनि व्रजगोपी, धनि वृषभानु दुलारी।
सरसमाधुरी प्रेम भक्ति बस, रसलीला बिस्तारी।
जुगुल छबि ऊपर वारी ।।

होरी राग पीलू वरवा ।।

संग सखाले आये खेलन बरसाने हरि होरियां।
फेंट भरके गुलालों की और अबिर की झोरियां ।।
रंग पिचकारी चला के कुमकुमां मारन लगे।
झांझ और डफ को बजा नच नच करें हैं ठठोरियां ।।
राधिका प्यारी सखी निज संग लै सनमुख चली।
रँग कमोरी होहो कह सिर पर सबों के ढोरियां ।।
फाग भर अनुराग खेलें गुलालें उड़ने लगी।
कारी पीरीसो घटा घुमडन लगी चहुँ ओरियां ।।
सहचरी ज्यों दामनी इत उत फिरें गजगामीनीं।
रति मदन मनकीहरन चितवन में लैं चित चोरियां ।।
घात कर पकरे पिया को लाय प्यारी के निकट।
चरण को परसाय श्यामाँ हँस उठी सब गोरियां ।।
नैनो में काजल लगा और छीनकर बंसी लकुट।
झटक पीताम्बर लिया मुख पर मली मिल रोरियां ।।
नारि रूप बनाय नागर संग नचावत चाव सो।

प्यारी को प्रीतम बना कर, दींनी हैं गठ जोरीयां ।।
सरस दे फगुवा सबो को, श्याम सुंदर कर बिनय ।
हा हा खाय रिझाय सखियां, छूटे करके निहोरियां ।।

अथ निकुंज होरी राग काफी

जुगुलकिशोर किशोर कुंज में, खेलत होरी ।
जोवन जोर भरी सँग भामिनि, अंग उमंग न थोरी ।।
कुमकुम थाल गुलाल बाल लै, अबिरन की भर झोरी ।
करें चितवन में चोरी ।।
गावत राग सुहाग सहेली, नचत नबेली गोरी ।
बीन मृदंग चंग सारंगी डफ, ढोलक घन घोरी ।।
परस्पर फाग रचोरी ।
प्रीतम लेकर रँग पिचकारी, प्यारी सनमुख छोरी ।।
तक मारी छतियन छैला ने, अँगिया रँग में बोरी ।
मली मुख ऊपर रोरी ।।
गजगामिनि स्वामिनि श्रीश्यामा, श्याम गहे बरजोरी ।
अँकनभर अधरन रस लीनो, लोक लाज सब तोरी ।।
हँसी सहचरि मुखमोरी ।
केसर गागरि लै नवनागरि, लालन सनमुख दौरी ।।
घेरिलिये प्रीतम को, हिलमिल ढोरी रंग कमोरी ।
भिजोई पाग पिछौरी ।।
नवलरसिक को नारि बनाई, सजि पट भूषन सोरी ।

दूलह गौर साँवरी दुलहिनि, कीनी कसि गठ जोरी ।।
बँधे दोउ प्रेम की डोरी ।
मनभाये सखियन करपाये लखि डार तृण तोरी ।।
सरसमाधुरी दम्पतिकी छबि निसिदिन दृगन बसोरी ।
चिरंजीवो यह जोरी ।।

होरी राग काफी ।।

आज भलो दिन गोरी महल में मचिरहि होरी ।
निज निज संग सखीगन लीने कुंवर किशोर किशोरी ।।
नाचत गावत भाव बतावत बजवत डफ घन घोरी ।
बीन बंसी सुरसोंरी ।।
चोवा चंदन बूका बंदन फेंकत भरि भरि झोरी ।
अबिर गुलाल मलें मुख हिल मिल रंग पिकारिन छोरी ।।
फाग अनुराग रचोरी ।
अली भली बिधि छैल छलीने गहि बहियां झकझोरी ।।
चोलीमसकि अंक भरलीनी कीनी अति बरजोरी ।
कपोलन मसली रोरी ।।
पिकबैनी मृगनैंनी निधरक रमकि गहे पिय कोरी ।
दसन छाप गालन लालनके कर दीनी दोउ ओरी ।।
हँसीं सखियां मुख मोरी ।
हा हा खाय पाय पर प्यारी कीनी बिनय निहोरी ।।

सरसमाधुरी फगुवा लैके लालन गुलचि बहोरी ।
परम आनंद रह्योरी ।।

आज नगर में होरी रे रसीया

(इसके वजन पर)

नंदलाला होरी खेलन आयो ।
संग सखा लिए ग्वालबाल बहु बरसाने में खेल मँचायो ।।
गली रँगीली घेरलई है नचि नचि रसिया गाय सुनायो ।
डफ मृदंग मंजीर सरंगी गान तान रसरंग जमायो ।।
उड़त गुलाल अबीर चँहोदिसि स्वेतलाल मनु बादर छायो ।
तक तक तांन कुमकुमाँ फेंकत अटा अटारिन रँग छिरकायो।।
श्रीराधे ले संग अलीगन केसर गागरि रंग भरायो ।।
छिरकन चली छैल लंगर को निरख कन्हैया ने भय खायो ।
पिचकारी पिय तान कनक की प्यारी जुके सनमुख धायो ।।
तक मारी घूंघट पट मांही अतरोटा अतिरंग भिजायो ।
नवलकिशोर झमकझपट चल प्रीतम पकर मृदुल मुसकायो।।
रोरीसों मुख मींड भलीबिधि चोवा चंदन चारु लगायो ।
ललित बिसाखा घेर लालको तारी दै सँग नाच नचायो ।।
गुलचि गालदे अंकमाल पुनि श्यामाजू के चरन परायो ।
रमकि लिए उरलाय प्रियापिय हियलगाय अतिहेत जनायो ।।
खेल फाग अनुराग भरे मन बैठ सिंहासन हित सरसायो ।
सुर समूह नभ बैठ बिमानन पुष्प बृष्टि कर आनँद पायो।।

शिवसनकादि आदि योगेश्वर छांड ब्रह्मसुख जियललचायो।
जाको नेति नेति कहि वेदन वार पार कुछ नाहिं लखायो।
सो परिब्रह्म भक्तिबस ह्वै वे ब्रजबनितन के फंद फँसायो।
नना बिधि पकवान मिठाई सखियन दम्पति भोग लगायो।।
रुचिसों जैंवत जुगुल परस्पर रसिया गारी गाय रिझायो।
जमुनाजल अचवायजुगतिसों मुखपुनि पोंछ परमसुख पायो।।
अतर लगाय हार फूलन को हँसि मन मुदित हिये पहिरायो।
सरसमाधुरी पान समर्पो लेकर दोउ प्रेम कर पायो।।
सहचरि जोय आरती कीनी जय जय कहि बहु लाड़लड़ायो।।

होरी राग सारंग ।।

गली रंगीली में रंग बरसे ।।
बरसाने बृषभाँन नगर में होरी कौ सुख अद्भुत दरसे।
फागुन में अनुराग भरे दोंउ खेलत फाग हियेमें हरसे।।
लेकर छरी छबीली ठाडी पकर लिए प्रीतम निज करसे।
सिर पर ढोरी रंग कमोरी मली गुलाल गाल गिरधर से।
वृजबनि तन कें बस भये मोहन रमा उमा या रसको तरसे।।
चूम चपलमुख मसकि अंकभर कहन लगी सखी राधा बरसे।
परसो चरण चतुर श्यामा के सरसमाधुरी को सुख सरसे।।

होरी राग कालंग ।।

छाड़ी गेल छैल नहीं गारी में सुनाऊँगी।
खेलोगे जी होरी तोमें गुलचा लगाउँगी ।।

सुनों मेरी बात छुवो लंगर न मेरो गात ।
करोगे जो घात पिचकारी को छिनाउँगी ।।
जो पे रंग डारो मेरी चूनरी बिगारोगे तो ।
नारी रूपकर तो को पकर नचाउँगी ।।
गहि बरजोरी कहों नंदकी ये छोरी तो हे ।
भुजमाहीं भर प्यारी धायन पराउँगी ।।
सरस बखाने रहो लाल नेक छाने ।
मत बनों जू अमांनें नहीं सूधो में बनाउँगी ।।

होरी राग कालंगडा ।।

नंदके निलज कहा होरी खेल जाने तू ।
रैन दिन देखे नाहि वाराजोरी ठाने तू ।।
जान ना पिछान पिचकारी रह्यो मोपे तान ।
जा जारे नादान मत परे मेरे पाने तू ।।
मारूँगी चपेटा गाल करूँ मुख तेरो लाल ।
छाडदे कुचाल गारी बकनी बखाने तू ।।
कही सौ सौ बार नहीं सुनत गवाँर ग्वार ।
करे तकरार भली बुरी ना पिछाने तू ।।
सरस कहत श्याम नहीं परो मों सों काम ।
गतिके बनाये बिना कैसें अब माने तू ।।

होरी राग पीलू ।।

लेवोरी पकर सखी श्याम भाजी जावे ना ।
छल बल कर छूटे हमको हरावे ना ।।

रोको मिल सारी नारी देखो कहा अरी दारी ।
करौ याकी ख्वारी फेर ऊधम मचावेना ।।
खोसो पिचकारी देवो दारी के को गारी ।
याकी गति ले बनावो फेर भूल यहां आवे ना ।।
चूमोंरी कपोल मुख होहो हँसि होरी बोल ।
मसकोरी अंक फिर आंखें मिलावेना ।।
सरस सयानी सब छोड़ दे नादानी यह ।
ऐंठ मैंठ एल फैल हम से लगावेना ।।

होरी राग पीलू ।।

तूने तो मेरी रंग सों बिगारी सारी चूंनरिया ।
मनमोहन निपट नादांन ।।
जोबन में मदमातो डोले, करत नहीं कुलकान ।।
निलज ऊधमी भयो नंद के, सब औगुन की खान ।।
जरतारी अंगया रंग डारी, दी पिचकारी तान ।।
खिजि हैं सासु ननदिया भारी, मोहि करै हैरान ।।
छांड़ छैलवा गैल हमारी, दीजे अब घर जान ।।
सरसमाधुरी प्रान पियारे, बिनती लीजे मान ।।

होरी राग पीलू बरवा ।।

चल चलरे अनारी तोसो कही में सौ बारी ।
मत मारे पिचकारी भीज गई मोरी सारी ।।
गारी गावत उघारी ले गुलाल डारी ।

न्यारी देखे ननदिया दारी वो लरेगी मोसों भारी ॥
बैया मेरी मोरडारी सिर चूनरीहू फारी ।
मेरी अंगिया मसकि कीनी तार तार सारी ॥
ऐसो निडर खिलारी मग रोके परनारी ।
नाचे कूदे दै दै तारी खोइ लाज तें हमारी ॥
बस देख ली तुम्हारी तोंसें धाई गिरधारि ।
हटो हटो जिन छूओ मोकों सरसबिहारी ॥

उराहाने की होरी राग काफी ॥

देन उरहनों आई यशोदा तेरो बरज कन्हाई ॥
हमरे घर जाके मनमोहन बहुत करी लगराई ।
संग लिये ग्वाल मंडली सजनी वकनी गारी गाई ।
बहुतही धूम मचाई ॥
अबिर गुलाल डार मुख मींड़ो अँगियाहू मसकाई ।
पिचकारी छतियन तक मारी हँसि निज हृदय लगाई ।
मेरी सब लाज गुमाई ॥
निसि दिन को ऊधम यह जसुमति हमसे सह्यो न जाई ।
छाड़ेंगी या ब्रज को बसिबो अंत रहैं कहुँ जाई ।
यही हमरे मन भाई ॥
करि मनुहार बहुत बिधि ग्वालिन नँदरानी बैठाई ।
सरसमाधुरी हाथ जोर के कर बिनती समझाई ॥
छिमा सब चूक कराई ॥

होरी राग काफी ।।

होरी खेलत जुगल जमुना के तीर ।
लिये संग सकल सखियन की भीर ।।
फूल रह्यो फूलन सों श्रीबन ।
कूजत कल कोकिला कीर ।।
नाना रंग चलत पिचकारी ।
पाग पिछोरी भीजे चीर ।।
उडत गुलाल लाल भये बादर ।
फेंकत मूठिन भर अबीर ।।
बाजत बीन मृदंग बाँसुरी ।
झाँझ झालरी और मजीर ।।
सरसमाधुरी रँग में बोरी ।
मिटी सकल तन अतन पीर ।।

होरी राग काफी ।।

खेलत सरसबिहारी होरी ।।
संग लिये नवनारि नवेली, हँसि मुसकात करत चितचोरी।।
गावत राग सुहाग फाग के, नांचत भाव बतावत गोरी ।।
बीन मृदंग चंग सारंगी, साज बजावत नवलकिशोरी ।।
रमक झमक श्रीराधे रानी, गहि लीने प्रीतम बरजोरी ।।
केसर रंग कमोरी ढोरी, भिजई पिय की पाग पिछौरी ।।

रसिक छैल छलबल कर भागे, ले पिचकारी प्रिय दिसि छोरी।।
चोली चूनरि रंग भिजोई, मसली ललित कपोलन रोरी ।।
चोवा चंदन चरच परस्पर, फेंकत मूठि गुलाल बहौरी ।।
अतर अरगजा छिरकत छबिसों, रंग उमंग रह्यो दोउ ओरी।।
श्रीसतगुरु बलदेव दयाकर, दरसायो यह सुख मोको री ।।
सरसमाधुरी ध्यान जुगल को, निसि दिन नैनन माँहि बसोरी।।

होरी ।।

श्रीराधाबर कुंजबिहारी खेलत होरी हो ।
पिय प्यारी आँनद में डोले, निरखि आरसी मुख छबि तोले।
सखियनसों हँसि बोल करत चितवन में चोरी हो ।
सखी चितवन में चोरी हो ।।
मोहन मदमातों इतरावे, मंद मंद मन में मुसिकावे ।
रसिया गाय बजावत निजकर डफ घनघोरी हो ।
सखीरी डफ घन घोरी हो ।।
प्रीतम निज कर ले पिचकारी, प्यारी के सनमुख तक मारी।
भीज गई सारी लहँगा अंगिया रँगबोरी हो ।
प्रिया अँगिया रंग बोरी हो ।।
अबिर गुलाल के बादर छाये, पिचकारिन रँग झर बरसाये।
सराबोंर रँग सखा भये अरु सबही गोरी हो ।
रंग बरसत चहुँओरी हो ।।
सेंन दई बृषभानु किशोरी पकरन पिया सखी सब दौरी ।

लाल गहे बरजोरी ढोरी रंग कमोंरी हो,
श्याम सिर रंग कमोरी हो ।।
मुख गुलाल कोऊ लिपटायो कोउ सखी अंजन नैन लगायो,
गुलचत गाल लली मोहन तब करत निहोरी हो,
प्रियाजूकी करत निहोरी हो ।।
जुगल मनोहर प्राण पियारे, जीवन धन आधार हमारे,
सरसमाधुरी की असीस अबिचल रहो जोरी हो,
चिरंजीवो यह जोरी हो ।।

होरी खमांच

बिन होरी खेले श्याम तुम्हे जान दूं मैं ना ।।
मोकों लागत सलोनों तोरो रूप सोहना ।।
बहु दिन में पधारे प्यारे मोरे अँगना ।
अब जागे मेरे भाग भये आनन्द घना ।।
मेरीजान प्रान प्यारे तोपे वारूं जोबना ।
नेक चलके विराजो पिया मेरे भवना ।।
हँसि बोलो दिल खोलो प्यारे मनमोहना ।
कछू जेंवो बलिजाऊँ पीवो जल जमुना ।।
बहु सगुन बिचारे प्यारे पूछो बमना ।
ताहे दीनो मैंने रीझ कर को कंगना ।।
इत करो सुख सैन चैन रंग रमना ।
सखी सरस पियारे पिया जीवन धना ।।

होरी राग काफी ॥

अरी एरी में तो पनियां भरन नहिं पाई ।

आय मोहन मसकि बैंयां मोहि बहुत खिजाई ॥

जमुना तट नटखट खरो, लम्पट लंगर छलबल भरो ।

अति ऊधमी नेंक न डरो, मोसों कीनी बहु लँगराई ॥

झटकि मोतियन मालतोर, पटकी गागरि धरनि फोर ।

करी अति बरजोरी मोरी नथगई बलखाई ॥

छैल गुमानी ऐसो कोनो नादानी, कही एक न मानी हठ अपनी ठानी ।

लखि सरसमाधुरी छबी छैल ने हरषि हिये लिपटाई ॥

होरी राग काफी

सखीरी रसिया सरसबिहारी, तक मारी है तन पिचकारी ॥

बृन्दावन की कुञ्जगलिन में रोकी डगर हमारी ।

संग सखाले खेलत होरी नाचत गावत गारी ॥

चोवा चन्दन बूका बंदन ले गुलाल करडारी ।

बाजत बीन मृदंग मजीरा सुनि धुँनि भई मतवारी ॥

गहि लीने लंगर नटनागर गुण आगर पिय प्यारी ।

चूमि कपोल बोल हो होरी सखिन बजाई तारी ॥

घेरे ग्वाल ग्वालिनी हिलमिल गागरि रँग सिर डारी ।

छीन लिए मुहुचंग ढोल डफ नाच नचाये भारी ॥

हारिगए मनमोहन सोहन जीती भानदुलारी ।

फगवा दियो मँगाय सबन को सरस माधुरी वारी ॥

होरी राग पीलू बरवा ।।

मनमोहन मचाई मोसों होरी रे ।
पिचकारी सनमुख तक मारी सारी रँग में बोरी रे ।।
लाल गुलाल मली मुख मेरे मोतिन माला तोरी रे ।
भुज भर लीनी रस बसकीनी करी चतुर चित चोरीरे ।।
मैंहूं लपट झपट लंगर पर केसर गागरि ढोरी रे ।
चूम कपोल छीनकर मुरली गुलचे गाल बरजोरी रे ।।
सरस माधुरी प्रीतम मुख पर निज कर मींडी रोरी रे ।

होरी ठुमरी

मत मारो पिचकारी सारी रंग जायगी ।।
फेंको जिन मो ओर कुमकुमां गोरे बदन में लग जायगी ।।
लाल गुलाल न मलो बदन पर नैनन मेरे गिर जायगी ।।
झटको ना कर मोरो सांवरिया नाज़ुक बैयां मुर जायगी ।।
मसकोनहीं भर अंकलँगरमोहिमोरीतोरीतुरतबिगरजायगी ।।
दूरहि सों खेलोखिलार तुम तब तौ सब बिधि बन जायगी ।।
सरसमाधुरी सेंन समझ मन प्रीति परस्पर निभ जायगी ।।

उपदेश होरी राग काफी

मनवाँ मूढ अनारी खेल होरी समझ बिचारी ।।
पांच सखी पच्चीस सहेली ये नारी बिभिचारी ।

इन संग भूल न बैठ बावरे, अंत करें ये ख्वारी ।
डारदें नरक मंझारी ।।
काम क्रोध अरु लोभ मोह मद, ये ठग हैं बाज़ारी ।
सुकृत लूट लेत छिन माहीं, इन सों मतकर यारी ।
कहूं तोंहि बारम्बारी ।।
सुमति सुहागन अति बड़ भागन पतिब्रता सुकुमारी ।
हिलमिल फाग खेल ताही सँग जो तू चतुर खिलारी ।
जीति है बाज़ी हारी ।।
ज्ञान गुलाल सील को सोंधो, अबिर बिराग निहारी ।
चित को चोवा खेंच चाव सों, जो तू खेल खिलारी ।
प्रेम कर ले पिचकारी ।।
सत संतोष सुहृदता सम दम, सखा लेहु निजलारी ।
सरसमाधुरी ध्यान मानसी, धारो हृदय मँझारी ।
मिलें तब कुंजबिहारी ।।

राग होरी सारंग और बहार ।।

आज हमारी सरस कुंज दोउ, होरी खेलन आयेरी ।
सज श्रृंगार फाग के सुंदर अति ही मो मन भायेरी ।।
कर मनुहार जुगल जीवन को सिंहासन बैठायेरी ।
फूल माल पहराय प्रेमसों, अंगन अतर रमायेरी ।।
अति आनँद सों करी आरती, फूल फूल बरषायेरी ।
नैन निहार रूप रसनिधि को बहु विधि लाड़ लड़ायेरी ।।

राधेश्याम सखी अपनी ले, निज निज यूथ बनायेरी ।
बीन मृदंग चंग सारंगी, सहचरि साज बजायेरी ।।
निरतत नवल नई गति लैलै, नाना भाव बतायेरी ।
हो हो होरी कहत मुदित मन, रसिया राग सुगायेरी ।।
चलन लगी रंग की पिचकारी, नखसिख तन छिरकायेरी ।
रोरी गोरी ले मुख मींडत, हंसि हंसि तन पुलकायें री ।।
अबिर गुलाल उड़ी चहुंदिसिते, मनुरँग बादर छायेरी ।
चोवा चंदन चारु चतुर अलि दम्पति गात लगायेरी ।।
पकर प्रेमकर प्रीतम प्यारी नारी रूप बनायेरी ।
भर भुज उर अनुराग रंगसों, अपने संग नचायेरी ।।
रचिकर कुंज लतन की नारिन युगवर डोल झुलायेरी ।
झुक झुक झोटा देत नवेली, हिलमिल रीझ रिझायेरी ।।
लख झांकी बांकी अलबेली, निज निज दृगन छकायेरी ।
रस में मगन भईं सब सुन्दरि उर आनंद बढायेरी ।।
पुनि बिनती करके गादीपर प्यारी पिय पधराये री ।।
सनमुख थाल भोग धर भामिन, कर मनुहार जिमायेरी ।।
नानाविधि पकवान मिठाई, हितसो सब पुरसायेरी ।
पावत प्रेममगन मन प्रमुदित अरस परस अधिकायेरी ।।
रुचि उपजावन बाल लाल कौ, गारी गीत सुनाये री ।
मुदित भए मनमें मनमोहन मंद मंद मुसकाये री ।।
जमुनोदक अचवाय आचमन, बीरी पांन चबाये री ।।

गल बैंया दे गये महल में, सैया बैठि सिहाये री ।।
चरन पलोटन करी चाकरी, अपने भाग मनाये री ।
सरस माधुरी मदन मनोहर, निज हिय मांहि बसायेरी ।।

होरी ब्रज की चाल में ।।

छैल होरी को हरि बनि आयो ।।
लीने संग सखा नंद नंदन, हिल मिल रसिया गायो ।
बरसाने वृषभांनु पौरि पर, डफ घनघोर बजायो ।।
सुनि धुनि सखी सहेली अनगिन, अपनो यूथ बनायो ।
खेलन चली फाग मोहन सों, गागर रंग भरायो ।।
श्री स्वामिनि गज गामिन गोरी, ऐसो मतो उपायो ।
भरकर रोरी थाल बाल बहु, रसिया जाय घिरायो ।।
चलन लगी पिचकारी चहुंदिसि, रंग अंग छिरकायो ।
अबिर गुलाल घुमड़ रह्यो भारी, मनुबादर सो छायो ।।
चमकत चपला सी अलबेली, नृत्त गान सरसायो ।
गोपीरस ओपी प्रीतमपर, केसर रंग ढुरायो ।।
गुलचन लगी गाल ब्रजबाला, छैला पनो भुलायो ।।
भागे ग्वाल बाल गलियन में, लख मोहन घबरायो ।।
पकर लाल लेगई भुजन भर' प्यारी चरन परायो ।
फगवा लियो कियो मन मानो, बहुविधि नांच नचायो ।।
शिव ब्रह्मा सनकादिक नारद, सारद पार न पायो ।
सो सर्वेश्वर सगुणरूप धर, करत भक्त मनभायो ।।

बड भागन बाला नंद लाला, अपने बस कर पायो ।
सरसमाधुरी श्यामसुंदर को, रसबस कंठ लगायो ।।

।। राम धमाल ।।

मोतें मिलजा तनक नवल गोरी ।।
तेरे कारण नवल किशोरी, बैठो आय विपिन ठोरी ।
नयन चुराये चली जातहो, करत फिरतचित की चोरी ।।
जो तू ठाडी नहीं रहे तो, मैं पकरूंगो बरजोरी ।
बहुत दिनन में आजनिहारी, खेंलोंगो तोते होरी ।।
गहवर बन इत भलो दाव है, मेरी तेरी हदजोरी ।
यह सुन सखी मंद मुसकानी, 'सरस माधुरी' हरि ओरो ।

,राग सारँग ।।

रोके मत मोहन दध दानी ।
जान अकेली करत डिठाई, कहा तिहारे मन मानी ।।
पर नारिन ते करत अचगरी, नई चढी तोको ज्वानी ।
बैयां छाड देहु नंद नंदन, कीजे ना ऐंचा तानी ।।
जो मन में होरी खेलन की, घर चल मेरे दिलजानी ।
तेरे मन की होंस निकासूं और करूंगी मिज़मानी ।।
मेरे तेरे प्रीत लगी है, काहूंते नाहीं छानी ।
'सरस माधुरी' प्रान पियारे, कीजै ना आना कानी ।।

होरी ग़ज़ल ।।

होरही कुंज में चल देख सखीरी होरी ।
खेले हैं फाग जुगल संग ले सखियां गोरी ।।

रंग पिचकारी चलाते हैं पिया प्यारी पर ।
भीजी तन सारी अली प्यारे को पकरन दौरी ।।
गह लिये लाल गुलचगाल को कहने युं लगी ।
नारि का रूप बना मसलैंगी मुख पर रोरी ।।
ढीट सरताज हुए आज हमारे बस में ।
करि हैं मनमानी नहीं चलने की अब बरजोरी ।।
सरपे घन श्याम के ढोरी है कमोरी रंग की ।
चोवा चन्दन को चरच करती हैं चित की चोरी ।।
गाती हैं गारी बजा तारी सभी हिल मिल के ।
कृष्ण को नाच नचा कहती हैं नंद की छोरी ।।
फगवा मंगवाय परे पाय प्रिया के मोहन ।
हा हा खिलवा के सखी सर्स हँसी मुख मोरी ।।

।। होरी ।।

मांझ ।

खेलन फाग आप के संग में, प्यारी जू चल आयो ।
फेंट गुलाल रंग पिचकारी, अपने संग में लायो ।।
रंग भरों न टरों काहू बिधि, करूँ सकल मन भायो ।
सरस श्याम होरी को रसिया, मैं निज नाम धरायो ।।

मांझ ।

ठाड़े रहो रसिक मन मोहन नीको फाग खिलाऊँ ।
पकर करों निज बस में अपने अंजन नैंन लगाऊँ ।।

लाल गुलाल मलूं मुख ऊपर गालन को गुलचाऊँ ।।
सरस माधुरी नार साँवरो संग बनाय नचाऊँ ।।

मांझ ।

ऋतु बसंत में कंथ कामिनी करत केलि श्री बन में ।
कुसमित लता निकुंज सघन में बिहरत हैं अलिगन में ।।
छयो अंग अनुराग जुगल के फाग रचन को मन में ।
सरस श्याम संग सोहत श्यामा ज्यों दामिनि नव घन में ।।

मांझ ।

अष्ट आलिन के यूथ अनेकनवय किशोर तन गोरी ।
अष्ट मंजरी परम सुंदरी भर लई रंग कमोरी ।।
अतर अरगजा केसर चंदन बूका बंदन रोरी ।
सरस माधुरी सप्त रंग की लिये गुलाल भर झोरी ।।

मांझ ।

सोरह सखी खड़ी सेवा में अष्ट अष्ट दोउ ओरी ।
करन कनक पिचकारी रंग की केशर गागर घोरी ।।
भरो रंग अनुराग दृगन में बिहँस करें चित चोरी ।
सरस माधुरी बोलत हिल मिल हो हो हो होरी ।।

मांझ ।

बीन मृदंग चंग सारंगी करतालन की जोरी ।
लय सुर राग मिलावत गावत साज बजावत गोरी ।।
सहज चलन नृत्त प्रगट कर अंग उमंग न थोरी ।
सरस माधुरी श्याम सुंदर सिर लै गागर रँग ढोरी ।।

।। मांझ ।।

धूधर छई गुलाल चहों दिस, मनो बादर रंग छाये ।
पिचकारिन रंग झर बरसत है, दंपति बसन भिजाये ।।
ऐसो अवसर पाय प्रिया प्रिय, भुज भर हिय लपटाये ।
सरस माधुरी अधर सुधारस, हिल मिल पी हर्षाये ।।

।। मांझ ।।

फाग मांहि अनुराग भरे पिय, नच बहु भाव बतावें ।
नैंन सैन दे सनमुख निरतें, रस बस रसिया गावें ।।
प्रीतम पकर सखी गुलचा दें, लंगर कह बतरावें ।
सरस माधुरी नारि सांवरी सहचरी बना नचावे ।।

।। गजल ।।

खेलें हैं फाग श्यामा श्याम, सजनी आज ब्रज बनमें ।
भरे अनुराग में दोऊ उमंग रह्यो प्रेम अति मन में ।।
इतमें स्वामिनि राधिका उत पिय श्याम सुजान ।
हँस हँस भृकुटी तान कर, नैंन चलावे बान ।
रचो संग्राम होरी को, खडे ज्यों शूरमा रनमें ।।
पिचकारिन में रंग भरत, तक मारत सरकार ।
भीज रहे रस रंग में, लिपट भरे अंकवार ।।
करे चुंवन चतुर मुख को, उमँग आनंद अंगन में ।।
हो हो हो होरी बोल के, फेंकें अबिर गुलाल ।
रोरी मींडे मुखन पर, गोरी गुलचें गाल ।।

नचैं गति ले नई गागर रसिक रिझवार अलिंगनमें ।।
गावें रसिया राग बहु, अरु तोरत हैं तान ।
उचक उचक लचकाय कटि चञ्चल चतुर महान ।।
मटक के मनहरें प्यारे परे पिय प्रेम बंधन में ।।
सारंगी सुर सो बजें ढोलक चंग मृदंग ।
झाझन की झनकार सुन उपजै मैंन तरंग ।
परम आनंद प्रगटो है, अनूपम आय फागुन में ।।
फगुआ बांटें परस्पर मेवा मिश्री बाल ।
सरस साधुरी रंगसो भरकर कंचन थाल ।
कहै जै जै जुगल जीवन रहे ध्यान नित नैनन में ।।

होरी ठुमरी।

पिचकारियां नमारौ सैयां श्याम सकुचाऊँ ।।
देख रही ब्रज नारी सारी, मैं मन में घबराऊँ ।
छाडो लंगर गैल हमारी अपने घर मैं जाऊँ ।। सैयां श्याम०
छैस छली छतियां मत मसको तुमरे हाहा खाऊँ ।
सास ननद सुन देंगी गारी तिनते मैं डरपाऊँ ।। सैयां०
नीवी बंद न खोलो नट खट, सैनन में समझाऊँ ।
लाज जायगी गुरुजनन में हरजाई कहलाऊँ ।। सैयां०
मुख चूमो मत मोहन मेरो, बिनती कर सिर नाऊँ ।
सरस माधुरी शरम करो कुछ, मैं तुमरे बलि जाऊँ ।। सैयां०

गजल ।।

रंगूंगी रंग में तुम्हें श्राज श्याम होली मैं ।
मलूंगी मुख पे तेरे है गुलाल झोली में ।।
चुराई गेंद मेरी कहते हो तुम छैल छली ।
छुपाई मैंने कहां देखते हो चोलीमें ।।
सताई तेने लाल सारी सखी गोकुल की ।
उडाई सब की हँसी बोली श्रौर ठठोली में ।।
घात दिन रात करो डरते नहीं दिल में तुम ।
जानली बात तेरी सुनलो नहि भोली में ।।
चूम मुख तेरा गुलच गाल बजाकर तारी ।
सरस यह बात सही श्रपने दिल में तोली में ।।

पद होरी चालमूंगा ।।

सखीरी खेलें राधा मोहन फाग,बरस रही रंगझरी एरी हाँ ।।
सखीरी गावें श्रली मिल राग, भाग श्रनुराग भरी एरी हाँ ।।
सखीरी बाजे चंग मृदंग, सारंगी सप्त सुरी एरी हाँ ।।
सखीरी नाचै नवला नार,बतावें सब भाव खरी एरी हाँ ।।
सखीरी उमड़्यो हे श्रबीरगुलाल,लालभयेडगरगरीएरीहाँ ।।
सखीरी पकरे श्यामा श्याम, उढ़ाई सिर चुनरी एरी हाँ ।।
सखीरी श्रंजन नयनन श्रांजकें, गुलचे गाल हरी एरी हाँ ।।
सखीरी जुगजुग जीवो जुगल,श्रसीसत श्रली खरी एरी हाँ ।।
सखीरी सरस माधुरीकहत, धन्य यह दिवस घरी एरी हां ।।

पद होली धुनगाली ।।

हिल मिल राधा सरस बिहारी खेलैं होरियां हो ।
रंगीलो फाग महीनो आयो,ब्रज की नारियां के मन भायो ।।
रंगीलो केसर रंग बनायो, भरी कमोरियां हो ।। हिल०
राधिकारानीजी चलि आई, झुंड सखियन के संग में लाई ।
हो हो होरी धूम मचाई, सांवरि गोरियां हो ।। हिल०
आये रसिक बिहारीलाल, लीने संग सखा और ग्वाल ।
बजावें ढफ ढोलक करताल,जहां ब्रज खोरियां हो ।। हिल०
नाचैं गावैं रसिया राग, परसपर प्रगट करैं अनुराग ।
रचायो सबही सुन्दर फाग, मलैं मुख रोरियां हो ।। हिल०
चलैं चहुं ओर रंग पिचकारी, कुमकुमा मारैं तक बनवारी ।
भिजोये सबके लहंगा सारी, सभी रंग बोरियां हो ।। हिल०
पकरलिये ललिताने नंदलाल,छीन लिये मुकुट पीतपटमाल ।
बनाये नारी श्री गोपाल, कुँवरि किशोरियां हो ।। हिल०
नचाये नटखट नवल किशोर, मलाई माखन चित के चोर ।
गुलच के गाल सखी बरजोर,कहे नन्द छोरियां हो ।।हिल०
प्रगट्यो परमानन्द रसाल, परस्पर निरतें गोपी ग्वाल ।
निरख छबि दम्पतिहुई निहाल,करेचित चोरियां हो ।। हिल०
कहें मुख जयजयजयबलिहार, जुगन जुगजीवो जुग सरकार ।
करो नितलीला ललित बिहार,निकुंजन ढोंरियांहो ।। हिल०
सरस माधुरी सखीकर प्यार, आरती जोई कंचनथार ।
जुगल के अंगन ऊपर वार, दोऊ कर जोरियां हो ।। हिल०

पद होरी धुन नाटक ।।

खेलैं फाग राधे श्याम सखी फागन में ।।
मतवारे प्रेम रंग में रसिया लड़ेती लाल ।
पिचकारी रंग भर के मारी मदन गोपाल ।
श्यामा सलोनी फैंके है मूठी अबीर गुलाल ।
बन वृक्ष कुंज पुंज लता सब ही हुवे लाल ।
मची होरी सखी वृन्दावन बागन में ।।
मारें हैं रंग कुम कुमा बृज गोप गोपी वाल ।
हँस हँस उमंग रंग भरे निरतैं देदे ताल ।
रोली मलैं हैं मुख पर करते हैं रस के ख्याल ।
लख फाग सुख को सुरनर सब ही हुए निहाल ।।
गावें रसिया रसिक नये रागन में ।।
बीना मृदंग बांसुरी बजते हैं साज बाज ।
डफ ढोल और मृदंग की इक रस मिली आवाज ।
सुध बुध बिसारी सबने त्यागी है लोक लाज ।
आनंद रस में है मगन सारा सरस समाज ।
यह सुख लिखा सखियन के भागन में ।।

आशीर्वाद होरी राग सारंग ।।

चिरजीवो युगलाल प्यारी ।
भरि अनुराग फाग नित खेलो, तकि तकि मारो पिचकारी ।।
लाल गुलाल मलो मुख हिल मिल, भरो परस्पर अँकवारी ।
उमगि भरे अनुराग रंग सों, रीझि रहो दोउ रिझवारी ।।
वृन्दाबन की कुंज निकुंजन, करहु केलि आनँद कारी ।
निरख नैन मन मुदित होंहि हम, करैं प्राण सब बलिहारी।।
ताल मृदंग बजाय चावसों, नांचि गाइ दैं करतारी ।
सरस माधुरी बसो दृगन में दम्पति की छबि इकसारी ।।

पौढ़ानी होरी राग विहाग ।।

फाग खेल खिलवार प्रियापिय, हिलमिल रंग महल को जावें।
गलबैयां दीने रंगभीनें, हँसि कसि भुजहि परे लपटावें ।।
चंचल नैन बैन मृदु बोलन, केलिकलोलनचित चुरावें ।
सोंधे सनें सगवगे बागे, अंगन में अद्भुत छबि पावें ।।
युगमुखचंदगुलाल रह्यो रमि, कलितकपोलगोल झलकावें ।
बिंबाधर दाड़िम दसनावलि, मंद हँसनि कर मन ललचावें।।
रमकिझमकिझुकिचलतमंदगति, छुमछुमनूपुरशब्द सुनावें ।
लटकत मटकत मदन मनोहर हाव भाव कर हेत जनावें ।।
रंग भरी सहचरी सलौनी, कर बहु प्यार सेज पधरावें ।
सरसमाधुरी जान सुअवसर, मादक बीरा पान पवावें ।।

होरी राग विहाग ।।

जुगल वर हिलमिल प्रीति पगे ।
अति अनुराग रंग में रसिया, निसि में नवल जगे ।।
होरी खेल खेल कर दम्पति, अतिशय प्रेम पगे ।
सरसमाधुरी मदन जीत गढ़, भुज कसि कंठ लगे ।।

होरी विहाग ।।

प्रिया पिय छबि लखि छकनि छकाई ।
फाग खेल खिलवार परस्पर तनमन मुदित महाई ।।
युग्मचंद सहचरी चकोरी, प्रेम प्रीति प्रगटाई ।
सरसमाधुरी साँवरि गोरी, जोरी दृगन बसाई ।।

प्रात उत्थान होरीराग कालगडा ।।

भोर उठि बैठे युगलदयाल ।
अति अँगरात गात गरबीले, फबि रह्यो बदन गुलाल ।।
हो हो होरी बोल लाडिले, करत अनोखे ख्याल ।
रजनी रंग भीने दोउ रसिया रूप रासि छबि जाल ।।
चितवनि हसनि बचन मृदबोलनि, बिबस करत नव बाल।
सरसमाधुरी बसी हिये छबि, निरखत भई निहाल ।।

अभिलाष विनय होरी राग काफी ।।

कुँवरि किशोरी कांना भूल मुझको मत जाना ।।
जुगल बिहारी प्रीतम प्यारी मेरी प्रीति निभाना ।
लखि कुचाल कलियुग की लालन मुझे नहीं बिसराना ।
सुनों तुम कृपानिधाना ।।
आय फँसी फंदे करमनके इन सों बेगि छुड़ाना ।
रक्षक आप बिना नहि कोई यह निश्चय कर जाना ।
आय मम बिपति मिटाना ।।
तिलक छाप तुलसी गल माला पहरों तुमरो वाना ।
रखिये टेक भेख की प्यारे हों में निपट नादाना ।
बिमुख नर नांहि हँसाना ।।
बहुत दिनन सों तरस रही हूं दम्पति दरस दिखाना ।
दीन हीन पर करो दया तुम ए हो परम सुजाना ।
चित्त तुम ओर लुभाना ।।
ललचि रह्यो चित मोर लालची रूप अनूप फसाना ।
तलफत हूं तुम बिन मैं निसि दिन खबर लीजिये आना ।
मुझे नांहीं तरसाना ।।
नंदग्राम गोवर्द्धन गोकुल वृन्दाबन बरसाना ।
ब्रजमंडल में बास दीजिये रसिकन को जहां थांना ।
करों तिन सँग गुन गाना ।।
हाय हाय मुख सों नित निकसत बिकल भई मम जाना ।

निरदयता तजि मिलो मयाकर बिरह बियोग मिटाना ।
करो मेरो मन मांना ।।
बिन देखें दिल धरत न धीरज यह हठ यानें ठाना ।
चरन कमल बिन ग्रौर न कोई दूजो ठौर ठिकाना ।
नहीं तुम सों कुछ छाना ।।
माँगों मुक्ति नहीं मैं तुम सों मनमें मत सकुचाना ।
स्वर्ग ग्रादि लौकिक जितने सुख तुम ऊपर कुरबाना ।
इन्हों से ग्रलग हटाना ।।
प्रकट मिले ज्यों नित भक्तन सों करके प्रेम महाँना ।
वैसे ही मेरी सुधि लीजे कीजे कुछ न बहाना ।
समझि मन लेहुसयाना ।।
लकुट मुकुट मुरली पीतांम्बर सज धज सकल सजाना ।
श्रीस्वामिनि ललितादिक सजनी ग्रपनें सँगमें लाना ।।
ग्रकेले उठ मत ग्राना ।
मुख सों कहि मृदु मींठी बतियां छतियां मोहि लगाना ।।
मनमाने सोइ टहल महल की मुझसे ग्राप कराना ।
चरनकी चेरी बनाना ।।
हाजिर रहूँ हुजूर ग्रापके करूं सकल सनमाँना ।
केलि कुञ्जकी नैंन निहारों मंद मंद मुसकाना ।।
सुनों रसगाना बजाना ।
रास विलास हुलास जहाँ नित ग्रमरलोक ग्रस्थाना ।।

श्री सुख सखी श्याम चरन्दासी मोकों तहां बसाना ।
यही मन आस पुराना ।।
श्रीगुरु अलि बल देवी दयानिधि, तिनसों मेल मिलाना ।
रचि रचि देऊं पांन की बीरी, हँसि हँसि कर तुम पाना ।
प्रसादी मुझे दिलाना ।
जब लगि जीऊं जगमें जगत पति, सुमरन भजन कराना ।
बिमुखन की संगति सों प्यारे, नित प्रति मोहि बचाना ।
छुटे नहि तुमरो ध्यांना ।।
पंछी प्रांन तजे जब तनको, नैनों माँहि समांना ।
सरसमाधुरी मेरी सुरति को, निजछबि में अटकाना ।
अंत कहि नहीं भटकाना ।।

श्रीयुगुल विनयहोरी राग काफी ।।

जुगल निकुंज बिलासी सुनो, बिनती सुखरासी ।। टेक ।।
बहुत दिनन सीं अंखियां मेरी, तुम दरशन की प्यासी ।
दीन जान मोहे मिलो आन के, कीजे नांहि निरासी ।
परी गल प्रीत की फांसी ।
संतन मुख सों सुनी प्रशंसा, श्री दंपति रसरासी ।
अवगुन भूल न देखत जनके, मिलत आय अनयासी ।
देत रस प्रेम प्रकासी ।।
सेउं संतत चरनकमल, शुचि परमानंद हुलासी ।
निरखूं नित नव बदन चंद बिब, रसकेली गुनरासी ।

रहत मन नित अभिलासी ॥
आन देश को भ्रमण छुड़ावो, करो बृन्दाबन बासी ।
सेवा श्रीअंगन की लीजे, दीजे निकट निवासी ।
जान मोकों निजदासी ॥
रहूं हुजूरी रंगमहल में, नितप्रति करूं खवासी ।
सरसमाधुरी सरन जानके, करो विरद बिश्वासी ।
जगत में होय न हाँसी ॥

श्री फूल डोल उत्सव॥

दोहा ।

श्री शुक मुनि उर ध्यान धर, चरण दास सिर नाय ।
श्री सतगुरु बलदेव जू, सब विधि करैं सहाय ।।
उत्सव फूल हिंडोल अब, लिखूं श्री महाराज ।
सरस माधुरी शरण के, सारो सब मन काज ।।

पद राग खमाच ।

झूलत डोल रसिक दम्पति वर ।
श्रमगत दूर करत होरी को, लपट रहो बिब अंक परस्पर ।।
धीरे झोटा देत सहचरी, सुख पावत स्वामिनि वंशीधर ।
झीनेसुरनमिलायसखीगन, नाचि रिझावत जुगलगान कर।।
ताल तमूर बीन मृदु बाजत,मनु आनंद को लाग रह्यो झर।
भीज रहे नव नेह मेह में, पुलकि गात मुसकात मनोहर ।।
श्री बृन्दाबन कुंज सदन में, उमंगरह्यो आनंद अधिकतर ।
सरस माधुरी रूप छटा छबि छाई अलियन नयन नीर भर ।।

पद राग झंझोटी

डोल झूल होरी श्रम हरिये ।
हिलमिलनिकटब्राजपियप्यारीहियकीहिलगप्रगटअबकरिये ।।
पुलक प्रेम सों अङ्ग परस्पर, आलिंगन चुम्बन रस ढरिये ।

सखियन हृदय सरोवर मांहो, आनंदअम्बु प्रगट प्रियभरिये।।
लोक वेद की लाज कान कुल, ताको तुरत दूर अब धरिये ।
मनमाने मन हरन मनोरथ, अलियन के सन्मुख बिस्तरये ।।
सहचरिगनसुख देन दयानिधि, नयनन ते नेकहु नहिं टरये ।
सरस माधुरी कुंज सदन में, रति कर मान मदन को दरये।।

पद राग श्याम कल्यान ।

झुलवत डोल प्रिया को प्यारो ।
डांडी डोल गहे कर कमलन, झोटा देत प्राण आधारो ।।
विनय बचन बोलत स्वामिनि सों, होरी में श्रम पायो भारो।
ताको दूर करन के कारण, सफल मनोरथ करो हमारो ।।
कुँजहरितसुन्दर कुसमनकी, अरुयमुना को कलित किनारो ।
कमलन की मकरन्द मनोहर, क्यारी न्यारी फूल निहारो ।।
गावत अली भली बिधि गीतन, लयसुरतालमिले इकसारो ।
नाचत नवल नवेली हेली, करत केलि कोतूहल भारो ।।
परम प्रीति प्रीतमकी लखप्रिय, रमक लाल लेनिज उरधारो।
निरख नयन सों सरस माधुरी, अपनो तनमन धनसब वारो।।

पद राग पीलू ।

झूलत फूल डोल सुखरासी ।
श्रीललितादिबिसाखासजनो, झुलवतदम्पति प्रेमविलासी ।।
झोटा देत चपलसहचरितब, झिझकतप्रियापरमगुणरासी ।
लपटलगत प्रीतमकी छतियन, ज्यो घन में चमकतचपलासी।।

अंग उमंग रंग रति उलझत, छलकत छबि बरसातघटासी।
भीजत नवल नेह बूँदनमें, सनमुख सरस माधुरी दासी ।।

पद राग धनासरी ।

फूल डोल झूलत दोउ फूले ।
फूली लता ललित लख हेली, हरी हरी कालिंदीकूलें ।।
फूल फूल सहचरी झुलावत, गावत गुण तन मन सुध भूलें ।
फूले कमल सरोवर मांहीं, तिनहूं की सौरभ सुखमूले ।।
फूल रही चहुँदिस फुलवारी, क्यारी कुसुम एक समतूले ।
सरसमाधुरी लखि दम्पतिछबि,मिटीसकल तन मन की सूलें।।

पद राग मलार ।

झूलत डोंल जुगल सरकार ।
करकमलनगह ड़ोर ड़ोलकी, पुलकित करत परस्पर प्यार।।
फूली लता छई तहाँ छबिसों, लहकत पवन परसतिन डार ।
सुमन सुगंध घुमड रही जिततित, मांते भृंग करत गुंजार ।।
फूलन के सज तन आभूषन, बैठे फूल दुकूल सँवार ।
फूल फूल तन मन में आली, झमक झुलावत बारम्बार ।।
फूल छरी फूलन गुल दस्ता, लिये खडी सन्मुख सकुमार ।
फूल वारि बरसावत सजनी, जय जय बोलत बचन उचार।।

फूली सकल सहेली मनमें, निरखत केली रंग बिहार।
'सरस माधुरी माल फूल की, रीझ दई दम्पति रिझवार।।

पद राग काफी।

झूलत डोल लाल पिय प्यारी।
झूमक झुलावत हर्ष शुक सखी, चरनदासि आलीसकुमारी।।
ललित लतन की कुंज पुंज रस गुच्छ प्रसून परम रुचिकारी।
म्हक रही मकरन्द माधुरी, बोलत पक्षी बिबिध प्रकारी।।
भ्रमर करत गुंजार सुहावन, सौरभ मत्त फिरत सुखकारी।
अमल कमल जमुना में प्रफुलित, उडत पराग महामुद कारी।।
केसर कुमकुम चोवा चन्दन, छिरकै अलिगन पत्ररु डारी।
जल गुलाब केवडा केतकी, सींचे चहुंदिशि मिल सकुमारी।।
त्रिबिधि समीर बहत सुखदाई, दम्पति हर्ष बढावन हारी।
सारस मोर चकोर कोकिला, तिनकी बोलनडोलन न्यारी।।
गावत गीत प्रीत प्रगटावत, साज बजावत सुन्दर नारी।
चमर मोर छल करत सहेली, जय जय बोल होत बलिहारी।।
अंसन भुज दीन्हे रंग भीने, ब्राज रहे श्री जुगल बिहारी।
पुलकित गात बात मृदु बोलत, मंदबिहँसिलपटतअंकवारी।।
रस में मगन लगन दोउन की, लखिसहचरी भई मतवारी।
'सरसमाधुरी' छबि अंगन की, इकटक नयनन रही निहारी।।

दोहा

चंदन चोकी पर धरयो, भर कच्चन को थार।

भोग सामग्री बिबिधिबिधि, ग्रारोगत सरकार ।।

पद ।।

सखियन बन फल भोग लगाये ।।
मिष्ट ग्राम ग्रमरूद ग्रंगूरी, ग्ररु ग्रनार ले सरस पवाये ।
नारंगी केला ग्रोर जामुन, सेव फालसा परम सुहाये ।।
पावत प्रेम मुदित प्यारी पिय, सखियन मन ग्रानंद बढाये ।
'सरसमाधुरी' दीन्ही बीडी, रंग महल दम्पति पोढाये ।।

सिंजारा उत्सव

पद राग पीलू वरवा ।।

रचीछै राधे मेहँदी थाके नीकी ।
सुन्दर कर कमलन में सोहत, सुख उपजावन जीकी ।
माँग सिंदूर मनोहर रेखा, मस्तक राजे टीकी ।।
अंजन नैन मैंन मद गंजन, वारी मन्द हँसी की ।
नकबेसर मुख पान ललाई, मोहन हारी पीकी ।।
सुरनारी पटतर न तिहारी, लागत हैं सब फीकी ।
चरन महावर सरसमाधुरी, रचना कंज कली की ।।

पद श्याम कल्यान ।।

सिंजारा रो सुन्दर दिन छै आज ।
रंग महल में मंगल उमग्यो, सखियन कियो छै समाज ।।
निरतत घूमर देत नागरी, बजत साज अरु बाज ।
गावत गीत सुहाग सहेली, सज सोहन तन साज ।।
हुलसी फिरत भवन के भीतर श्रीराधे सिरताज ।
सरसमाधुरी मगन भई मन मिलि हैं श्रीबृजराज ।।

पद राग गोरी ।।

सिंजारो श्यामा सोह्यो सुन्दर थाने ।
गोरलरी छबि देखन मोहन आया छै छाने छाने ।।

सखी सांवरी रूप बनायो विरम रह्यो बरसाने ।
हिलो मिलो रस भिलो रसिक संग तब म्हा को मन माने।।
दर्शन कर उर आनंद भरस्याँ निरखांला रसियाने ।
सरस माधुरी' मोज महल की दरसावोजी म्हाने ।।

पद राग सोरठा ।।

आर्जसिजारारी रैन रसीली सरसबिहारी म्हारे महलांआसी।
रस छकियो मोहन मन बसियो हँसकर हेली म्हाने
हिवडे लगासी ।।
सखी सहेली म्हारा मनरी मेली भाग सुहाग गीत
मिल गासी ।
'सरसमाधुरी' अधर सुधारस रसिक छबीलो म्हाने
भुज भर पासी ।।

पद जीमन मिजमानी ।।

कुँवर नंदजी का श्रीमहाराज ।
आया छै मिजमान प्राणपति, बरसाना में आज ।।
करो सिजारो उच्छब प्यारो, हिल मिल सखी समाज ।
कर मनुहार जिमावो मोहन, जो ब्रज को सरताज ।।
डफ ढोलक करताल तमूरा, सबही बजावो साज ।
सरसमाधुरी श्याम रिझावो तजो लोक कुल लाज ।।

पद पोढावनी ।

आज सिंजारारी रैन सुहावन मन मोहन म्हारे महलां पधारो।
खमांजी खमां बलिहारी बिहारी ढोला अछन अछन
पगप्यारा जी थे धारो ।।
सेज बिराज करोजी रसबातांमीठामीठाबचनविनोदउचारो ।
हँस हँस लेवाँजी अधर रस रसिया छतियन लिपट करोजी
रंग भारो ।
आलिंगन परिरंभन चुम्बन केलिकला कोतुक बिस्तारो ।
सरसमाधुरी सुकृत उदय भयो जाग्यो छै छबिला छैला
भाग हमारो ।।

पद राग सोरठ ।

मदनमोहनमनहरनबिहारीजीमांझलीरातम्हारेमहलांआया ।
पलक पांवडा कर म्हारी सजनी मारग मांही फूल बिछाया।।
आदर कर उठ आलिंगन कर पलकां पर प्रीतम पधराया ।
करी आरती अति उमङ्ग सो निरख सरूप परम सुख पाया।।
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन बहुबिधि लाडलडाय जिमाया ।
जमुना जल अचवाय पानदे अंगन मांहीं अतर रमाया ।।
सखी सहेली सकल कुंज की हिलमिल आनंद मङ्गल गाया।
अधरामृत सन्मान श्याम को हावभाव कर बहुत रिझाया ।।
सरसमाधुरी रस बिहार कर बालम बांका म्हे बिलमाया ।

श्री गणगोर उत्सव

पद गणगोर ।।

गवर पूजन चली आज राधिका नवेली ।
चलत ज्यूं गयन्द चाल हिल मिल गल बैयां डाल ।।
हँसत करत ख्याल संग साँवरी सहेली ।
ललिता चित्रा सुजान रंग देवी गुन निधान अष्ट अली
प्रिया प्रान आन भई भेली ।।
चन्दन फल फूल माल धूप दीप धरे थाल हर्षत सब ।
चली बाल सुन्दर मन मेली ।।
जमुना जल झारी कोइ लिये अतर दान प्यारी गोपिका ।
कुमारी सर्व गर्व गुन गहेली ।।
भान लली रूप राशि श्यामां छबि तन प्रकाश अंगको ।
उजास अधिक चांदनी सी फैली ।।
पहुंची सब भवन जाय गिरजा शिव सीस नाय ।
सरस माधुरी बिनती कर बोली अलबेली ।।

[२]

श्यामाजी थाकी सजी छे सलोनी गणगौर ।
नख शिख भूषन बसन सुहावन केसर चंदन खोर ।।
मंद हँसन मन फसन दसन द्युति चपल नैन की कोर ।
मोह लियो छें मन सखियन को कर जोवन को जोर ।।

ग्राये नंद कुँवर छबि निरखन भान बबा की पौर ।
लख लोचन बिन मोल बिके पिय जिन्हें कहत चितचोर ।।
गावों गीत पुनीत प्रेम सों घूमर देहु बहोर ।
सरस माधुरी मिलो जी श्याम सों मानो मोर निहोर ।।

[३]

सजी छे श्यामा सुन्दर गौर तिहारी ।
रूप रंगीली ग्रोर चटकीली लागी छै ग्रति प्यारी ।।
शोभित बसन गुलाबी तन में भूषरण रतन ग्रपारी ।
नवल किशोर गोरी भोरी नख शिख सुधर संवारी ।।
छबि को निरख छकी है सारी भान नगर की नारी ।
नचत नागरी फूंदी देके गावें देकर तारी ।।
ग्राया छै मिजमान प्रानपति प्रीतम कुंज बिहारी ।
महल बुलाय मिलो रसिया सो गावो रस की गारी ।।
ग्राज भलो दिन कियो बिधाता लिपट लगो ग्रंकबारी ।
सरस माधुरी मोजां मानो हिल मिल सखिया सारी ।।

[४]

किशोरी प्यारी भान दुलारी, ग्रावो पूजन चलिये गनगोर ।
ग्राज भलो दिन भान लडेती, चलोजी उठो भई भोर ।।
हरी हरी दूब फूल भर दोना, एजी म्हे ल्याईछां बागां तोर ।
धूप दीप मिष्ठान थाल भर एजीम्हे ग्रगर चंदन लियोघोर ।।
पूजा कर ग्रति नेम प्रेम सों, एजी बिनती करां दोउ करजोर।

गौर रिझाय 'सरस' बर पावाँ, नन्द जीरो नवल किशोर ।

(५)

रंगीली राधे गोरल पूजन चालां ।।
धूप दीप दे करां आरती, हिल मिल घूमर घालां ।।
गावां गीत प्रीत प्रगटावां, फूल गुलाब उछालां ।।
फूंदी देदे नृत करां म्हें, गिरिजा सहज रिझाल्यां ।।
सदा सुहाग भाग वर पावां, मन की मोज मनाल्यां ।।
'सरस माधुरी' जाचां गौरल प्रेम पदारथ पाल्या ।।

(६)

सहेल्यो म्हारी चालां जी पूजन गनगोर ।
फूल माल पहरावाँ सजनी चंदन चढावां घिसघोर ।।
मेवा मिश्री भोग लगावां विन्ती कराँ जी करजोर ।।
सरस माधुरी मोहन सोहन मांगो बर चित चोर ।।

(७)

छबीली छबि गोरल राज तिहारी ।
भूषन बसन सजे नख शिष सो लागो छो अधिक प्यारी ।।
सदा सुहागन अति बड भागन सुन्दर रूप उजारी ।।
सरस माधुरी शोभा थांकी निरख महेश्वर वारी ।।

(८)

धन धन गोरल जी थांका ईश्वर छै जी भरतार ।
सदा सुहागन अति बडभागन शोभा अपरम्पार ।।

कैलाशी बासी अविनाशी सुन्दर परम उदार ।
मोह लियो महादेव महेश्वर रूप मोहिनी डार ।।
निश दिन मद मातो इतरातो निरख रूप बलिहार ।
संग रहे छिन तजे न थाने जाने सब संसार ।।
पूजन कर धूप दीपक धर हिल मिल गोप कुमार ।
फूल पान मिष्टान्न चढ़ावां पहरावां गल हार ।।
है प्रसन्न वरदेवो दयानिधि श्री गिरिजा त्रिपुरार ।
अलबेलो छैलो वर पावां मोहन नंद कुमार ।।
जनम जनम पति मिले जी श्यामघन मांगा म्हे गोदपसार ।
दीजे गौर महेश कृपा कर यह बिनती उरधार ।।
सरस माधुरी कहै जोरकर आज बड़ो त्योहार ।
वेग मिलाय मया कर म्हाने सांवलयो सरदार ।।

यहां ही रहो यहा ही रहो यहा ही रहो
बिहारी बाका यहा ही रहो जी ।
बाई राधा जीरा प्यारा भरतारबिहारी बाका यहा हीरहोजी।
थांकी झांकी लखि भई मतवारी बिहारी बांका ।।
मीठी बोली थाकी लागे म्हाने प्यारी बिहारी बांका ।
थांकी चितवन काम कटारी विहारी बांका ।
म्हाका हिवडा में कसके करारी बिहारी बांका ।।
थासू लगी छै लगन गिरिधारी, बिहारी बांका० ।।
लैरां राखो म्हाने छैला रिझवारी, बिहारी बांका० ।।

थाने गांवा म्हे रसीला रस गारी बिहारी बांका०
थांसू मिलस्यां म्हे भर अंकवारी बिहारी बांका०
म्हे तो करस्या जी सेवा मिल सारी बिहारी बांका०
म्हाने कीजे नहिं पल छिन न्यारी बिहारी बांका०
म्हाने थाको छै भरोसो बडो भारी बिहारी बांका०
म्हांसू वोलो दिल खोलो बलिहारी बिहारी बांका०
थाकी सरस माधुरी हितकारी बिहारी बांका०

(१०)

आया छै प्यारी प्रीतम कुंज बिहारी ।।
निरख रहैं गोरल की शोभा रीझ रहै रिझवारी ।।
झांकत महल झरोखा ओरी, अति ही बारम्बारी ।
शीतल करो नैन नागर के, देहु दरस बलिहारी ।।
लेहु बुलाय महल में बालम, करो जी बिबिध मनुहारी ।
अतर पान सन्मान श्याम को, लीजे निज उर धारी ।।
राखो रैन रसिक रस बस कर, करो केलि सुखकारी ।
'सरस माधुरी' सेवा करस्या कह अभिलाष हमारी ।।

(११)

रसीली राधे रसिया छैल गुमानी ।।
निरखन कों गनगोर नवेली, आयो छे छलियो छानी ।।
सुन बिनती सखियग की श्यामा, लैन गई अगवानी ।
मिली मया कर मन मोहन सों हिय मांही हुलसानी ।।

महलां में लेजाय चावसों केलि करी मन मानी ।
मुदित भई लखि 'सरस माधुरी' छबि के माहिं छकानी ।।

(१२)

पद भोग ।।

जुगल वर जीमो जीवन प्रान ।
कंचन थाल बिबिधि सामग्री, नाना बिधि पकवान ।।
षट रस व्यंजन मनके रंजन, शाक अनेक बिधान ।
आरोगो अलबेले दोउ, अतुलित कृपा निधान ।।
जो रुचि होय लीजिये सोई, करो न सकुच सुजान ।
दूध मलाई सीता मिलाई, पीवो प्रीत पिछान ।।
जमुना जल अचवो आनंद सों, पावो बीरी पान ।
'सरस माधुरी' शरण चरण की, दासी लीजे मान ।।

(१३)

पद आरती ।।

आरती कुंज नृपति की कीजे ।
नवललाडिली लाल नवेले, नयन निरख छबिको छकलीजे ।।
गौर श्याम अभिराम धाम सुख, रूप अनूप रसामृत पीजे।
'सरस माधुरी' जुगल जीवन पर, तन मन प्रान वार सबदीजे।।

(१४)

पद सैन ॥

जुगल वर करोजी सैन सुख चैन ।
हिल मिल मौज करो मन मानी, रंगीली सिजारारी रैन ॥
बिल सो बिबिधि बिलास रसिक वर, मर्दन मद रति मैन ।
प्रेम पुलक परियंक अंकभर, अधर सुधारस लैन ॥
रंग महल में पोढो प्यारे, अलियन आनंद दैन ।
'सरस माधुरी' लखें रंधूसों सफल करैं निज नैन ॥

श्री रंगीली पंचमी उत्सव ॥

दोहा

बंदो श्री सद्गुरू चरण, शुक मुनि चर्णं ही दास ।
सरस माधुरी शरण की, पूरहि मन की आस ॥

पद राग गनगोर ॥

रंगीली पांचे लागे छै म्हाने प्यारी ।
गवर पूज पति पायो श्यामा प्रीतम कुंज बिहारी ॥
आया प्राणनाथ महला मैं कीनी छै अति मनुहारी ।
हिल मिल रंग कियो छै रसियासूं लिपट लगी छै अंकवारी ॥
विरह वियोग गयो सजनी लह्यो सुख संजोग अपारी ।
मन में बसी छै जी माधुरी मूरत टरत नहीं जी अब टारी ॥
अचल सुहाग कुवरि राधे को यह ही छै असीस हमारी ।
सरस माधुरी बर बिधना सों मांगजी गोद पसारी ॥

पद ॥

रंगीली पांचे रंग रह्यो सरसाय ॥
रंग रसियो मोहन मन बसियो, रह्यो छे द्दगन में छाय ॥
हास बिलास हुलास रास रस प्रगट भयो छे आय ।
मंगल मोद बिनोद बढ़्यो छै, आनंद अति अधिकाय ॥

सुख संजोग सुहायो सैयो महारी, मुख से कह्यो न जाय ।
पुलकत प्रेम उमंग अंग में मन में गयो छै समाय ।।
निशि दिन नेह सहित दम्पति को, सेवांजी लाड लड़ाय ।
'सरसमाधुरी' छबि नित निरखां, गांवाजी गुण हर्षाय ।।

पद भोग ।।

भोजन करत भाँवते प्यारे ।
छप्पन भोग छतीसों ब्यंजन, षटरस मिठरस न्यारे न्यारे ।।
सामग्रा सखरी अनसखरी, नाना शाक अनेक अचारे ।
सरसमाधुरी' रस के लोभी, लेत देत मुख ग्रास न हारे ।।

आरती ।।

रंग पंचमी आरती बारी ।
कंचन थाल बाल घृत बाती श्री अंगन के ऊपर लारी ।।
करत पान दृग छटा माधुरी, पीवत अधर मधु पिय प्यारी ।
'सरसमाधुरी' छबि दम्पति पर, दीनों तन मन सरवसवारी ।।

पद सैन ।।

सैन भवन गवने पिय प्यारी ।
पुष्पन सेज सजी सहचारी, तापर पोढे रसिक बिहारी ।।

रैन रंगीली बिलसत दम्पति,अरस परस भरभर अंकवारी ।
रंधुन लख सुख, 'सरसमाधुरी' निजकर मूंदी कुंज किवारी।।

श्रीराम जन्मोत्सव ॥

दोहा

श्रीगुरुचरण सरोज रज, निज हृदय में धार ।
राम जन्म पद लिखत हूं, अति आनंद दातार ॥

पद (बधाई राग भैरवी)

आज नृप दशरथ के आनंद ।
प्रगट भये सुत चार मनोहर, अद्भुत आनंद कंद ॥
फूले सकल अयोध्या बासी, निरखत रघुकुल चंद ।
सुरनर मुनि जन सब हर्षाये, दूर गये दुख द्वंद ॥
मागध सूत भाट बंदीजन, गावत गीत सुछंद ।
'सरस माधुरी' लख लालन मुख, चरन कमल रज बंद ॥

बधाई राग (आसावरी)

नृप दसरथ के बजत बधाई ।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, प्रगटे चारों भाई ॥
फूलें फिरत अवध पुर वासी, आनंद उर न समाई ।
घर घर तोरन ध्वजा पताका, बंदन माल बंधाई ॥
व्योम विमान बैठ सुर सबही, पुष्प रहै बरसाई ।
'सरस माधुरी' महा महोत्सव, गान तान धुन छाई ॥

पद बधाई राग सारंग

अवध पुर प्रगटे राम कुमार ।
चैत सुदी नोमी तिथि सुन्दर, घर घर मंगल चार ।।
ध्वजा पताका तोरन रोपे, राज महल के द्वार ।
गुनि जन गावत गीत प्रीति सों, नृप दशरथ दरबार ।।
याचक दान मान परिपूरण, पावत द्रव्य अपार ।
'सरस माधुरी' बिप्र वेद ध्वनि, जय जय करत उचार ।।

पद बधाई राग पीलू

अवध में मंगल उमग्यो आज ।।
जन्म लियो रघुवंश विभूषन रामचन्द्र महाराज ।
रंभा नृत्य करन सुरपुर की, सुन्दर कियो समाज ।।
शिव ब्रह्मा सनकादिक नारद, आये दरसन काज ।
'सरस माधुरी' घन ज्यों नौबत, रही महल में बाज ।।

पद बधाई राग गोरी ।।

अवध में आनंद अती ही छायो ।
पूरनब्रह्म सकल जग करता, कोशल्या सुत जायो ।।
नृप दशरथ की भाग बड़ाई, बरनत वेद लजायो ।
पुत्र भयो ताके त्रिभुवन पति, प्रगट्यो सुजस सवायो ।।

मरयादा पुरुषोत्तम स्वामी सन्तन के मन भायो।
'सरस माधुरी' रघु नंदन को, हिय हुलस गुन गायो।

पद भोग राग कल्यान ।।

दूध आरोगत राम सुखदाई ।
गोद मोद ले मात कोशल्या, लाड लडावत अति हर्षाई ।।
मुख मयंक निरखत लालन मित्र, जननी करन ते लेत बलाई।
'सरसमाधुरी' छबीछटा लख, तनकी सुधबुध सकल भुलाई ।।

पद सैन ।।

पोढे पलना अवध बिहारी ।
आलस नींद छयो नयनन में कभुमींचित कभुखोल निहारी।
कभु रोवत अरु किलकत कबहु, धपक सुलावत है महतारी।
यहसुखलखकरसरसमाधुरी, बोलत मुख जयजय बलिहारी ।।

अक्षय त्रितिया चंदन श्रृङ्गार उत्सव ॥

दोहा

उत्सव अक्षय तृतीया, रचूं निजमत अनुसार ।
चरण कमल श्री सतगुरु, सरस हृदय में धार ॥

पद राग भैरवी

जुगल कीनो चन्दन शृंगार ।
अखय तीज त्योहार सुहावन शोभा को नहिं पार ॥
चंदन मुकुट चंद्रिका मस्तक शोभित है धजदार ।
चंदन कुण्डल कान झूमका चंदन खोर लिलार ॥
चंदन चर चित गात दोउन के चंदन के गलहार ।
चन्दन के आभूषण अंगन पहर रहे सरकार ॥
चन्दन की पोशाक सजी तन आनंद देत अपार ।
रंग चंदनी तने चंदोवा पिछवाइ सुख सार ॥
चंदन के आसन सिंहासन ब्राज रहे सकुमार ।
चंदन के पंखा और चौरी सखी ढुरावत ब्यार ॥
छिरके अतर अनेक भांति के अलियन कुंज मझार ।
महक रही मकरंद महल में मोद बढावन हार ॥
सीतल भोग अरोगावत है सहचरि बिबिध प्रकार ।
पावत अरस परस मिल दम्पति जीवन प्राण अधार ॥

जमुना जल अचवाय सुवासित बीरी दई रुचकार।
सरस माधुरी रूप अनुपम नैनन रही निहार।।

[२]

आज अद्भुत दम्पति छवि छाई।
चंदन कर शृंगार सुभग तन राधा कुंवर कन्हाई।।
चंदन लेप किये अंगन अति अनुपम सुन्दरताई।
सोंधे सने पीत पट सोहें कुंज रही महकाई।।
सिंहासन मिल बैठे दोउ हर्ष न हृदय समाई।।
सन्मुख नृत्य गान कर सहचरि लीने युगल रिझाई।
बीन मृदंग सितार सरँगी बाज रहे सुखदाई।।
सरस माधुरी अतुलित शोभा अविचल दृगन बसाई।

पद भोग

पावत भोग किशोर किशोरी।
एक हि थार मांहि मिल पावत सुन्दर श्याम स्वामिनि गोरी।
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन प्रथक प्रथक भर धरी कटोरी।
सरस माधुरी रस के लोभी लेत देत मुख ग्रास निहोरी।।

पद आरती

करत आरती ब्रज की नारी ।
जय जय जय बलिहार बोल मुख युगल चंद छबि ऊपरवारी।।
आनंद उमग रह्यो वृन्दाबन हिल मिल बैठे कुंज बिहारी ।
सरस माधुरी शोभा निरखत भई प्रेम रस में मत वारी ।।

पद सैन

चन्दन सेज सोये मिल दम्पति ।
श्रीशुक सखी उढाय पीत पट श्याम चरणदासी पद चम्पति।।
लपट रहे अनुराग रङ्ग में आलस बस दृग दोउ झम्पति ।
सरस माधुरी रस में भीने रसिक सुजान सखिन की सम्पति।।

श्रीजानकी नवमी उत्सव ॥

दोहा

श्री सतगुरु उर ध्यान धर, चरण कमल शिरनाय ।
जन्म उत्सव श्री जानकी, लिखूँ सरस चित लाय ॥

पद भैरवी ।

जनक नृपति घर मँगल माई ।
त्रिभुवन की शोभा मन लोभा प्रगटी सिया सकल सुखदाई॥
शिव ब्रह्मा सनकादिक नारद शारद शेष निगम जस गाई ।
भक्त हेत अवतार लियो हे रँग महल में भई बधाई ॥
ढाढी वँश प्रसंसत निरतत गावत गुनिजन हिय हर्षाई ।
नाचत बार मुखी मन प्रमुदित केसर चँदन दिये छिरकाई॥
गोगज आदि रतन मणि मानक विप्रन दान दिये मन भाई।
सरस माधुरी सुर समूह मिल बैठ विमान सुमन बरसाई ॥

पद बधाई राग आसावरी ।

प्रगट भई जनक भवन सिय प्यारी ।
रूप राशि रसिकन की जीवन राम प्राण आधारी ॥
चन्द्र बदन सुख सदन सलोनी शोभा सिन्धु अपारी ।
उमा रमा उरबसी आदि सब ता छबि ऊपर वारी ॥

जाको नाम जपत ब्रह्मादिक महिमा अगम उचारी।
सरसमाधुरी शोभा लखिके तन मन दीजे वारी ।।

पद राग पीलू बरवा।

जनक नंदनी प्रगट भई है ।
जाको जस त्रिभुवन में छायो, नष शिख शोभा प्रेम मई है।।
लख लोचन सों रूप अनूपम, पुरजन तिय बलिहार गई है।
राम रसिक की जान जानकी, सम्पति विधना आन दई हैं।
रची शची शारदा भवानी, नवनव विनय निहार रही है ।
मनो चकोरी चंद दरस हित, महल नृपति आन छई है ।।
रंग बधाई गाय भलीबिधि, सभा सकल अलि रीझ गई है।
'सरसमाधुरी' मात सुनयना, लली मोद युत गोद लई है।।

पद राग श्याम कल्यान ।।

मिथलापुर में मंगल माई ।
प्रगट भई श्री जनक नंदनी, गावत गुनिजन जन्म बधाई ।।
शुभ बैसाष सुदी तिथि नोमी, लग्न महूरत परम सुहाई ।
मगन विदेह नृपति मन माही, देत दान हय गय हर्षाई ।।
भूप भवन आई पुरनारी, मंगल साज करन सजि लाई ।
सुता सुहावन निरख हर्ष युत, देत असीस मुदित मगनाई ।।

गह मह भई महल के मांही, गान तान धुनि सुन्दर छाई ।
बर्षंत देव सुमन सुरपुर सों, गगन दुंदुभि रहे बजाई ।।
सतानंद ले विप्र वृन्द वर, करत वेद ध्वनि मोद बढाई ।
सिया सलोनो नाम करन कर, जयजयजय कहिके बलजाई।।
व्रह्मादिक नारद मुनि आये, दरशन हेत रहे ललचाई ।
'सरसमाधुरी' मातसुनयना,ललीबदन बिधु दियो दिखाई।।

पद बधाई राग ईमन कल्याण ।

निमि नृप सदन बधाई बाजे ।
मातु सुनयना मन हरषानी प्रगटी सिया सकल सिरताजे ।।
सीर ध्वज महाराज सुयशबड उपमाकहत कविन मति लाजे।
श्रीस्वामिनि साकेत निवासिनी जिनकी सुताभई छबि छाजे।।
नाचत नारि नवेली हिलमिल करत समाज सुमंगल साजे ।
राज पौर पर परम पियारी शहनाई नोवत घन गाजे ।।
मागद सूत भाट बंदी जन विर्दावलि बोलत महाराजे ।
पावत दान रतन हीरा मणि भये सकल मन पूरन काजे ।।
रसिक संत गुणवंतमगनअति त्रिबिधिताप तनमनके भाजे ।
'सरस माधुरी' रंग महल की सेवा मिली सलोनी आजे ।।

पद भोग ।।

पय पीवत है जनक दुलारी ।
मातसुनयना निरखचंदमुख हर्षित मनमनु खिलीफुलवारी।।
किलकत हँसत करत कोतूहल लली भली लागत है प्यारी।
सरसमाधुरी करिअवलोकन बोलत मुख जय जय बलिहारी।।

पद आरती ।।

आरती जनक लली की कीजे ।
सुवरण थाल बाल घृत बाती तन निज वार रूप रस पीजे।।
गौर बरण सुन्दर तन शोभा नष शिख छबि नैनन भर लीजे।
सरसमाधुरी स्वामिनि मेरी चरण कमल में चित नितदीजे।।

नवका विहार

गजल ॥

अहा हा आज जमुना की युगलवर सैर करते हैं।
अति आनंद मदमाते दोऊ नवका में फिरते हैं॥
है कञ्चन की बनी नैया जटित हीरा माणी माणिक।
कि जिनकी जगमगाहट से ही उडगन शर्म करते हैं॥
सरस छबि जमुना पुलिनों की करे अवलोकन श्री दंपति।
सुशोभित हरित बृक्षन में भ्रमर भ्रमकर मँडरते हैं॥
निरखते हैं प्रिया प्रीतम सलिल क्रीडा बिहङ्गन की।
जो चुबकी मार करते हैं और डुबकी मार तरते हैं॥
यह लख कर बिहार नवका सरस तन मन को वारा है।
मगन मन मस्त होकर के रसिक जै जै उचरते हैं॥

पीलू ॥

ललित नाव चढ चतुर सिरोमणी सैर करन जमुना की जावें।
मध्य धार जलही के मांहीं मंद मंद गति सखी चलावें॥
नाना रंग कमल कुल फूले तिनको निरख हिय हर्षावें।
रतन जटित घाटन की शोभा लखि २ मन मांहीं मगनावें॥
छतरी बुर्ज बने अति सुंदर तट पर लता ललित लहरावें।
हरे भरे तरु तीर तीर पर फूले फले सघन दरशावें॥

कोऊ सखी बीन मृदंग सरंगी लै अरु ताल मिलाय बजावें ।
कोऊ नृतत पग बांध घूँघरू कोऊ मधुरे स्वर गाय रिझावें ।।
कबहु रसिक छैल होरी मिस मूठिन अबिर गुलाल उडावें ।
हो हो बोल कलोल करें बहु चतुर चूम मुख धूम मचावें ।।
याबिधिबिविधिभांतिलीलाकरपरिकरसहित लौट फिर आवें।
उतर नावसों सरस साधुरी भोजन करन कुंज में जावें ।।

राग पीलू ।।

नाव में बैठे जुगल बिहारी ।
सैर करन घाटन की गवने, संग लिये सहचारी ।।
मध्य धार जमुना में नोका, मंद चलावत नारी ।
निरखन शोभा चले चतुर दोउ, लता कुंज फुलवारी ।।
खिले कमल कालिंदी मांहीं, सप्त रंग सुखकारी ।
त्रिविधि पवन दुख दमन गमन कर, भृंग करत गुंजारी ।।
चहूँ ओर वृन्दाबन शोभा, सघन ललित तरु भारी ।
मोर चकोर बिबिधि पंछीगन, बोल रहे मन हारी ।।
फूल शृंगार साज श्री अङ्गन, अति प्रसन्न पियप्यारी ।
'सरस माधुरी' लख यह लीला, भई प्रेम मतवारी ।।

।। पद भोग ।।

सखियन बन फल भोग लगावें ।
हर्ष सहित श्री दम्पति पावें ।।
मिष्ट आम अमरूद अँगूरी अरु अनार भर थार धरावें ।
नारंगी केला अरु जामुन सेव फालसा परम सुहावें ।।
पावत प्रेम मुदित मन दोऊ ब्रज नारी निज हाथ जिमावें ।
कर अचवन आरोगी बीरी सरस माधुरी माल पहिरावें ।।

पद आरती ।।

करत आरती मिल सहचारी ।।
कंचन थार सँजोय आरती श्री अंगन के ऊपर वारी ।।
निरख २ दंपतिकी शोभा बोलत मुख जय जय बलिहारी।।
राई नोंन उतारत हिल मिल सरस माधुरी सखियाँ सारी।।

श्रीजल केलि जल बिहार ॥

दोहा

जल बिहार ग्रीषम ऋतु, सरस कहत है गाय।
श्री बल देवी दयाल जू, सद्गुरु करो सहाय ॥

पद राग सारंग ॥

जलकेली दम्पति बिस्तारी।
श्री बृन्दावन कुंज महल में, [illegible] ॥
जमुना जल के होज भरे जहाँ, चलत फुहारे धार फुहारी ॥
चादर चले नीर की नीकी, बरसत ज्यों सावन घन कारी ॥
स्वेत बसन पहिरे पिय प्यारी, अलिगन धारस्वेत तनसारी ॥
न्हावतपुलकावततनमनमें, किलकतहँसतलिपट अंकवारी ॥
छिरकत छीटन सोंहिल मिलके, राधे प्यारी सरस बिहारी।
आलिंगनचुम्बन अंगअंगन, अनुपम केलि कला बिस्तारी ॥
श्रीशुक सखीचरणकी दासी, रीझ रही बिबि बदन निहारी।
'सरस माधुरी' लख रसकेली, भई प्रेम मांही मतवारी ॥

पद राग सारंग ।

देख सखी दम्पति जल केली ।
अति आनंद मई रस लीला उपजावत हिय आनंद बेली ॥
भरे नीर के होज महल में छाई लता बेलि बहु फैली ।
न्हावन प्रेम बढाय परस्पर प्यारी प्रीतम संग सहेली ॥
कमल कली ले निज कर मांही मारत तक मन हरन नवेली ।
छिरकत जल छीटन सो सजनी चारों ओर भई सब भेली ॥
दो दो अलि तैरत जल मांही गल बाहीं देदे मन मेली ।
चुबकी लेत करत आलिंगन लोक लाज कुल की सब पेली ॥
यह सुख ब्रह्मादिक को दुर्लभ पावत हैं अलिगन अलबेली ।
सरस माधुरी धन्य नागरी श्यामा श्याम संग खुल खेली ॥

पद राग रसिया ।

जलकी केलि करैं सरकार प्यारी राधा नंद कुमार ।
जमुना नहर निकुंज महल में फूले कमल अपार ॥
अलिगन गूंज रहे मत माते शीतल चलत बहार ।
लता ललित छाई सुखदाई हरित सघन मन हार ॥
नाना रंग सुमन मन लोभा शोभा को नहिं पार ।
न्हावत प्रेम बढ़ाय परस्पर श्री दम्पति रिझवार ॥
भीज भिजावत सँग अलिगन के बहु बिधि करत बिहार ।
तिरत फिरत नाना बिधि जल में रस भरी नजर निहार ॥

ले चुबकी लिपटत सखियन सों, सीसी बचन उचार ।।
भर भर लेत भुजन में भामिनि, पियत अधर रस सार ।
'सरस माधुरी' रसिक शिरोमणि मेरे प्राण अधार ।।

गजल ।।

करैं जल केलि हिल मिल के बिहारी राधे प्यारी हैं ।
सहेली संग ललितादिक चतुर सकुमार सारी हैं ।।

दोहा

जमुना जल के कुंज में होज भरे भरपूर ।
कूद कूद न्हावत तहाँ करें केलि सुख मूर ।।
तरें दम्पति हरें मन को भरें दोउ अंकबारी हैं ।।

दोहा

चादर चले सुहावनी चहूँ ओर बरजोर ।
छूटत है जल जंत्र बहु अति ही अनुपम तोर ।।
मनो सावन घटा बरसे अजब आनंदकारी है ।।

दोहा

छीटत छिरके कामिनी करें परस्पर रंग ।
नीर उछाले निज करन अतिशय भरी उमंग ।।
गौर ओर श्याम शौभा लख युगल पर वारी सारी है ।।

दोहा

कोउ सखी स्वामिनि यूथ में, कोउ प्रीतम की ओर ।
चुबकी लेके जल विषय, गहै हुलस कर जोर ।।
तरैं झपटैं उमंग लपटैं टरैं नहीं नेक टारी हैं ।।

दोहा

साज बाज ले गा रही, सखि जल की शुचि केलि ।
सुन के होवें मन मुदित, दोऊ नवल नवेलि ।।
निरत कर भाव बतलावें बजावें हँस के तारी हैं ।।

दोहा

लख के चितवन रसभरी, मंद मधुर मुसकान ।
सरस माधुरी सहचरी, बारे तन मन प्रान ।।
उच.रे जय जय मुख सजनी महल परिकर की नारी है ।।

पद राग धनासरी ।।

जुगल जल की केलि करैं ।
संग सखी गन परम मुदित मन दम्पति भुजन भरैं ।।
छींटन छिरकत अंग परस्पर हँसि लिपटात गरे ।
सरस माधुरी रस में माते चितवत चित्त हरैं ।।

पद राग बरवा ।।

आज आली जल बिहार लखलीजे ।
जल जन्त्रन की धार हजारन, दम्पति तन मन भीजे ।।
झलकत कांति बदन की अद्भुत, रूप नैन भर पीजे ।
'सरस माधुरी' अँग जुगल की, देख देख छबि जीजे ।।

पद राग पीलू ।।

बिहरत जल बिहार पिय प्यारी ।
संग समूह लिये सहचरी गन, राधा सरस बिहारी ।।
चलत हजारे अमित फँवारे, मनु बरसत घन वारी ।
भीज रहे आनंद में भीने, ग्रीषम ताप निवारी ।।
नीर उछारत छींटन मारत, रीझ भरत अङ्कवारी ।
कमल फूल तक मारत दोउ, केलिकला बिस्तारी ।।
होजन में तैरत हिल मिल के, प्यारी पिय सुकुमारी ।
मानो मैन मीन के छोना क्रीडत बिबिधि प्रकारी ।।
ले चुबकी चञ्चल जल भीतर, अचक गहत सहचारी ।
मसक अंक आलिंगन करके, किलकत पुलकत भारी ।।
शोभा सिंधु सलोने लालन, अलिगन प्रान अधारी ।
सरस माधुरी छबि दंपति की, लख लोचन भइ वारी ।।

पद राग श्याम कल्यान ।।

जुगल वर वारि बिहार करैं ।
ग्रीष्म मास जेठ में आली, तन मन मोद भरै ।।
होद भरे जमनाजू के जित, छूटत जन्त्र खरे ।
झीनें बसन धार निज तनमें, तिनमें आय तरे ।।
कोउ छिरकत छींटन सो सजनी, हँसि लिपटात गरे ।
पुलकित प्रेम पगे पिय प्यारी, चितवत चित्त हरे ।।
बिथुरे बार सीस सतकारे, मुख पै आय ढरें ।
मनु सिवार में चन्दा उरझे, सुरझै ना सुरझै ।।
लता पता तरु हरित सघनते, झर झर फूल झरें ।
'सरस माधुरी' मार मचावत, रीझ भीज झगरें ।।

पद तिलक कामोद ।।

देखो तुम आज सखी जल केली ।
बिहरत शीतल महल वर, संग लिये सकल सहेली ।।
जल गुलाब के होज भरे जहां, तैरत रसिक नवेली ।
छींटन मारत कोउ न हारत दम्पति की मन मेली ।।
फैंकत फूल फूल तन मन में तक मारत अलबेली ।
'सरस माधुरी' सकल सहचरी प्रीतम सों खुल खेली ।।

फूल शृङ्गार इत्यादि महोत्सव ॥

गजल

राजैं फूलों के बंगले जुगल सरकार ।
हंसे किलकें करे हैं परस्पर प्यार ॥
रची पुष्पों की कुंजें परम रस पुंज ।
लता फूलों की प्यारी परम मन हार ॥
जाली फूलों की आली निराली रची ।
लटकें लटकन फूलों के बडे मजेदार ॥
छज्जो गोखे झरोखे सुमन के सजे ।
शोभा भारी अपारी अनोखी निहार ॥
फबे फूलों के अङ्गों में भूषन बसन ।
मानो फूली फुलवाई है शोभा अपार ॥
नाचें गावें बतावे भावों को सखी ।
बाजैं बीना मृदंगरु सारंगी सितार ॥
छकी छबि मैं सरस किये दम्पति दरस ।
हुवा मन में हरष बोले जय जय बलिहार ॥

पद

किया फूल शृङ्गार जुगल ने किया फूल शृङ्गार।
सब का मन मोहनहार जुगल ने किया फूल शृङ्गार॥
एक तौ दम्पति गौर श्याम है, दूजे अति सुकुमार।
तीजे त्रिभुवन में नहीं ऐसे, अलबेले सरकार॥
फूलन के बंगले में बैठे, दोऊ गलबैयां डार।
फूलन के भूषन तन सोहे, शोभा अपरम्पार॥
सन्मुख फूल रही फुलवारी, क्यारी विविध प्रकार।
छूट रहे जल जंत्र अनेकन, नहनी परत फुहार॥
भीजि रहे आनंद में दोऊ, राधा नंद कुमार।
सरस माधुरी सखी सहेली, निरखत जुगल बिहार॥

श्याम कल्यान

फूल मंडली जुगल बिराजे।
फूलन के आसन सिंहासन, फूलन मण्डल सुन्दर साजे॥
फूलन की जाली लख आली, दर दीवार झरोखा छाजै।
फूलन के लटकन लूमत हैं रचना निरखि काम रति लाजे॥
फूलन के शृङ्गार धार तन, बैठे श्री दम्पति सिरताजे।
सरस माधुरी सन्मुख सखियाँ, नाचत गावत करत समाजे॥

श्याम कल्यान ।

फूल मण्डली सरस सँवारी ।
फूल निकुंज रची सहचरि गन, दर दालान झरोख तिवारी।।
फूल झूमका झूमत छबि सों, महक सुगंध लगत अति प्यारी।
फूलन भूषन वसन साज तन, बैठे हैं श्री युगल बिहारी ।।
फूल रही फूलन सों चहुँ दिशि, क्यारी नाना रंग फुलवारी।
सरस माधुरी तन मन फूली, लख जोरी सुन्दर सकुमारी।।

राग खमाच ।

बिराजों सखी बँगले सरस बिहारी ।
अरस परस दीन्हें गल बैयां, हिल मिल प्रीतम प्यारी ।।
किये सुमन श्रृङ्गार मनोहर, नख शिख अति रुचिकारी ।
विविध भांति के कुसुम मनोहर, मनु फूली फुलवारी ।।
रायबेल की रचना आली, जाली सरस सँवारी ।
लाल सुमन के लटकन लूमें, सौरभ अति मतवारी ।।
छज्जा गोख झरोखा शोभित, दर दालान तिबारी ।
गुलदस्ता सन्मुख मन मोहें, नजर बगीची न्यारी ।।
छूटत हैं जलयन्त्र सुहावन, ज्यों बरसत घन वारी ।
निरख २ शोभा श्री दम्पति, हिय हरषत सुखकारी ।।

नाचत गावत भाव बतावत, साज वजावत नारी।
पावत रीझ रसिक लालन सों, बोलत मुख बलिहारी।।
शोभा सिंधु सलौने दोऊ, अलिगन प्राण अधारी।
सरस माधुरी रूप लुभानी, तन मन दीनो वारी।।

राग काफी

जुगल वर बैठे फुल तिवारी।
जाहीजुही गुलाब केवडा रचना सुन्दर सखिन सँवारी।।
चम्पा और केतकी कुञ्जा रायबेल मोतिया न्यारी।
जाली फूल निराली आली लटकन झूमत फूल अपारी।।
शीतल मन्द सुगंध सुहावन पवन चलत अति आनँदकारी।।
सरस माधुरी शोभा लख के बोलत मुख जै जै बलिहारी।।

राग काफी

फूल बँगले बिराजे पिय प्यारी।
रायबेल और कुन्द केतकी रची सदन सुखकारी।।
फूलन सज शृङ्गार मनोहर दम्पति प्राण अधारी।
रसिक प्रिया प्रीतम रसमाते लिपट लगत अङ्कवारी।।
पवन परस पुष्पन सों सजनी महक रही मनहारी।
सरस माधुरी निरख जुगल छबि अँखियाँ टरत न टारी।।

राग खमाच

फूल को बंगला सुन्दर सोहे ।
फूलन कर श्रृङ्गार जुगलवर निरखत ही मन मोहे ।।
फूली सखी सकल सेवा में लखि लोचन ललचोहे ।
सरस माधुरी जुगलालकी उपमा को नहिं कोहे ।।

राग खमाच ।

लफू को महल महा मनभावन ।
फूलन खंभ तिवारी न्यारी कसस कंगूरा लगे सुहावन ।।
फूलन के परद पिछवाई गद्दी तकिया सुख उपजावन ।
फूल बितान फूल के लटकन छज्जा गोख फूल छबि छावन।।
फूलन के सज मुकुट चंद्रिका भूषन बसन फूल के पावन ।
फूल फूल बैठे हिल मिल के दंपति करत मंद मुसकावन ।।
फूलीं सकल सहेली सन्मुख करत नृत्य जुगलाल लडावन ।
सरस माधुरी जै जै कहि के लागी फूलफूल बरसावन ।।

राग कोन्हरा

फूल की बारादरी बनाई ।
फूलन के परदा पिछवाई, फूलन बंदन माल बँधाई ।।
फूलन के कलसा सुन्दर रच, गेंद गुलाब सुभग लटकाई ।
छज्जा गोखा बने फूल के, नज़र बगीची फूल लगाई ।।
फूलन पाग फूलन की सारी, फूलन भूषन अंग सजाई ।
बैठे फूल एक सिंहासन फूलन की शोभा तन छाई ।।
फूलन के बिजना ले सहचरि, दोऊ दिशि हितसों रही ढुराई।
सरस माधुरी फूलन सों मिल, पवन सुगंध रही महकाई ।।

राग केदार ।।

राधिका श्याम श्रृङ्गार फूलन करे ।
फूल के महल मे बैठे बहु चावसों,
हँसत मुसकात दोऊ फूल मुख से झरे ।।
फूल भूषन बसन चन्द्रिका मुकुट सज फूल की माल,
छबिजाल मन को हरे ।
फूल की मुरलिका लाल अधरन धरी,
प्रिया क्रीडा कमल वाम कर में धरे ।।

फूल की कुंज सुख पुंज पावन परम प्रिया,
पिय प्रेम सों लपट लागत गरे ।।
सरस रस माधुरी निरख झांकी जुगल,
नैन के द्वार निज हिय आनन्द भरे ।।

पद

फूल के बंगले बिराजे, फूल से प्यारी पिया ।
लख के छवि फूली सखी सब वार तन मन धन दिया ।।
फूलोंसे सब कुंज छाई, छबि न वरनन हो सके ।
फूल नाना रंग के, निरखत ही हुलसत है हिया ।।
हर तरफ़ रही फूल शाखा, झूल झुक आनन्द से ।
भँवर गुँजें भामिनी सुन मन हमारा हर लिया ।।
कोयलें कूकें रसीली, बोल बहु चातक रहे ।
शोर केकी कर रहे, बोलन में जादू सा किया ।।
गा रही नारी जुगल जस, नृत्य कर गति ले नई ।
भाव सब बतला रही जाने अली हमारा जिया ।।
गौर अरु साँवल घटा घिर आई चारों ओर से ।
चमक चपला की सरस, सुन्दर निरखि हरषी तिया ।।

पद

फूल बङ्गले-बैठे दोऊ फूल ।
श्री राधावर सरस बिहारी, अलिगन आनन्द मूल ।।
फूलन के शृंगार, हार फूलन अंग दुकूल ।
चारों ओर हरित फूलन युत, ललित लता रही झूल ।।
चलत फुवारे और हजारे, दम्पति रुचि अनुकूल ।
रचीकुंज कुसुमन की सजनी, कालिंदी के कूल ।।
गात रिझात जुगल को सहचरि, करत केलि कौतूल ।
निरखि छकी छवि सरस माधुरी, देह दशा गई भूल ।।

पद चाल रसिया ।

बंगले राज रहैं रंगभीने, दोऊ राधा नन्द कुमार ।।
फूलन को बंगला मन भावन, रचना अति रुचिकार ।
जाली भांति निराली आली, सुन्दर बनी सुढार ।।
फूलन के शृंगार सजे तन, तिनकी अजब बहार ।
फूल रही फुलवारी क्यारी, सदन कुंज के द्वार ।।
फूली फिरें सखी सुखरासी, सेवत जुगल उदार ।
फूल छरी पंखा लिये सजनी, दम्पति करत बयार ।।
फूले तन मन लाल लडैती, हिल मिल करत बयार ।
सरस माधुरी निरख मगन मन, तन मन दीजे वार ।।

पद

बंगले राज रहे फूलन के दोऊ, राधावल्लभ लाल ।
नख शिख किये सिंगार सुमन तन, रूप रासि छवि जाल ।।
फूलन के पिछवाई परदा, चँदवा परम बिशाल ।
जाली फूल निराली आली, फूलन बंदन माल ।।
फूलन के लटकन लूमत हैं, सुन्दर सरस सुढाल ।
ध्वजा पताका फूलन ही के, फवि रहे भांति निराल ।
फूलन ही की नज़र बगीची, निरखत नैन निहाल ।
फूलन ही के चँवर मोरछल, छरी लिये कर बाल ।।
फूलन ही के पँखा सज सखी, सेवत युगल दयाल ।
फूल रह्यो फूलन सों श्री बन, षटरितु समें त्रिकाल ।।
सीतल मन्द सुगंध पवन लग, हरषत प्रिया गुपाल ।
सरस माधुरी निरख जुगल छवि, अति ही हुई निहाल ।।

ठुमरी ।

फूल शृङ्गार प्रिया प्रीतम ने निज अङ्गन में धारे हैं ।
अन्तरा ।।
मुकुटचन्द्रिका फूल सँवारे, चौसर गजरा गलमें डारे ।
फूलन के हथफूल करन में अति ही लागत प्यारे हैं ।।

फूलन कटि किंकिनी सजाई, बाजूबन्द फूल मन भाई।
फूलन के घुंघरु पायल पग शोभा देत अपारे हैं।।
फूल कुंज में राज रहे हैं, रति मदन लख लाज रहे हैं।
सरस माधुरी श्री मत दम्पति, दोऊ नैनन के तारे हैं।।

राग माँढ़।।

ए माये राधेश्याम सुजान फूल तन भूषन साजे ऐ।
फूल महल में राजे दोऊसखियन जीवनप्रानफूलरही फुलवारी
सन्मुख, अतिशोभा की खान मनो ऋतुराज विराजे ऐ।।
निरख युगल छबि नैन नवेली, अलबेली नवरंग।
सहचरि सारी भई बलिहारी, सेवत सहित उमंग बजावें
बहुबिधि बाजे ऐ।।
निरतत गुन गावत सुकुमारी मन में मोद अपार।
सरस माधुरी जुगल रिझावत, तन मन डारत वार
करत मिल सकल समाजे ऐ।।

गजल

दम्पति के अङ्ग फूलों का अनुपम शृङ्गार है।
झांकी सलौनी सुन्दर छबि बेशुमार है।।

प्यारी की सारी सोसनी फूलों की फबिरही।
प्यारे के पीत फूलों का गल सोहे हार है॥
फूलों की चन्द्रिका है फूलों का है मुकुट।
तुर्रा कलङ्गी फूलों की शोभा अपार है॥
फूली सखी है सारी लखि के शृंगार फूल।
सबहीने रीझ तन मन कीया निसार है॥
फूलों की कुंज सारी फूली है फूल क्यारी।
बागों में सरस फूलों की छाई बहार है॥

पोढावनी पद।

फूल सेज सोये पियप्यारी।
फूलन के शृङ्गार धार तन, हिल मिल के गलबैयां डारी॥
फूलन के गद्दा अरु तकिया, फूलन कसना कसे सँवारी।
फूलन ही के फर्श गलीचा, फूल बिछायत कुंज मँझारी॥
बारहदरी बनीं फूलन की, सुंदर दर दालन तिवारी।
फूलन के लटकन लूमत हैं, फूलन ही की बंदनवारी॥
शीतल मंद सुगंध सुहावन, पवनचलत अति आनन्दकारी।
सरसमाधुरी केलि जुगल की, जीवन प्राण अधार हमारी॥

राग कल्यान।

युगल कर बैठे फूल शृंगार।
फूल महल मन भावन मांही, लपट लगे अङ्कवार॥
फूलन की क्यारी बहु न्यारी, चहुँ दिशि बाग बहार।
फूलन के घमला अरु जंगला, निरखत नवल उदार॥
फूल बितान तनें चारों दिशि, फूल फरस मनहार।
फूलन के पिछवाई परदा, दर दालान सुढार॥
फूलन के गादी अरु तकिया, फूसन बन्दन वार।
फूलन की आरती उतारत, फूल फूल सहचार॥
फूलन की वर्षा बरसत है, जै जै कहि बलिहार।
फूल अंजुली फूल फूल कर, वारत बारम्बार॥
फूलन की यमुना जल झारी, रची सखी सुकुमार।
पान दान फूलन सज वीरी, रचि रचि देत सुधार॥
फूल छरी पङ्खा फूलन के, फूल चमर सिर ढार।
फूल मोरछल लेकर ठाडी, सुघर सलौनी नार॥
फूलन के जल यन्त्र सुहावन, चलत कुंज के द्वार।
फूली अला सकल सेवामें, तन मन डारत वार॥
बारहदरी महल के ऊपर, फूलन की रुचिकार।
फूल ध्वजा फहरत लहरत है, शोभा देत अपार॥

फूलन के तबला सारंगी, फूलन के सहतार।
फूल फूल कामिनी गजगामिनि, नाचत विविध प्रकार ।।
रीझ देत फूलन की माला, सखियन को सरकार।
सरस माधुरी छबि लखि फूली, निरखत नित्य बिहार ।।

पद भोग

ऋतु फल भोग पावत पिय प्यारी।
फूलन की बाजोटन ऊपर, फूलन थाल सजे सहचारी ।।
नानाविधि फलफूल लगाकर, हितसों पवावत युगलबिहारी।
अरस परस जेंवत मिल दोऊ, नैन मिलाय भये मतवारी ।।
वे उनको वे उन्हें निहारत, तनकी सुधदुध सकलबिसारी।
सरस माधुरी चेत भयो तब, अचवाये लेकर जलझारी ।।

पद आरती

फूल आरती अलिन उतारी।
फूलन थार फूल बिच धरके, फूलन से श्री अंगन वारी ।।
फूल नाद फूलन की घंटा, फूलन की झ.लर झनकारी।
सरसमाधुरी फूलीतनमन, नैन निरख मुख कहैं वलिहारी ।।

पद खस बंगला

खस बंगले बिहरत दम्पति वर ।
फूलन की रचना ता माहीं, जाली गोख झरोखा सुन्दर ।।
फूलन के सिंहासन आसन, बैठे श्री राधा वंशीधर ।
बसन संदली सोहत तन में, मोलसरी के हार मनोहर ।।
छिरकी टाटी जलगुलाबसों, छूटरहे जल यंत्र अधिकतर ।
धार हजारन परत फुआरन, मनुसावन को लागरह्योझर ।।
त्रिविधि बयार बहत सुखदाई, फूले अमलकमल जलउपर ।
गुँजत भृंग रंग सो सजनी, सौरभ महक महान मोद भर ।।
गावत अली अनुराग रंग सों, बजवत जल तरंग झीने स्वर।
सरसमाधुरी सुन श्री दम्पति, रीझ रसिक लपटात परस्पर।।

सबैया ।।

बैठे खस बंगले दम्पति वर, सखी अतर जहाँ छिरके गहरे ।
चहुँ ओर सो चादर खूब चले, जित आय गई जमुना नहरें ।।
नवनीर गुलाब के हौज भरे, जल यंत्र छुटे सु छटा छहरें ।
'सरसमाधुरी' त्रिबिध बयार बहें, बिहरै युगलाललता लहरे।।

श्री रथयात्रा उत्सव ॥

पद राग भैरवी ॥

आज सखी रथ मैं पिय प्यारी, हिल मिल बैठे आवे हैं ।
दोऊ ओर कों चँवर करन ले, सखियां सहज ढुरावे हैं ॥
सुघर सहचरी रथ हांकत हैं, अद्भुत छबि दरसावे हैं ।
ध्वजा पताका पवन परस के, अति सुन्दर लहरावे हैं ॥
कोइ सखी गावत कोई बजावत कोई फूल बरसावे हैं ।
जय जय बोल होत बलिहारी, निरख नैन बलि जावे हैं ॥
कुँज निकुँज धाम वृन्दाबन, अलियन के चलि आवे हैं ।
भावाधीन दयानिधि नागर, सब को सुख उपजावे हैं ॥
साढ सुदि दोयज दिन दम्पति, शुभ तिवहार मनावे हैं ।
'सरस माधुरी' श्याम राधिका, रसलाली प्रगटावे हैं ॥

पद राग आसावरी

रथ चढ रसिक बिहारी प्यारी, देख सखी अद्भुत छविपावे।
सुन्दर सज श्रृंगार सलोने, निरख बदन रति मदन लजावे ॥
कुंज कुंज प्रति सखी सहेली, कर मनुहार युगल पधरावे ।
बहु विधि कर सन्मान प्रेमसों,व्यंजन विविधिप्रकार जिमावे।।
बीरी अतर माल फूलन की, हर्ष निरख नागरि पहरावे ।
'सरस माधुरी' करें आरती, न्योछावर कर रतन लुटावे ॥

पद राग पीलू ।।

निहारो सखी रथ की शोभा आज ।
कंचन कलस लग अति अद्भुत, सजा जरी का साज ।।
मोतियन की लर लूमत झूमत, ध्वजा लसत सरताज ।
पवन वेग से चलत चारुगति, जुरे छबीले बाज ।।
बैठे राधा सरस बिहारी, संग सब सखी समाज ।
निरखत चले विपिन की छबिको, श्री दम्पति महाराज ।।
सुरंग बसन तन सोहत सुंदर, भूषण मणि पुखराज ।
'सरस माधुरी' मदन मनोहर, निरख गये दुख भाज ।।

पद राग मलार ।।

निहारो आली रथ बैठे पिय प्यारी ।
वृन्दाबन बिहरत कुंजन में, संग लिये सुकुमारी ।।
कोऊ लिये छत्र चँवर कोउ बिजना, कोऊ मोरछल न्यारी ।
कोउ लिये छरी खमा मुख बोलत, सब के चलत अगारी ।।
छाई घटा गगन सुखदाई, त्रिबिधि पवन रुचि कारी ।
नहनी बूंद बरस रही रसकी, भीजत जुगल बिहारी ।।
दादुर मोर चकोर कोकिला, बोलरहे मन हारी ।
लता पता छाई मन भाई, भूमि भई हरियारी ।।
ऋतु फल फूल लिये कर डाली, बृन्दा जू तिहि बारी ।

भेट धरे दम्पति के सम्मुख, बिनती बिबिधि उचारी ।।
आरोगत आनन्द में माते, स्वाद सराहत भारी ।
देत प्रसाद प्रेम सों हँसि हँसि, केलि कला विस्तारी ।।
फूल रह्यो फूलन सों श्रीबन, महक महा मुदकारी ।
निरख नयन शोभा मन लोभा, सरस माधुरी वारी ।।

पद पालकी सवारी राग मलार ।।

पालकी राजें जुगल बिहारी ।
सैर करन श्रीबन की बन ठन, चले रसिक रिझवारी ।।
कर फूलन शृंगार सलौने, मुकुट चन्द्रिका धारी ।
फूलन छरी लिये संग सहचरि, बोलत जय बलिहारी ।।
फूल रह्यो फूलन सों बन घन, लता पता तरु डारी ।
पंछी गन बोलत बहू भांतन, भ्रमर करत गुंजारी ।।
वापी कूप तडाग विलोकत फूले कमल हजारी ।
क्यारी फुलवारी बहु न्यारी, निरखत हरष अपारी ।।
देखत फिरत विपिन की शोभा, अलिगण प्राणअधारी ।
'सरस माधुरी' सेवा माहीं संग अमित सकुमारी ।।

श्रीसरस झूलन मलार
अथ पावस ऋतु राग मलार ।

परमप्यारी पावस ऋतु आई ।।
बादर घुमड़ घटा नभ छाई पवन चलत पुरवाई ।
बरसत मेघ मनोहर धारा रिमझिम झरी लगाई ।।
हरितलता तरु सरस सुहावन भूमिभई हरियारी ।
भरे सरोवर जल सों सारे जमुना उमग बहाई ।।
पंख पसार मोर मिल नाचत चित को लेत चुराई ।
दे गलबैयां प्यारी प्रीतम खडे कदमतर जाई ।।
सोहत संगसखी सुखरासी सुन्दर परम सुहाई ।
बन बिहरत नानाभांतिन सों केलिकरत हरषाई ।।
धीर समीर निकट वंशीवट निरखत छवि फुलवाई ।
'सरस माधुरी' प्रेम पुलकतन रहे अंग लिपटाई ।।

राग मलार कनहार ।।

आई घटा घुमड घनकारी ।
चपला चमक दुरत छिन छिन में, लागत है अति प्यारी ।।
बरसत मेंघ पवन पुरवैया, कोयल कूकत न्यारी ।
दादुर मोर पपैया बोलत, बन शोभा हरियारी ।।

कुंजमहल बैठे पिय प्यारी, देखत विपिन विहारी।
निरख नैन शोभा दम्पति की, सरस माधुरी वारी ।।

राग मलार ।।

आयो आली घुमड मेघ घनश्याम ।
बिजुरी चमक पीत पट मानों, शोभित है अभिराम ।।
कोयल कूक बजत बंशी ज्यों, वक मुक्ता गलदाम ।
पचरङ्ग धनुष काछनी जैसे, धुरवा पटका नाम ।।
झरी की रूप रस बरसावत, देत सबन आराम ।
सरस माधुरी घिर घिर आवत टरत न आठें जाम ।।

राग मलार ।।

प्रिय पिय पावसऋतु अभिराम ।
दामिनिसी श्रीश्यामा स्वामिनि, घन सम श्रीघनश्याम ।।
वरसत रूप रसामृत स्वाती, श्रीवृन्दावन धाम ।
सरस माधुरी सखी पपैया, पोषत आठों जाम ।।

राग मलार ।।

रूप घटा श्रीराधे प्यारी ।
नूपुर रव गरजन अतिनीकी. भूषन दमक दामिनी न्यारी ।।
स्वाति बूंद मृदु बैन मनोहर, पीवत चातक कुञ्जबिहारी ।
अलिगन मोर चकोर कोकिला, चहुंदिशि केलि करत-
सुखकारी ।।
धुरुवा अलक कपोलन छूटे, बरसत छवि की छटा अपारी ।
मुक्ता माल मनो बक पंक्ती, भ्रकुटि धनुष सुशोभित भारी ।।
बसन बिबिध रँग बादर जैसे, सजे अंग श्यामां सुकुमारी ।
सरस माधुरी या शोभा पर दीजेरी, पावस ऋतु वारी ।।

राग मलार ।

हमारे माई श्यामाजू सरदार ।
जिनके गुन गावत बंशी मैं, नित प्रति नन्दकुमार ।।
पावत रीझि प्रियासों प्रीतम, नवल निकुंज बिहार ।
सरस माधुरी रसबस ह्लै पिय, देत अपनपो वार ।।

राग मलार ।

हमारी हेली स्वामिनि परमदयाल ।
देत सदा सन्मान श्याम को, कीरति कुँवरिकृपाल ।।

सेव्य सलोनी भानुनंदिनी, सेवक नन्द को लाल।
सरसमाधुरी पांय पलोटत, प्रीतम होत निहाल ।।

राग मलार ।।

राजत जुगलकिशोर किशोरी ।
घन घनश्याम काम मदमोचन, दामिनि तनदुति राधे गोरी ।।
बरसत रूप रसामृत स्वाती, पीवत अलिचातकि चहुंओरी ।
सरसमाधुरी हियमें हरषी, निरखी जुगल भांवती जोरी ।।

राग मलार ।।

सुघर दोउ सरस रंग सरसावें ।
गौर सांवरी घटा घुमड के, नेह मेह बरसावें ।।
कञ्चन बेलि किशोरी राधे, पिय तमाल लपटावें ।
सरसमाधुरी निरखि नागरी, नैंनन को फलपावें ।।

राग मलार ।।

श्याम आये श्यामा लखलीजे ।
आतुर चल चंचल मृगनैनी, नेक ढील नहिं कीजे ।।

नव किशोर चित चोर चतुर पिय, देख दृगन सुख जीजे ।
पावस ऋतु में रम मोहन सङ्ग, तन मन जोबन दीजे ।।
मांन छाड मिल मन भावन सो, छिन छिन जोबन छीजे ।
सरसमाधुरी प्राणनाथ को, अधर सुधा रस पीजे ।।

राग मलार ।।

श्याम सो श्यामां मिलन पधारी ।
बृन्दाबन नवकुंजलता में, जहां फूली फुलवारी ।।
निरखि प्राण प्रीतम श्री प्यारी, आये निकट बनवारी ।
हँसि मुसकाय धाय दोउ भुज सों, रीझि भरे अँकवारी ।।
मिले परस्पर प्राण जिवन दोउ, गलबैयां लेडारी ।
सरस माधुरी सघन विपिन में, केलि कला बिस्तारी ।।

राग मलार ।।

कुंज सों बन बिहरन दोउ जावें ।
बरसत मेघ निहार जुगल वर, बूंदन बसन बचावें ।
बिरमि बिरमि वृक्षनकी छैयां, मंद मधुर सुर गावें ।
पुलक प्रेम सों मिलैं परस्पर, नवनव नेह जनावें ।
दुरमुरललित लतन के मांही, छतियन सों लपटावें ।

अधर सुधारस छकै छबीले, उरआनन्द बढावें ।।
कोयल कूक सुहावनि सुनके, हिय मांहीं हरषावें ।
सरसमाधुरी बात प्रेम की, हँसि हँसि के बतरावें ।।

राग मलार ।

जुगल बर भीजत बनते आवत ।
बिरमि बिरमि छैयां कदमन की, हँसि हँसि अङ्ग लपटावत ।।
रहै कपोल मिलाय परस्पर, राग मलारहि गावत ।
संग सहेली मनकी मेली, सुनि हिय माँहि सिहावत ।।
चलत मंद जब पवन प्राण धन, निज निज बसन सुखावत ।
घन दामिनि ज्यो लगत जगमगे, सबको सुख उपजावत ।
ऋतुफल भेट धरे वृंदा सखी, रुचि सों रस निधि पावत ।
सरस माधुरी ीतप्रसादी, सखियन कों बरतावत ।।

राग मलार ।

श्याम घन निरखत जुगल किशोर ।
गरजनि मेघ सुनत सब बनके, नांचन लागे मोर ।।
चातक कोयल और कोकिला, बोलरहे चहूं ओर ।
नन्ही बूंद बरसने लागी, गये कदमतर दौर ।।
गावत मधुर मलार मनोहर, सुंदर श्यामल गौर ।
सरसमाधुरी रसबस कीनी निरख नैन की कोर ।।

राग मलार सोरठ।

घन श्याम घटा नभ छायरही।
गरजन मेघ महामुदकारी, चपलाहू चमकाय रही॥
हरीभूमि चहुँओर सुहावनि, सुख समूह उपजाय रही।
नन्हीं बूंद बरस रहि रसकी, हिय को अति हरषाय रही॥
बोलत पियपिय बोल पपैया, कोयल कूकि सुनाय रही।
सांवनगीत सुहावन सजनी, ब्रज घर घर में गाय रही।
सघन द्रुमन पर परम मनोहर, बेलि ललित लिपटाय रही।
मोर चकोर कोकिला कूजत, सुन धुनि अलि मगनाय रही॥
श्यामा श्याम कुंज में राजे, सखियां निरखि छकाय रही।
सरसमाधुरी यह पावन ऋतु अंग उमंग बढाय रही॥

उत्कंठाबिरह मलार पद।

सखी मोहे लेचल बन संकेत।
जहां मिले मोको मन मोहन, जासों मेरो हेत॥
गरजन मेघ डरावत हेली, सुन हिय होय अचेत।
पिय पिय बोल बैर कर मोसो, प्राण पपैया लेत॥
जान अकेली सुनरी हेली, मदन महा दुख देत।
पियकों अरपूं सरसमाधुरी, जोबन जान समेत॥

राग रामला।

श्यामघन नेह मेह बरसाय।
संगले दामिनि राधे स्वामिनि, बिरहनि तपनि बुझाय॥
हृदय सरोवर सूखि गयो मन, मान रह्यो अकुलाय।
प्राण पपैया स्वाति दरस हित, पिय पिय रटनि लगाय॥
परम प्रेम पुरवैया मारुत, घटा छटा छबि छाय।
सरसमाधुरी शरन चरन की, मिलो दयाकर आय॥

श्री युगलबिहारी झूलामलार।

सरस सावन मन भावन आयो।
सरस घटा छाई सुख दाई, सरस मेह बरसायो॥
सरस चमक चपला की चहुंदिशि, सरस समय दरसायो।
सरस हिंडोरे झूलत दम्पति, सरस मलारहु गायो॥
सरस नागरी संग रंग सो, बीन मृदंग बजायो।
सरस निरख छबि हरष परस्पर, प्रेमानंद बढ़ायो॥
सरस नेह अनुरागे दोऊ, करत सखिन मन भायो।
सरस माधुरी जुगललाल हँसि, सकल समाज छकायो॥

कव्वाली मलार।

राधा सरस बिहारीलाल हिलमिल जुगल हिंडोरे झूलें।
कदम में झूला परचो सुढार, पचँरग डोरी अति मन हार

पटली रतनजटित रुचिकार, बाजरहे तापर आनंद मूलें ।।
शुक सखि झोटा देत सुजान, झुलावें दम्पति जीवन प्रान,
चरनदासी लखि छबि गलतांन, देह निजकी सब सुधि बुधि
भूलें ।।
सखि मिल गावें राग मलार, बजावें तबला बीन सितार,
नृत्तकर भाव बता करें प्यार, निरखं शोभा तन मन में फूलें।।
सलोनों सुंदर सावन मास, घटाघन छटा छई आकाश,
चपला चमकें होय प्रकाश, परमसुख उपजत जमुना कूलें ।।
सरसमाधुरी परमानंद पवन चल सीतल मंद सुगंध,
भँवर गुंजार करें सुखकंद, ब्रह्मसुख तूल न तासम तूलें ।।

पद मलार ।।

चलो पिय गह्वर बनकी ओर ।
हरि हरि लता लगत अतिलौनी, नाचत मांते मोर ।।
लपटि रही बहु बेलि तरुनते, सुमन खिले सबठौर ।
गुंजत भ्रमर कोकिला कूजत, लेवें चित को चोर ।।
ललित बिसाखा सखी सकल मिल, सुंदर रचो हिंडोर ।
झूलें झमक जहां हम तुम दोउ, गहकर पचरंग डोर ।।
सुन प्रिय बचन प्रिया के प्रीतम, गये सांकरी खोर ।
सरसमाधुरी निरखत शोभा, हरषत जुगलकिशोर ।।

राग मलार ।

सघन ऋतु सावन की सुखदाई ।
सघन सुहावन बन चहुँदिशि को, भूमि हरित मनभाई ।।
गलबैयां दे ब्रिहरत दंपति, देखत बन फुलवाई ।
सैर करत सखियन संग लीने नव नव नेह जनाई ।।
नाचत नारि नवल गति लेके, लै अरु ताल मिलाई ।
साजबाज सुरगान तान की, धुनि चहुंदिशि को छाई ।।
प्रेमपुलक तन मन में प्यारे, हँसि दृग रहे मिलाई ।
सरसमाधुरी मुदित प्रिया पिय, अंक रहे लपटाई ।।

राग मलार ।।

झूलें कुँजविहारीलाल ललित हिंडोरनारे ।
कदम डार में डारो झूला पचरंग डोरी है मखतूला,
पटलीब्राजे जुगल जमुन ले हिलोरनारे ।।१।।
शीस चन्द्रिका मुकुट सुधारे, नख सिख भूषन छबि सु अपारे
मन्दमन्द मुसकात दृगनदृग जोरनारे ।।२।।
रसबस बिबस बचन मृदु बोलें, पुलकत अंग अनंग कलोलें
नील पीतपट फहरत, पवन झकोरनारे ।।३।।
ललित विसाखा झोटा देवें, प्रीति सहित पिय प्यारी सेवें
झमक झुलावत दम्पति, चितके चोरनारे ।।४।।

बृन्दाविपिन सघन फुलवारी, चातक कोयल बोलन प्यारी
सरसमाधुरी नाचत, चहुंदिशि मोरनारे ॥५॥

राग मलार ॥

श्रीराधा सरसबिहारी झूलें झूलनारे ।
वृन्दाविपिन लता हरियारी, पावस ऋतु अति ही सुखकारी,
झूला परचो कदम में, फूले फूलनारे ॥१॥
रच्यो हिंडोरा सखी सुहावन, पचरंग डोरी सुन्दर पावन,
बाज रहे मन भावन जमुना कूलनारे ॥२॥
झोटन सो डर झिझक किशोरी पियके हिय लग लिपटत गोरी
आली लखि भई मगन, गई सुधि भूलनारे ॥३॥
कञ्चन तन द्युति भान दुलारी, मरकतमणि तन पिय रिझवारी,
घन दामिनि लख लजित नहीं समतूलनारे ॥४॥
अनुरागिनि नागरि गुण गावे, साज बाज सुरताल मिलावे,
सरसमाधुरी रंग जम्यो अनमोलनारे ॥५॥

राग मलार

मास सावन मन भावन आयो ।
बरनबरन के बादल उमगे, मानो मण्डप छायो ॥
मदन मनोहर ललित त्रिभंगी नटवर वेश बनायो ।
लकुट मुकुट कुंडल कर मुरली, सुन्दर साज सजायो ॥

विहरत श्रीवृन्दाबन कुंजन, राधेरूप लुभायो ।
मुख अंबुजलख मन मधुकर सब, निरखन को ललचायो ॥
ह्वै कृपाल कीरति तनयाने, हंसि पिय कंठ लगायो ।
सरसमाधुरी अधर सुधारस, हिलमिल पीयो प्यायो ॥

राग मलार दादरा ॥

आज जुगल सरकार सखी हिलमिल के झूलें ।
झूला परचो कदम की डारी, हरित लता सुअपार लखो कालिंदी कूलें ॥
गावत राग मलार सखीगण, बजवत बीन सितार ताल सुर लै सम तूले ।
निरखोरी छबि गौर श्याम की दोउ शोभा के धाम देख दृग तन मन फूलें ॥
अतिसुकुमार सलोने सजनी, साज अंग शृंगार काम रति लखि सुधि भूलें ।
सरसमाधुरी राधामोहन सोहन प्राण अधाररी वरधन सुखमूलें ॥

राग मलार दादरा ।।

नटखट नंदकुमार रे झोटा दीजे संभल के ।
लचकत डारि कदम की लचपच डरलागत मोहे भार
झुलावो प्यारे हलके हलके ।।
झिझकत हूं चपला चमकन ते, लीजिये मोहि उतार नहीं मैं
गिरूँ उछल के ।।
जो नहिं मानो बात बिहारी, तो होगी तकरार यहां से जाओ
तुम टलके ।।
सरसमाधुरी लंगर मोहन मानों जू झगरार छाड दो गुण
छलबल के ।।

रेखता मलार ।।

झूलें लडैतीलाल मिल सखियां झुलारही ।
मनभाये कर मनोरथ दम्पति लडारही ।।
वृंदाबिपिन निकुंज में झूलारच्यो सुहावन ।
ब्राजे जुगल जिवनधन छबि जगमगा रही ।।
फूले सुमन सुहावन बहुरंग मनके भावन ।
हरियारि प्यारी ललित लता लहलहारही ।।
गावें मलार नारि निरख रूप में छकीं ।
बीना मृदँग रंग सों लै गति बजारही ।।

पुरवाइ पवन न्यारी श्रम की है हरनहारी ।
कारी घटा गगन में चहूं ओर छारही ।।
पहराय फूलमाला कोऊ सिहात बाला ।
बिजना ले कोऊ आली हितसों ढुरारही ।।
अम्बर अतर लगावें युग अंग में रमावें ।
दरपन कोउ दिखाके दम्पति रिझारही ।।
जै जै जुगलविहारी कोउ बोल होत वारी ।
बीरी दै सरसमाधुरी सुख में समारही ।।

राग मलार ।।

सुख सखी झूला सुभग रचायो ।
कदमडारि में डारो सुन्दर, जुगल लाल मन भायो ।।
रेशमडोरि बनी पचरंगी, फूलन ललित सजायो ।
पटुली चन्दन की ता ऊपर, दम्पति कों पधरायो ।।
झोटा देत श्यामचरन्दासी, रंग अधिक सरसायो ।
ललितादिक गावत हुलसावत, राग मलार जमायो ।।
बीन मृदंग बजावत आली, आनँद अतिही छायो ।
झूलत मन फूलत पिय प्यारी, पुलकत प्रेम जनायो ।।
ताही छिन घन घुमड गरजिके, चहुंदिशि तें घिरि आयो ।
बरसत मेघ महारंग रसको, लागत निपट सुहायो ।।

अधरामृत रस अरस परस दोउ, प्यारी प्रीतम पायो।
सरसमाधुरी उज्वल रसमें, सकल समाज छकायो।

राग मलार।

कुञ्ज हिंडोरनां हो झूलत सरसबिहारीलाल ।।
रत्नजटित रचना ता मांही, शोभा बनी बिशाल।
ब्राजरहे तामें श्री दम्पति, दोउ गलबैंयां डाल।
लता ललित छाई मन भाई, फूले फूल रसाल।
त्रिविधि पवन परसत तन पुलकत, करत रंगीले ख्याल।
रही झुलाय झमक झुकझुकके, शुकचरन्दासि दयाल।
गावत हुलसावत हियमांही, निरखत भई निहाल।
साजबाज सहचरी बजावत, लै अरु ताल संभाल।
सुन मन मुदित होत दोउ प्यारे, परे प्रेम के जाल।
हँसि मुस्कात हरत चित चंचल, रीझ देत उरमाल।
सरसमाधुरी मगन भई सब, रंगमहल की बाल।

राग मलार।

सांवन मास मुहावन सजनी जुगल हिंड़ोरे झूलें।
बैठे इक पटली पर प्यारे, धरें अंस भुज मूलें।
झूला ड़ारो कदम वृक्ष में, कालिंदी के कूलें।

झमक झुलावत ललित बिशाखा, करत केलि कौतूलें ।।
राग मलार जम्यो रंगभीनों, सुन सखि तन मन फूलें ।।
सरस माधुरी लखि दम्पति छबि, रती मदन सुधि भूलें ।।

राग मलार ।

देखो री दम्पति मिल आली, झूलत ललित हिंड़ोरे ।
हिल मिल गावत रंग बढावत, हँसि दृगसों दृग जोरे ।।
करत केलि कौतूहल दोऊ, चितवन में चित चोरें ।
रूप समुद्र नागरी नागर, छवि की उठत हिलोरें ।।
श्रीसुख सखी झुलावत सहजें, निरखत श्यामल गौरें ।
सरस श्यामचरन्दासी आली, दीठि डरन तृण तोरें ।।

मलार राग सोरठ देश

देखो री दोऊ मिल आली झूलत रंग बढावें ।
जमुना कूल कदमकी छैयां, गलबैयां दे गावें ।।
सखी झुलावत मन हुलसावत, बीन मृदंग बजावें ।
राग मलार सुनाय सलौनी, दम्पति को दुलरावें ।।
नील पीत पट पवन झकोरन, या विधि शोभा पावें ।
घन दामिनि ज्यों उतरगगन ते, धरनि परसि फिर जावें ।।

गरजन मेघ चमक चपलातें, डर उर सों लपटावें।
सरसमाधुरी निरखि जुगल छबि, तन मन हियो सिरावें।

सोरठ मलार ।

सावन सरस सुहावन सजनी जुगल झुलावो हे ।
नखसिख भूषण बसन सलोनी, अंग सजावो हे ।।
लाल लाडिनी झूलें राजें, हिलमिल गावो हे ।
बीन मृदंग बजा दोउन को, अधिक रिझावो हे ।।
गौर श्याम शोभा के सागर, लख मगनावो हे ।
बांकी झांकी अजब अदाकी, दृगन बसावो हे ।।
अतर पान सनमान, पुष्पमाला पहरावो हे ।
सरसमाधुरी प्रेमदान, दम्पति सों पावो हे ।।

सोरठ मलार ।

हरित लतनमें हिलमिल हेली दम्पति झूलें री ।
हरित कुंज सुखपुंज सुहावनि जमुना कूलें री ।।
हरित बसन भूषन तन सोहै, ऋतु अनुकूलें री ।
हरित सघन बन लखि फुलवारी, तन मन फूलें री ।।
हरी भरी सहचरी चहों दिशि, वय सम तूलें री ।
तिनहूं के तन साजें सुंदर, हरित दुकूलें री ।।

हरिः हरिः मुख बोलत बानी, सुधि बुधि भूलैं री ।
सरसमाधुरी सकल हरी तन, मनकी सूलैं री ।।

राग खेमटा मलार ।

देखो झूलें हिंडोरे लाल लली ।
नव निकुंज सुखपुंज सुहावनि, रचना रुचिर अनूप अली ।
लाल बसन तन सोहत सजनी, गलमें मानिक माल भली ।।
बीरी लाल लसत मुख दम्पति, लालहि कर में कमल कली ।
लखि लालन की ललित लुनाई, सरसमाधुरी गई छली ।।

मलार राग सोरठ देश ।

झूलत रसिक राधेश्याम ।
मंजु महल निकुंज झूला, बन्यो अति अभिराम ।।
नील पीत दुकूल पहिरें, दिपत ज्यो घनदाम ।
निरखि नैनन छबि दोऊन की, वारिये रति काम ।।
सहचरी हिलमिल झुलावत, देत झोटा थाम ।
साज बाज मिलाय गावत, जुगल के गुण ग्राम ।।
फूल माल प्रसाद बीरी, पात रीझ इनाम ।
सरस रसकी माधुरी लखि, मगन मन निशि जाम ।।

मलार राग सोरठ ।

झूलत कृष्ण राधेसंग ।
पहर पट भूषन सुअंगन, हिये प्रेम उमङ्ग ॥
सखी सहचरि मिल झुलावत, गाय तान तरंग ।
बीन चंग उपंग बजवत, मधुर परन मृदंग ॥
गगन गरजत मेघ बरषत, बोलि विविधि बिहंग ।
कमल कुल फूले सरोवर, भ्रमत माँते भृंग ॥
त्रिबिध बहत समीर सौरभ, छई अद्भुत ढंग ।
सरस रसकी छबि बिलोकत, लजें रती अनंग ॥

राग सारंग मलार ।

दम्पति भाव हिंडोरे झूलें ।
वे उनको वे उन्हें झुलावें अतिशय, मोद सुअंगन फूलें ॥
कबहूं श्याम घटा पर बिजुरी, रमक रहत पिय गहि भुजमूलें ।
सरस माधुरी कुञ्ज केलि रस, निरखि नैन निज सुधि बुधि भूलें ॥

सारंग तथा गोड मलार ।

जुगल वर झुक झुक झोटालेत ।
गलबैयां दीने रंगभीने, झूलत बन संकेत ।।
श्यामसुन्दर सुन्दरी राधिका, हिल मिल अधिक सुहेत ।
सरस माधुरी अधरामृत रस, रीझि परस्पर देत ।।

राग मलार ।

बरसत सांवन मेघ सुहावन ।
रम झम झरी लगी अति लौनी, दामिनि की चमकावन ।
दादुर मोर चकोर कोकिला, बोलत हैं मन भावन ।।
हरी भूमि जल भरे सरोवर, सुन्दर सुख उपजावन ।
साज बाज सुर मिले मनोहर, सखियन को गुणगावन ।।
झूम झूम झूलत झूलामें, श्रीदम्पति चित चावन ।
सरस माधुरी करत केलिरस, रति अरु मदन लजावन ।।

राग मलार ।

सघन ऋतु सावन की घनघोर ।
घुमडन घटा छटा बिजुरिन की, चमकत हें चहुं ओर ।।

रमझम झरी ललित अति सुन्दर, बोलत दादुर मोर।
पवन चलत पुरवैया प्यारी, कोयल करं रही शोर।
भरे सरोवर ताल तलैया, तिनमें उठत हिलोर।
कमल खिले नाना रंग न्यारे, गुंजत माँते भौंर।
रंगमहल बैठे रंग भीने, राधा नन्दकिशोर।
सरसमाधुरी श्री वन शोभा, निरख रहे चित चोर।

राग मलार ॥

जुगल की झूलन निरख नवेली।
श्यामल गौर किशोर किशोरी, जोरी अति अलबेली ॥
भुज भीरे नीरे मिल बैठे, करत रसिक रसकेली।
राजत रत्नजटित झूले दोउ, झुलवत संग सहेली ॥
कोटिन दासी रमा उमासी, निकट आय भइ भेली।
कोउ गावत कोउ साज बजावत, छबि लखि हरषत हेली ॥
सहचरि सकल सुमन बरसावत, दम्पति की मन मेली।
सरसमाधुरी रस मतवारी, सुखकी रासि सकेली ॥

राग मलार ।

रसिक सँग झूलत राधे रानी ।
धीर समीर निकट वंशीवट, निरखो सखी सयानी ।।
कदम डारि में डारयो झूला, ललिता ललित सुहानी ।
झोटा देत विशाखा सजनी, शोभा लखि सरसानी ।।
गरजत मेघ दामिनी दमकत, रमझम झरी लगानी ।
दम्पति बसन बूंद लग भीजत, छबि नहिं जाय बखानी ।।
दृगसों दृग जोरे चित चोरे, भुजसों भुज उरझानी ।
पुलकत प्रेम पगे पिय प्यारी, केलि करत मन मानी ।।
हँसि मुस्कात हरत मन सब को, बोलत अमृत बानी ।
सरसमाधुरी या सुख आगे, मुक्ति नोन को पानी ।।

राग मलार ।

घुमड घन घूम घूम बरसे ।
गरज गरज चपला चमकत है, अद्भुत द्युति द रसे ।।
झूलत कुंज हिंडोरें दोऊ, लपटलगें गरसे ।
किलकत हँसत करत कौतूहल अंग अंग परसे ।।
भूषन बसन सजे सुन्दरतन, अतिही छबि सरसे ।
सरसमाधुरी शोभा दम्पति, लखि मन में हरषे ।।

राग मलार ।।

झूम झूम झुक बरसे बदरिया ।
कारी पीरी घटा घुमडघन गरजे चम चम चहुँदिशि चमके बिजुरिया ।।
दंपति कुंज हिंडोरे झूलत रिम झिम बूंदन लग रहि झरिया ।।
पवन परस फुइयाँ लग भीजत, पियको पीत पट प्रिया की चुनरिया ।
दादुर मोर चकोर कोकिला, कोयल शब्द सुहावन करिया ।।
सखी समूह झुलावत गावत साज बजात मोद मन भरिया ।
सरसमाधुरी श्याम राधिका, करत केलि भेटत भुज भरिया ।।

राग मलार जंगला ।।

हिल मिल जुगल झुलावोरी सखी हिल मिल जुगल झुलावोरी ।
झोटा दे दे रमक बढ़ावो, श्यामा श्याम रिझावोरी ।।
निरख निरख शोभा दम्पति की, नैंनन को फल पावोरी ।
प्राणनाथ प्यारी प्रीतम को, सबही लाड लडावोरी ।।
बीना ताल मृदंग मँजीरा, राग मलार सुनावोरी ।
जै जै जै बलिहार बोल मुख, पुष्पन को बरसावोरी ।।

ऋतु के वन फल रतन थालभर, हितसों भोग लगावोरी ।
सरसमाधुरी सीत प्रसादी, प्रेम प्रीति सों पावोरी ।।

झूला राग पीलू बरवा ।।

माँनो माँनो जू बिहारी प्यारे झूलो होरे होरे ।
डर लागत तोरे करत निहोरे ।।
तरल पैंग जिन करोजी साँवरे अंग अंग काँपत बलिजाऊँ–
तोरे ।
इत अगाध जल भरे सरोवर, उत जमुना जल लेत हिलोरे ।
गरजत मेघ दामिनी दमकत, धरकत छतियां सुन पिया-
मोरे ।
सरसमाधुरी सहजें झूलें हिल मिल के दोउ रंग हिंडोरे ।।

मलार राग पीलू ।।

हँसि झूलिये हिंडोरे राधे प्यारी जू तुमहिते पावस ऋतु-
सरसे ।
यह सावन मन भावन भामिनि, आनंद घन बरसे ।।
चपला चमकन पवन झकोरन द्युति दूणी दरसे ।
रहस हिंडोरे झूलन हम तुम आये निज घरसे ।।

शोभा तुम्हारी निरखनकों, प्यारी मेरे नैंना तरसे ।
झूलन में झिझकन काहे की, झोटन के डरसे ।।
सहज झुलाऊँ श्यामां तुम को, मैं अपने करसे ।
होड लगाय हिंडोरे झूलें, लता कदम परसे ।।
हारे सो देवे आलिंगन, लिपट लगे गरसे ।।
सरसमाधुरी सघन कुँजमें, केलि करे हरिसे ।।

मलार राग पीलू ।

प्यारी झूलिये हिंडोरे मन हरष बढाय ।
झोटनसों क्यों डरत किशोरी, कहत श्याम बहुविधि समझाय ।।
देखो कैसी हरित भूमि है, फूली लता बेलि रहि छाय ।
त्रिविध बयार चलत सुखदाई, नभ में घटारही घुमडाय ।।
घन गरजनि दामिनी ते डरपत, लेहुँ प्रिया तुम्है हिये लगाय।
सरसमाधुरी बात श्याम की, सुन श्यामा रहि मृदु मुसकाय।।

फूल हिंडोरा राग मलार ।।

ये दोउ झूलत फूल हिंडोरे ।
खम्भा फूल पाट अरु पटरी, फुँदना फूल लगे चहुं ओरी ।।

फूल वितान तने अति सुन्दर झालर फल [illegible] ।
फूलन की फूली फुलवारी, लहलहात त्यों पवन झकोरे ।।
फूली सखी झुलावत गावत [illegible] होरे ।
फूले तनमन लाललडेती हँसि मुस्कात नैन जुग जोरे ।।
फूलकुंज सुख पुंज सुहावन, घटा घुमड नभ में घन घोरे ।
सरसमाधुरी फूल फूल कर, झमक झुलावत होरे होरे ।।

राग मलार ।।

किशोरी पिय पे झूलन आई ।
ललितादिक हेली मन मेली, प्यारी संग सुहाई ।।
झमक चलन नूपुर ध्वनि बाजत, गति गयंद सरमाई ।
प्रीतम मिलन सनेह हिय में, उमंग चली अतुराई ।।
कोउ सखि लीने चमर मोरछल, सुंदरता सरसाई ।
फूल माल कोउ ले रुमाल कर, भँवर निवारत जाई ।।
नीलांबर में तन दामिनि ज्यों, प्रगट दमक द्युति छाई ।
मोहन मन मयूर लखि हरषो, मनों नवो निधि पाई ।।
आगे आये लेन लाडिलो, हँसि निज हृदय लगाई ।
सरसमाधुरी ले उछंग निज, प्रिया हिंडोर पधराई ।।

सोरठ मलार ।।

अरी येरी दोऊ झूलत रंग भरे ।
दे गलबैयां लाल लडेती छैयां कदम तरे ।।
नील पीत पट पवन परस के, उरझत उडत खरे ।
घन दामिनि ज्यों नभ के माहीं, हिल मिल दमक दुरे ।।
ज्यों ज्यों रमक बढत झोटन की, प्यारी हिय में डरे ।
झिझक झमक प्रीतम के प्रियाजू, हँसि लिपटात गरे ।।
लता पता प्यारी फुलवारी शोभित वृक्ष हरे ।
भांति भांति के फूल तरुनते, झर झर धरनि परे ।।
मदमाते रसमादक पीये, केलि कलोल करे ।
सरसमाधुरी छबि दम्पति की मन ते नांहि टरे ।।

पीलू बरवा मलार ।।

सैयां मेरो गयो री विदेशवा, कहारी करूंरी मेरी बीर ।
आये नहिं भेजोरी सँदेसवा, कैसें धरूंरी मन धीर ।।
काहि सुनाऊं दुखदाई, उठत विरहकीरी पीर ।
बालम बिन छतियां फटे, नैंनन बरसे री नीर ।।
सरसमाधुरी श्याम बिन, अङ्ग सुहात न चीर ।।

देखोरी मुकुट झोका लेरह्यो लेरह्यो जमुना के तीर ॥

(इसके वज़न पर मलार)

झूलत गोपाल हिडोलनें देखो यमुना के तीर ।
चहुँ दिशि सोहत संग में, सखियन की भीर ॥
सघन कदम अति सोहनो ताकी हरी हरी डार ।
तामें झूला डारियो ललितादिक नार ॥
पचरंग डोरी रेशमी गूँथे रत्न अपार ।
लटकन मोती झूमका, पन्ना परम सुढार ॥
पटली सरस सुहावनी, ब्राजे जुगलकिशोर ।
रूप रासि मन मोहने, दोऊ चितके चोर ॥
नील पीत पट रंग मँगे, सजे अंग शृंगार ।
फूलन की माला गले, हिय सोहत हार ॥
सीस चन्द्रिका मुकुट सजि, छबि वरनो न जाय ।
दम्पति दोउ रस में छके, रहे दृगन मिलाय ॥
दे गलबैंयां झूलहीं, पिय प्यारी जू साथ ।
इक इक डोरी लाडिले, गहि अपने हाथ ॥
हँसि हँसि रमक बढ़ावहीं, गावें राग मलार ।
बीन मृदंग बजावहीं, सँग ब्रजकी नार ॥
भूमि हरी वनहूं हरो, फुले बहुविधि फूल ।
लता लजित छाई सखी, कालिंदी कूल ॥

भरे हैं सरोवर नीर सों, रहे कमल खिलाय ।
मद माते भोंरा जहां, रहे हैं मँडराय ।।
मंद मंद घन गरज़न सुनि, नाचें वन में मोर ।
पक्षी सूवा सारिका, बोलें हंस चकोर ।।
छाये बदरा गगन में, अतिसुन्दर बीर ।
झीनीं बूंदन झर लगो, चलै त्रिबिध समीर ।।
नाच रही बहु नागरी, गावें सावन गीत ।
सुन सुन मन सुख पावहीं, दोऊ प्यारे मीत ।।
झूले मन फूलें सखी, वृन्दावनचन्द ।
सरसमाधुरी रूप लखि, पायो परमानन्द ।।

मलार राग खमाँच ।।

रंग हिंड़ोरे री झूलें सरस बिहारी संग सोहें री,
रबि चन्द कोटि वारी प्रांन मोरे री ।
नीको सुर तरु छायो तामें हिंड़ोरा रचायो,
सखी झोटा दे झुलावें थोरे थोरे री ।।
सोहे चन्द्रिका मुकुट झुकी बांकीसी लटक,
रही हिय में खटक चित्त चोरे री ।
दीयें दोउ गलबांहीं झूलें फूलें मन माहीं,
आली चमर ढुरावें दुहूं ओरे री ।।
वीना मृदङ्ग बजावे कोऊ नाचिके रिझावें,
गावे राग रस मलार तान तोरें री ।।

शुक चरण सखी प्यारे प्रान प्रीतम हमारे,
आई सरस शरण श्याम श्यामा तोरे री ।।

मलार राग सोरठ ।।

झूलत हिंडोरे राधा सरस बिहारी ।
सावन मास सुहावन सजनी, छाई घटा चहुँ दिसि
कारी कारी री ।।
बरसत मेघ दामिनी दमकत, भूमि भई सुंदर हरियारी री ।
वेलि वितान सघन वन शोभित, फूल फूले अनेकन
क्यारी री ।।
दादुर मोर चकोर कोकिला भ्रमर गुंज रहै अति
सुखकारी री ।
यमुना कूल कदम तरु मांहीं, ड़ारो झूला मिल सखी
सारी री ।।
कञ्चन पटुली जुगल बिराजे, झोटा देत सखी पिय
प्यारी री ।
बीन मृदङ्ग बजावत आली, नृतत भाव बतावत
न्यारी री ।।
रीझिदेत गल माल प्रिया पिय, लेत सखी हिय हर्षत
भारी री ।
सरसमाधुरी दम्पति छबि लखि बोलत मुख जय जय
बलिहारी री ।।

मारवाड़ धुनि के वजन पर मलार।

सखी श्रीसरस बिहारीजी संग लै झूलत प्यारी जी।
श्रीवृन्दावन धाम सुहावन, श्रीनंदलाल परम मन भावन,
डारो झूला ललित कदम की सुन्दर डारी जी॥
हँस मुस्कात जुगल मनमाहीं झूल रहे दोउ दे गलबांहीं,
सखी झुलावत ललित बिसाखा, इत उत न्यारी जी।
राग मलार विपिन धुनि छाई, सखियन दम्पति लिए रिझाई,
बीन मृदंग बजाय नाचि, पायल झुनकारी जी॥
चहुं ओर फूली फुलवाई, हरी भूमि ऋतु नई सुहाई,
पवन चले पुरवाई, लगे सब को सुखकारी जी॥
दादुर मोर पपैया बोलें सारस हंस चहों दिशि डोलें,
कुहू कुहू कोयल कलबानी, करत उचारी जी॥
लाल मुकुट पीतांबरधारी प्रिया चन्द्रिका शीस सँवारी,
जरतारी सारी के चहुँ दिशि, कोर किनारी जी।
नख सिख लों भूषन तन सोहैं, निरखत ही सबको मन मोहैं,
करत परस्पर केलि राधिका, श्रीबनवारी जी॥
घटा गगन कारी रुचिकारी, बिजुली चमक दमक उजियारी,
डरत किशोरी लिपटत पिय के, हिये मझारी जी।
श्रीशुक सखी प्राण के प्यारे, चरणदासि नैननके तारे,
सरसमाधुरी जुगल चंद, शोभा पर वारी जी॥

सावन कृष्णा हरियाली मावस मलार ।।

आज तिथि मावस है हरियारी ।
सांवन कृष्ण पक्ष अति पावन, पावस ऋतु अति प्यारी ।।
गावत गीत पुनीत प्रीत सों घर घर में ब्रजनारी ।
झूले झूलें तन मन फूलें, यूथन मिलि सहचारी ।।
हरीभरी अति भूमि सुहावन यमुना तट सुखकारी ।
हरित लतन में झूला डारो, अति अनुपम तेंहि बारी ।।
हरित बसन भूषन सजि अंगन, आये प्रिया बिहारी ।
पधराये पुनि झमक झुलाये, करके बहु मनुहारी ।।
गान तान धुनि छई छबीली, हरष बढावन हारी ।
सरसमाधुरी रीझि रहे दोउ, श्रीदम्पति रिझवारी ।।

पद सांवन शुक्ला २ सिंजारा मलार ।।

देखोरी सिंजारो प्यारो अति सज्यो,
सज्योरी श्यामां जू के अंग ।।
शीस फूल सिर चंद्रिका, बेना भाल सुढंग ।
नैनन कजरा रम रहो, चितवन भृकुटी भंग ।।
बेसर नाशा सोहनो, बेनी पीठ भुवंग ।
हाथन में महँदी रची अद्भुत लाली रंग ।।
हँसन दसन मन मोहनी, मोहे रती अनंग ।
हिय हारावलि रतन की, कसी कंचुकी तंग ।।

नख सिख भूषन वसन द्युति, छबि की उठत तरंग ।
नव नव लाड लडावहीं, अलिगण भरी उमंग ।।
नाचत गावत नागरी, बजावत बीन मृदंग ।
बीरी अरपत प्रेम सो, सरसमाधुरी संग ।।

श्रावण शुक्ला २ सिजारा मलार ।।

सुहायो सैयों सांवन सरस तीज सिजारो ।
मनमोहन मिल रंग रस करस्यां, भुज भर आनन्द भारो ।।
करांजी कसूंबा मीठा मन भर, छकसी पिया मतवारो ।
सरसमाधुरी रीझ रिझावां, राधाजीरो प्रान पियारो ।।

सोरठ मलार ।।

सलोनी लागे आज सिजारा री रैन ।
मदन मोहन महलां में आसी अति सुंदर सुख दैन ।।
उठ आदर कर कंठ लगावां, छवि निरखा भर नैन ।
रँग भीनी सेजां रंग माना, तन मन उपजे चैन ।।
लाड लडावां बालम रूठा, बोलो मीठा बैन ।
सरसमाधुरी सहस बधाई, गावां मिल निज ऐन ।।

श्रावण शुक्ला ३ सोरठ मलार ।

परम प्यारो तीजांरो त्योंहार ।
हिलमिल हींदो घालां हेली, सघन कदम की डार ।।
पचरंग रेशम डोरि सुहावन, पटली अति मन हार ।
सरस बिहारी झमक झुलावां, गावां राग मलार ।।
फूल फूल बरसावां सजनी, बोलां मुख बलिहार ।
सरस माधुरी छकां रूपरस, निरख जुगल सरकार ।।

राग मलार ।।

तीज सांवन शुक्ला सुखकारी ।
झूलत नवल हिंडोरे नागरि राधा सरस बिहारी ।।
गढ बिलास गह्वर बनमांहीं, हिलमिल सब सहचारी ।
ललिता आदि बिशाखा आली, झमक झुलावत सारी ।।
बरषत फुई पवन पुरवैया, घटा छई नभ कारी ।
बोलत मोर चकोर चहों दिशि, लता ललित हरियारी ।।
गावत गीत सुहावनि सुंदरि, साज बजावत नारी ।
सुनि मन मुदित होत श्री दम्पति, देखत बिपिन बहारी ।।
सुरपुर नारि निरखि सुधि भूली, भई प्रेम मतवारी ।
सरसमाधुरी लखि लोचन छबि, निज उर अन्तर धारी ।

राग मलार ।।

सांवन तीज सुहावनि लागे, झूलत राधा रसिक बिहारी ।
अरस परस गलबैंयां दीने, बसन लहरिया सोहत सारी ।।
रंग हिंडोरे रमक झुलावत ललितादिक सखियां सुकुमारी ।
गावत राग मलार मनोहर, साज बजावत सुन्दर नारी ।।
नाचत नवल सहेली मन मेली, भाव बताय होत बलिहारी ।
जुगल रिझावत सुख उपजावत करत केलि कौतूहल भारी ।।
घटा घुमड बरषत नभ फुइयां, भीजत रीझत प्रीतम प्यारी ।
बोलत मोर चकोर कोकिला बैठे ललित लतान मँझारी ।।
शीतल मंद सुगंध सुहावनि, पवन चलत पुरवैया न्यारी ।
गरजत मेघ दामिनि दमकत, वन शोभा शोभित हरियारी ।।
बरसानों सरसानों सजनी, उमँगि रह्यो आनंद अपारी ।
सरसमाधुरी श्रीदम्पति की, निज नैनन छबि लखि
भई वारी ।।

जयपुर भाषा में मलार ।

सहेल्यो म्हारी निरखो ने तीज पियारी ।
सज शृङ्गार पहर पट भूषन, हिलमिल चलस्यां लारी ।।
पूजन कर प्रसन्न म्हे करस्यां, बर मांगाँ हितकारी ।
अचल सुहाग भाग दिन दूणों, पावां रीझि अपारी ।।

रंग हिंडोरे रंग सों झूलां, संग सहेल्यां सारी ॥
सरसमाधुरी सांवन सरसे, घन बरसें जलधारी ॥

श्रावण शुक्ला पवित्रा एकादशी पद मलार ॥

पवित्रा पहरत प्रीतम प्यारी ।
मखतूली पचरंग मनोहर, सखियन सुकर सँवारी ॥
सर्वोपरि श्रृंगार सुहावन, सुख उपजावन हारी ।
सोहत हैं उर लाल लडेती, मनु फूली फुलवारी ॥
तिथि एकादशी श्रावण शुक्ला सुंदर दिन शुभकारी ।
बरन बरन बादर नभ छाये, भूमि भई हरियारी ॥
बैठे रसिक प्रिया सिंहासन, शोभा सिंधु अपारी ।
निरख नैंन छबि छकी छबीली, सरसमाधुरी वारी ॥

पद भोग मलार ॥

आयाछै म्हांके सरस बिहारी पावणा ।
नाना बिधि पकवान मिठाई, रुचि रुचि भोग लगावणा ॥
अचवन कर आरोगो बीरी, लागोछो परम सुहावणा ।
'सरसमाधुरी' सेजां पोढ़ो, रंग रस मोज मनावणा ॥

पवित्रा का दूसरा पद मलार ।।

पवित्रा अति सुन्दर सुखदाई ।
पचरंग रेशम की अतिपावन, सहचरि सुघर बनाई ।।
एकादशी श्रावण शुक्ला तिथि, अलि हिलमिल समुदाई ।
राधा सरस बिहारी जू के, गलमाहीं पहराई ।।
लाल लडेती के उर ऊपर, अद्भुत शोभा पाई ।
गौर साँवरी घटा मध्य मनु, धनुष उदय भये आई ।।
छबि को निरख हरष हिय छायो अखियां रहीं छकाई ।
सरसमाधुरी मगन भई मन, जय जय कहि बलिजाई ।।

राग मलार ।

रस भरे झूलत रसिक बिहारी ।
जमुना तीर भीर कदमन की, झूला डारो अति मनुहारो ।।
ललितादिक सखि झमक झुलावत गावत राग मलार उचारी ।
उमढ घटा चहुँदिस घिर छाई, नहनी बूंदन बरसत वारी ।।
सीतल मंद सुगंध पवन चले, बन शोभा शोभित हरियारी ।
लहकत लता सुमन सौरभ युत, गुंजत भ्रमर भीर भई भारी ।।
जुगल लाल के लाल वसन तन, भूषन फूल फवे सुखकारी ।
मुख अंबुज पर बूंद सुहावन, मानो मोतिन के उनहारी ।।

हँसि हँसि जात गात लपटावत, मदन मनोहर राधा प्यारी ।
सरसमाधुरी मूरति दोऊ जीवन प्रान आधार हमारी ।।

राग मलार ।।

हिंडोरे हेली झूलत जुगल किशोर ।
झूला परयो कदम की डारी, जाकी पच रंग डोर ।।
पटली परम पुनीत चंदनी, बैठे दोउ इक ठोर ।
झोटा देत सुख सखि सजनी, चरणदासि दोउ ओर ।।
गरजन मेघ दामिनी दमकत, बोलत दादुर मोर ।
बरसत बूंद सुहावनि रसमइ, जमुना लेत हिलोर ।।
हँसि मुस्कात करत कौतूहल, दम्पति चित के चोर ।
गावत राग मलार मनोहर, लाजत काम करोर ।।
कर श्रृंगार डार गलबैंयां सुंदर सांवल गोर ।
सरसमाधुरी निरख नैन भर, जै जै कहे करजोर ।।

सोरठ मलार ।।

सांवन सरस सुहावन झूलत सरस बिहारी री ।
ब्राजरहे लालन अरु ललना, गलबैयां डारी री ।।

लता कुंज कमनी अति रमनी, छबि हरियारी री ।
फूले फूल कूल कालिंदी, शोभा प्यारी री ।।
घटा घुमड घन घोर गगन में, छाई कारी री ।
रिम झिम झरी लगी चहुँ दिसि, चपला चमकारी री ।।
रीझ भीज भीने आनँद में, पिय सुकुमारी री ।
सरसमाधुरी मूरति जीवन, प्राण हमारी री ।।

राग मलार ।।

लडेती लाल हिंडोंरे झूलें ।
सघन कुंज हरियारी प्यारी, कालिंदी के कूलें ।।
गावत राग मलार मनोहर, अंस धरें भुज मूलें ।
सुन सुन सखी मगन मन माहीं, देह दशा सब भूलें ।।
जमुना लेत हिलौंरें हौरें, कमल विविध विधि फूलें ।।
त्रिविध पवन लग पुलकत न्यारे, फहरत अंग दुकूलें ।।
कुसुमाभरन सजे प्रति अंगन, नव किशोर सम तूलें ।
सरसमाधुरी रूपरासि लखि, मिटी मदन मन सूलें ।।

राग मलार ।।

आज आली दम्पति झूलें री । परस्पर तन मन फूलें री ।।
झूला पड्य कदम की डारी, पचरंग रेशम डोरी प्यारी,

पटुली ब्राजे जुगल धरैं अंसन, भुज झूलें री ।।
नभ में घटा घुमड घन घोरें, बिजुरी चमकत है चहुँ ओरें,
बरसत बूँदन थोरें थोरें जमुना कूलें री ।।
हरित सघन बन शोभा भारी, तैसी भूमि भई हरियारी,
त्रिविध पवन परसत सुख सरसत सुधि बुधि भूलें री ।।
राग मलार जमों सुखदाई, गावत सखि सुर साज मिलाई,
नखसिख सजि श्रृंगार नागरी वय सम तूलें री ।।
हँसि हँसि झोटन रमक बढावें, लिपटत प्रेम पगे पुलकावें,
सरसमाधुरी निरखि मिटी मन्मथ तन सूलेंरी ।।

सोरठ मलार ।।

हरित हिंडोरे झूले सखी श्यामा श्याम री ।।
हरी हरी कुँज सुख पुंज परम प्यारी,
भूमि हरियाली लता हरी अभिराम री ।।
हरित बसन तन भूषन हरत मन,
हरित बिपिन शोभा वृन्दावन धाम री ।।
हरी भरी हेली मन मेली मिल राग गावें
झमक झुलावें बोलें हरी हरी नाम री ।।
सरसमाधुरी हरे तरु हरे सूवा हरे;
हरे रटें मुख हरि हरि नाम री ।।

सोरठ मलार ॥

झूलें नंद नंद प्यारो प्यारी भानुनंदनी ॥
रतन हिंडोरे राजें, लखि रति काम लाजें,
जुगल किशोरी जोरी जैसी प्रेमफंदनी ॥
ललिता विशाखा आली, लखि छबि मतवाली,
झमक झुलावें गावें आनंद की कंदनी ॥
सारंगी तमूरा साज, बीना मृदंग बाज,
तैसी ही सलोनो गाज घनकी सुछंदनी ॥
घटा घिरि आई, झरी बूंदन लगाई माई,
पवन चलत पुरुवाइ अति मंदनी ॥
सरसमाधुरी झांकी अति अलबेली बांकी,
अजब अदाकी चटकीली चित्त चंदनी ॥

सोरठ मलार ॥

झूलत छबीले दोऊ देखो छबि आली री ।
सुमन श्रृंगार कियें बैठे गलबैया दियें,
हँसि हूलसात हिये राधा बनमाली री ॥
छबीली सहेली संग नाचें गावें राग रंग,
बजावे बीना मृदंग देवें कर ताली री ।
बोलत चकोर मोर दादुर करत शोर,

घटा घनघोर छटा, बीजुरी निराली री ।।
बरसत फुयां पवन चले पुरवैयां
हरित कदम खिले फले डाली डाली री ।।
कहै सरसमाधुरी सलोनी जोरी गोरी श्याम
अति अभिराम शोभा बनी है विशाली री ।।

मलार सोरठ देस ।

झलक रसिक राधे श्याम ।
मंजु महल निकुंज झूला, बन्यो अति अभिराम ।।
नील पीत दुकूल पहिरें, छिपत ज्यों घन दाम ।
निरखि छबि नैनन दोउन की, वारिये रति काम ।।
सहचरी हिल मिल झुलावत, देत झोटा थाम ।
साज बाज मिलाय गावत, युगल के गुण ग्राम ।
फूल माल प्रसाद बीरी, पात रीझि इनाम ।
सरस रसकी माधुरी लखि मगन मन निसि जाम ।।

सोरठ देस मलार ।।

झूलत जुगल हँसि मन हरत ।
परस्पर प्रीतम पियारी, रिझि अंकन भरत ।।
कलित ललित कपोल हिल मिल, हरष चुम्बन करत ।

अधर अमृत पान कर, मन धीर नाहीं धरत ।।
रूपरस लोभी रंगीले, रति करन अनुसरत ।
सरसमाधुरी नैन मेरे, छबि लखत नहिं टरत ।।

सोरठ देश मलार ।।

झूलत राधिका नंदलाल ।
कनक मणिमय रचित झूला, झुलावत बर बाल ।।
अंस भुजधर जुगल राजत, मनों छबिके जाल ।
सरसमाधुरी रूप लखिके, भई सखि निहाल ।।

राग मांड मलार ।।

हिंडोरे हेली झूलत दम्पति आज, लिये संग मंडल सखी समाज ।।
गलबैयां दीनें रंग भीनें, हिल मिल रहै बिराज ।
गौर श्याम छबि निरख नवेली, रती मदन गये लाज ।।
गावन लगी मलार नागरी, बजवत सुंदर साज ।
सुन सुन मुदित होत मनमाहीं, रसिकन के सरताज ।।

झूम झूम झुक बादर छाये, मधुरी घनकी गाज।
सरसमाधुरी रसकी वर्षा, बरसावत महाराज।।

राग मांड़ मलार।

झमक झूलत झूलैं युग चंद। सखीरी श्रीराधा नँदनँद।।
ललित कदम कालिंदी कूलें, झूला बन्यो सुछन्द।
झोटा देत सुख सखी सहजें लखि मन होत अनंद।।
गावत राग मलार मनोहर, चरणदासि सुख कन्द।
बीन मृदंग बजत मन भावन, दम्पति करत पसन्द।।
चमर मोरछल आदित लीनें, सेवत अलिगण बृन्द।
नैन चकोरि रूपरस पीवत, परी प्रेमके फन्द।।
सरसमाधुरी नांही करके, लली हँसत मुखमन्द।
नाम लिवावत पिय प्यारी सों, सखियां दे सोगंद।।

राग मलार।

हिंडोरे झूलें राधा सरस गुपाल।
नव निकुंज वृन्दाबन मांही, ललिता रचो रसाल।।

कञ्चन खम्भ जडे मणि माणिक, हीरा पन्ना लाल ।
मोतीलर लटकत ता मांहीं, शोभा बनी हैं बिशाल ।।
रही झुलाय विशाखा सजनी, झोटा देत सँभाल ।
पुलकित प्रेम पग पिय प्यारी, अलियन के प्रतपाल ।।
गात बजात रिझात सखी मिल, सुन्दर व्रजकी बाल ।
सरसमाधुरी निरख जुगल छबि, मन में भइ है निहाल ।

सोरठ मलार ।

बरसत बलि जाऊँ बादर प्यारे ।
गौर श्याम अभिराम धाम छबि, मेरे महल पधारे ।।
आनँद सों उठि करी आरती, सिंहासन बैठारे ।
नैंन निहार मुदित मन में भइ, फूल शृंगार सिंगारे ।।
षट रस ब्यंजन मन के रञ्जन, पुरस धरे भर थारे ।
युगुल जिमाये गुण गण गाये जागे भाग हमारे ।।
पुनि अचवाय दई मुख बीरी, सुख सैया पौढारे ।
चांपों चरणकमल निज करसों हियमे हर्ष अपारे ।।
निरखूं कुंज केलि कल दम्पति, पुलक प्रेम तन सारे ।
सरसमाधुरी के सरवस धन, करौ न पल छिन न्यारे ।।

देखोरी मुकुट झोका लेरह्यो

इस धुन में ।।

राग मलार ।।

झूले झूलत श्री लाडिली, झुलावत ब्रज री बाल ।
रच्यो हे हिंडोरा रंग मगो, ललित कदमकी री डाल ।।
पचरंग डोरी रेशमी, गूंथी मुक्ता री माल ।
रतन जटित पटली सजी, सोहन सरस सुढाल ।।
ब्राजत तापर प्रेमसों, कीरति कुंवरि कृपाल ।
मानों खर जलसों भरो, सुन्दर ताकी पाल ।।
बृक्षन की शोभा भली, हरे हरे ताल तमाल ।
बसन लहरिया तन लसें, भूषन पन्नालाल ।।
चमक दमक चहुं दिसि भली, अलि निरखि निहाल ।।
झमक झमक झोटान की, बाढी रमक तराल ।
संग सखीगण सोहहीं, गावत गीत रसाल ।।
लतन ओट निरखत खडे, नट मदन गुपाल ।
रीझि रहे राधे निरखि, तन सुधि न सँभाल ।।
लखि पाये इक नागरी, रसिया छबि जाल ।
भुज गहि प्यारी के निकट, लाय ततकाल ।।
मिले हैं परस्पर प्रीतसों, भर बाहु बिशाल ।
सरसमाधुरी आरती, वारी कंचन थाल ।।

सोरठ मलार ॥

सावन की सुंदर जामिनी, झूलें रसिक पिय स्वामिनी,
ब्राजे जुगल झूले अली, झुलवत करोरन कामिनी ॥
झोंटा झमक रसकी रमक, पौशाक पैमक की चमक,
दम्पति के अंगन की दमक, जैसे घटा अरु दामिनी ॥
सोहन सजे तन आभरन, प्रिया गौर पिय साँवल वरन,
द्युति दोउन की है मन हरन, मोही निरख सब भामिनी ॥
पावस की ऋतु सरसावनी, रिम झिम झरी बरसावनी,
तैसी मधुर सुन गावनी आलिन की अति अभिरामिनी ॥
मुस्कात प्रेम उमंग सों, लपटत परस्पर रंग सों,
छबि सरसमाधुरि अंग सों, छलकत छटा हीरा मनी ॥

राग ठुमरी मलार ॥

झूलत श्रीराधे घनश्याम, सखी री श्री वृन्दावन धाम ॥
क़दम डारि में झूला डारह्यो प्यारी आप झुलावत प्यारो,
मचकी देत परस्पर दोऊ, निरखत ब्रज की बाम ॥
तैसिहि घट घुमड नभ छाई, फुई परत अति परम सुहाई
सीतल मद सुगंध पवन चले, देत युगल आराम ॥
साज मिला गावत नव नारी, नाचत भाव बतात अपारी,

रिझवत नवल नइ गति लेले, पावत प्रेम इनाम ।।
सघन लता चहुँ दिसि सुखदाई, फूल फूल रहे महकाई,
यमुना बहत लहत अति आनँद, हरी भूमि अभिराम ।।
कोयल बोलत परम सुहाई, निरतत मोर मुदित मगनाई,
सरसमाधुरी दम्पति छबि लखि, लजित कोटि रति काम।।

सोरठ मलार ।।

हिंडोरे झूलें पिय प्यारी मिल आज ।
राधा सरसबिहारी सजनी, सखियन के सिरताज ।।
सहचरि सकल झुलावत हितकर, कीनो सरस समाज ।
गाय बजाय रिझाय दोउन को, एक मिला सुर साज ।
बरसत फुई पवन पुरवैया, मंद मंद घन गाज ।
सरसमाधुरी सन्मुख ठाडी, निरखन दम्पति काज ।।

मलार चाल नाटक ।

झूलैं झूलैं जुगल सरकार कदम में झूला डार ।।
यह सावन मन भावन सजनी शोभा को नहीं पार,
लखो तुम नैन निहार ।।
छाये बदरा गगन मंडल में, नहनी परत फुहार,
गरज घन देत बहार ।।

चमक रही चपला चहुँ दिसि को, बोले मोर मनहार,
नचत है विवध प्रकार ।।
सीतल मंद सुगंध सुहावनि, सुंदर बहत बयार,
करत भौंरा गुंजार ।।
सखी सहेली मन की मेली, गावत राग मलार,
नचत दे दे कर तार ।।
सरस माधुरी छकी निरख छबि, बोलत मुख बलिहार,
झुलावत बारम्बार ।।

मलार राग मरहटी ।।

श्रीकुंजविहारी लाल कुंजमें, हिल मिल झूला झूलें ।।

अंतरा

सावन मन भावन सखी हिंडोरा, रच्यो ललित सुखदाई ।
हीरा मणि माणिक लाल लगे, सुंदर अद्भुत छबि छाई ।।
रहे झूल लडैती लाल, बसन भूषन तन शोभा पाई ।
कर गान विविध सन्मान सुघर, अलि लै अरु ताल मिलाई ।।

उडान

बाजे गलबैयां डारी, हँसि मुस्कत प्रीतम प्यारी ।।
झोटा झुक झुक दें नारि नवल, नागरी तन मन में फूलें ।।

अन्तरा ।

ले चमर मोरछल अलि कोइ, सखी पान दान कर लीनें ।
कोइ पीक दान कोई अतर दान, सेवा दम्पति मन दीनें ।।
दरपन पंखा कोइ लिये लडावत, युगल लाल रंग भीनें ।
कोई छरी छबीली लिये खमा, मुख सों उच्चारन कीनें ।।

उडान ।

कोइ जै जै कहि मगनावें, बलिहार बोल हुलसावें ।
कोई फूलन को बरसाय बार कर, डारत रतन अमूलें ।।

अन्तरा ।

कर रहे शोर सूवा चकोर, मन मुदित मोर बन नाचें ।
कोयल की सुनि सुनि कूक, सलोने नेह रंग में राचें ।।
रहे ललित कपोल मिलाय, अधर अमृत रस रसिया जाचें ।
गुण रूप रंग रस भरी भामिनी, मनों ढली इक साचें ।।

उडान

हित कर कंठन लिपटावें, नैंनन सों नैंन मिलावे ।
गावें मलार मोहन बंसी में, सुनि सब सुधि बुधि भूलें ।।

अन्तरा ।

घन घटा गरज रहि लूम भूम, नन्ही बूंदन जल बरसें ।
फुइयाँ लगि अंग उमंग किशोरी, कृष्ण अधिक मन हरसे ।।
चपला चमकत चहुँ ओर भरी, आनंद लख सुख में सरसें ।
शीतल अरु मंद सुगंध पवन सों पट उड तन द्युति दरसें ।।

उडान

चहुँ ओर लता हरियारी। फूली फूलन की क्यारी।
कहै सरसमाधुरी रंग छाय रह्यो श्री यमुना के कूलें॥

विरह सोरठ मलार।

लगत फीके घन बिन घनश्याम।
घुमड घटा छाई दुखदाई, लागत निपट निकाम॥
बिजुरी तरज गरज सुन सजनी, डर बैठी बिच धाम।
बूंद बाण सम बेधत तनको कसक उठत बसुजाम॥
पिय पिय रटनि पपैया की सुनि, सकों निज चित थाम।
हिय में हूक उठत हरि हित की, नेक नहीं आराम॥
मिलो मयाकर आन प्राणपति, पतित उधारन नाम।
सरसमाधुरी चरणकमल की, चेरी है बिन दाम॥

विरह राग मलार।

आओ जी रसीला श्याम सुजान।
श्रीराधावर सरस बिहारी, सखियन जीवन प्रान॥

सावन में मन भावन आवन, करिये कृपा निधान।
नैंना तरस रहे दरशन को वचन सुनन को कान ॥
हिय अरबरत हृदय लागन हित रसन अधर रस पान।
हाँसी मरत मिलन हित हरदम, सुनिये करुणा खान ॥
ढील न कीजे सुधि आ लीजे, देहु पिया जिय दान।
सरसमाधुरी सुनहु सलोने, प्रीती रीति पहिचान ॥

सोरठ मलार ॥

श्याम सलोने मेरे घर आव।
विरहिन व्याकुल तुम दरसन बिन, प्रीतम तपनि बुझाव ॥
लूम झूम झुकि बादर बरसत, मोहि मिलन को चाव।
पावस ऋतु में प्राण पियारे, हित कर हृदय लगाव ॥
अपनी जान आन सुधि लीजे, तजि पिय निठुर सुभाव।
मिलो दया करके मन मोहन, अंत कहूं जिन जाव ॥
रसिक शिरोमणि नाम सुमर निज, नातो नेह निभाव।
सरसमाधुरी शरण निहारत, अब तो मत तरसाव ॥

राग मलार ॥

जुगलवर झूलत हैं रसमाते।
करत बिनोद मोद बहु भांतिन रति अरु मदन लजाते ॥

अधरामृत रसके दोउ रसिया, ले दे नांहि अघाते।
सरसमाधुरी लग छतियन सों, फूले अंग न माते ॥

गौड मलार ॥

झूलत नव निकुंज में प्यारे।
रत्न जटित झूला में राजत, गलबैयां दोउ डारे ॥
नील पीत तन वसन मनोहर, फूल शृंगार शृंगारे।
फूलन सो फूल्यो वृन्दावन, गुंजत अलि मतवारे ॥
बरन बरन बादर नभ छाये नहनी परत फुहारे।
चपला चमक सुहावनि सजनी, गरजत बादर कारे ॥
मोर चकोर कोकिला कूजत, सहचरि राग उचारे।
मेघ मलार जमा अति अद्‌भुत, सुन उपजत सुख भारे ॥
हँसि मुस्कात गात पुलकावत, लपट रहे अँकवारे।
सरसमाधुरी दम्पति शोभा, नैनन बसी हमारे ॥

सखियन के गावन को राग ठुमरी मलार ॥

सुनो जू पिय प्यारी, अरज ये हमारी,
घटा घिरि आई, देखो कारी कारी हो ॥
गरज घन न्यारी, तडित चमकारी,
पवन सकारी, लागे डर भारी हो ॥

हम मन माहीं जानी, बरसेगो बहु पानी,
भीजे पीत पट पिया को तुम्हारी सारी हो ॥
अब कीजे नहीं देरी, बूंदें आय गइ नेरी,
पधारो बेग प्यारे, जावें बलिहारी हो ॥
सरस सुन बानी, जुगल सुखदानी,
चले दोउ कुंज, गलबैयां डारी हों ॥

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा रक्षा बंधन
सारंग मलार ॥

आज दिन अनुपम मंगल कारी ।
श्रावण शुक्ला शुभ पूनों तिथि,
अति पावन सहचरिन निहारी ॥
पच रंग रेशम सदृश रचि,
मोती गूंथे हैं मनहारी ।
प्रेम सहित प्यारी प्रीतम कर,
राखी बांधत है नवनारी ॥
शोभा भई हस्त कमलन की,
हरि निरखि रहे युगलबिहारी ।
गाय बजाय रिझाये दम्पति,
हुलस सखी आरती उतारी ॥

वार फेर न्योछावर कर पुनि,
जै जै जै मुख गिरा उचारी,।
सरसमाधुरी कुंज महल में
गह मह भई अलिन की भारी ।।

रक्षा बंधन पद मलार ।।

पूनम पुण्य दिवस अति नीको,
सखियन हिय हित चित अभिलाखी ।।
बैठे युगल रतन सिहासन,
सहचरी मिलकर बांधी राखी ।।
मखतूली फुंदना गहि मोती,
प्रेम मंत्र पढि बोली साखी ।
चिरजीवो दम्पति सुख सम्पति,
सरस आशीष सुख सों भाखी ।।

सोरठ मलार ।।

झूलन पधारो प्यारे राधे श्याम ।
घटा घुमड रही कारी पीरी, पवन चलत अभिराम ।।
यमुना तट वंशीवट झूला, झूल रही ब्रज बाम ।
रच्यो आपके हेत हिंडोरा, अनुपम ताही ठाम ।।

सुन सखि वचन चले झूलन दोउ, हिलमिल ज्यों घन दाम।
सरसमाधुरी वार डारिये, छवि पर रति अरु काम ।।

खमांच मलार ।।

मास सांवन यह सुंदर आयो ।
घर घर झूला झूलत अलिगण, राग मलार सु गायो ।।
घिर घिर घटा छटा दरसावत, चपला अंग चमकायो ।
कोयल कूक रही वृन्दावन, मोरन शोर मचायो ।।
पिय पिय रटत पपैया प्यारो, लागत निपट सुहायो ।
झींगर झिगुर झिगुर बोलत हैं सुन सुन मन हरषायो ।।
हिल मिल युगल झूल रहे रंग सों कुंजमहल रस छायो ।
चल देखो छबि सरसमाधुरी, अति शुभ अवसर पायो ।।

सोरठ मलार ।।

झूलत लाडिली नंदलाल ।
लाल तन में लसत भूषन, वसन पहरें लाल ।।
लाल मुखन चबात बीरा, अधर अनुपम लाल ।
लाल मेंहदी रची हाथन, लाल ही गल माल ।।
लगे खंभन लाल अनुपम, ललित डांडी लाल ।

लाल लाडिलि मिल सुराजे, आलिन के प्रतिपाल ।।
लाल बादर घटा घुमडी, छइ छबि अति लाल ।
लाल मुनिआ बोल बानी, सुनत लाल निहाल ।।
लाल तने वितान कुंजन, जटिल लाल प्रबाल ।
लाल रंग में रंगी गौरी, सरसमाधुरि बाल ।।

राग मलार ।

अलिगण हिल मिल युगल झुलावें ।
डांडी झूला कर गहि ठाडी, झोटा सहज लगावें ।।
श्रीशुक सखी किशोरी ओरी, बीना बाद्य बजावें ।
श्याय चरण दासी प्रीतम दिसि, राग मलार सु गावें ।।
नाचत सन्मुख ललित बिशाखा, नाना भाव बतावें ।
चित्रा लिये तमूरा छेड़त, तान तरंग जमावें ।।
चंपकलता सरंगी चंगी, सरगम सरस सुनावें ।
तुंगबिद्या तबला गति नइ नइ, ठेका ठीक लगावें ।।
इन्दुलेखा कर मंजु मँजीरा, टनन टनन टनकावें ।
साज बाज सुर मिले मनोहर, सुन दम्पति सुख पावें ।।
रंगदेवी ले चमर कररही, छबि लखि नैन छकावें ।
सखी सुदेवी करत मोरछल, निरखि रूप वलिजावें ।।

श्रीगुरु अलि बलदेवी दासी फूलि फूल बरसावें।
सरसमाधुरी सन्मुख ठाडी, बीरी पान पवावें ।।

राग मलार ।।

किशोरी राधे झूलत नन्दकिशोर ।
श्रीवृन्दाबन कुंजन सजनी, हिल मिल श्यामल गौर ।।
ललित लता छाई सुखदाई, फूल खिले चहुँ ओर ।
बोलत मोर कोकिला कूजत, चातक कर रहे शोर ।।
हँस हँस रस बतियां बतरावत, हरष रहे चित चोर ।
सरस माधुरी रूप निरख रहि, युग मुख चन्द चकोर ।।

पद झूला समाप्ति राग मलार ।

झूलि झूले से उतरे प्यारे ।
कुंजबिहारिन कुंजबिहारी, जीवन प्राण हमारे ।।
गलबैयां दे चले महल दोउ, अलिन नैंन के तारे ।
बैठे जाय रत्न सिंहासन दम्पति, राधा नन्द दुलारे ।।

सेवा में सब ठाढ़ी सखियां, लाड लडात अपारे।
पंखा करत काइ कोई सहचरी, हितके बचन उचारे ।।
मंगल मोद बधाये गाये, करके बहु मनुहारे।
चिर जीवो दोउ प्रीतम प्यारी, सरस भइ बलिहारे ।।

इति श्री सरस झूलन मलार

श्री कृष्णजन्म उत्सव।

॥ बधाई धुन गजल ॥

जन्मे हैं नन्द के घर कृष्ण कुँवर अवतारी।
आये बृज भूमिमें महाराज मनुज तन धारी॥
भादो कृष्ण की तिथि आठें समय आधीरात।
प्रगटे हैं प्रेम के शुभ चन्द सुजन सुखकारी।
प्यारी वृषभान सुता प्रगट भई बर्षाने।
लीला दधिदान रचेंगे ये मदन मद हारी॥
पहले अवतारों में वरदान दिया जिन्न जिन को।
उनको अब देंगे ये मनवांछित फल सुखकारी॥
आवो सब आली चलो नन्द भवन हिल मिल के।
नाचो गुन गावो सकल जावो सरस बलिहारी॥

बधाई राग टोडी।

चलो सखी नंद महर घर आज।
यशोदा रानी जायो लालन, सब जग को सिरताज॥
श्यामवरन मन हरन लाडिलो, लखि दुख जावे भाज।
जन्म बधाई हिल मिल गावो, निरतो करो समाज॥

बीन मृदंग चंग सारङ्गी, रहै बाजनें बाज।
घन सम नौबत महल द्वार पर, रही रसीली गाज ।।
गो धन रत्न जटित बहु भूषन, दान देत वृजराज।
सरस माधुरी सब मन वांछित, पूरण कीने काज ।।

पलना राग सोरठ मलार।

नन्द रानी सुन्दर सुत जायो।
जाको सुयस जगत में जग मग, वेदन माँहि प्रगट कर गायो ।।
चरण पलोटत रमा निरन्तर, शंभू जिहि ध्यान लगायो।
प्रेम भक्ति के वस सो स्वामी, नंदराय को कुँवर कहायो ।।
विधि नारद सारद सनकादिक, वार पार जाको नहिं पायो।
सोझूलत ललन पलना में, किलकत हँसत करत मन भायो ।।
दुष्ट दलन संतन हितकारी, बृज मंडल में आ प्रगटायो।
सरस माधुरी मोहन सोहन निसदिन मोमन माँहि समायो ।।

पद पलना झूलन राग गौड।

पलना झूलत सरस बिहारी।
किलकत हँसत करत कौतूहल, केलि कला बिस्तारी ।।

सुन्दर श्यामसच्चिकन सिर पर, केशावली घुंघरारी ।
मस्तक सजी सुहावनी कुल ही, रतन जटित जरतारी ।।
झँगुली पीत पुनीत गात में नाक बुलाक सुडारी ।
भाल विशाल तिलक गोरोचन, कमल नैंन सुखकारी ।।
कठला कंठ करा पोहोंची कर, कटि कोंधनी सुधारी ।
पांयन पैंजन रुन झुन बाजत, हर्षत लखि महतारी ।।
नन्द बाबा कन्हवा कह बोलत, चिबुक टटोरत प्यारी ।
चितवन में मन मोहत मोहन, सुत की ले बलिहारी ।।
चकरी भौंरा फेर खिलावत, नन्द ग्राम की नारी ।
प्रेमभरी पुलकनि तन मन में, निरखि भई मतवारी ।।
भाग्य सराहत मन हर्षावत, विधि पे मांगत गोद पसारी ।
चिरंजीवो जसुधा नंद नंदन, सरसमाधुरी प्रान अधारी ।।

बधाई तरह कौवाली ।

प्रगटे कृष्णचन्द्र भगवान, भक्तजन सन्तन के रखवारे ।

अंतरा ।

भूमि पर बढा पाप का भार, देवता प्रभु से करी पुकार ।
लिया हरि आप आन अवतार, असुर दुष्टों के मारन वाले ।।
देवकी माता के प्रकटाये, पिता वसुदेव देख हरषाये ।
लाल को गोकुल में पहुँचाये, दरस दे सबके संकट टाले ।।
यशोदा गोबिन्द गोद खिलाये, नंदबाबा लख मन मगनाये।

दान गऊ लेके विप्र सुख पाये, उढ़ाये सब को शाल दुशाले ।।
सकल वृज की गोपी मिल आई नंद आंगन में नाची गाई,
महर को हितकर दई बधाई, भेट किये कुरता टोपी आले ।।
सरस आनंद दसों दिसि छाये, दरश करने श्री शंकर आये,
जै जै कहि सींगी नाद बजाये निरखि छबि नैन हुवे मतवाले।।

बधाई राग ख्याल ।

नन्द घर उमंग बधाई बाजे ।
भादो मास महा सुखकारी, नभ माहीं घन गाजे ।।
प्रगट भये श्रीसरस विहारी, रसिक संत जन के हितकारी,
श्याम वरन दुख हरन करन सुख, निरख मदन मन लाजें ।।
ब्रज घर घरतें गोपी आई, मंगल साज करन सज लाई ।
नख सिख कर शृंगार सलौनी, देखन ब्रजराजे ।।
गान तान धुनि चहुँ दिस छाई, घुरत निसान सरस सहनाई,
नाचत नार नबेली हिल मिल, सुंदर छबि छाजे ।।
सरसमाधुरी मन हुलसानी, देत असीस जोर दोऊ पानी,
चिरजीवो श्रीजसुधानंदन, पुरवो मन काजे ।।

बधाई राग जंगला झंझोटी ।।

लाल को लखि जशुमति हरषावे ।
कबहु कन्हैया ले गोद मोद सो पलना झमक झुलावे ।।
कबहु खिलावत ख्याल खिलोना, लख लालन किलकावे ।
मन्द हँसन मुख निरख नेह युत मैया बलि२ जावे ।।
नाक बुलाक तिलक गोरोचन, झँगुली पीत सुहावे ।
घुँघरारे सिर बाल सलोने, बेनी अति छवि पावे ।।
रत्न जटित सिर टोपी राजत, कठुला हिय छबि छावे ।
घुटरुन चलत चहों दिश देखत, पुनि उठ कबहुँ धावे ।।
कटि कोधनी पांय पैंजनियां, छुम छुम२ शब्द सुनावे ।
बाल केलि कोतूहल निरखत, तनमन हियो सिरावे ।।
डग मग चाल चलत चित चोरत, किलक महर ढिग आवे ।
सरसमाधुरी शिव विरंची सुर, या सुख को ललचावे ।।

पद पलना राग आसावरी भैरवी ।।

पलना झूलत श्रीनंदलाल ।
मात यशोदा प्यार प्रीतकर, झोटा देत संभाल ।।
सुकुमारी गोकुल की नारी, सुन्दर रूप रसाल ।
चकरी भौंरा सुकर फिरारत, विविध खिलावत ख्याल ।।
मन्द हँसन लखि मनमोहन की, मैया होत निहाल ।

राई नोन उतारि रोहनी, वारत मुक्ता माल ।।
मंगल गीत गात ब्रजबनिता, चंचल नैन विशाल ।
सरसमाधुरी सन्मुख ठाडी, निरख फँसी छबि जाल ।।

बधाई ढाढी की ।।

यशोदा रानी नेग हमारो दीजे ।
गोपराज श्रीनन्दरायज, यह अरजी सुन लीजे ।।
हों ढाढी श्री गोपवंश को, हरी दूब हँसि लीजे ।
कुल कीरति गाँऊ हरषाऊँ, प्रेमामृत सम पीजे ।।
ढाढी के सुन बचन मनोहर, परम प्रेम में भीजे ।
सरसमाधुरी दई सकल निधि, गिनति कहा बिधि कीजे।।

पद वधाई राग कल्यान ।।

नंद घर पुरषोत्तम प्रगटाये ।
पूरव जन्म दियो वर जो प्रभु, पूरन करने आये ।।
महर यशोमति निरख लाल मुख, मन में अति हर्षाये ।
मणि माणिक मोती और कञ्चन, भवन भँडार लुटाये।।
गौवें अनेक दई विप्रन को, ढाढिन हूं पहिराये ।
भाटन को हय गज रथ दीने, किये सबन मन भाये ।।
ग्वालन दीनी पाग पिछोरी, गोपिन चीर सुहाये ।

मांगत सूत और बन्दी जन, भूषन बसन दिवाये।
जाचक सभी अजाचक कीने, सब बिधि सकल अघाये।
'सरस माधुरी' मुख अशीस दे, चले सदन सुख पाये ॥

पद बधाई धुन गजल ॥

बधाई छाई गोकुल में, हुवा नन्द जू के लाला है।
यशोदा प्रान जीवन धन, सकल जग का उजाला है ॥
मनोहर जिसने की झांकी, चुभी चस्मों अदा बांकी।
अजब रंग ढंग कुछ इसका, नुकीला और नवेला है ॥
अनेकन ब्रज की नवनारी, भई लख रूप मतवारी।
करे तन मन को बलिहारी, निरखि छबि को निहाला है ॥
कोई निरतें कोई गावें, बजावें ताल कर ढोलक।
सरस कर माधुरी दरशन, रही नहीं तन सँभाला है ॥

बधाई राग खमांच ॥

गोकुल में गोविंद प्रगट भये।
भक्तिहेतु अवतरे कृपानिधि, करि हैं, लीला चरित नये ॥
दरस परस रस मुख सरसायो, विरह विपत दुख दूर गये।
'सरस माधुरी' कुँज बिहारी, नैनन में नित रहत छये ॥

पद बधाई राग एमन कल्याण ।।

प्रगटे श्री कृष्ण चन्द्र, मोहन माधव मुकुंद,
गोकुल में अति आनंद बजत है बधाई ।।
निरखत मुख श्री गोविन्द, मुदित भये यशोदा नंद,
गोप वृन्द गोपी जन हिल मिल सब आई ।।
नाचत मन हर्ष मान, सकल कला गुण निधान,
गान तान मंगल धुनि दशहों दिशि छाई ।।
गोप राज अजिर बीच, दधि कांदो भई कीच,
चन्दन चोवा पुनीत चहुं दिशि छिरकाई ।
ध्वजा पताका सदन द्वार, स्वस्तिक विरचे सुधार,
हरी भरी बन्दनवार हरष हिय बधाई ।।
सुर समूह चढ़ि विमान, धन धन निज भाग जान,
जै जै जै मुख बखान फूलन बरषाई ।
'सरस माधुरी' निहार तन मन धन दीनों वार,
मूरति अभिराम श्याम, दृगमें बसाई ।।

पद बधाई राग जिला ।।

नन्द घर अद्भुत आनंद माई ।
शोडश कला स्वयं पुरषोत्तम, प्रगट भये प्रभु आई ।।
भादों मास पक्ष बुद आठें अर्ध निसा छबि छाई ।
अति पुनीत नक्षत्र रोहिनी सिंहलग्न सुखदाई ।।

महा महोत्सव कीनो सब मिल, ब्रज में भई बधाई।
नूतन भूषन सवन सजाकर, गोप नारि मिल धाई ।।
गावत गीत प्रीत सों सजनी, नाचत भाव बताई।
चोवा चन्दन छिरकि परस्पर, केसर कीच मचाई ।।
गोप वृन्द गौवन को सजि के, केलि करत मन भाई।
हेरी देत हरष सों हिल मिल, मंगल मोद महाई ।।
मात यशोदा गोद मोद युत, लीन्हे कुँवर कन्हाई।
सरस माधुरी निरखि लाल मुख, मन में अति मगनाई ।।

पद वधाई राग सोरठ ।।

आज दिन अति ही मंगल कारी।
प्रगट भये पुरुषोत्तम स्वामी, गौकुल नगर मंझारी ।।
यशुमत नंद महर आनंदहि, निरख रूप उजियारी।
डगर बगर घर घर ब्रज माहीं, भई बधाई भारी ।।
भादो मांस बुधी दिन सुन्दर, आठें निसि अँधियारी।
उदित भये तब कृष्ण चन्द्रमां, तीन लोक तम हारी ।।
दरशन करन चकोरा गोरी, जुरि आई नव नारी।
लखि लालन मुख मगन भई सब, सुध बुध सकल बिसारी ।।

दुष्टदलन भक्तन प्रति पालन, सन्तन के हितकारी ।
सरस माधुरी बांकी झांकी, जीवन प्रान हमारी ।।

पद बधाई राग मलार ।।

आज सखी ब्रज में बजत बधाई ।
प्रगट भये पूरन पुरुषोत्तम, अखिल लोक सुखदाई ।।
मुदित भये श्री नंद यशोदा, लखि लोचन हरषाई ।
भूषन बसन लाल मणि माणक, दीनें दान अघाई ।।
उमां रमां सावत्री सुर तिये, दरशन को सब धाई ।
सरस माधुरी शिव बिरंची मुनि, मन वांछित फलपाई ।।

पद बधाई राग मलार ।।

सखी री सब मिल मंगल गावो ।
नंद भवन को चलो सलौनी, सुन्दर साज सजावो ।।
सुत जायो जसुधा रानो ने, निरख नैन बलि जावो ।
तन मन धन न्योछावर कीने, फूलन को बरसावो ।।
अति आनन्द बिरज में उमग्यो, शोभा लखि हुलसावो ।
ध्वजा पताका तोरन रोपो बंदनवार बंधावो ।।

उदय हुये सुकृत जन्मों के, मन माहीं मगनावो ।
सरसमाधुरी मन मोहन के, दरशन कर सुख पावो ।।

पद बधाई राग गौड़ मलार ।

चलो मिल नंद भवन में आली ।
श्रीजसुधा महारानी जूने, जायो सुत बन माली ।।
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन, सज धज सरस निराली ।
निरखत ही मन मोहत सबको, सूरत भोली भाली ।।
रती मदन लखिरूप लजावत, शोभा बनी विशाली ।
सरस माधुरी मोहनी मूरत, मानो सांचे ढाली ।।

पद बधाई कालंगाड़ा भैरवी इत्यादि ।।

नंद घर बाजत रंग बधाईयां ।
सुन्दर श्याम काम मद मोचन, प्रगटे कुँवर कन्हैयां ।।
झंगुली झीन पीत तन शोभित, सिर चौतनी सुहैयां ।
पायन में पैंजनियां बाजत, रतिपति देख लजैयां ।।
ले कनियां नन्द जू की रानियां, पय प्यावत हर्षैयां ।
सरसमाधुरी बदन बिलोकत, मुख चूमति हँसि मैयां ।।

पद बधाई धुन गजल ।।

निरखन चलो नवेली, छबि नन्दलाल की ।
सुन्दर सलोनी सूरत, यशोधा के बाल की ।।
मुख चन्द सोहना है और मन का मोहना है ।
चितवन चुरावे चित को नैना विशाल की ।।
प्रगटा है प्राण प्यारा, जीवन है वो हमारा ।
सानी नहीं है कोई, उसके जमाल की ।।
है सरस उसकी झांकी, छबि है अजब अदाकी ।
दरसन दे सारे ब्रजकी, सखियां निहाल की ।।

वधाई राग वीलावल ।

परम धन पायो यशोदा रानी ।।
जाको ऋषि मुनि खोजत२, हारि गये कछु परी न जानी ।
नारद सारद गुन नित गावत, पार न पावत ज्ञानी ।।
ताहि महर पै प्यावत प्रमुदित, तन मन में पुलकानी ।
शेष रटत है नाम निरन्तर, ध्यावत शंकर ध्यानी ।।
अलख अरूप श्रुतिन कहि गायो, अगम अगोचर बानी ।
सरस माधुरी सोई दरसायो, सुंदरता की खानी ।।

बधाई राग पीलूबरवा ।।

नन्द घर बाजत रंग बधाई ।
सुंदर श्याम काम मद मोचन, प्रगटे कुँवर कन्हाई ।
झँगुली झीनी पीत तन शोभित, सिर चौंतनी सुहाई ।।
पायन में पैजनियां बाजत, रति पति देख लजाई ।
सरसमाधुरी वदन विलोकत, मुख चूमत हँसि माई ।।

मूंगा राग की चाल में बधाई ।

सखीरी सब आवो बधाई गावो, जगत पति जन्म लियो ।
एरी हां, जगतपति जन्म लियो ।।

अन्तरा ।

सखीरी श्रीमत कृष्ण सुजान, आन प्रभु दरस दियो ।
एरी हां० ।।
सखीरी नख सिख सुंदर रूप, निरख हुलसात हियो ।
एरी हां० ।।
सखीरी चन्द वदन सुख सदन पै, पानी वार पियो ।
एरी हां० ।।
सखीरी रसिक जनन को प्राण, जुगन जुगलाल जियो ।
एरी हां० ।।

सखीरी भूमि उतारन भार, अनुग्रह आप कियो।
एरी हां० ।।
सखीरी सरस माधुरी श्याम के, सब मिल चरण छियो।
एरी हां० ।।

पद पलना राग सोहनी कालंगडा भैरवी
आसावरी।

पलना झूलत नन्द दुलारो।
देखोरी हिल मिल सब सजनी जीवन प्राण हमारो ।।
श्याम बदन बिधु निरख लजावत, सुंदर भोरो भारो।
कमल नैन नासा शुभ मोती, अधर बिंब फलवारो ।।
गोल कपोल चिबुक अति अद्‌भुत, कंबु कंठ रुचिकारो।
छोटी भुजा चरन हु छोटे, छगन मगन अति प्यारो ।।
फुँदना फबे करन में आली, मृदु हँसि जादू डारो।
लगे न दृष्टि हमारी हेली, राई नोन उतारो ।।
वार पिवोरी पानी हिल मिल, विधि दिसि गोद पसारो।
सरसमाधुरी जुग जुग जीवो, वृज मण्डल रखवारो ।।

पद बधाई राग परज।

आनन्द बधाई री माई आज नंदके ।।
जसोदा के पुत्र भयो, मंगल वृज मांहि छयो।
चलो री सखी दरस करो, श्री गोविन्द के ।।

नाचे मिल ग्वाल बाल, हरख हँसि बजावे ताल,
जै जै कहि वारी जावे लाल ब्रजचंद के ।।
ब्रह्मा शिव इन्द्र भूप, धारण कर नर को रूप,
मगन भये छबि को, निरख श्री मुकुंद के ।।
शोभा सिंधु अंग श्याम निरख लजत कोटि काम,
आये हैं शरण में आनंद कंद के ।।
सरसमाधुरी सुजान, गोपी जन करे गान,
तन मन धन वारे प्राण, चरणन वन्द के ।।

भोग ।

बाल भोग लगावति मैया ।
गोद मोद ले अंचल नीचे, पय प्यावत है अति हर्षैया ।।
किलकत पुलकत झिझकत उलझत प्रेमप्यार कर पीवे कन्हैया।
ये सुख लूटत सब ब्रजनारी, सरस माधुरी लेत बलैया ।।

पद आरती ।।

करत आरती ब्रज की बाला ।
बाल रूप प्रभु ऊपर वारी, लखि मयंक मुख भई निहाला ।।
त्रिभुवन सुख छायो गोकुल में, प्रगट भये भक्तन प्रतिपाला।
सरसमाधुरी प्राण जीवन पर, तन मन प्राण वार सब डाला।।

पद सैन ।।

पोढे पलना बालबिहारी ।।
थपक थपक औ औ शब्दन कर, लाल सुलावत है महतारी ।
चामर वीजन ढोर उड़ावत, मच्छर मक्खी सखियां सारी ।।
सोये नीद में अति आनंद सों, यह छबि लखि सब भई मतवारी ।
सरसमाधुरी छकी प्रेम में, तन की सुधि बुधि सकल बिसारी।।

इति श्री कृष्ण जन्मोत्सव वधाई सम्पूर्णम

॥ श्री राधा जन्मोत्सव ॥

पद पलना राग गोड मलार ॥

पलना झूलति राधे प्यारी ।
सहज झुलावति माता कीरति, निरखि होत बलिहारी ॥
आई उमगि अनेकन सजनी, बरसानें की नारी ।
लाड लडावत ललित लडेती, गावत गुन सुकुमारी ॥
रतन जटित के विविध खिलोना, खेल खिलावति सारी ।
मृदु मुसकान विलोकि बदन बिधु, अँखिया टरत न टारी ॥
भानु भवन में महा महोत्सव, मंगल मोद अपारी ।
सरस माधुरी मगन भई लखि, तन मन सुरति बिसारी ॥

पद वधाई वर्ष गांठ ॥

धनि धनि आज महल में आनंद, बजत बधाई री ।
भादों शुक्ल पक्ष शुभ आठें परम सुहाई री ॥
नौबत बजत सरस सुंदर अति, अरु सहनाई री ।
ध्वजा पताका फहरत अद्भुत, शोभा पाई री ॥
बन्दनवार द्वार प्रति सोहे, अति मन भाई री ॥
अगर चंदन घिस छिरके, मोतियन चोक पुराईरी ॥
करि अस्नान पहरि पट भूषन, अंग सजाई री ॥
रतन सिंहासन श्री राधे जू, बैठी आई री ॥
दिये दान कंचन मणि माणक गैयाँ ब्याई री ।
जाचक सकल असीसत हित सो, हिय हर्षाई री ॥

लै लै भेट करत नव नारी, बलि बलि जाई री।
वार फेर नोछावर करि, मन मोद बढाई री॥
नाचत गावत नवल नागरी, भाव बताई री।
पावत रीझ लेत हँसि भामिनि, मन मगनाई री॥
फूले तन मन सरस बिहारी, सुख सरसाई री।
सरसमाधुरी अविचल जोरी, रहो सदाई री॥

पद बधाई धुन गजल॥

प्रगटी वृषभानु भवन, स्वामिनी श्यामा प्यारी।
भादों शुभ मास सुदी, आठें रैन उजियारी॥
जन्मी है अष्ट अली, ललित विशाखा आदिक।
सौ लगीं चरण, श्रीराधिका सब सकुमारी॥
नित नव कुंज परम, धाम में रस की लीला।
ब्रज में बरसावेगी रस, रंग की वर्षा भारी॥
रास रस खास की रस, लीला करे वृन्दावन।
लेके निज संग श्रीश्याम, मदन मद हारी॥
सज के श्रृंगार सरस सबही चलो बरसाने।
निरखो मुखचंद लली, कीरति प्रान आधारी॥

पद बधाई राग सोहनी ।।

भान घर बाजे बधाई, होत मंगलाचार री ।
प्रगट राधा भई रावल, प्रान की आधार री ।।
सोहिलो बृज नारि गावें, करत जै जै कार री ।
ले बलैयां लली की मुख सो, कहैं बलिहार रीं ।।
ग्वाल घूमर देत हितसों, नचें देकर तार री ।
दूध दधि की कीच माची, मन उमंग अपार री ।।
गउ दीनी दान गज रथ, रतन मानक हार री ।
घुरत नौबतपरमप्यारी,निज महलन के द्वार री ।।
नंद जसुमत मुदित मन में लली जन्म बिचार री।
सरसरस आनंद उमग्यो, नाही पावत पार री ।।

पद बधाई राग भैरवी सोरठ ।।

श्री वृषभान नगर बरषानै, मंगल मोद बधाई री ।।
श्री कीरति महारानीजू ने, श्री राधे प्रगटाई री ।
अज शिव सिद्ध सुरेश शेष मुनि, निगम नेत जस गाई री ।।
परमधाम गोलोक निवासिनी, किरपा कर जहां आई री ।
देव बजाय हर्ष दुन्दुभी, फूलन वृष्टि कराई री ।।
नाचन आई नारि अप्सरा, गान तान धुनि छाई री ।
रमां रूप मालनियां बनिके, बन्दनवार बँधाई री ।।

सावित्री साथिये धरे, पार्वती चोक पुराई री।
चार मुक्ति जहां फिरे टहल में, मन मांही मगनाई री ।।
रिद्ध सिद्ध ले रतन अमोलक, हितकर हर्ष लुटाई री।
चारो बेद बने बन्दी जन, कुल करतूत सुनाई री ।।
ब्रज नरनार अपार परस्पर, नाचत भाव बताई री।
ढफ ढोलक अरु बीन बजावत लै अरु ताल मिलाई री ।।
कृष्ण प्राण आधारी प्यारी, रसिकन की सुखदाई री।
सरसमाधुरी छबि श्यामा की, नैनन मांहि समाई री ।।

पद बधाई लावणी।

जन्म दिन आज भलो माई। प्रगट भई राधे सुखदाई ।।
मास भादो मंगल कारी। अष्टमी शुक्लपक्ष प्यारी ।।
लग्न शुभ सिंह सुमन हारी। सुदिन गुरुवार श्रेष्ठ कारी ।।

दोहा।

अरुणोदय बेला रुचिर, प्रगटी कुँवरि सुजान।
स्वर्गलोक तें चले अमरगन, बैठे सकल बिमान ।।
सुमन की बर्षा बरषाई ।।
अप्सरा निरतति हुलसावे। बधाई देवनारि गावें ।।
वेद पढि ब्रह्मा हर्षावें। नाद धुनि शंकर सरसावें ।।

दोहा ।

रमा रूप मालनियां बनके, बांधी बन्दनवाल ।
सावित्री रचिधरे साथिये, मन में भई निहाल ।।
उमा रचि चोंक हरषाई ।।
राय बृषभान भये दानी । सकल व्रज गोपी सनमानी ।।
गोप गन दधि कादों ठानी । बहे दधि दूध मनो पानी ।।

दोहा ।

विप्रन को दीनी गऊ, रत्न विवध धन माल ।
रथ तुरंस गजदान जाचकन, कीने सकल निहाल ।।
असीसत सुन्दर गुन गाई ।।
नन्द जसुमत हर्षाये । भवन नृप बर्षाने आये ।।
संग वृजबाला बहुलाये । महोत्सव निरख प्रेम छाये ।

दोहा ।

जै जै जै मुख बोल के, गावत मंगला चार ।
गान तान धुनि छई अलौकिक, छबि को वारन पार ।।
परम आनंद में मगनाई ।।
भान पुर नारी मिलि आई । थाल कंचन कर सजधाई ।।
झुंगुलिया टोपी मन भाई । विविध भूषन मणि सुखदाई ।।

पद पीलू बरवा ।।

आज दिन है अति ही सुखकारी ।
प्रगट भई बृषभान नंदनी, कीरति प्राण अधारी ।।
गावत हर्ष बधाई हिल मिल, बरसाने की नारी ।
उमंग रह्यो आनंद महलन में, बरनत रसना हारी ।।
नोबत बजत सरस सहनाई, नाचत सखियां सारी ।
नंद यशोदा सुन सुख पाये, हरषे हिये में भारी ।।
भादों मास गगन घन छाये, भूमि भई हरियारी ।
सरस माधुरी रस बरषावन, ब्रज में प्रिया पधारी ।।

बधाई राग भैरवी ।।

बधाई नीकी बाज रही ।
श्री बृषभान महल में घन ज्यों, नोबत गाज रही ।।
प्रगटी कुंवरि किशोरी राधे, शोभा साज रही ।
सुर नर मुनि जन मगन भये सब, रिधसिध सकल लही ।।
नाचत नारि पहरि पट भूषन, छबि नहीं जात कही ।
छिरकत केसर चंदन हिल मिल, ढोरत माठ मही ।।
दधिकादों की कीच मची है, सरिता उमंग बही ।
सरस माधुरी जो सुख ब्रज में, सो तिहुँ लोक नहीं ।।

बधाई राग भैरवी व सोरठ ।।

आज तो बधाई बाजे, द्वारे भान राय के ।।
प्रगटी सलोनी श्यामा, रूप शील गुणधामा ।
आनन्द अपार व्रज, मांहि रह्यो छायके ।।
गुनी जन आवें, नाच गाय के रिझावें ।
आली पावत इनाम मन मानी हुलसाय के ।।
आई व्रज नारी, साज भूषन वसन सारी ।
निरखत प्यारी रही, रूप में छकाय के ।।
सरस माधुरी को, कृपा करके करिति राणी,
लाड़ली को चन्द मुख दियो है दिखाय के ।।

पद बधाई राग सोहनी ।।

व्रज नारी सब मिल आवोरी, रस रंग बधाई गावोरी ।
भूषन वसन सजो तन सुन्दरि, रावल मांहीं जावोरी ।।
जन्म दिवस श्यामा प्यारी को, मंगल साज सजावोरी ।
द्वारे तोरन ध्वजा पताका, बंन्दन वारि बँधावोरी ।।
प्रगट भईं गौलोक स्वामिनी मन माहीं हुलसावो री ।
मोतिन चोक पूर महलन में, फूलों को वर्षावो री ।।
कंचन थाल सजाय आरती, रोरी अक्षत लावो री ।
वारि फेरि बृषभान ललीपै, रूप निरखि बलि जावो री ।

बीन मृदंग बजाय प्रेम सों, सब सखी नाच रिझावो री।
तन मन धन करिये न्योछावर, छबि लखि दृगन छकावोरी ॥
कुँवरि किशोरी कीरति तनया, लै लै नाम लडावो री।
सरस माधुरी केलि कुञ्ज की, रीझ प्रिया सो पावो री ॥

पद बधाई राग कालंगडा भैरवी व सारंग।

बरसानो सरसानो माई ।
प्रगट भई गौलोक स्वामिनी, अखिल लोक सुखदाई।
श्री बृषभान भवन में आली मंगल मोद महाई ॥
गावत नारि नवेली हिल मिल, नाचत भाव बताई।
धन भादों शुक्ला तिथि आठें, जादिन प्रगटी आईं ।
सुरपुर छोड देव सब आये, फूलन झरी लगाईं ।
निरखन को मुख कुँवरि किशोरी सुरतिय मिल सबधाईं।
फूले फिरे सकल वृजवासी, मनो रंक निधि पाई ।
सरस माधुरी निरख लली मुख मन में अति मगनाईं ॥

दोहा

निरख नैन मुख लली को, मोती माणक वार।
ज्यों चन्दा को लखत चकोरी सरस माधुरी नार ॥
रंक मनो चिन्ता मणि पाई ॥

पद राग बिलावल व सारंग ।।

बरसाने में आज बधाई ।
श्री वृषभान राय महलन में, कीरति कन्या जाई ।।
गौर वरन मन हरन सुलक्षण चन्द्र बदन सुंदर प्रगटाई ।
सुभग सुलोचनि भव दुख मोचनी, रूप छटा अद्भुत छबि छाई
सुता जन्म सुनि बृज घर घरते, सजि शृंगार नार जुरि आई ।
गावत मंगल गीत मनोहर जिन्हें निरख सुर बधू लजाई ।।
नोबत बजत नरेश द्वार पर झाँझन भनक सरस सहनाई ।
ग्वाल गऊ ले आय धाय के, केलि करत मन मोद बढ़ाई ।।
दधिकादों की कीच मची है, आनंद उमगरहो अधिकाई ।
मनो बसन्त को खेल मचो है, पीत वसन सब भये महाई ।।
कोउ नाचत कोउ भाव बतावत कोउ गावत मन में मगनाई
बैठ बिमान गगन सुर निरखत, फूलन की वर्षा बरषाई ।।
शिव ब्रह्मा सनकादिक नारद, जाचक बन ठाडें हर्षाई ।
सरस माधुरी निरखललीमुख, जै जै जै कहि के बलि जाई ।।

पद बधाई राग खमांच ।।

रावल में राधे प्रगट भई ।
श्री वृषभान सुजस विस्तारयो, कीरति कीरत सकल छई ।।
रसिक सन्त मन में हर्षाये, त्रिबिध ताप दुख जरन गई ।
कुँजविहारी प्राण पियारी करि हैं रस की केल नई ।।

लखि लोचन मुख चन्द लली को, होय गई सखी प्रेम मई ।
सरसमाधुरी छकी निरख छबि, जुगल चरण की शरण लई ।।

पद राग जिला व भँभोटी व खमांच व मलार वगहरा ।।

किशोरी जू को कीरति माय खिलावे ।
लेकर गोद मोद मन हर्षत, शोभा लखि सरसावे ।
कबहु कहे मोरी प्रान जीवन, नैन प्रेम जल छावे ।
कबहु कहे मेरी ललित लडेती ले उछंग पै प्यावे ।।
मस्तक सूँघ कमल मुख चूमत, सिर कर फेर सिहावे ।
हिये लगाय निहारत हित कर, तन मन मोद बढ़ावे ।।
खेल खिलोना रतन जटित ले, श्यामा को दुलरावे ।
मंद हँसन किलकन लखि रानी, छबि पर वलि बलि जावे ।।
घुटरू चलन चहूंदिस हेरन, सबको चित्त चुरावे ।
सरस माधुरी मगन लगन मे, प्यारी के गुन गावे ।।

पद बधाई राग मलार ।

बधाई बरसाने में बाजे ।
श्री वृषभान भवन में सजनी, नोबत घन ज्यो गाजे ।।

जन्मी श्री राधे महारानी, सकल लोक सिरताजे ।
निरख नैन सुख होत अलौकिक, दुख दरिद्र सब भाजे ।।
आय उमंग अमित नर नारी, हिलमिल कियो समाजे ।
सरस माधुरी मंगल आनंद, लखि अनंग रति राजे ।।

बधाइ राग मलार ।।

सखीरी जन्मी है श्री राधा ।
गौरांगी गुण निधि नव नागरि, रूप अनूप अगाधा ।।
जाको नाम जपत ही जन की, दूर होत दुख बाधा ।
मंगल करनी बेदन बरनी, हरनी जगत उपाधा ।।
दया निधान खान करुणा की, सब बिधि सब की साधा ।
सरस माधुरी श्याम सलोनो, तजे न पल छिन आधा ।।

पद बधाई राग मलार ।।

बधाई बजत रंगीली आज ।
भान भवन में मंगल उमग्यो, रह्यो मदलरा गाज ।।
श्रीकीरत के राधे प्रगटी उमां रमां सरताज ।
नृप सनमान याचकन दीने अमित दान गज बाज ।।

बरसाने के मिल नर नारी, हिल मिल कियो समाज ।
शिव ब्रह्मा सनकादिक नारद, आये दर्शन काज ।।
सुर नर मुनि जन मिल जस गावत, गये दूर दुख भाज ।
सरस माधुरी महा महोत्सव, सजे सलोने साज ।।

पद भोग राग बीलू वरवा ।।

किशोरी जू को कीरति दूध पिलावे ।
गोद मोद ले वदन विलोकत, लखि तन मन हरषावे ।।
हृदय लगाय चूम मुख नेह युत, तन मन में मगनावे ।
सरसमाधुरी निज स्वामिनि को निरख निरख बलि जावे ।।

पद आरती ।

आरती श्री राधे की करिये ।।
गौर वरन अति बाल वयस निज,
नैनन से नहिं ध्यान विसरिये ।।
रवि शशि कोटि वदन की शोभा,
लखि छबि निशदिन हृदय हि धरिये ।।
कंचन थार संजोय आरती,
वारि वारि अवलोकन करिये ।।
सरस माधुरी स्वामिनि मोरी,
रसना सों नित नाम उचरिये ।।

पद सेन ।

सयन करत श्रीराधे प्यारी ।
सवरन पलना रतन जटित में, गद्दी तकिया है जरतारी ।।
डोरी रेशम लगी अति सुन्दर, खेंचत है कीरत महतारी ।
पंखा पीछी चँवर मोरछल, ढोरत ठाडी ब्रज की नारी ।।
कबहुँ नींदबस मूँदत नैना, कबहुँ विलोकत लली चित्रकारी ।
यह सुख लखि सखी सरसमाधुरी, प्रेम विवश हो भई मतवारी ।।

इति श्रीप्रियाजू जन्मोत्सव संपूर्णम्

॥ सांझी उत्सव ॥

पद सांझी राग कल्यान ॥

प्रियाजू सांझी रची नवीनी ॥
नाना भांति कुसुम कलियन ले, कीनी अति रंगभीनी ॥
कुंज निकुंज ललित वंशीवट, अनुपम जमुना जू कीनी ।
गिरि गोवर्धन मानसी गंगा, अद्भुत सब में चीनी ॥
बाग बहार नगर बरसानो, किये महल प्रबीनी ।
सरस माधुरी सखी सांवरी, निरख बलैयां लीनी ॥

दूसरा पद राग श्याम कल्यान ॥

किशोरी सांझी सुकर सँवारी ॥
केसर चंदन लिये लाडली, रची महा मुद मंगल कारी ।
फूल गुलाब और गुल मँहदी, दाऊदी मोतिया निवारी ॥
पीत चमेली चंपा दोना, सोसन राय बेल रुचिकारी ।
रचना महा मनोहर कीनी, भोग लगा आरती उतारी ॥
गावत गीत प्रीत सों हिल मिल, संग सहेली राज कुमारी ।
रास बिलास हुलास भरी सब, एक वयस गुन रूप अपारी ॥
खेलत खेल सकल मन मेली, करत केलि कौतूहल भारी ।
आय गई ता छिन छबि सागर, सुघर सलोनी सांवल नारी ॥

रीझ रही लखि रचना अद्भुत, बोलत मुख जै जै बलिहारी।
पूँछत कीरति रानी तासो कौन ग्राम को नाम कहारी।।
ऐसी सुन्दर या ब्रज मांही, लखी नहीं अबलों सुकुमारी।
बोली विहँसि लजों ही अंखियन, नंद ग्राम की रहने हारी।।
सांझी देखन आई हों मैं कहत सांवरी मोकों सारी।
कर बहु प्यार दुलार प्रेम सो, रानी जू तब कह्यो उचारी।।
आज रैन इत ही रहु भामिन, व्यारूकर पोढो संग प्यारी।
प्रात ही उठकरि करो कलेऊ, पुनिजैयो तोहि सोंह हमारी।।
यह सुन बैन चैन चित उपज्यो, मगन भई मनमांहीं भारी।
कंचन थार विविध सामग्री, पुरस धरी कीरति महतारी।।
हिल मिल जैंवत संग लाड़ली श्यामा जू ले सखी अपारी।
अचवन कर आरोगी बीरी, सैया सहचरी सुभगि सवारी।।
पौढ़ाई निज संग रंग सों, श्यामा को श्रीभानु दुलारी।
विलसत रस विलास मिल दोनों निगम नेति कहि पात न पारी
सरसमाधुरी चरन पलोटत, नैन लगाय हिये निज धारी।।

पद तीसरा राग इमन गोरी।।

सखिन संग प्यारी बनित फूल।
गहवर बन जहां पुष्प वाटिका, लता ललित रही झूल।।
शीतल मंद सुगंध सुहावन, पवन चलत अनुकूल।
मोर चकोर कोकिला अलिगन, बोलत हैं सुख मूल।।

भर डलिया ले चली भवन को, करत केलि को तूल ।
सरसमाधुरी गावत गोरी, एक बयस सम तूल ॥

पद चोथा राग कल्यान ।

रची सांझी सुन्दर सुकुमारी ।
श्री वृषभानराय महलन में, भीर भई अति भारी ॥
पचरंग पुष्प लगाय जुगत सों अद्‌भुत सुघर संवारी ।
नंद ग्राम गोकुल की रचना, कीनी अति मन हारी ॥
महल महा रमनीक बनाये, दर दालान तिवारी ।
कुंज महा सुख पुंज सरोवर, बन केलि रुचिकारी ॥
जमना घाट ठाट गउवन के, गोपी गोप अपारी ।
अम्बक दम्ब सघन सुखदाई, हरित भूमि रुचिकारी ॥
दधि के दान लेन की लीला, दरसाई अति प्यारी ।
एक ओर ब्रज बनिता ठाडी, सन्मुख कुंज विहारी ॥
सखी सांवरी वनि मन मोहन, आय गये तिहि वारी ।
रीझ रहे लखि के मन मांही, बोलत मुख बलिहारी ॥
मधुर भोग धर मंगल गावत, हरषावत नर नारी ।
सरसमाधुरी करी आरती, धूप दीप धर धारी ॥

पद ५ राग श्याम कल्यान ।।

सलोनी सांझी आज बनाई ।
श्यामां संग रंग सों राधे, रचना रची सुहाई ।।
सेवा कुँज सुहावन कीनी, लता पता छबि छाई ।
मरकट मोर चकोर कोकिला, लगत परम सुख दाई ।।
बन उपवन वृन्दावन चहुँ दिशि, श्री जमुना दरसाई ।
घाट वाट बुर्जे अरु छतरी, अति रमनीक दिखाई ।।
बरषाने के नर अरु नारी, तिनके मन अति भाई ।
सरस माधुरी सुन्दर शोभा, निरखत हिय हुलसाई ।।

पद ६ राग पीलू बरवा ।।

सांझी नव निकुंज की कीनी ।
मध्य निकुँज चहूंदिसि सुन्दर, अष्ट कुँज रच दीनी ।।
एक एक ते अधिक सुहावन, मन भावन रंग भीनी ।
ठोर ठोर सेवा सामग्री, दरसाई सहचारी नवीनी ।।
रास आदि लीला के अस्थल, बनाये अलीं चतुर प्रवीनी ।
सरस माधुरी निरखत मेरी, सब सुध बुध हरलीनी ।।

पद ७ राग विहाग ।

निहारो सांझी की छबि आली ।
रचना रची सुघर श्यामा ने, अद्भुत भांति निराली ।।
कुसुम कलित कमनीय लगाये, नीले जरद जंगाली ।
स्वेत स्वच्छ सुन्दर और सोसन, कहुँ २ लाल गुलाली ।।
लता भवन लोने दरसाये, कुंज निकुँज सुढाली ।
सरस माधुरी ऐसी शोभा, सुनी न देखी भाली ।।

इति सांझी उत्सव संपूर्णम् ।

अथ 'दशहरा' उत्सव

पद राग पूरबी ।

दशहरा आज सुदिन त्योहार ।
त्रेता युग श्री रामचन्द्र प्रभु, रावन हन्यो बाण धनु धार ।।
बिजय कियो लङ्का को स्वामी, असुर किये सबही संहार ।
भक्त विभीषण कीनो राजा, तापर किरपा करी अपार ।।
पुष्प विमान बैठ सिय संगलै, आये अयोध्या नगर मझार ।
घर घर उत्सव मोद बधाई, गावत गुनिजन मंगल चार ।।
कौशल्यादि मातु मन हर्षत, लेकर कञ्चन थार ।
करत आरती श्री रघुवर की, तन मन दीने वार ।।
भरत शत्रुहन लक्षमण भैया, हिल मिल भेटें भुजा पसार ।
सुमन बृष्टि सुर करत गगन तें, जै जै जै मुख कहत उचार ।।
राजिवनयन सिंहासन राजे, गुरु वशिष्ठ कीनो उपचार ।
मरयादा पुरुषोत्तम येही, सन्त जनन के प्रान अधार ।।
चारों युग मे प्रगट रूप धर, लीला करत हरत भुव भार ।
सरस माधुरी धर्म थाप कर, अधरम की दें मूर उखार ।।

पद भोग

पावत भोग राम सिया प्यारी ।।
सामां रुचिर चारु चौकीपर, भर धर राखी कंचन थारी ।
बरफी सरस जलेबी लडुवा, मोहन भोग मलाई न्यारी ।।
रबरी मठरी मालपुआ सुठि, पूरी सेव सुकारी ।
शाक सरस बिविधि बेलन में, पावत प्रेम सों प्राण अधारी ।।
बोल बोल दें शीत प्रसादी, भक्तन को कर कृपा अपारी ।
सरस माधुरी छकी युगल छबि, निरखत नैन निमेख बिसारी।।

पद आरती ?

आरती करत कौशल्या मैया ।
कंचन थाल बाल घृत बाती, जुगल अंगन की लेत बलैया ।।
रतन सिहासन सुखद सुहावन, ब्राजे दंपति चारों भैया ।
चमर मोरछल करत पवन सुत, जय जय बोलत मन हर्षैया ।।
सरसमाधुरी सियाराम की, बांकी झांकी निज उर धरिया ।

इति दशहरा उत्सव संपूर्णम् ।

अथ रास महोत्सव।

दोहा

गलबैयां दे जुगल बर रहे कपोल मिलाय।
सरसमाधुरी रस छके यह छबि दृगन बसाय ॥
दोउन के मुख चंद से, दोऊ दृगन चकोर।
सरसमाधुरी परसपर, दम्पति चित के चोर ॥
दोउन के मुख कमलसे दोउ दृग भ्रमर समान।
सरसमाधुरी रूप दोउ करत निरंतर पान ॥
प्यारी के मन पिय बसे, श्याम रूप सुख दैन।
सरसमाधुरी पीय के, प्यारी बस रही नैन ॥
प्यारी प्रीतम कहत नित, प्रिया कहत नित पीय।
सरसमाधुरी दृग छके जुगल जिवावत जीय ॥
लैत बलैयां परसपर, दम्पति हर्ष उमंग।
सरसमाधुरी प्रीति को प्रगटत अनुपम रंग ॥
पिय लखि जीवै लाडिली लली लखे निज पीव।
सरस प्रीति प्रीतम प्रिया, दोउ दोऊन के जीव ॥
प्रेम विवस बोलत बचन, राधे मैं हूं श्याम।
प्यारो बोलत है सरस, राधा मेरो नाम ॥
उलटी गति है प्रेम की, प्रिया श्याम होजाय।
पिय प्यारो प्यारी बनत, सरस प्रीति अधिकाय ॥

एक प्राण दो देहि हैं, प्यारी प्रीतम जान ।
प्यारी प्यारो प्रिया पिय, सरस समझ मन मान ।।
नैन नुकीले रसभरे, मंद मधुर मुसकान ।
सरसमाधुरी कर सदा, गौर श्याम को ध्यान ।।

राग खमांच ।।

मनोहर मुरली श्याम बजाई ।
आय रही धुनि इत को आली सुनियै कान लगाई ।।
आवत हैं इत मदन मनोहर, यह निश्चय चित लाई ।
अथवा रास करन के कारन, बन में तुम्हें बुलाई ।।
सुनि धुनि कान विकल भई काया, घर अँगना न सुहाई ।
बिन मन मोहन जग सब फीको, कुटुम्ब भयो दुखदाई ।।
याते तज घर काज लाज सब, जग वन हो थिरताई ।
सरसमाधुरी दम्पति दर्शन, करो सखी सुखदाई ।।

दोहा

सरस बिहारी कहत भये, निज प्यारी सों बैन ।
करिये रास बिलास प्रिय, मम हिय की सुख दैन ।।

राग जंगला ।।

प्रीतम प्यारी सखियाँ सारी, खेलत रास उमंगा ।
अरस परस संगीत कला गुन हिये भरे रस रंगा ।।

अन्तरा ।

हस्तक भेद उघट अद्भुत गति, नाचत नवल सुरंगा ।
पदं न्यास ता ता तत थेई थेई, बोलत बचन उचंगा ।।
धुमकिट धिधिकिट तक धिलांग गति, बाजत मधुर मृदंगा ।
बीन झीन सुर मिली मनोहर, महुवर अरु मुह चंगा ।।
सारंगी सरगम सुख दाई, उलट पुलट सुर ढंगा ।
पग नूपुर अति रुन झुन बाजें, राग अलापत संगा ।।
साक्षात मन मथ मनमोहन, सोहन सर्व सु अंगा ।
सरस माधुरी जुगल परस्पर, भर भर लेत उछंगा ।।

राग विहाग ।।

पिया की विनय सुन राधिका स्वामिनी ।।
मंद मुसकाय लखि श्याम की ओर कूँ ।
रास आरंभ कियो तब अभिरामनी ।।
सप्तसुर गाय हुलसाय साङ्गीत गति ।
बोल मुख ता थेई मत्त गज गामिनी ।।
लेत गति मन मगन बजत नूपुर मगन ।
श्याम संग बाम अंग चपल मनु दामिनी ।।

जग्यो अति रंग मृदंग घुमकिट बजत ।
बीन मुहचंग स्वर ताल मधि जामिनी ।।
जुगल वर चंद चहुँ ओर उडुगण यथा ।
सरस माधुरी नचत बहु कामिनी ।।

पद रास ।।

रचायो हरिने वृन्दावन रस रासा ।।
बंशी बजाय बुलाई ब्रज तिय, बन में अपनें पासा ।
प्रेम परीक्षा लेने कारन, कीनो बचन बिलासा ।।
जीती गोपी हारे मोहन, हिये भयो विश्वासा ।
ले निज संग सखीगन प्यारे, नृतत उमंग हुलासा ।।
हाव भाव बहु भांति प्रगट कर, ताता थेई मुखभासा ।
सखि मंडल बिच श्याम राधिका, करत मंद मृदुहासा ।।
सारंगी मोहचंग मजीरा, बीन झीन सुर खासा ।
मधुर मृदंग बजत मन भावन, पूरन चन्द प्रकासा ।।
सरद रैन सुख देत सुहाबन अति निर्मल आकासा ।
जमुना कूल फूल बहु फूले, जिनकी अधिक सुबासा ।।
शोभा धाम श्याम सुंदरनें, रती मदन मद नासा ।
सरस माधुरी ब्रज भक्तन की, सब विधि पूरी आसा ।।

पद

बँसी बजाय गयो री, मन मोहन नँदलाला ॥

(अन्तरा)

आय अचानक आंगन ठाडो, संग लिये बहु ग्वाला ।
चितवन में मोहि रस बस कीनी, भई विकल बेहाला ॥
नैन समाय गयो री, नटवर मदन गुपाला ॥१॥
सांवरी सूरत मोहनी मूरत, चञ्चल नैन विशाला ।
गावत तान बान ज्यों लागी, चुभी कलेजे भाला ॥
दरस दिखा गयो री, काली कमली वाला ॥२॥
बांकी झांकी अजब अदा की, मद गज की सी चाला ।
झुक झुक झांक झरोकन ओरी, मोको देगयो झाला ॥
लगन लगा गयो री, चित तें टले न टाला ॥३॥
जो कोई मोकूँ आन मिलावे, जसुधा जी को वाला ।
सरसमाधुरी गुन नहिं भूलूँ निस दिन फेरूँ माला ॥
जिय में समा गयो री, श्री मत कृष्ण कृपाला ॥४॥

मांझ ॥

गलबैयां दे रतन सिंहासन, राजत प्रीतम प्यारी ।
लीला रास विलास करन की, इच्छा निज उर धारी ॥
झलकत गौर श्याम छवि सुन्दर, त्रिभुवन मोहन हारी ।
सरस आरती जो श्री ललिता, जुगल अंग पर वारी ॥

मांझ ।।

सिरपर मोर मुकुट सज सुन्दर, नटवर रूप बनाया है।
कानों में कुंडल धारन कर, मस्तक तिलक लगाया है।।
नख सिख पहर वसंती वस्तर, खूब शृंगार सजाया है।
सरस माधुरी मनमोहन, महबूब दरस दिखलाया है।।

मांझ ।

श्री शुक सखी श्याम चरन दासी, दंपति के संग सोहें।
रुख ले सेवा करें जुगल की, निरख नैंन छबि मोहें।।
गौर स्याम अभिराम अदा, अलबेली अँग जोहें।
सरस माधुरी प्यारी पिय की, हिल मिल लाड लडोहें।।

मांझ ।

प्रिया ओर शुक सखी सुहावन, श्याम ओर चरन दासी।
अष्ट अली सँग करें केलि, सेवें दम्पति सुख रासी।।
हाव भाव निरखें मन हरषें, युगल प्रेम रस प्यासी।
सरस माधुरी दे मुख बीरी, रिझवत कुंज बिलासी।।

मांझ ।

कोउ अलि अतरदान ले ठाडी, पान दान कोउ प्यारी ।
चमर मोरछल लिये छबीली, जुगल रूप मतवारी ॥
फूल माल कोउ ले रूमाल कर सेवत कुँज बिहारी ।
सरस माधुरी सकल सहेली, दम्पति प्रान अधारी ॥

मांझ ।

झुंड सखिन के हिल मिल आवें, दंपति दरशन पावें ।
रीझ रिझावें बलि बलि जावें, फूल फूल बरसावें ॥
विविधविनग कर जोर करें सब, छबि लखि हृदय सिरावे ।
सरससाधुरी पियत रूप रस नैन निहार छकावें ॥

मांझ ।

श्रीयुत कुंज विहारिनि राधे, सखियन खूब सजाई ।
शीश चंद्रका धार सुहावन, नख बेसर पहिराई ॥
बसन बसंती भूषन अंगन, अतिशय शोभा पाई ।
सरसमाधुरी स्वामिन मेरी, प्रीतम कंठ लगाई ॥

मांझ ।।

बीन मृदंग चंग सारंगी, ताल तमूर बजावे।
कोई बजा मुहचंग चतुर तिय, कोई नाचे कोई गावें ।।
ले गति नई नवेली कोई, हाव भाव दरशावें।
सरसमाधुरी सदा सुहागिन, अष्ट पहर सुख पावें ।।

मांझ ।।

निकट आय हरषाय श्याम हँसि, सखियन से बतरावे।
नैन मिलाय लगाय हिये से, अधर सुधारस प्यावे ।।
ले अपने संग अली अनेकन, रसिया रास रचावे।
सरसमाधुरी श्यामा सों मिल, ता थैया मुख गावे ।।

मांझ ।।

राधाबल्लभ रंग महल में, रास करत सुख रासी।
सखी समूह लिये संग निरतत, प्यारी कुंज बिलासी ।।
रस चितवनि कर मंद मधुर हँसि, चित चोरत अनयासी।
सरसमाधुरी रहत संग अलि, रूप रसामृत प्यासी ।।

मांझ ॥

मिले रहत चाहत पुनि मिलने, हिय हिलग कछु न्यारी ।
संभ्रम होय चकित चित बोलत कुवास २ पिय प्यारी ॥
यह संजोग बिरह लखि अलिगन, प्रान करत बलिहारी ।
सरस माधुरी रीति अटपटी, सुनी न नैन निहारी ॥

मांझ ॥

बलिहारी बोलन पर वारी, जुगल चन्द सुख दानी ।
गौर श्याम अभिराम रसिकवर, बार पियत हम पानी ॥
सदा बसो हमरे हिय कुँज में, केलि करो मन मानी ।
सरस माधुरी सरन हरन मन, तुम्हरे रूप लुभानी ॥

मांझ ॥

सुन प्यारी तेरो रिझवारी, प्रीतम कुँज बिहारी ।
छबि आसक्त लग्यो संग डोले, बोले मुख बलिहारी ॥
नैंन निरख निशि बासर जीवे, देत अपनयो वारी ।
सरस माधुरी प्रीति अलौकिक, लोक वेद तें न्यारी ॥

मांझ ॥

दृगसो दृग जोरें श्री दम्पति, रूप रसामृत चसके ।
अरस परस अनुराग भरे रहें, हृदय लगें दोउ हँसके ॥
सीसी शब्द उचारत मुख ते अँक में भर भर मसके ।
सरस माधुरी बांके नैनन की, मार कलेजे कसके ॥

मांझ ।

रस समुद्र दोउ प्रीतम प्यारी, राधा सरस बिहारी ।
नेह तरंग उठत निस बासर, तिनको अन्तन पारी ॥
रहत मगन मन लीन मीन ज्यों, संग सहचरी सारी ।
सरस माधुरी रस में डुबी, रहत नहीं छिन न्यारी ॥

मांझ ॥

दृगन ओट छिन होत दोऊ तब कल्प कोटि दुख माने ।
बिरह बिहाल बिकल व्याकुल हो, सुधि बुधि सकल भुलाने ॥
निरखत नवल मुखाम्बुज जनही, सफल जन्म निज माने ।
सरस माधुरी जुगल चंद दोऊ, चक्षु चकोर प्रमाने ॥

मांझ ।

दृगन तीर की चोट चतुर दोउ, हृदय कमल पर लावें ।
रस संग्राम सूरमां सन्मुख लडने ते न डरावें ।।
बिकल मूर्छा होत छिनक में, पुनि सचेत हो जावें ।
हार न मानत हरष मान हो, सरस बीर हुलसावें ।।

मांझ ।।

प्यारी पै आशक्त श्याम घन, संग लग्यो नित डोलें ।
प्रीतम के रस बस हो प्यारी, रस ही में रस घोलें ।।
दोऊ दोउन रिझवार परस्पर, दोऊ बिके बिन मोलें ।
सरस माधुरी घट बढ नाहीं, सुमति तराजू तोलें ।।

मांझ ।।

सुन सखि प्रीति अलौकिक देखी, प्यारी कुंज बिहारी ।
दोऊ दोउन के प्राण परम धन, रस बिलसत रिझवारी ।।
सारस हंस समान युगल वर, जोरी अति सुकुमारी ।
सरस माधुरी मिले रहत नित, जै दम्पति हित कारी ।।

मांझ ।।

श्यामां श्याम निकुँज महल में, सिंहासन पर सोहें ।
गलबैंयां दे चिबुक प्रलोवत, हँस दोऊ मन मोहें ।।
रहे कपोल मिलाय परस्पर, बंक दृगन कर जोहें ।
सरस माधुरी रस चितवन कर, सखियन चित ललचोहें ।।

मांझ ।।

प्रेम प्रसंसी बंशी ले कर, मुख धर श्याम बजावें ।
नाना तान तरंग रंग भर, श्री राधे गुन गावें ।।
तत्पर ध्यान प्राण प्यारी के, सुधि बुधि सब विसरावें ।
सरस माधुरी प्राण बल्लभा प्रीतम कण्ठ लगावें ।।

मांझ ।।

प्यारी के जीवन धन प्यारो, पिय की जीवनि प्यारी ।
सखियन के जीवन धन दोऊ, राधा सरस बिहारी ।।
निरख नैंन मुख चैंन मनावत, देत अपनयो वारी ।
सरस माधुरी गौर श्याम की, प्रीति रीति कछु न्यारी ।।

मांझ ।।

श्री वृन्दावन चंद चतुर दोउ, दोउ दृग बने चकोरी ।
दोऊ दोउन की जीवन हो, बलि जुगल भावती जोरी ।।
मिले रहत मिलबो नित चाहत, नवल किशोर किशोरी ।
सरस माधुरी चाह चटपटी, कह न सके बुधि मोरी ।।

मांझ ।।

मोहन मदन सदन सुखमा को, सोहत ललित त्रिभंगी ।
श्री राधे गुन रूप अगाधे, रहत सदा तिन संगी ।।
रास विहार रचित नाना बिधि, हिल मिल अलि रस अंगी ।
सरस माधुरी रस लीला कर, मूर्छित कियो अनंगी ।।

मांझ ।।

कुंज बिहारिनि तेरो दूल्हा, नंद नदन हितकारी ।
तुम दुलहिन बृषभान नंदनी, प्रीतम प्रान अधारी ।।
निरख परस्पर दृगन सिरावत लिपट मिलत अँकवारी ।
सरस माधुरी अधरामृत रस, चसकत बारम्बारी ।।

मांझ ।।

गहें परस्पर कर पल्लव दोऊ, गहवर बन में जावें।
लता कुंज में लिपट प्रेम सों, हँस बतियां बतरावें ।।
अधर सुधा मादक रस पीवत, मन में मोंद बढावें।
सरस माधुरी तृप्ति न मानत, रति सुख को ललचावें ।।

प्रियाजी वचन ।।

प्रीतम रसिक मुकुट मणि मोहन, जीवन प्राण हमारे।
राखों सदा हिये में तुमको, मो अंखियन के तारे ।।
ज्यों जल और तरंग एक है, यूँ हम तुम नहीं न्यारे।
सरस माधुरी रसिक चकोरी, तुम ब्रज चंद उजारे ।।

ठाकुरजी वचन ।।

श्री राधाप्यारी सुकुमारी, छबि पर मैं बलि जाऊँ।
लेकर कमल अधर धर बंसी, तेरो ही गुन गाऊँ ।।
कृपा तिहारी सो मैं श्यामा, राधा रमन कहाऊँ।
सरस माधुरी सरबस मेरी, निरख नैनं हुलसाऊँ ।।

प्रियाजी वचन ।

कुँवर किशोर छबीले छैला, मै हूं कुँवरि किशोरी ।
मैं स्वाति तुम चातक मेरे, तुम साँवल मैं गोरी ।।
प्रीत परस्पर कहत बने नहिं, सुरति रंग में बोरी ।
सरसमाधुरी रंग रंगीली, भली भांवती जोरी ।।

ठाकुरजी वचन ।

रस समुद्र श्रीराधें प्यारी, मो मन मीन बनायो ।
नाभि भँवर में परचो प्रेम बस, निकसत नहीं डुबायो ।।
राधाबल्लभ नाम रसिकनी, तुम कृपा तें पायो ।
सरसमाधुरी सरन करन सुख, तुम्हरे हाथ बिकायो ।।

ठाकुरजी वचन ।

मैं चेरो तेरो श्रीराधे, तुम मो प्रान पियारी ।
मैं तुम को नैनन में राखो, तुम मो छबि उर धारी ।।
हे घनश्याम रूप बलि मेरो, तुम मुख चंद उजारी ।
सरसमाधुरी एक प्राण दो देह वेद उच्चारी ।।

प्रियाजी वचन।

रसिक मुकुट मन मोहन सोहन नट नागर सुख कारी।
निरख छबीली छबि में निस दिन, रहूं प्रेम मतवारी ॥
बसे रहो नैनन में मेरे, प्रीतम कुंज बिहारी।
सरसमाधुरी रंगी श्याम रंग, श्यामा कहें सखी सारी ॥

ठाकुरजी वचन।

प्राण बल्लभे प्यारी राधे, तुमरे बलि बलि जाऊं।
नख सिख सों निज करन नवेली, पुष्प शृंगार बनाऊँ ॥
जाही जुही चमेली चंपा सज्ज श्रंगन पहिराऊँ।
सरसमाधुरी रीझ देव मोहि, पान प्रसादी पाऊँ ॥

प्रियाजी वचन।

ठाडे रहिये रसिक बिहारी, बांकी मुकट धराऊँ।
अलके कुंडल सो उरझानी तिन्हें सुकर सुरझाऊँ ॥
बल खा रही बुलाक नाक में, ताको सुभग बनाऊँ।
सरसमाधुरी रीझन मांही, पिय अपनो कर पाऊँ ॥

(वंशी के पद)

रास राग ठुमरी ।

बजाई ऐसी बंशी सरसबिहारी ।
दशों दिशा छाई धुनि ताकी, तीनो लोक मँझारी ।
थिर चर जीव जंतु जल थलके, मोहे सब नर नारी ॥
वेद पाठ ब्रह्माजी भूलें, शिव समाधि निज टारी ।
ऋषि मुनि देह दशा बिसराई, अबला कौन बिचारी ॥
जड चेतन चेतन जड ह्वे थकित जमुन जलधारी ।
चंद चकित नभ माँहि रह्यो रुकि, सुधि बुधि सकल बिसारी ॥
रमा रमकि वृन्दावन आई, भई प्रेम मतवारी ।
सरसमाधुरी मन मोहन ने, मदन मोहनी ड़ारी ॥

पद राग खमांच तथा वहार ।

बाजी बन बैरिन बांसुरी ॥
तानन के तन बान लगे सखि, लेन न देवे सांसुरी ॥
करकत भाल कलेजे सजनी कसकत निसदिन पांसुरी ।
सरसमाधुरी श्याम दरश बिन, नैनन तें बहे आंसुरी ॥

पद विहाग नाटक की धुनि में ।

सलोने श्याम अँगना में बंशी बजा जा ।
स्वरोमें भर के राग रँगीला, जरामनमोहन गाय सुनाजा ।

तेरी सुन्दर सूरत पर वारी, दर्श अपना मुझको दिखलाजा।
गोपाल प्यारे माखन और मलाई, रुचे जो आयहमारे खाजा ॥
करूं मैं बिनती परूँ तेरे पैयां, कभी मनभावन मेरे आजा।
सरस तेरे दर्शनकी प्यासी, महर करहियेमें आय समाजा ॥

बंशी के पद राग खमांच ।

रसीली बंशी रसिक बजाई ।
श्रवण सुनत सुधि बुधि सब भूली । गृह तजि बन उठ धाई ॥
मैन महा दुख देन लग्यो है, पीर सही नहीं जाई ।
अधर सुधारस थी प्रीतम की, मनमें अति गरवाई ॥
सौत भाव कर हम सों सजनी, बैरिन बहुत सताई ।
सरस माधुरी बश कछु नाहीं, मनमोहन मन भाई ॥

पद राग अल्हैया भैरवी ।

वंशी बट छैया जमुना तट, मनमोहन बैन बजाता है ।
नटवर श्रृंगार किये सुन्दर, रस तान सलौनी गाता है ॥
सरगम की धुन भर बंशी में, फिर तीनों ग्राम जमाता है ।
लटकत मटकत छबिसों प्यारा, सम पायल पै छमकाता है ॥
ले ले मुरली में नाम सखी, बृजबाला टेर बुलाता है ।
अलबेला बांका छैल छली, मन हरके मैन जगाता है ॥

जादूगर यशुमति सुत मोहन, इस बिन अब और न भाता है।
कहे सरस माधुरी प्यारे के, बिन देखे रहा न जाता है ।।

गजल राग मोहनी ।।

मन मोह लिया श्याम ने, बंशी बजाय के ।
हँस हेर नैंन फेर लिया, चित चुराय के ।।
जादू भरी सी तान, गाइ नन्दलाल नें ।
बृजबाला सब बुलाइ है, चेटक लगाय के ।।
सज साज भेष नटवर मुरली अधर पे धर ।
ठाढे त्रिभंग अंग हो, लकुटी लगाय के ।।
यमुना के तट निकटही सुन्दर जो वंशीवट ।
बांकी दिखाय झांकी लिया दिल लुभाय के ।।
मारे हैं नैंन बान री, भृकुटी कमांन तांन ।
बींधें हैं प्राण सरस के चितवन चुभाय के ।।

पद राग बीलू बरवा ।।

अधर धर बंशी श्याम बजाई ।
सुनत व्रज बाला बन उठ धाई ।।
छोड घर पति सुत सब कुल काज ।
लाज तज मनमोहन ढिग आई ।।

पहर लिये उलटे हार श्रृंगारे।
सुरत तन की सबने बिसराई॥
पहुँच के प्रीतम प्यारे पास।
दरश कर मन माहीं सुख पाई॥
निरख के नटवर रूप अनूप।
छकी छबि प्रेम ठगोरी छाई॥
लखी जब ब्याकुल गोपी लाल।
मिले सब सों हँसि हिय लिपटाई॥
शरद की पूनों परम पुनीत।
निकट वंशीवट रास रचाई॥
कियो रस सरस माधुरी पान।
करी हरि सबही की मन भाई॥

पद राग विहाग॥

जयति जय जयति श्री प्रिया प्राणेश्वरी।
कोटि द्युति चन्दसी चन्द्रिका सीस सजि,
मन्द मुस्कात बरसात अमृत झरी॥
श्वेत जरतार वर वस्त्र अति सोहने,
मुक्त हीरावली ग्रीव धारण करी।
गौर शुभ अंग भूषण बिबिधि भांति के,
हिय पर हार चम्पा कली चोसरी॥

चरण युग चारु सुखमा सदन कमलवत,
मधुप मन मोर विश्राम विश्वेश्वरी ।
राधिका नामिनी सखियन की स्वामिनी,
मत्त गज गामिनी रूप गुण रंगभरी ।।
रास रस दान दे विनय सुन कान दे,
सरस रस माधुरी रसिक रासेश्वरी ।

पद धुन नाटक ।।

नाचें गावें वृज नारी बिहारी संग वारी वारी जावें ।।
हर्षावें, हुलसावें, मिल सारी, पियारी संग वारी वारी गावें ।
चल आवें, मन भावें, पुलकावें, रिझावें संग वारी वारी जावें ।।
सुर बीणा बजावें, मृदंग गति लावें, करताल को लगावें-संग वारी वारी जावें ।
पग घुंघरू छमकावें हाव भाव को बतावें, नैनों को मिलावें-संग वारी वारी जावें ।।
वृन्दावन फूल खिले क्यारी, हर रंग की फुलवारी, की देखें-शान सरस चमन ।।
गुले गुलशन है सलोना, आला, नंदलाल, छबि जाला-मतवाला, पियारी संग वारी वारी जावें ।।

[पद]

हिल मिल करोरी श्याम संग रास रंग।
नाचना गाना नई नई प्रकार ।। ओ प्यारी प्यारी ।।
दिल जानी लासानी। जोवन अपार की बलिहारी ।संग।
पर्म सुजान को। जीवन प्राण को।
कृपा निधान को लेवे उछंग ।।
पहिरे मोती लाल पन्ना। भूषन चमक अधिक सुहन्ना ।।ढंग
नंदके लाल की। प्यारे गुपाल की छव की शोभा की हैं तरंग
सारंगी सरगम किन किन्ना। सरस मृदंग की धुम किट धिन्ना।।
संग ।।
हिलमिल करो० ।।

पद रासध्वनि नाटक ।।

चलो रास रचावें गावें बजावें श्रीवृन्दावन प्यारा ।।चलरास।।

अतरा ।।

है वंशीवट सुखदाई। अरु पून्यो शरद सुहाई।
क्या चंद चांदनी छाई। चहुँ दिश फूली है फुलवाई ।।

चलत।

यमुना का तट है न्यारा। बहती है निर्मल धारा।
मन है मुदित हमारा। विलसे विविध विहारा।
लख सरसमाधुरी सुन्दर शोभा, तन मन धन सब वारा ।।

पद २ धुनि नाटक ।।

बन बन बांके बिहारीलाल लाडिली रास करें ।
प्रीतम प्रिया के संग । जोबन की मन उमंग ।।
गाते हैं राग रंग । नागर नवेले ढंग । श्यामा श्याम ।
मोर मुकुट पीताम्बर धारी, मोहन सोहन अति अभिराम ।।
श्रीराधे सब सुख की साधे, नीलाम्बर तन वसन ललाम ।
नृतत बोलत मुख ताथैया, लाजें निरख कोटि रति काम ।।
कुँज निकुंज करैं मिल क्रीडा, नित नव श्रीवृन्दावन धाम ।
बलिहार, करें प्यार, तन मन वार । सरस को चित हरैं ।।

गजल ।

देखे मैं आज रास करत राधिका कन्हाई ।
वृन्दाबिपिन सघन जहां, गुलशन की खुशनुमाई ।।
तन गौर श्याम राजे, पट नील पीत साजे ।
माथे पे मुकुट चन्द्रिका, हीरे जटित सुहाई ।।
भोंह कमान तान कर, नयनों के बान मारें ।
सुन्दर हँसन दसन छबि, मुख पान की ललाई ।।
बेसर बुलाक नाक में कानों में धार कुण्डल ।।
छूटी कपोल अलके, नागनसी श्यामताई ।
नख शिख शृंगार सोहन, अंग अंग देत शोभा ।
फूलों के हार गजरे, गल में फबे महाई ।।

निरतत नवेले नागर, गति ले नई नई।
बोल तत्ता थेई, सखियां सकल रिझाई ।।
छुम छुम बजै चरण में घुँघरू परम सुहाब।
बीना मृदंग ताल स्वर, लेते हैं चित्त चुराई ।।
श्यामा रसिक बिहारी जोरी है प्राण प्यारी ।
छबि 'सरस माधुरी, के, नयनों में नित समाई ।।

गजल ।।

निरतत नवेले श्यामाश्याम, संगले अली ।
वृन्दा विपिन सुहावन, फूली सुमन कली ।।
मंडल है रास सोहन, रति काम को विमोहन।
सांगीत गान तान की, छाई है धुन भली ।।
ताता थेई उचारें, हँस मोहिनी सी डारें।
नैना मिलाय मन को, हरें लाल और लली ।।
पट पति नील राजें, भूषन सुअंग साजें ।
नूपुर चरण में बाजें, सुनके सुमत छली ।।
बांकी है राधे प्यारी, बांके बने विहारी।
तिन संग सरस माधुरी, मानी है रंग रली ।।

रेखता ।

निरतो नवेली नागरी, हिल मिल हमारे संग ।
आवो बजावो साज बाज, बीन और मृदंग ।।
सरगम तराना सोरठ, सुर ताल मूर्छना ।
गाबोरी राग सहचरी, भर भर के सुर उमंग ।।
छाई लता सुहाई मकरंद मन की भाई ।
फूले हैं फूल सुन्दर, अनगिन जिन्हो के रंग ।।
चहुँ ओर मोर कोकिला, सूवा सलोनी कोयल ।
बोले हैं मन के मोहन, ऐसे विविध विहंग ।।
संग्राम आज काम से, करनो हमें जरूर ।
मैदान बृन्दावन मे, जीते सहैली जंग ।।
रस रंग करो रास, खास प्रेम को विलास ।
बिलसे सरस की माधुरी, राधे ललित त्रिभंग ।।

पद राग सोरठ ।

रसिक दोऊ करत रास रस रंग ।
अतिअनुराग भरे अलबेले, अलि गण लीने संग ।।
वाजत बीन सरस सारंगी, महुवर और मृदंग ।
सरसमाधुरी गान तान की, उपजत अमित तरंग ।।

पद राग सोरठ ।।

रंगीली राधे बीना लेकर गावें ।
श्याम रूप अभिराम अधर धर, बंसी सरस बजावें ।।
ललित मृदंग रंग सों ललिता, ठेका संग लगावें ।
सरसमाधुरी निरतत सन्मुख, भाव बताय रिझावे ।।

पद राग सोरठ ।।

रास में रंग आज बरसे । सलोनी सुन्दर छबि दरसे ।।
नागरि नवल छैल पिय प्यारी । घन दामिनि द्युति तन पर वारी
नृतत बोलत मुख ता थैया । जोरे कर करसे ।।
बीन मृदंग बजावत नारी । सारंगी सरगम सुख कारी ।।
ताल तमूरा की गति न्यारी । आनंद अति सरसे ।।
चहुँ ओर नाचत सहचारी । लय सुरताल मिली इक सारी ।।
छुम छुम छननन बजत घूंघरू । गावत मिल स्वरसे ।।
नाचत भाव बतावत प्यारी । रीझ रहे पिय सरस बिहारी ।।
बोलत मुख जय जय बलिहारी अंग अंग परसे ।।
शरद चांदनी रैन उजारी । भूषन बसन दमक चमकारी ।
सरसमाधुरी लाल बिहारी । लपट लगे गरसे ।।

पद राग सोरठ विहाग ।

आज दोउ निरतत पिय प्यारी । संग सोहें सखियां सारी ।।
मंडल रास पुलिन यमुना तट । अति अनूप सुंदर बंशीवट ।
सज शृंगार नचत नागर नट । दे दे कर तारी ।।
बांको मुकुट शीस पर सोहे । कुंडल झलक तिलक मन मोहे ।
नाक बुलाक कपोलन अलकें । छूट रहीं कारी ।।
श्वेत जरी के वसन सुहावन । हीरन के भूषण मन भावन ।
गज मोतिन के माल गले । कटि किंकिणि झुनकारी ।।
वाम अंग श्री राधे प्यारी । श्वेत वसन भूषण तन धारी ।
शीस चन्द्रिका सरस नचत है । गल बैंयां डारी ।।
उघटत गति सांगीत उचारी। लेत स्वल्प गति सरस विहारी।
मंद मंद हँसि लेत भुजन भर । दम्पति सुख कारी ।।
मदन मनोहर रास विलासी । आस पास शुक अलि
चरणदासी ।
सरस माधुरी शोभा ऊपर । तन मन धन वारी ।।

पद राग सोरठ ।।

रास में निरतत दिलजानी । लिये संग श्री राधे रानी ।।
छुमछुम गति ले सन्मुख आवें । हँसि नैंनन सो भाव बतावें ।
रीझ रिझाय लेत भुजन भर । थेई थेई बोलत बानी ।।
कबहुं सखिन संग नाचत रसिया । रूप राशि सबके
मन बसिया

मरकत मणि कंचन तन कस रस । लेत अधर आनी ।।
उचत उरोज लचन कृसि कटि की । सुधि गई भूल बस न घूँघट की ।
नागिन सी लट लटकि कपोलन । सोहत सुख दानी ।।
शरद बिमल ऋतु आनंदकारी। निर्मल चंद चांदिनी प्यारी ।
'सरस माधुरी' युगल बिहारी । रस लीला ठानी ।।

पद राग सोरठ ।।

रास में निरतत छैल छली । संग श्यामा ललितादि अली ।।
द्वै द्वै सखियन बिच बिच प्यारो । कर गहि करत रंग रास भारो ।
मंद विहँसि मन मोहत मोहन । चितवत भांति भली ।
तिय अम्बुज मुख चूमत लम्पट । कुच परसत हर्षत नागर नट ।
लालन भोगी भ्रमर मनो सखियां । ज्यों कमल कली ।।
कटि किंकिणि पग पायल साजे। नूपुर घुंघरू छुनछुम बाजे ।।
सरसमाधुरी लेत चपल गति । गुण निधि लाल लली ।।

पद राग सोरठ ।।

रसिकनी रसिया रास करें । नचन में सबके चित्त हरें ।।
होड़ाहोड़ी निरतत दम्पति । सखियन प्राण जीवन धन सम्पति
मसक अंक लेवें अधरामृत । हँसि हँसि भुजन भरें ।।
अञ्चल उड़त उरोज निहारें । नाभि निरखि पिय तन मन वारें ।

कृसि कटि लचनि लखत लालन जब। मन नहिं धीर धरैं ।।
नैंन मैंन सर हियमें लागे। रति विलास हित चित अनुरागे ।
सरस माधुरी पायल की ज्यों । छूमत नांहि टरैं ।।

पद राग सोरठ व दादरा ।।

मन मोहन सोहन श्याम सखी,
निरतत नाना बिधि गति उपाय ।
नूपुर धुनि किंकिनि बजत अली,
अरु रीझ रिझावत राग गाय ।।
कभु करत सैन नैनन की कोर,
हँसि लेत भुज भर धाय धाय ।
मसकत कुच करसों रसिक रमन,
मुख चूमत सहचरी चाय चाय ।।
कभु श्यामा के संग रंग करत,
नैनन सों नैना दोऊ मिलाय ।
ललचावत रति रस लेन लाल,
निज मुकुट चरण प्रिया दे झुकाय ।।
कभु करन जोर बहु बिधि निहोर,
प्यारी के प्यारो परत पाय ।
लखि दीन दयानिधि प्राण प्रिया,
लालन को ले निज हिये लगाय ।।

अधरामृत प्यावत प्रेम मुदित,
रसिया को देवें रस छकाय।
यह बिहरन दम्पति की निस दिन,
हिये 'सरस माधुरी' रही छाय ।।

पद राग सोरट मल्हार।

रास करत पिय रंग वढावें।
नाना गति ले नचत नवेलो, बिबिधि भांति सों भाव बतावें ।।
प्रेम पुलक परसत पद प्यारी, कबहुक ले गति मुकुट छुआवें।
थेइ थेइ भूल भाव बस रसिया, श्री राधे राधे मुख गावें ।।
रूप निरखि रस लंपट लालन, विवस होय धीरज विखरावें।
सरसमाधुरी रीझ प्रिया तब, प्रीतम को निज कंठ लगावें ।।

पद राग सोरठ।

दोउ करत रंगीले रास रंग। मन माहिं भरी जिनके उमंग ।।
सन्मुख निरतों करके हुलास, हँस हँस आवत हैं पास पास।
छबि निरख लजाते रति अनेग ।।
दे गलबैयां युग नवललाल, निरतों गति ले संग बहुत बाल।
बजवे सारंगी गति मृदंग ।।

कभु पंचम स्वर में करत गान, लेहाब भाव गति सुर बंधान।
लखि सरस माधुरी दृगन दंग।।

पद राग सोरठ।।

आज सखी रास में जुगल राजै।
नचन में नवल गति लेत नव भाव सों,
चाव सों चौगुने चपल छाजै।।
ठुमक पग धरन गति धरन मन की हरन,
मोहिनी मंत्र नूपुर सुबाजै।
नृत्य सांगीत गुण निपुण प्रीतम प्रिया,
काम रति कोटि शत निरखि लाजै।।
ग्रीव की ढुरन और मुरन मृदु अंगकी,
हँसन द्युति दसन भ्रू बंक भ्राजै।
'सरस रस माधुरी कहत नाहिन बने,
निरखि मुख बोलिये जय सदा जै।।

पद राग सोरठ।।

आज नीके नचत कंत और कामिनी।
उदित उडुराज निशि शरद सुख साज सखी,
रास मंडल रमत रसिक पिय स्वामिनी।।

श्याम अभिराम घनश्याम बादर मनों,
प्रिया संग रंग सों लसत जिमि दामिनी।
जुगल मुखचंद की प्रभा पूरित विपिन,
सखी गण चकोरी निकट गज गामिनी ।।
सप्त स्वर साज बाजत विविधि भांति सों,
गात मुस्कात रस रंग मगी जामिनी।
पियत मधु अधर जुग जोर मादक दोउ,
सरस रस माधुरी केलि अभिरामिनी ।।

पद राग सोरठ ।।

नृत्यत आज रास में रसिया, श्रीमत राधेश्याम ।
नख शिख सजि शृंगार सलोने, अंग अंग अभिराम ।।
नील पीत पट पहिरे तन में भूषण पुष्प ललाम ।
गावत भाव बतावत दोऊ, संग सोहत बहु बाम ।।
सप्त सुरन की सरगम उचरत, ले ले तीनों ग्राम ।
दरशावत इक्कीस मूर्छना, लजत निरख रति काम ।।
युगलचंद की रूप चंद्रिका, छाई श्रीवन धाम ।
सरसमाधुरी शोभा लखके, मोल बिकी बिन दाम ।।

पद राग सोरठ ।।

नृत्यत आज नवल नागर नट, कुँवर किशोर किशोरी ।
रूप रंगीली रसिक रसीली, संग लिये बहु गोरी ।।
बजवत बीन मृदंग मँजीरा, सारंगी सुर जोरी ।
रस समुद्र उमग्यो अति भारी तान तरंग हिलोरी ।।
हस्तक भेद भाव ले नाना, चितै नैंन की कोरी ।
मनु तैरत मछली जल मांही, हिल मिल के इक ठोरी ।:
छबि के जाल फँसी सब सहचरि, बंधी प्रीति की डोरी ।
सरसमाधुरी रस वस उरभी, भई प्रेम में बोरी ।।

पद राग सोरठ ।

नृतत प्यारी सरस बिहारी ।
होड़ा होड़ लेत गति अद्भुत, रसिक प्रिया रिझवारी ।।
छुम छुम छननन बाजत नूपुर, कटि किंकिरिण झुनकारी
लटकि लटकि गति लेत लाडिले, मटकि मटकि पिय प्यारी ।।
कुण्डल हलन चलन भृकुटी की, चितवन काम कटारी ।
हँसि मारत हिय मांहि सखिन के, कसकत चोट करारी ।।
लोट पोट हो सकल सहचरी, घूमत ज्यों मतवारी ।
सरसमाधुरी बसी दृगन में, विसरत नांहि विसारी ।।

पद राग सोरठ ।।

नृतत नवल नागरी नागर ।
एक एक तें अधिक गुरान में, रूपअपार सु छवि निधि सागर।।
छलकत छटा तरंग अंग प्रति, प्रेम पयोनिधि परम उजागर।
सरसमाधुरी अमृत धारा, नांहि समात एक घट गागर ।।

पद राग सोरठ ।

राधे रसिकबिहारी हेली, निरतत भरे उमङ्ग सों।
अरस परस मिल भाव बतावत, गावत तान तरङ्ग सों ।।
धुम किट धिधि किट तकधि लांग गति उपजत मधुर मृदङ्गसों
तननन बजत तमूरा रूरो, सारंगी सुर ढंग सों ।।
ताल मजीरा नूपुर की धुनि सुन्दर मिली उमंग सों।
करत कटाक्ष नेह नैनन करि कसि कसि भृकुटी भंगसों ।।
सरस माधुरी रस में माते, लपट लगत है अंग सों।

पद राग सोरठ ।

रास में श्री राधे जू गावें ।
नृतत नई नई गति लेके, अद्भुत भाव बतावें ।।
सरगम सुर सांगीत रीत सम, पायल पें छुमकावें ।
चपलासी चंचल चमकत हैं, प्रीतम ढिग चलि आवें ।।

घन घनश्याम निरखि नैंनन छबि, प्यारी के बलि जावैं ।
रीझ रहे जय जय मुख बोलत, लखि निज दगन सिरावैं ।।
प्रेम विवस श्यामा प्रीतम को, हँसि हँसि हृदय लगावैं ।
सरस माधुरी अधरामृत दे, रसिया छकन छकावैं ।।

पद राग सोरठ ।

आज हरि नीको रास रचायो ।
पूरण चन्द्र चन्द्रिका चहुँ दिश, परम प्रकाश सुहायो ।।
द्वै द्वै गोपी बिच बिच मोहन, मण्डल ललित बनायो ।
नृत्यत नई नई गति ले ले, गान तान रंग छायो ।।
हस्तक भेद बिबिधि भांति ले, हाव भाव दरसायो ।
पदन्यास पायल पग घुंघरू, छुम छुम शब्द सुनायो ।।
बीन मृदंग चंग सारंगी, ताल तमूर बजायो ।
रीझ रही लख के सहचरिगण, हर्ष न हृदय समायो ।।
जाकी माया जगहि नचावत, वेद पार नहिं पायो ।
सरसमाधुरी प्रेम विवस ह्वै, करत भक्त मन भायो ।।

पद राग सोरठ ।

शरद रैन कियो रास कन्हाई ।
यमुना तट वंशीवट सजनी, श्यामसुन्दर बन्सुरी बजाई ।।

सुन धुन सखी चली सब बनको, मनमोहन प्यारे ढिग आई ।
मिली आय आनंद सों भुज भरि, नाचतगावत हिय हुलसाई ।।
नाना भाव नई गति ले ले, लाल लाडिली लिये रिझाई ।
सरसमाधुरी चंद चांदनी, वृन्दावन में चहुँ दिशि छाई ।।

पद राग सोरठ ।।

नृत्यत युगल निकुंज बिहारी ।।
मुकुट चंद्रिका सजी शीस पर, नील पीत पट अंगन धारी ।
भृकुटी कुटिल चारु चितवनया, नैंन सैंन मोहत ब्रज नारी ।।
सुन्दर गोल कपोलन ऊपर, अलक छूट रही घूंघरवारी ।
हस्तक भेद भाव दरशावत, ताता थेइ थेइ वचन उचारी ।
बेसर नाक बुलाक विराजे, मन्द हँसन की मैं दलिहारी ।
गावत राग रागनीं रसिया, रसिक जनन के प्राण अधारी ।।
लेत चपल गति गुण गरवीले, पग पायल नूपुर झुनकारी ।
श्यामा श्याम धाम शोभाके, सरसमाधुरी लखि भइ वारी ।।

पद राग सोरठ ।

आज सखी पून्यो शरद सुहावन ।
पूरन चंद चांदनी निरमल, जमुना तट अति पावन ।।

वंशीवट राधे नागर नट, रास रच्यो मन भावन ।
झुण्ड अनेक संग सखियन के, निरतत चित्त चुरावन ।।
मुकुट लटक मटकन पद पटकन, ताता थेइ मुख गावन ।
रीझ रहत कर गहत परस्पर, करत मंद मुस्कावन ।।
सुर पुर नारि निहार मगन मन, लगी पुष्प बरसावन ।
सरसमाधुरी लखि दम्पति छवि, रति अरु मदन लजावन ।।

पद राग सारंग व कालंगडा ।।

लाल लाडिली रास करैंरी ।
पियको नृत्य सिखावत प्यारी, चितवन में हँसि चित्त हरैंरी ।।
रीझ रहत दम्पति तन पुलकत, हिल मिल हित सोंअंक भरेरी।
ग्रीवा लटक मटक मुख मोहत, मृदु मुस्कन में फूल झरेंरी ।।
लेत स्वल्प गति गुण गरबीले, छुम छुम छननन चरण धरेंरी ।
सरस माधुरी संग सखियन को मुख निरखत लपटात गरेरी ।।

पद सारंग ।।

रसिक रास में रस प्रगटावें ।
नृतत नई नई गति ले ले, कटि लचकाय नैन मटकावें ।।

भृकुटी काम कमान खैंचके नैन मैन के बान लगावें।
बेधत छेदत हिय सखियन के,हँसि हँसि पानि कपोलन लावें॥
आय धाय अलियन के सन्मुख, मृदु मुस्काय अंग लपटावें।

पद धुनि जयपुरी गाली॥

मोहन बांसुरी बजावे, सुनो सब नागरी ए।
ताना मीठी मीठी गावैं, थाने ले ले नाम बुलावे॥
रसियो बनमें रास रचावे, रूप उजागरी ए।
बिधना अच्छी बात बनाई, हुई छै सबही की मन भाई॥
निरखां नैंना कुँवर कन्हाई, धन छै भाग री ए।
करल्यो सबही अंग श्रृंगार, बस्तर भूषण विविधि प्रकार॥
आंख्यां लेवो अंजन सार, भरल्यो मांग री ए।
दियो जमुना न्हाता बर म्हाने, मिलस्यां सरद रैन में थानें॥
चालो सबही छाने छाने, लैरां लागरी ए।
आपां सबही हिल मिल चालो, नाचां गांवां घूमर घालो॥
ऊँका गला में बैयां डालां, गुण की आगरी ए।
कुँज केलि करां मन मानी, ऊँठे आजे राधे रानी॥
मिलसी टहल महल रस खानी, अचल सुहाग री ए।
सुणल्यो सरस माधुरी बात, धन धन धन धन छै यह रात॥
पुलकित प्रेम मांहीं छे गात, गावो राग री ए।

ठुमरी ध्वनि नाटक ।

मिलारी मिलारी बिहारी गुयां सूरत प्यारी प्यारी ।।मि.।।
वाहि निहार अनंग लजावे मृदु मुख हँसन में वारी ।। ,,
उमा रमा उर्वशी आदि सब, ललचावत वहु नारि
रिझवारी ।।
मदन मनोहर वंशी बजाई, मोही गोप कुमारी ब्रज सारी ।।
बंशीवट तट रास रचावे, ले संग सखी अपारी हितकारी ।।
सरसमाधुरी कृष्णचन्द्र तहां नृतत दे दे तारी दिखलारी ।।

(२)

मसक अंक चंचल अंचल गहि,
अधर सुधारस पियत पियावे ।।
मन मोहन महबूब रू,
पग नुपुर छुम छनन बजावे ।
लासानीं दिलजानी दिलवर,
सरस माधुरी के मन भावै ।।

पद राग खमांच ।।

श्री राधे संग नचत पियारो ।
नख शिख किये शृंगार रसिक वर, मोर मुकुट धर
वंशीवारो ।।

नटवर भेश सजे सुख राशी, कटि किंकीरिण पग सूथन धारो ।
पटका कमर कसो पीरे रंग, गावत राग सखी केदारो ।।
ठुमक ठुमक गति लेत सांवरो, चंचल छैल प्रेम मतवारो ।
सरसमाधुरी बसी दृगन छवि, चित ते टरत नेक नहिं टारो।।

पद राग खमांच ।।

नटवर गति नाचत नई नई ।
छुमछुम छननन घुंघरु बजावत, बोलत बचन मृदुल रसमई।।
मंद मंद हँसि हेर नैंन सों, प्रेम ठगोरी डार दई ।
कटि किंकिरिण पग नूपुर झनके, छबि मन मोहन हृदय छई।।
संग रंग सों नृनत सखियां, सुनत गान सब विवस भई ।
सरस माधुरी रस में छाकी, छतियन छैल लगाय लई ।।

पद राग खमांच ।

नृत्यत रास रसिकनी रसिया, नव नव भाव नवीनेरी ।
लटकि लटकि गति लेत लाडिले, प्रेम मांहि रंग भीनेरी ।।
लखि लोचन ललचात सखिन के लपट गात रस लीनेरी ।
रस बस भई भामिनी सगरी, अपने तन मन दीनेरी ।।

गावत तान आन बांकीसी, बजत ताल सुर झीनेरी।
सरसमाधुरी हंसि हंसि हेरत, प्यारी पीय प्रवीनेरी ।।

पद राग खमांच।

नचत सखी सुन्दर श्याम सलोना।
श्रीराधे के दें गलबैयां, रसिया रूप रिझोना ।।
नेक चिते चंचल ने मोदिश, कर डारो कछु टोना।
सरस माधुरी दृगन बसी छबि, नाहि सुहावे भोना ।।

पद राग मलार।

नचत रास में मोहन गोरी ।।
अरस परस हिल मिल हँसि हेरत,
करत चतुर चितवन में चोरी ।।
तत ता थेइ थेइ वचन उचारत,
भाव बतात किशोर किशोरी ।।
हस्तक भेद जनाय युगल वर,
लेत चपल गति जोवन जोरी ।।
चिबुक परस चंचल अंचल गहि,
छतियन छुवत छैल छलसोरी ।।

सरस माधुरी रस समुद्र दोउ,
उपजत तान तरंग हिलोरो ।।

पद राग मलार ।

नृत्यत राधा सरस बिहारी ।
किये श्वेत शृंगार सुभग तन, मुकुट चंद्रिका शीस सँवारी ।।
हीरन खचित अंग आभूषण, मोतिन की माला उर धारी ।
श्वेत सुमन गूंथी शुभ बैनी, चौसर गजरा अति रुचिकारी ।।
श्वेत जरी के बसन सुहावन, चहुँदिशि लागी कोर किनारी ।
कछनी कलित ललित अति लहँगा, लावनि दावनि घूम धुमारी
तैसी निर्मल चंद चांदिनी, पुलिन पवित्र रैन चमकारी ।
फूले फूल कूल कालिंदी विविध समीर महक मतवारी ।।
तारागण सब सखी सहचरी, युगलचंद प्रीतम अरु प्यारी ।
'सरस माधुरी' बजत साज सुर, नचत नवल देदे कर तारी ।।

पद राग मलार ।

रसिक रसीली खेलत रास ।
आस पास मंडल युवतिन को,
मध्य जुगल जिमि चन्द्र प्रकाश ।।
नील पीत पट फहरत लहरत,
घन दामिनि ज्यो होत उजास ।।

छुमछुम छननन बजत घूंघरू,
करत केलि रस विविधि विलास ।।
चञ्चल चपल चारु चितवनिया,
हँसि हँसि आय सखिन के पास ।।
सरसमाधुरी मगन छैल दोउ,
निरख नयन मन होत हुलास ।।

गजल ।

निर्तत रास में रसिया, रंगीला नंदलाला है ।
सलोना श्याम खूबसूरत, सकल जग का उजाला है ।।

दोहा

कर कमलन ले अधर धर, कृष्ण बजाई बैन ।।
वंशीवट यमुना निकट, शरद उजारी रैन ।
सुनत धुन प्रेम अनुरागी मिली आ ब्रज की बाला है ।।१।।

दोहा

श्री राधे वृषभानुजा, रासेश्वरी सुजान ।।
संग लई सब गोपिका, करन लगी कल गान ।
मिला सुर बीन सारंगी, पखावज पर्न ताला है ।।२।।

दोहा

दो दो गोपी मध्य में, सोहत श्री ब्रजचंद ।।
तारागण सब सुन्दरी, श्रवत सुधा आनंद ।
छमाछम नूपुरों की धुन, छई नभ भू पताला है ।।३।।

दोहा

उघटत गत सांगीत गुण, हाव भाव भ्रू भंग।
रास रंग संग्राम में, जीत्यो कृष्ण अनंग ।।
लगे उर बान नैंनोंके, रही नहिं तन सँभाला है ।।४।।

दोहा

परिरंभन चुम्बन अधर, आलिगन अंग अंग ।
मन्मथ को मनहूं मथ्यो, दरशायो रस रंग ।।
थकित शशि होगयो नभमें, बिसर के अपनी चाला है ।।५।।

दोहा

गगन छये सुर नारि नर, बैठे सकल विमान ।
भूल गये निज लोक सुख, करैं रूप रस पान ।।
हरष सब फूल बरसावें, कहैं जय जय गुपाला है ।।६।।

दोहा

वृंदावन आनंद घन, नित प्रति रहत बसंत ।
सरसमाधुरी संगले, रमत राधिका कंत ।।
मगन नित ध्यान दंपति के, निरख छबि को निहाला है ।।७।।

निकुंज गमन पद राग सोरठ ।

कुंज पधारो राधे सरस बिहारी ।
रास करत रस में निश बीती अब पौढो पिय प्यारी ।।

सुन बिनती सखियन की दम्पति, हंस गल बैयां डारी ।
रमक चले दोऊ रंग महल में, सरसमाधुरी वारी ।।

सेज पोढन राग विहाग ।

पोढें मिल रसिक रमन पिय प्यारी ।
अरस परस दीन्हें गल बाहीं, श्री राधा सरस बिहारी ।।
हँस मुसक्यात परस्पर दोऊ, अंग उमंग अपारी ।
हिलत मिलत पुलकित तने दम्पति, नैंनन नींद खुमारी ।।
अतर सुगंध माल फूलनकी, अरु यमुनोदक झारी ।
पानदान मिष्टान्न थाल ढिग, धरे सेज सहचारी ।।
अलबेले अनुरागी लंपट, लपट रहे अँकवारी ।
सरसमाधुरी केलि कुँज की, सखियन नैंन निहारी ।।

इति रास महोत्सव संपूर्णम् ।

पद दीपावली व अन्नकूट

❋ श्रीः ❋

पद दिवाली राग सोरठ ॥

अद्भुत आज दिवाली प्यारी ।
कार्तिक कृष्णा मावस सुन्दर, दीप दान उत्सव शुभकारी ॥
कुंज महल श्रीवृन्दावन में, मरिण दीपावली अलिन सँवारी ।
सप्तरंग के झाड रतननके, जगमग जोति जगी अति भारी ॥
पीत जरी के वस्तर पहरे, भूषरण कनक जटित मन हारी ।
नख शिख सजे अंग प्रति दम्पति, रूप छटा छाइ कुंज मँझारी ॥
आतिशबाजी भांति अनेकन, छोडत हैं सन्मुख सहचारी ।
रीझ रहत लखि लाल लाडली, सुमुख सराहत वचन उचारी ॥
अटा छडे चहुँ दिशि हँसि हेरत, दीपमालिका की उजियारी ।
नवल निकुंज अनेकन मांही, छटा छई है न्यारी न्यारी ॥
पुनि रंगमहल रतन सिहासन, बैठे आ श्रीसरसविहारी ।
मरिणमय थाल संजोय आरती युगल अंग के ऊपर वारी ॥
बाद्य बजाय गाय गुरिणगन बहु बोलत मुख जै जै बलिहारी ।
चोपर चारु सँवारी सजनी, द्यौत खिलावत हिलमिल नारी ॥
हार गये हरि चतुर शिरोमरिण, जीति गई स्वामिनी हमारी ।
सकुचन निरख नवलनागर की रमक भरे भुज पिय हितकारी
समय सैनके भोग समझ मन, नाना ब्यंजन साग अपारी ।

सज के थाल रतन को रसमय, धरयो सहित जमुना जलझारी
आरोगत अलबेले दोऊ, अरस परस करके मनुहारी।
सो सुख कह्यो न जाइ इक मुख, निरख नैन भई सब
मतवारी ॥
कर अचवन आरोगी बीरी, सैन कुंज गमने सुखकारी।
गल बैयां दे गुण गरबीले, छैल छबीले प्राण अधारी ॥
शैया जाय बिराजे रसिया, सोये हिलमिल भर अंकवारी।
विविध विलास हास रस राचे, रंध्रन लग अलि रही
निहारी ॥
प्रथम समागम सुख अनुभव कर, शुक सखि मूँदी कुंज किवारी
सरस माधुरी चरन दासि जू, चरण पलोटन की अधिकारी॥

राग ठुमरी ॥

आज दिवारी को दिन पावन ।
घर घर दीप दान की शोभा, जगमग जोति जगावन ॥
नख शिख सज श्रृंगार नारि नर, मनमें भर बहु भावन ।
झाड गिलास जोड महलन में, करत प्रकाश सुहावन ॥
श्री लक्ष्मी महारानी जू को पूजन कर भर चावन ।
धूप दीप दे करत आरती, फूलन को बरसावन ॥
भोग धरत पकवान मिठाई, मंगल मोद मनावन ।
सरसमाधुरी नाना बिधिके, सुन्दर ख्याल छुडावन ॥

पद अन्नकूट भोग राग सारंग ।।

अन्नकूट भोग पावत पिय प्यारी ।
कंचन थाल अनेक कटोरी, सामग्री तिन मांहि अपारी ।।
सादा भात केशरी सुन्दर, कढी पकोरी दाल भंगारी ।
फुलका लघु लोने अति अद्भुत सुरभी घृत तिन में रुचिकारी
सिकरन खीर बरा बासूँदी, टेंटी पापर बहु तरकारी ।
कचरी फली तली अति लोनी, और मंगोरी अदरक न्यारी ।।
रुचिर रायते नुकती किशमिश पोदीना चटनी चटकारी ।
मठा मधुर अमरस दधि माखन, मिश्री मिश्रित स्वाद महारी।।
नींबू आम अचार करोंदा, मधुर मुरब्बा अति मनुहारी ।
मोहन भोग जलेबी मोदक, पूवा घेवर सरस सुहारी ।।
मठरी मोठ दाल अरु बरफी, षटरस व्यंजन विविध प्रकारी ।
सखरी अनसखरी बहुसामां, कहलों बरनों रसना हारी ।।
अरस परस मनुहारत दम्पति, पियाही पवावत कुँजविहारी ।
यह सुख देख सखी शुक प्रमुदित, रीझ रहत बिधि बदन निहारी
श्यामचरणदासी सुख रासी, मगन युगल रस में मतवारी ।
सरसमाधुरी श्रीदम्पति की छबि लखि मुख बोलत बलिहारी

इति दिवाली उत्सव संपूर्णम्

अथ विवाहोत्सव ।

॥ श्रीराधासरसबिहारिणे नमः ॥

बिनोरी में गाने का बनां

वंशीधर वृजचंद बिहारी, सखि बनरो बनि आयोरी ॥
शशी सेहरा सजो सुहावन, दुलहिन के मन भायोरी ॥
नख शिख भूषण बने नवेले, मनुवां निरख लुभायोरी ॥
बरसाने वृषभान पोर पर, बहु बिधि बाज नचायोरी ॥
सखा बराती वयस बराती, हिल मिल हित उपजायोरी ॥
वृजनारी लखि भइ मतवारी, नैंनन मांहि बसायोरी ॥
सहज सलोनों रूप रिझोनों, सुन्दर सुघर सुहायोरी ॥
सरसमाधुरी मदन मनोहर, प्रीतम प्यारो पायोरी ॥

वना राग माढा

सैयो हे म्हारी नंद नंदन ब्रज चंद बनों म्हानें बालो लागै हे ॥

अन्तरा

शीस सेहरो सुन्दर सोहे, कलँगी झोका दार ।
कानन कुण्डल जग मग जोती, जिनकी अजब बहार ॥
निरख नैंना अनुरागै हे ॥१॥
भाल विशाल तिलक केसर को, भोहें तनी कमान ।
कजरारी अनयारो अंखियां, मारत तक तक बान ॥
मदन हियरे बिच जागै हे ॥२॥

नाक बुलाक सुहावनी, मंद मधुर मुस्कान।
चंचल चपल छबीलो छैलो, सुन्दर श्याम सुजान ।।
देख घूँघट पट त्यागैं हे ।।३।।
कंठ कौस्तुभ मणि चमकत है, गल में मोती हार।
कटि किंकिणि पग पैंजनि बाजत, नख द्युति दमक अपार ।।
चरण में चित जा पागै हे ।।४।।
नख शिख सोहन विश्व विमोहन, सखियन जीवन प्रान।
सरस माधुरी मगन भई सब लख प्रीतम रस खान ।।
बिरह दुख सब ही भागै हे ।।५।।

पद

बना दिलदार वे, नंद का कुमार वे, प्राणों का आधार वे।

अन्तरा ।।

श्याम वरन मन हरन छैल पिया, नख शिख किये शृंगार वे।
सिर सोहे शिरपेच किलंगी, मोर महा मनहार वे ।।
सुभग सेहरा सजा सलोना, तुर्रा है धजदार वे।
कानन कुण्डल नासा मोती नैंना नुकीले अनीदार वे ।।
मंद हसन मन फसन दसन द्युति, रसिक रसीला यार वे।
कंठ कौस्तुभ मणि राजत है, हिय पर मोती हार वे ।।
जरद बादले को अकजामा, पटका कोर किनार वे।

सूथन हरित रंग रेशम को, काम कसीदा जरी तार वे ।।
कटि किंकिन पेटी कसि तापर, प्रथु नितंब मजे दार वे ।
बाहन बाजूदंद करा कर, पहुँची परम सुढार वे ।।
अंगुरिन छल्ले छाप छबीले, दरसत अजब बहार वे ।
चरण कमल महंदी रंग राजे, नूपुर की झुनकार वे ।।
अतिशय सोहन विश्व विमोहन, रंग रंगीला रिझवार वे ।
श्री श्यामा बनरी का बनरा, है महबूब हमार वे ।।
बांकी छबि लखि बरसाने की, मोहि हैं नारि वे ।
सुखमां सदन मदन लख लाजत, शोभा अपरंपार वे ।।
बंक बिलोकत मृदु मुस्कन करि, जादू सा दिया डार वे ।
सरस माधुरी रूप लुभानी, तन मन धन दिया वार वे ।।

गजल ।।

श्याम शिर पर सेहरा, कैसा सजा निरखो अली ।
मोतियों की माल जिसमें, और रतनों की कली ।।
चंदसा मुखड़ा मनोहर, रूप की क्या चांदनी ।
होरही जग मग झलाझल, सोहनी शोभा भली ।।
मन्द मुस्कन मोहनी, चितवन नुकीले नैंन की ।
कर रही घायल कलेजो, और बेढब बेकली ।।
मोर मस्तक मनहरन, तुर्राकलंगी की झलक ।
छुट रही नागन अलक चहरे पे, नहिं टाले टली ।।

नासिका मोती अधर पर, जिसकी क्या प्यारी हलन ।
देख दीवानी भई, गतमत न फिर इतउत चली ।।
नख से शिखलो अंग में, सोहै सखी भूषन बसन ।
छबि को लख के छैल की, नारी नगर की सब छली ।।
सरस रस की माधुरी, बांकी अदा मन बस गई ।
छक रही छैला निरख, वृषभान नृपजू की लली ।।

कंगना पद ।।

कंगना सजा करमें अति सोहन, सुनहु मदनमोहन बनरे ।
सीस सेहरा सोहत सुन्दर, सहज सलोने आनंदघन रे ।।
पाग शीस शिरपे कलंगी, जामा जगमग सोहत तन रे ।
रंग रंगीले छैल छबीले, पहरे हैं पट आभूषन रे ।।
सखा बराती बने ठने सब, मन में हैं आनँद मगन रे ।
हँसि बोलो बलि जाऊँ बिहारी प्यारे लगत मोहे तोरे बचनरे।।
कूँख सिरानी नंद रानी की, भाग नंदके हैं धन धन रे ।
सरस माधुरी छबि पर वारी बलिहारी अति आनंद मनरे।।

वना पद ।।

श्री राधा वर छैल छबीला ।।
शिर पर पाग सेहरा राजे, मोर मुकुट कुण्डल झमकीला ।।

सोहत है शिरपेच किलंगी, तुर्रा है अति खूब झुकीला ।
भाल विशाल तिलक केसर को, ललित डिठोना लगा मसीला
भोंह कमान बान नैनन के, मारत है बेदर्द गंसीला ।
नागन सी कारी सटकारी, छुटी कपोलन अलक डसीला ।।
नाक बुलाक लसत सुंदर अति, मोती अधरन पे लटकीला ।
बयस किशोर चोर चित प्रीतम,जादूगर मुख मंद हँसीला ।।
सांवल रंग अंग शोभानिधि नख शिख भूषण अंग सजीला ।
ललित त्रिभंग अनंग लजावन, कटि पीताम्बर है चटकीला ।।
कुँवरि किशोरी लखिमुख ओरी,हँसि हँसि हेरत रंग रंगीला।
'सरसमाधुरी'बसो हिये में, निश दिन मोहनलाल नुकीला ।।

बना ।।

बनेकी छबि मन माँहि बसी ।
चितवन में चित चोरत चंचल, जादू मंद हँसी ।।
मनमोहन सोहन तन सुन्दर, पीताम्बर कटि कसी ।
'सरस माधुरी' छकी रूप रस, बंसी अधर लसी ।।

बना ।।

बने की अँखियां जादूगारी ।
चितवन बान चलाय निरदई, अलि घायल कर डारी ।।

हँसि हँसि हेर हरचो मन सबको, मदन मोहिनी डारी।
'सरसमाधुरी' रूप राशि लखि, भई प्रेम मतवारी ॥

बना

सजनी श्याम बना अति बाँका ।
शिर पर मोर मनोहर राजे, तुर्रा अजब अदा का ॥
नख शिख भूषण वसन सजीले, हंसि मो ओरी झांका ।
सरसमाधुरी घायल कीनीं, जोड़ लगे नहिं टांका ॥

बना

मेरा मन बनरे ने हरलीना ।
मृदु मुस्काय चितें मो ओरी, टोना सा कुछ कीना ॥
रसिक शिरोमणि श्याम सलोना, सुन्दर छैल नवीना ।
सरसमाधुरी बनी राधिका, रूप निरख रंग भीना ॥

बना

रंगीला सखी बनरा बंसीवाला ।
जग में ऐसा सुना न देखा, जोबन में मतवाला ॥
श्याम सलोना सनम हमारा, सज धज ठाठ निराला ।
दुलहिन श्री राधे महारानी, जिनका रूप उजाला ॥

बाँकी अदा दिखाय हाय सखी, रसबस करी विहाला ।
सरसमाधुरी नेक चिते हँसि, जादूसा पढ ड़ाला ॥

बना

विहारी प्यारा बांका बना बनां ।
बांका सिर पर सजा सेहरा, सुन्दर श्याम घनां ॥
बाँकी चितवन मंद हँसन कर, मोहत मोर मनां ।
बाँके भूषन वसन अंग में, कर सोहे कंगनाँ ॥
बाँकी कलंगी सजी सलोनी, अति रस रूप सनाँ ।
बाँकी बनी माल उर ऊपर, हीरा लाल पनाँ ॥
बाँकी सज धज अदा अनोखी, अद्भुत ठाठ ठनाँ ।
सरसमाधुरी लखि बाँकी छवि, वारत प्रान धनाँ ॥

बना

बने को बात सभी बनि आई ।
सुन्दरता त्रिभुवन की जामें, ऐसी दुलहिन पाई ॥
निरख रूप अपनी प्यारीको, लाल रहे मगनाई ।
सरसमाधुरी सरवस दे पिया, करत चरण सिवकाई ॥

बना

नवल बना बनरी ब्याहन आया ।
शिव ब्रह्मा जाको ध्यान धरत है, सुर मुनि शीस नवाया ।।
जाकी माया त्रिभुवन मोहत, बनरी देख लुभाया ।
सरसमाधुरी या बनरे का, वेद विमल यश गाया ।।

बना

बिहारी बना सब ही के मन भाया ।
ले संग सखा बराती बांके, सज बरात चल आया ।।
नवल किशोर रसिक नंदनंदन, सुन्दर रुप सुहाया ।
शिर पर मुकुट सेहरा सोहै, तुर्रा खूब सजाया ।।
नख शिख भूषण वसन सलोनें, सबका चित्त चुराया ।
चितवन नैन रसीली रस की, मंद मंद मुस्काया ।।
घोडे होय सवार श्याम घन, अनुपम दरश दिखाया ।
बरसाने वृषभान नगर में, अनुपम सुख सरसाया ।।
रंग रंगीला छैल छबीला, निरख अनंग लजाया ।
सरसमाधुरी सब सखियन के, नयनन माँहि समाया ।।

(२७७)

बना

श्याम बना प्यारा २ बना, यशुमत नंददुलारा बना।
नव किशोर चित चोर छबीला, मृदु मुस्कान में मोह्यो मना।।
नयन नुकीले अरु शरमीले, चितवन करत कटाक्ष घना।
शीस सेहरा सजा सलोना, मकराकृत कुण्डल श्रवना।।
मुकुट लटक शिर पेच कलंगी, चमकत दमकत हीरा पना।
जामा जगमग जटित जवाहर, कटि सूथन अद्भुत पहना।।
मणि मुक्ता गल माल बिराजे, नख शिख भूषण है सोहना।
ललित त्रिभंग अंग शोभानिधि प्यारे प्रीतम मन मोहना।।
सांवरी सूरत मन में बस गई, कल न परत बिन देखे छिना।
मिल बिछुरो मत मदन मनोहर, सरसमाधुरी प्राणधना।।

श्री बनी जू की छवि के पद।।

(१)

बनी जू की छबि लखि के भई वारी।
गौरांगी गुणनिध श्री राधे, प्रीतम प्राण पियारी।।
शिर मोरी और सज्यो सेहरा, नख शिख भूषण धारी।
सरसमाधुरी वसन सुहाने, अति सुन्दर सुकुमारी।।

(२)

बनी की छबि आली लखि लीजे।
कोटि चंद की कान्ति सखी री, मुख पर वारन कीजे।।

सुन्दरता की राशि रसीली रूप रसामृत पीजे ।
सरसमाधुरी अतुलित शोभा दृगन देख नित जीजे ।।

(३)

बनी जू के शीस सेहरा सोहै ।
घूंघट की पट ओट चिते हँसि, मोहन को मन मोहै ।।
उमा रमा सावित्री आदिक, लखि लोचन ललचोहैं ।
सरसमाधुरी तीन लोक में, उपमा को नहिं को है ।।

(४)

बनी जू की शोभा अधिक बनी ।
नख शिख भूषण वसन सजे हैं, अति रंग रूप सनी ।।
नयन नेह मद माँहीं छाके, मोहे श्याम धनी ।
सरसमाधुरी स्वामिनि मेरी, बकसत मोज घनी ।।

(५)

बनी सखी बनरी प्यारी राधा ।
गुणनिधि गौरांगी गरबीली, रुप अनूप अगाधा ।।

नवल बने रस सने लालकी, हरत विरह की बाधा ।
सरस माधुरी चरण कमल की, श्याम करत आराधा ।।

(६)

राग सारंग ।।

बनी बिहारिन बनरी बांकी ।
सुन्दरता की राशि रंगीली, रूप अनूप अनोखी झांकी ।।
नख शिख सजे श्रृंगार सलोने, निरखि थकी बुधि उमा रमाकी।
सरसमाधुरी लखि निज लोचन, छवि के माँहि अति ही छाकी।।

(७)

बनी की बनी अदा अलबेली ।
भौंरी मस्तक सजी सुहावन, जाकी क्रांति उजेली ।।
गौरांगी गुणनिधि श्री राधा, रूप चांदनी फैली ।
सरस माधुरी सङ्ग रंगीली, अनगिन सखी सहेली ।।

(८)

बने की बनीं बनी अति नीकी ।
अति सुकुमारी प्राण अधारी, प्यारी मोहन पीकी ।।

सखियन की सर्वस्व स्वामिनि, अतिशय जीवन जीकी।
सरस माधुरी उमा रमा की, छवि तिन आगे फीकी।

(६)

राम मांड।

बनी म्हाने प्यारी लागे हे, ए मा ए कीरत राज कुमारि।
बनी म्हानै० ॥

भान राय की लाडिली, सखियन की सरदार।
श्री दामा की बहिन है, जीवन प्राण अधार ॥
बनी बनी श्री राधिका, सब व्रज की शिरमोर।
रूप रासि रासेश्वरी, मन मोहन चित चोर ॥
बरसानो सूबस बसो, भान राय जहां भूप।
कीरत पटरानी जहाँ, सुन्दर अधिक अनूप ॥
व्याहन आवै लाडिली, नंदनंदन श्री श्याम।
सखा बराती संगले, श्री बरसाने धाम ॥
व्रज घर घर व्रज नागरी, गावें मंगल गीत।
आवें देखन ब्याह छबि, प्रगट करें रस रीत ॥
धन्य मुहूरत धन घडी, धन तिथि और धन बार।
भांवरि हौवे जुगल की, प्रगटे प्रेम अपार ॥
कुंज महल निज टहल की, प्रापति होय इनाम।
सरसमाधुरी महल में, सेवे श्यामा श्याम ॥

पद सीठना गारी ।

बना जी थांकी करी न जाय बड़ाई ।
चंद्र बदनि मृग लोचनि राधे, जिन ऐसी निधि पाई ।।
जाकी तनिक अंग आभा तें, उमा रमा प्रगटाई ।
सरसमाधुरी विधि हरि हर नित, रहत ध्यान लो लाई ।।

पद सीठना गारी ।

बनाजी प्यारे बनरी की बलि जैये ।
मिलती कहां रतन श्री राधे, अपने भाग मनैये ।।
रखियो इन्हे रंक के धन ज्यों, निरख नैंन हरषैये ।
सरसमाधुरी स्वामिनि मेरी, हित कर कण्ठ लगैये ।।

पद सीठना गारी ।

बनाजी नेक बनरी नयन निहारो ।
या दुलहिन के रोम रोम पर, अपनो सरवस वारो ।।
करो सदासेवा चरणन की, पल छिन माहिं विसारो ।
सरसमाधुरी राधे जू को, ध्यान हिये नित धारो ।।

पद सीठना गारी ।

बनाजी प्यारे बनरी छबि लखलीजे ।
या दुलहिन की अंग माधुरी, निरख नयन नित जीजे ।।
मुख मयंक पर वार वार के, प्रीतम पानी पीजे ।
'सरसमाधुरी' रंग महल की, दासी हमको कीजे ।।

पद सीठना गारी ।

बनाजी प्यारे सुनिये बिनती मोरी ।
कहा कहूं तुम भाग बड़ाई, बनरी पाई गोरी ।
शोभा बनी आपकी अद्‌भुत, भली बनी अब जोरी ।
सरसमाधुरी सांवरी सूरत, दिपन लगी अब तोरी ।।

पद सीठना गारी ।

बनाजी सुनो सूरत श्याम तुम्हारी ।
गौराङ्गी राधे के संग में, लगत अधिक अब प्यारी ।।
चंदा साथ सलोनी दरसे, जैसे निशि अंधियारी ।
सरसमाधुरी सुन्दर जोरी, जीवन प्राण हमारी ।।

पद सीठना गारी ।

बनाजी थांकी को करसके बड़ाई ।
ऐवी गैवी नाम कहत सब, नहीं पिता नहीं माई ।।
जाति पांति को नांहि ठिकानों, वेद विमस यश गाई ।
सरसमाधुरी आदि अंत नांहि, ऐसी है प्रभुताई ।।

पद सीठना गारी ।

बनाजी प्यारे कौन पुन्य तप कीनों ।
जा कारण श्यामा स्वामिनि संग, मेल मिलो रंग भीनो ।।
तुम सांवरे यह गौरी भौरी, अपने मन में चीनों ।
सरसमाधुरी रतन राधिका, तुम्हें विधाता दीनों ।।

पद सीठना गारी ।

बनाजी प्यारे भाग तुम्हारो जागो ।
ब्याह भयो राधे रानी सों, कुल कलंक सब भागो ।।
रूप राशि गोरी भोरी के, चरनन सों अनुरागो ।
सरसमाधुरी पद सेवन कर, कुंज केलि वर मांगो ।।

पद सीठना गारी ।

सलोना बना बेदर्दी दिलजानी ।
मंद विहँसि चित चोर लियो तुम, सुध बुध सकल भुलानी ॥
सुन छैला मोहन अलबेला, टुक मुख बोल गुमानी ।
सरसमाधुरी सखियां सारी, छवि लखि भई दिवानी ॥

पद सीठना गारी ।

सितमगर बनरे तेरे नैनां ।
चितवत ही चुभ गये हिये में कसकत हैं दिन रैनां ॥
बिकल भई निरदई हिये में, परे नहीं छिन चैनां ।
सरसमाधुरी लिपट गले से अधर सुधा रस दैनां ॥

पद सीठना गारी ।

नेग गारी को बनरे दीजे ।
अपने संग सदाही रखिये, नेक जुदी नहिं कीजे ॥
टहल महल की प्रीतम हमसों, मन माने सो लीजे ।
सरसमाधुरी केलि कुंज की, नयनन सों लखि जीजे ॥

पद सीठना गारी ।

बनाजी थानैं गारी रंगीली गांवां ।
भानु कुंवरि भरतार भला थे, लख लोचन सुख पांवां ।।
जसुमत समधरण जस की पूरी, ज्यां को सुजस सुनांवां ।
वै गोरी थे श्याम प्रगट हुया, समझ सोच शरमांवां ।।
साधू नंदरायजी सूधा ज्यांको भेद जनांवां ।
थे नटखट वांका नंहि छोजी, यह निश्चय मन लांवां ।।
माखनचोर नाम जग जानें, कैयां सो म्हे छिपांवां ।
चीरचोर चितचोर चतुर थे, प्रगट कहत सकुचांवां ।।
राधे बाई म्हे परणाई, ज्यांसूँ लाड लडावां ।
सरसमाधुरी नेग नवेलो, प्रेम पदारथ पांवां ।।

पद सीठना गारी ।

बनांजी थांकी कांई मनवार करांजी ।
आया छो थे श्याम प्राणधन, हँस हँस भुजन भरांजी ।।
दिल खोलो मुखड़ें मृदु बोलो, चालो चतुर घरांजी ।
करस्यां प्यार पिया म्हे थांसूँ, टारी नहीं टरां जी ।।
छलबलिया छिदगारा थे छो, म्हे नंहि नेक डरांजी ।
सरसमाधुरी अधरामृत ल्यां, जब मन धीर धरांजी ।।

टोना कामन के पद ।

बने पर अलि मिल टोना करिये ।
बूँटी प्रेम उसार शीस पर, पगिया पिय की धरिये ।
सदा रहे आधीन बनीके, ऐसो मन्त्र उचरिये ॥
सरसमाधुरी जादू टोना, करनेमैं नहिं टरिये ।

टोना कामन के पद ।

बने पर जादू कीनों आली ।
नेक चिते हँसि हेर नवेली, बस कीने बनमाली ॥
छल बल छांड भये हैं रस बस, चंचल नयन विशाली ।
सरसमाधुरी श्यामसुन्दर पर, मदन मोहिनी डाली ॥

टोना कामन के पद ।

बने पर ऐसो टोना कीनों ।
छांडि कपट छल बल सब छलिया, भयो बनीं आधीनों ॥
जैसे सूवा पंख उडन तज, पिंजरे परयो प्रवीनों ।
सरसमाधुरी प्यारी प्यारी, रटत सदा रंग भीनों ॥

टोना कामन के पद ।

बने पर सखियन जादू डाला ।
रूप निरख राधे बनरी का, भया प्रेम मतवाला ।।
आज्ञा मांही रहत निरंतर, टले नहीं कहुँ टाला ।
सरसमाधुरी श्यामाज की, मोहन फेरत माला ।।

टोना कामन के पद ।

भयो जादू बस सरस विहारी ।
प्राणवल्लभा बनरी जू के, होत सदा बलिहारी ।।
चरण छुवावत निज नयनन सों, पांय पलोटत प्यारी ।
सरसमाधुरी अधरामृत की, आस हिये में धारी ।।

कंकन डोरा खोलन पद ।

कंकन पिय सों खुलत न हेली ।
घुल गई गांठ अधिक प्यारी की,
करत पिय सों सखि हंसि केली ।।
जान परी लालन की करनी,
व्यंग वचन बोलत अलबेली ।
सरसमाधुरी माय बुलावो,
करे सहाय कहत मनमेली ।।

कंकन डोरा खोलन पद ।

प्यारी ने खोल्यो पिये कंकन ।
जीती कुंवरि कहन अलि लागी,
हारे बना लखत दृग बंकन ॥
मुदित भई बनरी मन मांही,
पाथ लई ज्यों निधि बहु रंकन ।
सरसमाधुरी गाई गारी,
जय बलिहारी बोल निशंकन ।

पलिका चार पद ।

बना बनी पलिका पर राजें ।
मौरी मौर मनोहर मणि मय, सुंदर शीस बिराजें ।
सखी करत सब नेग यथा रुचि, मंगल बाजन बाजें ।
सरसमाधुरी अतुलित शोभा, निरखि काम रति लाजें ।

पलिका चार पद ।

पलंग पर बैठे प्रीतम प्यारी ।
हंसि हंसि हेर हरत मन दोऊ, राधा सरस विहारी ।
लेत लपट अधरामृत लुख छिप, रीझ भरत अंकवारी
सरसमाधुरी सखी सलोनी, या सुख की अधिकारी ।

(२८९)

दोहा ।

चोमुख दीप संजोय के, धरि मध कंचन थार ।
बना बनी पै वार के, गाये मंगल चार ॥

आरती ॥

आरती जुगल चंद पे वारी ।
जगमग ज्योति जगी महलन में,
प्रमुदित मन प्रीतम और प्यारी ॥
श्यामा के कर कमल बिराजत,
लालन अधर वंशिका धारी ।
हिलमिल बैठे रतन सिंहासन,
दम्पति शोभा भई अपारी ॥
चँवर मोरछल करत सखीगण,
विनय बचन बोलत सहचारी ।
सरसमाधुरी रूप लुभानी,
इकटक नैंन निमेष विसारी ॥

निकुंज बिहार पद !

हमारे प्यारे दम्पति प्राण अधार ।
सहज सलोने रूप रिझोने, अतिसुंदर सुकुमार ।।
ब्याह बिनोद रंग रस माते, करत निकुँज बिहार ।
सरसमाधुरी रस की मूरति, रसिक युगल सरकार ।।

निकुंज विहार पद !

सखी री आज रंगीली रैन ।
दुलहिन दुलहा दे गल बैंयां, करत सैन सुख चैन ।।
नाना भांति विहार करत दोउ, कहत बनै नहिं बैन ।
सरसमाधुरी रसना के दृग, दृग के रसना हैन ।।

अलसान पद !

बनी जी थांका नैंना छै रतनारा ।
झपके खुले नींद बस पल पल, लागै छै अति प्यारा ।।
रंग अनंग भरयो तिन मांहीं, आलस घूम घुमारा ।
सरसमाधुरी रस में छ्क्या, प्रेम मांहि मतवारा ।।

अलसान पद !

वनांजी थांकी अँखियां छै अलसानी ।
मूंदत खुलत छिन छिन के मांहीं, अतिही नींद घुरानी ।।
प्यारी के अंसन भुज दीने, लट कुण्डल उरझानी ।
सरसमाधुरी छबिको लखिके, बिनही मोल बिकानी ।।

पोढावनी पद राग सोरठ ।।

आज रंगीली रैन भलीहै ।
दिन दूलह बृजराज दुलारो, दुलहनि श्री बृषभान ललीहै ।।
फूलन सेज सँवारी न्यारी, बिच बिच रचना कमल कलीहै ।
अतर तरातर वसन सुगंधित, महक पवन आनंद रलीहै ।।
मणि दीपक उजियार महलमें, मनहुँ चाँदिनी शरद खिलीहै ।
सरसमाधुरी हृदय ध्यान धर, चिकनवाय निज कुँज चलीहै ।।

पद पौरांगनाओं के गाने का ।।

आलीरी सलोने दोऊ कुँवर ब्रजेश केरी ।।
गोरे बलदाऊ भइया, साँवरे सुन्दर कन्हैया,
बसत सदा यह सखी मानस महेश केरी ।।
भूषण बसन सोहें, मनसिज मन मोहें,
लखि नैनाँ ललचो है बाँके अति वैस केरी ।।

सावित्री भवानी वानी, कमलाहू ललचानी,
रमेइ रहत नित मनमें रमेश केरी।
प्रीतम हमारे रानी कीरत के प्राण प्यारे,
जिय के जीवन वृषभान नरेश केरी।
शुक सनकादि ध्यावें नारद हूं गुण गावें,
वेदहूं न पार पावें पूज्य हैं गणेश केरी।
यह ही गिरिधारी इन ही पूतना संहारी दारी,
सरस विहारी मान हारी हैं सुरेश केरी।

इति विवाहमहोत्सव संपूर्णम् ।

अथ खिचडी भोग उत्सव के पद ।

राग भैरवी व सारंग ।

खिचरी जुगल बिहारी पावें ।
पौष पुनीत मास सुन सजनी, मंगल समय सुहावें ।।
कंचन थाल रसाल मनोहर, अलिगन मिल पुरसावें ।
अरस परस दे ग्रास मुखन दोऊ, रुचि सों भोग लगावें ।।
दही शाक आचार अनेकन, पाय अधिक मगनावें ।
अदरक चटनी कैर करोंदा, पापर पा मुसकावें ।।
फली तली बेसनी पकोरी, मांगत मन हरषावें ।
करत प्रशंसा रसिक शिरोमणि, सहचरि बलि बलि जावें ।।
रतन जटित झारी सुकुमारी, जमुना जल अँचवावें ।
सरसमाधुरी सीत प्रशादी, सखियन को भुगतावें ।।

पद खिचडी राग सारंग ।

आज खिचरी जेंवत पिय प्यारी ।
केशर गरम मसालो मिश्रित, मेवा बहु विधि डारी ।।
एक ही थाल अरोगत दोऊ, अरस परस मनुहारी ।
नाना शाक सलोनें सुन्दर, नींबू आम अचारी ।।
पापर दही फलोरी सेबन, कचरी तली फली रुचिकारी ।
अदरख सोंठ सेव नमकीनी, पोदीना चटनी चटकारी ।।
भोजन कर यमुना जल अँचयो, बीरी दई सँवारी ।
सरसमाधुरी जुगल चंद की, जूँठन की अधिकारी ।।

इति खिचडी भोग उत्सव संपूर्णम् ।

अथ श्री सरस निकुञ्ज विलास

—: दोहावली :—

❀ श्री मन्निकुञ्जबिहारिणे नमः ❀

श्री सरसनिकुँज विलास

श्री शुकमुनिराज श्याम चरणदासाचार्य्य महाराज के सखी स्वरूप प्राकट्य के वर्णन में ।

छप्पै ।

करि विपरीत शृंगार धाम में युगल बिराजे ।
श्यामाप्यारे बनी श्याम हो गौर सुराजे ।।
वेसर मोती मध्य परयो प्रतिबिम्ब बामको ।
प्रगट भई शुकसखी रूप सोइ जान श्यामको ।।
अष्ट अलिन नैंनन निरखि धरे अष्ट प्रिय नाम ।
सरसमाधुरी अंगजा यूथेश्वरी ललाम ।।
प्रेममंजरी प्रिया पीय निज निकट बुलाई ।
आज्ञा दी शुक सखी संग रहकर सिवकाई ।।
दम्पति शिक्षा मान जोर कर शीश नवाई ।
गइ शुकसखी पास लई ता हृदय लगाई ।।
चरणदासि कहि नाम मुख, सखि पद दै हरषाय ।
सरसमाधुरी पद्मपद, सेवत प्रीति लगाय ।।

॥ कवित्त ॥

परम धाम मांहि भई महा धूमधाम करी,
जन्म की बधाई शुक सखी हरषाय के।
कुँज कुँज द्वार धरे स्वस्तिक सँवार गज,
मोतिनके चौक चारु पूरे मन लायके॥
ध्वज पताक तोरन अरु धूप दीप बहु सँजोय,
हरी भरी वंदनमाल बांधी हुलसाय के।
जय जय कहि नांची रंगराची सहचरि अनेक,
सरस सुर मृदङ्ग बीन वाद्य बहु बजायके॥

छप्पै।

सोइ शुकसखी सुनाम श्याम श्यामा की प्यारी।
यूथेश्वरि रस रूप स्वामिनी खास हमारी॥
वेदब्यास घर प्रगट होय मुनि रूप सु धारो।
श्रीभागवत सुनाय परीक्षित राजहिं तारो॥
चरणदास निज शिष्य कर दिये आचार्य बनाय।
सम्प्रदाय शुक सर्वपर सरस दई प्रगटाय॥

॥ दोहा ॥

श्यामचरण दासी बिदित, सम्प्रदाय शुक सन्त ।
दासी छाप प्रसिद्ध जग, सरस समझि बुधवन्त ॥

॥ छप्पै ॥

जैति जैति शुकसखी चरणदासी सुखदानी ।
जोरी गोरी श्याम नैंन निज कुँज बसानी ॥
दुलरावत दिन रैन रसिक दम्पति मनबानी ।
छटा छबीली लली लाल हिय माँहि समानी ॥
प्यारी प्रीतम अंगजा, कृपा रूप रसखान ।
सरसमाधुरी यूथपति, वारत तुम पर प्रान ॥

॥ कुण्डलियां ॥

प्रेममंजरी बपुधरयो, नाम श्यामचरणदास ।
भार्गव कुल में प्रगट हो, करी सुभक्ति प्रकास ॥
करी सुभक्ति प्रकाश बहुरि वृन्दावन आये ।
सेवाकुंज सुखपुँज, प्रिया पिय दर्शन पाये ॥
इन्द्रप्रस्थ मंदिर सुरचि, कीनों तहां निवास ।
प्रेम मंजरी बपुधरयो, नाम श्यामचरणदास ॥

सम्प्रदाय शुकदेवमुनि, प्रगट सकल संसार।
नित्य किशोर उपासना, युगलबिहार अहार ।।
युगलबिहार अहार, केलि उज्ज्वल अति प्यारी।
रसना सों नित नाम, जपत श्रीकुंजबिहारी ।।
दृढअनन्य संबंध मिले बिन होत न कारज।
सरस श्यामचरणदास, प्रगट भये रसिकाचारज ।।

।। इति शुभम् ।।

।।प्रार्थना।।

।। दोहा ।।

'जय जय जय श्री शुकसखी सुखदा हित की रूप।
आल्हादिनि कलबैनिका, आनन्दाजु अनूप ।।
रसपुञ्जा रसरूपिणि, प्रेम प्रभा अभिराम।
अष्टम प्रमुदा नाम सुख, तिनको कोटि प्रणाम ।।
श्यामचरणदासी सुजय, गन्धर्वा गुणग्राम।
प्रमोदनी चूडामणि, मधुरस्वरा बरबाम ।।
सहजानन्दिनि स्वामिनी, गुणप्रकाशिका नाम।
जुक्तानन्दिनि प्रमुदमङ्गला, जन मन पूरन काम।
सोलह नामन को कोई, जपे सहित अनुराग ।।
सरसमाधुरी महल सुख, अविचल लहै सुहाग ।।
आचारज भूतल प्रगट, श्रीशुकमुनि चरणदास।
कुञ्जमहल में सखि वपु, निरखत रास बिलास ।।

अष्टयाम सेवा करत, षट ऋतु बारह मास ।
मगन रहत लखि छबि युगल, दम्पति खास खवास ।।
मिले टहल रङ्गमहलकी, निश्चय दृढ़ विश्वास ।
सरसमाधुरीशरण के, ये दोउ इष्ट उपास ।।

श्लोक

व्यासपुत्रपदाम्भोजं श्रीसखीयूथमध्यगम् ।
नमामि दण्डवद्द्वन्द्वं प्रेमपंथप्रवर्तकम् ।।

।। दोहा ।।

जय जय श्रीशुकदेवमुनि, रसिक न तिन समतूल ।
जासु नाम जप होत है, पियप्यारी अनुकूल ।।
जयति जयति जय कृपानिधि, पदपंकज सुखमूल ।
नाम श्याम चरणदास शुभ, जपत मिटत भवशूल ।।
श्रीमुनिवर शुकदेव भजि, चरणदास कर ध्यान ।
सरसबिहारी मिलन को, और उपाय न आन ।।
जो वृन्दावन महल की, टहलसु चाहत चित्त ।
तो तू नित मुख जाप जप, शुकसखि चरणसु मित्त ।।
सुलभ होय सब सहज में, सुमिर शुकसखी नाम ।
श्यामचरणदासी रटो, जो चाहो निज धाम ।।

अति उदार शुक चरण अलि, यह निश्चय मनमान।
आश्रितजन को करत है, सरसमाधुरी दान॥
नमो नमो शुकचरणसखि, श्याम गौर बिविरूप।
यूथेश्वरि रसरूपिणि, सुन्दर अधिक अनूप॥
श्रीसुख सहचरि गाइये चरणदासि उर धार।
सरसमाधुरी समझ मन, सकल शास्त्रको सार।
कोटि कोटि संकट कटें, मिटें कर्म के दाग।
एक बेर शुक चरण अलि, कहें सहित अनुराग॥
श्यामचरण के दास प्रभु, कलिमल नाशन हार॥
जो जो जन आये शरण, पायो नित्य विहार॥
श्रीवृन्दावन महल में, नित नव रास विलास।
नित विहार विलसैं युगल, चरणदासि को वास॥
कोटि यतन कर चातुरी, कठिन मिलन निज धाम॥
दुल्लभ सुल्लभ होत है, जपै शुकसखी नाम॥
मानस वाचक कर्म कर, शुकसखी करहु प्रणाम।
सुल्लभ पैये हे सखी, श्रीमत श्यामा श्याम॥
बिना कृपा श्री शुकसखी, चरणदासि सुन तात।
सुने गुने समझे नहीं, सरसमाधुरी बात॥
श्रीशुकसहचरि शरण बिन, चरणदासि उरध्याय।
कुँजभवन पहुँचे नहीं, कोटिन करे उपाय॥
नेमा प्रेमा से परे, पराभक्ति को पंथ।
श्री शुकमुनि वर्णन कियो, सरस भागवत ग्रन्थ।।

प्रथम आश्रय शुकसखी, चरणदासि गहि लेव।
तव सहचरि वपु पायकर, दम्पति सम्पति सेव॥
लीला नित्य विहारको, ब्रह्मादिक ललचात।
सुर मुनि जनकी हे सखी, कौन चलावे बात॥
सो पावत ततकाल जन शुकसखी रटें सुभाय।
चरणदासि चिन्तन किये महल मौज मिलजाय॥
जीवन मुक्तन को जहां है नाहीं अधिकार।
श्रीशुकसखि चरणदासि तहां, निरखत नित्य बिहार॥
रङ्गमहल में रास नित, निज वृन्दावन धाम।
चरणदासि जह वसीला, निकट राधिकास्याम॥
चरणदासि चितमें बसै, चरणदासि मुख बैन।
चरणदासि तज युगभजे, लहत न कबहूं चैन॥
चरणदासि मुखसों कहै, चरणदासि निज होय।
चरणदासि नाहीं भजे, गये जन्मको खोय॥
श्रीशुकसखी सप्रीति भज, चरणदासि चितलाय।
जुगल नाम जप प्रेमसों, जुगल मिलें हरषाय॥
जय जय जय श्रीशुकसखी, चरणदासि लो लाय।
जुगल मिलन साधन यही, नाहिन आन उपाय॥
धर्म घटो पातक बढ़ो, भई भक्ति की हांन।
प्रगट होय शुक चरण प्रभु, तारो सकल जहाँन॥

चरणदासि गुरुमंत्र को, जपै प्रीत लौलाय।
अमरलोक निज धाम में, निश्चय पहुँचे जाय ।।
चरणदास शुकदेवमुनि, रटे रसिक जो कोइ।
रस रहस्य पावे सही, दंपति वल्लभ होइ ।।
श्यामचरणदासी कहो, मुखसों बारम्बार।
जो यह जप निशि दिन जपे, कृपा करें सरकार ।।
शुकजप लहै निकुँजसुख, जग दुख मूल नसाय।
परिकर में पहुँचे सहज, दम्पति लैं अपनाय ।।
श्यामचरणदासी सुमिर, निज दासी ह्वै जाय।
युगल चरण सेवा मिले, सुख में रहै समाय ।।
जो सुख चहत निकुँज मन , शुकसखि नित मुखबोल।
लूटि सके तो लूटि मन, पूंजी रत्न अमोल ।।
चरण शरण पहुँचो चहै, चरणदासि जप जीव।
या सम साधन और नहिं, रीझि मिलें हरि पीव ।।
जयति जयति श्रीशुकसखी, चरणदासि जप जाप।
सरसबिहारीराधिका, मिलैं दयाकर आप ।।
चरणदासि कहो शुकसखी, अथवा शुक चरणदास।
ओत पोत अन्तर नहीं, अद्भुत प्रेम बिलास ।।
शुक सूचन सुख युगल को, चरन चरन में वास।
श्रीसुख चरन सहेत जप, जो चाहत सुखरास ।।

सुखसी सम्पति शुकसखी, दम्पति जीवन प्रान ।
चरणदासि प्रियबल्लभा, सरसमाधुरी नाम ।।
प्रथम जपूं श्री शुकसखी, पुनि सुमरों चरणदासि ।
सरसमाधुरी के उभय, श्रीगुरु इष्ट उपासि ।।
गौर तेज चरणदासि सखि, श्याम तेज शुकदेव ।
आचारज ह्वै अवतरे, बिरले जानत भेव ।।
कुञ्जमहल में सखिबपु, बिलसत युगल विलास ।
दम्पति सेवा में मगन, नित निरखत रसरास ।।
एक ओर श्रीशुकसखी, दूजे दिशि चरणदासि ।
बीच बिहारीलालजू, निरतत उमंग हुलास ।।
चलत कुँजमें लाडिली, गति गयन्द की चाल ।
गलबैयां दे शुकसखी, बोलत वचन रसाल ।।
चरणदासि सखि अँस भुज, धरें बिहारीलाल ।
प्रेमपगे पुलकत हँसत, करत रंगीले ख्याल ।।
पियप्यारी की अंगजा, श्रीशुकसखी पिछान ।
गुप्त प्रगट लीला ललित इनसङ्ग करें सुजान ।।
दम्पति बिलसें सेजसुख, सो शुकसखी सरूप ।
शुक बिन छिन सुख नहिं लहैं, युगल मनोहर भूप ।।
स्वसुख तत्सुख कुँजसुख, व्रजसुख बिबिधि बिहार ।
सब में व्यापक शुक सखी, लखें रसिक रिझवार ।।

कृपा करें जब शुकसखी, मिले सकल सुख जाहि।
युगलविहारी प्यारकर, पल छिन तजे न ताहि॥
जपो चरनदासी सखी, जो प्यासी दीदार।
मिले सुलभ ताको तुरत, दम्पति प्राण अधार॥
मैं तो सुमरों शुकसखी, भूल भजो नहिं और।
जिनकी किरपा पाइये, जोरी श्यामल गौर॥
चरणदासि के चरण में, करों अभिमत परनाम।
जिनकी कृपा कटाक्ष सों, निरखे श्यामा श्याम॥
जो तू चहै निकुँज की, सेवा सब सुखमूल।
तो तू जप शुकचरण अलि, पल छिन ध्यान न भूल॥
सुखसों बीतें दिवस निशि, जप शुकसखी नाम।
चरणदासि आली भजे, मिले कुँज विश्राम॥
निज वृन्दावन महल में, श्रीशुकसखी निवास।
श्यामचरणदासी अली, दम्पति खास खबास॥
ललित बिशाखा आदि अलि, अमित सहचरी पुँज।
वसत तहां शुकचरणसखि, अपनी नवल निकुंज॥
ललितादिक की लाडिली, श्री शुकसखी सुजान।
श्यामबरन प्रीतमसदृस, लखि वारें सब प्रान॥
छद्मरूप प्रीतम निरखि, करें सकल सन्मान।
नैनन निरखैं शुकसखो, सकल सुखन की खान॥

प्यार करें प्यारी परम, लखि प्रीतम उनहार ।
तजै न पल छिन शुकसखी विलसैं नित्य बिहार ।।
चरनदासि के संग मिल, सहचरि यूथ अपार ।
चरचा करें बिहार रस, तनमन डारें वार ।।
सीखें सेवा सहचरी चरण पलोटन रीति ।
हरष बतावत सबनको, चरनदासि सहप्रीति ।।
जपे नाम जो शुकसखी, दासी चरण उमंग ।
जुगल बिहारी लाडिले, तजें न तिनको संग ।।
श्याम रंग श्रीशुकसखी, गौर चरण अलि अंग ।
जुगल मनों सखि रूपधरि, रहत सदा इक संग ।।
श्यामां कहों कि शुकसखी, प्रीतम छबि अनूप ।
अद्भुत छबि कहत न बनें, यूथेश्वरि को रूप ।।
रसआचारज चरणअलि, प्रेंम मंजरीजांन ।
श्रीशुक सखी प्रतापतें, सखिपद लह्यो सुजान ।।
सरसमाधुरी जपसदा, जुगल सखिन के नाम ।
चरणदासि अरु शुकसखी, अतिसुन्दर अभिराम ।।
जै श्रीयूथाधिप अली, लली प्रांण आधार ।
नाम सलोनी शुकसखी, सुन्दर तन सुकुमार ।।
जै शुकसखि अभिरामिनी, रूप शील गुणधाम ।
प्रगटन कुंज बिहार रस, धारयो रूप ललाम ।।

रस बिस्तारो प्रेमको, बृन्दाविपिन विहार।
चरणदासि को कृपाकर, दियो सुलखि अधिकार॥
रहत अंग सँग जुगल के, निरखत चरित रसाल।
बिलसत बिबिधिबिलासबर, नबललाडिली लाल॥
श्री राधा निज धनधनी, बना बनीं सुखरास।
संचै सम्पति प्रेमरस युगपरियंक बिलास॥
बदन बिलोकत युगल को, पलछिन आठों याम।
जै जै जै श्रीशुकसखी, श्रीदम्पति सुख धाम॥
कुँवरि लडैती संग नित, कुँजन करत कलोल।
चरनदासि लै साथ निज, बोलत अमृत बोल॥
बीन बजाय रिझायकर, राधे प्राणअधार।
गावत गुण नित प्रिया के, पलपल बारम्बार॥
सुमन सुगंधित बीनके, गूंथत चौसर हार।
पहिरावत प्यारी गरे, जैशुकसखि सुकुमार॥
अतर लगावत अलक में, ललित लडैती गात।
सुकर करत सेवा प्रिया, हँसि बोलत रस बात॥
जावक चरन लगात नित, प्रिया प्रेम सरसात।
रंगमहावर रचत है, चरणसखी बलिजात॥
चुनि पहिरावत वस्त्रबर, प्रियाअंग अभिराम।
भूषण सजत सुहावनें, जगमग जटित ललाम॥

करि श्रृंगार लै आरसी, सन्मुख श्यामा श्याम।
खंडित बीरी प्रसादी, पावत रीझि इनाम॥
रुचि लखि राधेकुंवरि की, प्रीतम को कर प्यार।
बिलसावत परियंक बिब, जैशुकसखी उदार॥
प्यावत मादिक प्रेमसों, बर्धन कों रतिरंग।
छकें छैल कलकेल में, लाजैं रती अनंग॥
नैनन की रक्षाकरैं, ज्यों पलकें इकसार।
त्योंही शुकसखि जुगलकी, पलपल करत संभार॥
अँखियाँ अटकी दरश में रूप सिंधुकी मीन।
जीवतहैं लखिजुगल को, धनि शुकसखी प्रवीन॥
वृजलीला में होतहै, प्रगट बृहद रसमांन।
तब प्यारी शुक सखी सों, संतोषत निजप्रान॥
मान होत जब लालसों, पिय बिन रह्यो न जाय।
जान सदृशता रूप पिय शुक सखि कंठ लगाय॥
जब लग मुचे न मान रस तब लग शुक अलि साथ।
आलिंगन अंगन अंगकर, भेंटत भुजगहि बाथ॥
शुखसखि जीवनधन प्रिया, प्यारी जीवन श्याम।
चरणदासि लखि प्रेम यह, मगन रहत निशि जाम॥
कबहूं गरबैंयां दियें, ललित लडेती संग।
घनदामिनि ज्यों जगमगत, श्रीशुकसखी उमंग॥

श्यामचरनदासी सखी, करत सरस सन्मान।
दरसें सरसें दृगन लखि, बिहरत कुँज लतान।।
फूलन गैंद बनायके फेंकत शुकअलि ओर।
पुष्प बाटिका बीचमें, क्रीड़त युगल किशोर।।
ऋतु बसन्त सन्तत सदा, श्री वृन्दावन बाग।
श्रीशुकसहचरि चरणअलि, बिलसत रस बड़भाग।।
फागुन में अनुराग भर, खेलत होरी खेल।
प्यारी प्रीतम रंगरस शुकसखि लेत सकेल।।
ग्रीषम खसखस बंगला, फूलमंडली जान।
फूल फूल निरखत युगल, शुकसखि परमसुजान।।
छूटतहैं जलयंत्र बहु, जल बिहार के हेत।
लूटत सुख शुक चरण अलि, हिलमिल कुंजनिकेत।।
सावन मन भावन विषै, झुलवें जुगल हिंडोल।
घनदामिनि ज्यों शुकसखी निरखि बिके बिनमोल।।
शरदरैन सुखदैंन मैं, शुकसखि निरखत रास।
श्याम चरणदासी अली, बिलसत प्रेंम बिलास।।
नित नवकेलि निकुंज सुख लिख्योशुकसखी भाल।
चरणदासि आश्रित अली, सो पावत तत्काल।।
आँख मिचौनी आदि ले, अमित केलि रसरंग।
हँसिहँसि खेलत लाडिली शुकसहचरि के संग।।

नचत कुंज में शुकसखी, गति भर भाव निशंक।
रीझि रीझि श्रीराधिका, लेत भुजनभरि अङ्क॥
बैंनी गूंथत कुंजमें, श्यामां की शुकमान।
छिपछिप देखत चन्दमुख, मोहन चतुर सुजान॥
दुलरावत दिन लाडिली, नितनव प्रेम प्रभाव।
सदा मगन श्रीशुकसखी, सेव करन को चाव॥
नमो नमो श्रीशुकसखी, प्रेमसरूपा बाम।
बसत निरंतर हियेमें, श्रीमत श्यामां श्याम॥
टरत नहीं छिन संगतें, जुगल लाडिलीलाल।
वचन रचन रसकी करें, सुनि सुनि होंहि निहाल॥
हुलसि मिलें हिय लपटिके, सुनि सुख सजनी बैन।
पुलिक पगें बिबि प्रेम में, मांनत हैं सुखचैन॥
जेंवत जुगल जिमाय के, पीवत जुगल पिवाय।
अधरामृत आस्वादिनी, श्रीसुखसखी सुभाय॥
घूमत झूमत झुकि चलत, प्यारी प्रीतम संग।
मतवारी बिव रूप में, अतिशय भरी उमंग॥
श्री शुकसखि को राधिका, भुजभर भेटत गात।
पुलकत प्रेम उमंगसों, हँसिकर कण्ठ लगात॥
यह सुख निरखत नैन नित, दासी चरण उमंग।
चरण पलोटत प्रीति सों, हिये भरत रसरंग॥
नैनन में प्यारी बसे, सैंनन रही समाय॥
ऐसी हैं श्री शुक सखी, सुनहु रसिक चितलाय॥

प्यारी प्यारी रटत नित, मुखसों बारम्बार।
सुनत श्रवन प्यारी सुयश, राधे प्राण अधार॥
राधे गुण गावत सदा, देह दशा बिसराय।
प्रानन में प्यारी बसे, और न कछू सुहाय॥
अंगन में प्यारी बसे, प्यारी सों रति रंग।
प्यारो ही की उठत हिय, नितनव नेह तरंग॥
प्यारी जीवन शुकसखी, शुकअलि राधे प्रांन।
जलतरंग ज्यों दो नहीं, एकहि रूप पिछान॥
रोम रोम राधे रमी, राधे हियको हार।
धर्म पूज्य अरु इष्ट इक, श्री राधे सुखसार॥
राधे साधन सिद्धिफल, राधे सर्व सुजान।
जो कुछ है सो राधिके, श्री शुक प्रेम प्रधान॥
प्रेमचन्द्रिका शुकसखी, पूरण कला प्रकाश।
रसिक चकोरन के हिये, निरखत होत हुलास॥
युगलचन्द्र मुख चन्द्रिका, नैनन झलके आय।
जैति जैति जै शुक सखी, जपे नाम लौलाय॥
जो गावें श्रीशुकसखी, सो पावें रसरीति।
छिन छिन छलके छवि छटा, अरु उपजै दृढ़ प्रीति॥
नेति नेति निगमन कह्यो, जो रस प्रगट पुकार।
शरणगहैं श्री शुकसखी, पावत लगे न बार॥
कुंजन केलि प्रकाशिनी, नवल नेह अनुराग।
रंगमहल में बासिनी, अविचल लह्यो सुहाग॥

पिय प्यारी अंकन भरत, करत प्रेम अरु प्यार।
शुकसखि लखि सुखसों करत, नितनव कुंज बिहार॥
श्री शुक सुखद सरूपिनी, दीनन की प्रतिपाल।
चरणदासिआश्रित आली, तिनको करत निहाल॥
परमप्रेम गुणरूप निधि, रसनिधि दयानिधान।
चूडामणि सब सखिन की, पियप्यारी की प्रान॥
शुकअलि मेरी स्वामिनी, प्यारी जीवन प्रान।
सरसमाधुरी शरण को, करो प्रेम रस दान॥
वहुत दिवस रस प्रेम के, योंहीं गये बिताय।
कृपा करो श्री शुक सखी, परों तिहारे पाय॥
हा हा श्रीशुकस्वामिनी, सुनिये मेरी टेर।
नवनिकुँज के बास की, क्यों कर राखी देर॥
रस आचारज चरनअलि, अबजिनि करहु अवेर।
सरसमाधुरी शरण दिस, नेंक कृपाकर हेर॥
कोनसुनें कासोंकहों, अपने मन की पीर।
व्याकुल दम्पति दरस बिन, धरत नहीं मन धीर॥
करो भावना सिद्धि अब, सेव मानसी रीति।
दम्पति कुंजविहार में, निश्चल होवे प्रीति॥
सेवा सरसनिकुँज की दीजे लै निज संग।
सरसमाधुरी शरण के, निशदिन हिये उमंग॥
श्रीबलदेवी सखी की, कर करुणानिधि कांन।
सरसमाधुरी शरण को, निजकर लीजे जांन॥

विरद भरोसे रावरे, और न कोई आस।
निश्चय मोकों देहुगी, निज चरणन में बास॥
सहस्र कानदे सुनहुगी, बिनती बारम्बार।
स्वामिनि मेरी शुकसखी, लीजे मोहि उबार॥
सरसमाधुरी तुम कृपा, जाचत गोद पसार।
श्रीशुकचरण सु सहचरी, चरणन को आधार॥
कृपादृष्टि शुकचरण सखि, उमग्यो हिये हुलास।
उदय भयो अनुभव विषे, सरसनिकुँज बिलास॥
सरसनिकुँज विलास को, पाठ करें मनलाय।
कुँजविहारिनि राधिका, ताहि लेहि अपनाय॥
पाठ किये तें पाइये, दम्पति महल निकुँज।
हिल मिल सेवें युगल को, जहँ सखियन के पुंज॥
प्रेम प्रीति रस रीति सों, जो जन पढै त्रिकाल।
अवलोकें लीला ललित, युगल बिहारीलाल॥
मिले टहल रंगमहल की, सखी स्वरूप रसाल।
श्रीशुकसखि चरणदासि अलि, सदा करें प्रतिपाल॥
नित विलास रसरास जहँ, नित नव परमानन्द।
सरसमाधुरी छबि छटा, नित निरखें युगचन्द॥
शुक स्वामिनि चरणदासि को सरस निकुँज विलास।
पढें सुनें जो प्रेम सों, पहुँचें दंपति पास॥

इति सरसनिकुञ्जबिलास संपूर्णम्

अष्टयाम सेवा भावना विलास

-: दोहावली व पदावली :-

अष्टयाम सेवा भावना विलास

॥ दोहावली ॥

श्रीमती निकुंजेश्वरी व कुँजनृपति
राधासरसविहारिणे नमः ।
श्रीशुकसहचरीयूथेश्वरी व श्रीश्यामचरण-
दासीरसाचार्य्यचरणकमलेभ्यो नमः ।
श्रीगुरू अलिबलदेवीजूपादपद्मोभ्योनमः ।
श्री ललितादि अष्टअलिषादाम्बुज नमो नमः ।

अथ श्रीराधासरसविहारीलालशरणागत
प्रतिपालजूकी अष्टयाम सेवाभावना
विलास लिख्यते ॥

॥दोहा॥

प्रातहि उठि पहिले करे, शुक अलि चरण प्रणाम ।
चरणदासि पदबंदि पुनि, बलदेवी गुणधाम ॥१॥
सहचरिरूप सु आपनों, श्रीगुरू दियो बताय ।
ताको अनुसंधान करि, श्रीवृन्दावन ध्याय ॥२॥
रंगमहल वृन्दाविपिन, तामें करे प्रवेश ।
सरसमाधुरी छवि छटा, मगन रूप आवेश ॥३॥

श्रम जल जो युग अंगको, सो यमुना रसरूप ।
कंकनकृत श्रीविपिन के, चहुँदिशि बहत अनूप ।।४।।
ऐसे वृन्दाबिपिन में, रंग महल रसखान ।
कल्पवृक्ष बहुरंग के, छाये लता बितान ।।५।।
रत्नजटित अवनी खचित, मंदिर लता अनेक ।
मणिमय नाना रंग के, अधिक एक तें एक ।।६।।
नाना रंग मणीन के, बिरचित तरु अरु फूल ।
तिनमें माणिक लाल के, बहुबिधि फल रहे झूल ।।७।।
तिन ऊपर तैसे सुभग, रत्नरचित खग पांति ।
सूवा सारिका आदि ले, मधुपगूँज बहु भांति ।।८।।
श्रीशुकसहचरिचरणअलि, श्री ललितादि सहेलि ।
सेवत दम्पति सकल मिल, प्रीति सहित मन मेली ।।९।।
रसमय सूरज चंद्रमा, तिनको तहां प्रकाश ।
प्रिया मुखाम्बुज छटातें प्रगटे आनँद रास ।।१०।।
सैन कुंज में सेज जो रेशम बुनि विचार ।
पाये पटिया जगमगे, हीरा रचित सुढार ।।११।।
कोमल दुग्ध सुफेन सम, गद्दा तकिया सोंज ।
बिछे छबीली भांतिसों, लज्जित देख मनोज ।।१२।।
लघुमंडप इक सेजपर, तन्यों अनूटी भांति ।
डांडी रत्न जराव की, झालर मुक्ता पांति ।।१३।।
जालिन द्वारा तरुन के, फूलन की मकरन्द ।
पवन परसि आवत रहे, दम्पति देत अनंद ।।१४।।

जल गुलाब के जन्त्र बहु, छुटत बिबिधि सुख कंद ।
मानों श्रीवन वनिके, आनँद अश्रु सुछंद ।।
सोये सैया रस भरे, श्रीमत श्यामा श्याम ।
धन दामिनि ज्यों जगमगे, अंग अंग अभिराम ।।
चंपक बेलि तमाल पै, उरझि रहत जिहि ढंग ।
योंहो दंपति हिलमिले, सोय रहै इक संग ।।
जान सुअवसर शुक सखी, बीना वाद्य बजाय ।
झीनें सुरन सुरागभर, दीन्हें युगल जगाय ।।
लट कुंडल सों उरझि रही, अरु हारनतें हार ।
भूषण अंगन में शिथिल, श्रीदंपति सुकुमार ।।
चिबुक परस्पर परसि दोउ, नैना रहे मिलाय ।
गलबँयां दीनें युगल, रहे अंग लपटाय ।।
दंपति लंपट लालची, पीवत रस अधरान ।
छके प्रेम प्रीतम प्रिया, पोषत अपनेप्रान ।।
प्रीतम के अधरान पर, अंजन लीक लसंत ।
प्यारी कलित कपोल पै, पीक लीक दरसंत ।।
हरित मणिन के पात्र में, मधुर भोग अलि लाय ।
चरणदासि निजकरकमल, दंपति दियो पवाय ।।
जमुनोदक अचवाय के, बीरी दई बनाय ।
सरस माधुरी रूप लखि, दोउ कर लई बलाय ।।
निज निज दीठिन डर सखी, करी आरती वार ।
जगमग जोति प्रकाश में, युगवर रही निहार ।।

दर्पण में मुख आपनो, दंपति रहे निहार।
छबि लखि रीझे परस्पर, देत अपनपौ बार ।।

इति श्रीमंगलाभावनाविलास संपूर्णम् ।।

अथ वनशोभा निहारन भावना वर्णयते ।।

।। दोहा ।।

उठे सेज तें युगल वर, दे गलबैयां लाल।
श्रीवन शोभा देखने चले हंस गति चाल ।।
चलत स्वल्प गति सहज में, छैल छबीले संग।
प्रगटत नाना नृत्यगति, छलकतछबि अंग अंग ।।
लता कुंज बृंदा बिपिन बिहरैं बिबि सुकुमार।
श्रीमुख की मकरंद लहि, मधुप रहे गुँजार ।।
ले रुमाल नव नागरी, निकट जुगल सरकार।
भ्रमर निवारत चलत हैं, बोलत मुख बलिहार ।।
ले अलि बीन प्रबीन अति, सारंगी मिरदंग।
गावत पद वरषांत सुख, हिये भरे रस रंग ।।
गहि लहि ललित लतान को युगल लाल रसकंद।
पत्रनमें प्रतिबिब लखि, मानत अधिक अनंद ।।
सूंघन सुमन गुलाब के, युगल रसिक रिझवार।
मुदित होत मन में महा, आहा मुख उच्चार ।।

शोभा श्री युगअंग की, सहचरि रही निहार।
सरसमाधुरी छबि छकी, संग युगल सरकार ।।

।। इति श्रीवनशोभानिहारनभावनाविलास सम्पूर्णम् ।।

अथ स्नानकुंज की भावना लिख्यते ॥

।। दोहा ।।

पुनि दम्पति असनान हित, गवनें नवल निकुंज ।
जमुनाजू की नहर तहँ आई जल की मंजु ।।
हौद सुगंधित जल भरे, छूटत बहूजल जंत्र ।
मणि चोकी व्राजे जुगल, सखियन के परतंत्र ।।
निशि के श्रम गत करन हित, अतर रमावत अंग ।
कुमकुम उबट न्हवाय के अतिशय भरी उमंग ।।
भीजी सारी धोवती झलकत शोभा गात ।
छलकतछविप्रति अंगकी, निरखिसखीबलि जात ।।
लै रुमाल कोमल अली, पोछत अँग अभिराम ।
अतरो अरु धोवती, पहरे श्यामा श्याम ।।
छबिनिधि गुणनिधि रूपनिधि, शोभानिधियुगचंद ।
सरसमाधुरी अंग तें, स्रवत सुधा आनंद ।।

।। इति स्नानकुञ्ज की भावनाविलास सम्पूर्णम् ।।

अथ श्रृंगार कुंज की भावना लिख्यते

॥ दोहा ॥

कुँज सरस श्रृंगार में, दम्पति को पधराय।
दाडिम दाख सुआदि ले दीन्हें युगल पवाय॥
यमुना जल अचवायके, बीरी दी हरषाय।
करन लगी श्रृंगार सखि, मन में मोद बढ़ाय॥
प्यारी की बेनी गुही, सुँदर सरस सँवार।
जूरो बांध्यो लाल को नीकी भांति सुधार॥
प्रिय पहिराई कुँचुकी, सारी सरस उढाय।
अतरोटा अद्भुत सज्यो ता छबि कही न जाय॥
प्रीतम नीमा पीतरंग, पगिया शीस धराय।
मुकट चंद्रिका जुगल के, मस्तक दई सजाय॥
नील मणी भूषण प्रिया, पीत मणी प्रिय अंग।
पहराये अँग अंग में, अलियम हिये उमंग॥
मृग मद बेंदी आड़ शुचि, रची प्रिया के भाल।
केशर का पियके तिलक, मस्तक कियो रसाल॥
नथ बुलाक नासा सजी, कुण्डल करण सुफूल।
श्याम पीत चिबु बिंदनी रची सरस अनुकूल॥
अलकन अतर रभाय पुनि; अंजन नैन लगाय।
दियो दिठौना भाल बिव, सुन्दर असित बनाय॥
मुक्त हीर हारावली, पुष्पन की रचि माल।
पहराई बिब चन्द को, सरसमाधुरी बाल॥

कटि किंकिनि पग घूंघरू, अनवट बिछिया साज।
पायजेब पायन रची, छुम छुम छुम छुम बाज॥
चरनदासि सखि चरन में, दियो महावर रंग।
मनु हिय को अनुराग शुचि, पद अंबुजके संग॥
लै आइ श्रीशुकसखी, सामा भोग शृंगार।
नाना बिधि पकवान धर, सरस स्वादु भरथार॥
प्रीतम परमासक्तह्वै, प्रिय को विविध निहोर।
सुकर पवावत प्रेमसों, अरस परस दै कौर॥
जल सुगंध शीतल मधुर, श्रीगुरुअलि अचवाय।
सरसमाधुरी रचि सरस, बीरी दई बनाय॥
सिंहासन पधराइ बिब, करी आरती वार।
डीठ डरन सहचरि सुघर, जै जै कहि बलिहार॥
प्रथमहिं सखियन जुगल को, नृत्य दिखायो आप।
साज बाज लै ताल मिल, गायो सरस अलाप॥
श्रीराधे तब रीझिके, बीन लई करधार।
प्रीतम ने मुरली लई, बजवत बारंबार॥
जम्यो रंग रसबस भये, सरस्यो प्रेम अपार।
लपट मिले लंपट दोउ, गल में बैयांडार॥
पुनि चौपर के खेल में, हिलन मिलन को दाव।
होडा होडी झगर हँसि, जान हिये को भाव॥
लाड लडावें जुगल को, सखियाँ विविध प्रकार।
निरखि निरखि छबि माधुरी, तन मन डारें वार॥

कछु सामग्री यथारुचि, दंपति देहिं पवाय।
पुनि कराय शुचि आचमन, बीरी देहिं बनाय॥
इहिं बिधि कुंज शृंगार में, कर भोजन शृंगार।
दरपन में लखि छबि जुगल किया सरस बहुप्यार॥

॥ इति शृंगारकुंजकी भावना समाप्त॥

अथ राजभोग कुँजभावना वर्णयते

॥दोहा॥

पुनि उठि दोऊ रसिक वर, प्यारी पीय सुजान।
राज भोगकी कुँज को, गवने कृपानिधान॥
श्रीवन तरुन लतान तर, झूमत घूमत लाल।
चलत चतुर अंकन भरत, करत रँगीले ख्याल॥
पहुँचे भोजन कुँज में, सखियन जीवन प्रान।
गादी पै ब्राजे जुगल, प्रीत सहित सुख मान॥
भूषन अंग विशेष जो, सखियन धरे उतार।
मुँदरी छल्ला आरसी, यथायोग्य जिहिं बार॥
सन्मुख चौकी पर धरयो, राज भोग को थार।
सखरी अनसखरी सरस सामां बिबिध प्रकार॥
यमुनोदक सीतल सरस, ढिग भर धरयो गिलास।
बिनय करी कर जोर सखि, जैंवो बलि सुखरास॥
पावन लागे लाड़ले, रुचि सो रसिक सुजान।
बोलि बोलि दें सखिन कों, सीत प्रसादी दान॥

हँसि हँसि पावत प्रिया प्रिय, देत लेत मुखग्रास ।
स्वाद सराहत सुघर दोउ, मंद मंद कर हास ।।
अचवन कर बीरी लई, दई सरस सुख मान ।
फूलन के शृंगार कछु, कीन्हें समय पिछान ।।
सिंहासन बैठाय कर, करी आरती नार ।
डीठ डरन मन हरन को, अंग अंग पर वार ।।
वारि वारि दोऊन पर, पानी अलि सुकुमार ।
पीवत प्रमुदित प्यार सों, अपनों भाग विचार ।।
सेज बिराजे जाय पुनि, श्रीमत श्यामा श्याम ।
उदय भयो दोऊन हिय, परम प्रेम अभिराम ।।
होन लग्यो तब परस्पर, अद्भुत युगल विहार ।
कहन सुननकी गम नहीं, समझ सैन सुखसार ।।
चरणदासि श्रीशुक सखी, दंपति प्रिया पिछान ।
सेवा करें निकुँज मधि युगल भाव जिय जान ।।
रंध्रन ह्वै निरखैं सखी, धन्य जिन्होके भाग ।
सेवा कर सुख महल को, लूटें सह अनुराग ।।
भेष बदल विपरीत रति, रमत रसीली भांत ।
चोज मनोजन रंग रंगे, फूले अंग न मांत ।।
उरझ्योही जाने जुगल, सुरझन समुझें नांहि ।
कोन अटपटी प्रेम की, दंपति अंगन मांहि ।।
प्रेम छकनि छाई दृगन, पौढ़े बिबि परियंक ।
प्यारी पिय भुज में लसें, ज्यों घन अंक मयंक ।।

अधरन सों अधरन मिला, सोये बिबि सुख पाय ।
स्वांस पवन लग कपोलन, अलकैं रहीं डुलाय ।।
स्वप्नावस्था के बिषे, सूचित बृत्ति बिहार ।
सरसमाधुरी शरण के, रसिक जुगल सरकार ।।

इति राजभोगभावना समाप्त ।।

अथ उत्थापनभावना लिख्यते ।

।।दोहा।।

चार घड़ी जब दिन रह्यो, बन के पंछी वृंद ।
चुह चुहान करबे लगे, मधुर सुरन सों मंद ।।
वन विहार हित जुगल कों, पंछी दिये जगाय ।
डूबे भाव समुद्र में, उठे हिये हुलसाय ।।
चिक परदा रंगमहल के, अलियन दिये उठाय ।
सरसमाधुरी कुंज में, लीनी जुगल बुलाय ।।
जल गुलाब सों जुगल के, मुख परछाल कराय ।
फूलन के शृंगार कर, दीने अंग सजाय ।।
सारी लहँगा फूलके, उपरेना अरु पाग ।
मुकट चंद्रिका आदि दे, सजै सहित अनुराग ।।
रचि सिंहासन फूल को, बैठे दम्पति फूल ।
नैना मधुकर सखिन कै, रहे रूप लखि भूल ।।

बिजन चमर रचि फूलि के, ढौरत सरस सप्रीत ।
प्यार पगे बोलत वचन, प्रकट करत रसरीत ।।
बनफल कदली सेव सुठि, अरु अमरूद अनार ।
आम अरँडककड़ी सरस, अरु अँगूर रुचिकार ।।
हरितपत्र कदलीन की, भर डाली अलियान ।
अरपन कर कहि प्रेमसों, पावो जीवन प्रान ।।
हँसि हँसि पावत परस्पर, अलिगन देत युग लाल ।
पुनि जल अँचयो प्रीतिसों दम्पति परम कृपाल ।।
बीरी आरोगी बहुर, मंद मंद मुसकात ।
सरसमाधुरी सखिन सों, करत रसीली बात ।।

।। इति उत्थापनभावना समाप्त ।।

अथ वनविहारभावना लिख्यते ।

।। दोहा ।।

वनविहरन कों जुगल वर, उठे सहित अनुराग ।
गलबैंयां देके चले, गावत पीलू राग ।।
मंद मंद गवनत रसिक, कुँज नृपति महाराज ।
सेवा सामग्री सहित, संग सहचरी समाज ।।
छत्र चमर लिये कोउ सखी, कोऊ मोरछल हाथ ।
पानदान लेकर सरस, चली अली के साथ ।।

फूलन की कंदुक छरी, गजरा चौसरमाल ।
गुलदस्ता चकरी चतुर, चली लिये बहुख्याल ॥
आस पास सब सखीगरा, मध्य युगल ममप्रान ।
लटक चलत दोउ लाडिले, बिहरत कुंज लतान ॥
बैठ बहुर बारहदरी, गावत हिलमिल गीत ।
कबहुं गवावत सखिनकों, करत रसिक अति प्रीत ।
रतन चौंतरी चढि कबहुँ, ठाढे दोउ दयाल ।
सूँघत फूल सुहावने, मन में होत निहाल ॥
मंद मंद गवनत कबहुँ, कबहुं चपल गति चाल ।
सुख उपजावत सखिनकों, सरस बिहारी लाल ॥
लुक लुक कुंजलतान में, छपत छबीले छैल ।
ढूँढ गहत नव नागरी, हँसि हँसि खेलत खेल ॥
नारंगी की गेंदकर, फेंकत गगन मँझार ।
लेत अधर निज हाथ अलि, देत सुकर सरकार ॥
नींबू फल लेकर कभूं, तक मारत अलि अंग ।
हँसि छेड़त छबिसों छली, अतिशय हर्ष उमंग ॥
विनय करी तब शुक सखी, चरणदासि करजोर ।
अब चलिये रंग महल में, प्यारे युगल किशोर ॥
सरसमाधुरी ता समय, ले निजकर रूमाल ।
श्रमकन श्रीमुख पोंछ के, मन में भई निहाल ॥

इति वनविहार भावना समाप्त ।

अथ सन्ध्या समय की भावना ।

दोहा

वनविहार बहू भांति कर, सन्ध्या समय निहार ।
सिंहासन पर महल में, आ बैठे सुकुमार ।।
सरसमाधुरी ता समय, अरप्यो सन्ध्या भोग ।
जेवँत दंपति प्राणधन, अरस परस संयोग ।।
जल सुगन्ध अचनाय पुनि, बीरी दई बनाय ।
डीठि डरन जल वार के, सखिन पियो हरषाय ।।
मणि दीपक दमकन लगे, अद्भुत भयो उजास ।
शरद चांदनी से सरस, तिनको परम प्रकास ।।
बनश्रम गतहित आरती अलियन हिलमिल कीन ।
अस्तुति कर बहुभाँति सों, हर्ष बलैया लीन ।।
सुँदर साज मिलाय अलि, नृत्य कियो हुलसाय ।
गाय बजाय दोऊन को, लीने सरस रिझाय ।।

।। इति सन्ध्याआरतीभावना समाप्त ।।

अथ रासभावना ।।

।। दोहा ।।

दम्पति के मन में भई, चाह करन रसरास ।
सप्त सुरन आलाप ले, निरतत उमँग हुलास ।।

ताता थेइ थेइ बोल मुख, मंद मंद मुसिकाय ।
नचत नवल नागर दोऊ, नाना भाव बताय ।।
हिरन फिरन ग्रीबाढुरन, छबि कछु कही न जाय ।
भृकुटी बंक निसंक ह्वै, नैना रहे मिलाय ।।
छुवत छैल छलसों छमक, अंग अलिन के आय ।
देत अधर रस सांवरो, सखियन हिये लगाय ।।
यह सुख रास बिलास को, लिख्यो सखिन के भाग ।
प्रियाचरणआश्रित अलिन, अविचलरह्योसुहाग ।।
सखी युगल जीवनजरी, युगल सखिन के प्रान ।
अरस परस की प्रीति को, को करसके बखान ।।
लीला रास बिलास कर, ब्राजे कृपानिधान ।
अंग श्रृंगार बढाय अलि, समय सैन की जान ।।
श्रीशुकसखि चरणदासि अलि, अवसर उचित निहार ।
व्यंजन सरस सुहावने, परसे कंचन थार ।।

इति रास भावना समाप्त ।।

अथ सैन भोग की भावना ।

।। दोहा ।।

गादी ब्राजे युगलवर, रसिक छबीले लाल ।
सैन भोग सामां सरस, करत शुकसखी बाल ।।

सामग्री बहुभाँति की, घृत पकवान अपार ।
पूवा पूरी कचौरी, लड़ुवा और सुहार ।।
शाक अचार सुहावने, सेव सलौनी दार ।
फेनी बरफी मुरब्बा, मठरी मोहनथार ।।
सरस जलेबी जानिये, बासोंदी रुचिकार ।
मगद ठौर गूंझा धरे, रबरी लच्छेदार ।।
औटचो दूध अनूप अति, मिश्री मिश्रित जान ।
भर बेला सखियन धरयो, प्रेमप्रीत उर आन ।।
पृथक् पृथक् सामां सरस, परसी सुंदर थार ।
जेंवन लागे युगलवर, जीवन प्राणाधार ।।
सैनभोग के पद सरस, गावन लागी नार ।
रुचि रुचि पावत प्राणपति,अरसपरसकर प्यार ।।
यमनोदक शीतल सरस, कर अचवन तिंहिबार ।
बीरी आरोगी बहुर, मंद विहंसि सुकुमार ।।

।। इति सैनभोगकीभावना सम्पूर्णा ।।

अथ सैनकुंज में शय्या और युगल विहारीजु के युगलविहार वा सैन की भावना लिख्यते ।।

।। दोहा ।।

सैनकुंज गवने जुगल, ठाढ़े दे गलबांहि ।
नैनन निद्रा झुकिरही, आलस अंगन मांहि ।।

सैन आरती जोय अलि, दंपति ऊपर वार ।
पधराये सुख सेज पै, सखियन के सरदार ।।
रेशम को गद्दा बिछो, तकिया सेज अनूप ।
पौढ़ें तापर प्राणधन, गौर श्याम रसरूप ।।
ऋतु अनुकूल अनूप अति, ओढ़्यो बसन सुछन्द ।
महक रही तामें महा, अतरन की मकरन्द ।।
कुँद केतकी मल्लिका, माधबिका के फूल ।
धरे सेज के निकट अति, ऋतुही के अनुकूल ।।
रत्न के भाजनन में, भोजन साज अपार ।
जलझारी अरु पान की, बीरी धरी सँवार ।
यथायोग्य द्वारन बिषे, चिक परदा दिय डार ।।
चरणदासि श्रीशुकसखी, मूंदे कुँजकिवार ।।
श्रीललितादिकसहचरी, निज निजरुचि अनुसार ।
सेवा करी सनेह सों, तन मन दीन्हें वार ।।
श्रीशुखसखि दोऊन को, स्वाये प्यार दुलार ।
चरण पलोटन को लगी, चरणदासितिहिं बार ।।
मादक मधुर गिलास भर, हित के वचन उचार ।
पान करायो प्रेम सों, सरसमाधुरी नार ।।

।। इति सैन कुञ्ज भावना समाप्त ।।

अथ श्रीयुगलविहारभावनावर्णन ॥

॥ दोहा ॥

पुनि सरस्यो श्रीयुगल के, अंगन प्रेम अपार ।
इच्छा उपजी जीय में, विलसन सरस बिहार ॥
रंध्रनलगि सहचरि सकल, निरखत केलिनवीन ।
दम्पति सरस बिहार निधि, भई लीन मनमीन ॥
पिय हिय पर श्रीस्वामिनी, शोभा देत अपार ।
मनु छबिलता सुहावनी, लपटी तरुशृंगार ॥
रससमुद्र दोउ रसिकवर, उपजत केलि तरंग ।
छलकि परी छबि दृगन में, सरसमाधुरी अंग ॥
रसलोभी दम्पति महा, अधिक एक ते एक ।
न्यारे होत न निमिषहू, यही दोउन हिय टेक ॥
ऐसो अद्भुत प्रेम है, दम्पति अंगन मांहि ।
रहत निरन्तर संग नित, तऊ तृपति ह्वै नांहि ॥
दंपति सुरति बिहार में, शुकसखि करैं सँभार ।
मतवारे रस प्रेम में, अलबेले सुकुमार ॥
निसिथि भोग भुगताय के, शुकसखि परम सुजान ।
वृत्ति बिहार में मगन दोउ, पौढे जीवन प्रान ॥

स्वप्न अवस्था में दोऊ हिलमिल करें बिहार।
सरस माधुरी गुरु कृपा, यह सुख रही निहार।।
याही सुख में दिवस निशि, बीते कल्प अनंत।
ललित लाडली लाल की, लीला को नहिं अंत।।
रस में बीतैं रैन दिन, होय सांझ पुनि भोर।
सरस माधुरी रीत सखि, सेवैं युगल किशोर।।
लेकर वीन प्रवीन अलि, नित प्रति युगल जगाय।
अष्टजाय की रीति सों, सेव करैं हुलसाय।।
नित्यधाम वृंदा विपिन, रंग महल रस रास।
सरस माधुरी रीति सों, दंपति करैं विलास।।

।। इति श्रीयुगलविहारभावना समाप्त ।।

अथ श्रीउज्ज्वलश्रृंगाररसभावना की महिमा व प्राप्ति की रहस्यरीति वर्णन।।

।। दोहा ।।

नेति नेति निगमन कह्यो, सो यह नित्य बिहार।
युगल कृपा कर पाइये, और न कछू बिचार।।
दुरलभ नर तन पायबो, भरतखंड में जान।
रसिक गुरु दुरलभ मिलन, करें भक्तिरस दान।।

पंच रसन में मुख्य है, उत्तम रस शृंगार।
भाव सहचरी धार उर, सेवो युग सुकुमार ।।
सुकृत उदै बहु जन्म के अपने लेहु पिछान।
रसिकन मिल रस रीति सों, करो युगल गुणगान।।
ब्रह्मा शेष महेश को, दुर्लभ रहस निकुंज।
सो सतगुरू की कृपा सो, मिली तोहि रसपुंज ।।
मत चूके अब दाव मन, भलो बन्यो संजोग।
करो भावना महल की, त्याग बिषय जग भोग ।।
चेत हेत कर युगल सों, सोवत कहा गँवार।
ऐसो उत्तम दाव फिर, मिले न बारंबार ।।
चूके तें बड हानि है, लाभ चेत कर लेव।
करो भावना रैन दिन, गुरु पद पंकज सेव ।।
धन्य धन्य श्री शुक सखी, चरणदासि धनि मान।
सरसमाधुरीशपन कों, कियो कुंज रस दान ।।
धन्य धन्य श्री गुरू अली, बलदेवी शुभ नाम।
सरस माधुरी शरन के, पूरे सब मन काम ।।
दई कृपा कर युगल की, सेवा महल निकुंज।
भाव मानसी सखी बपु, बिलसूँ रस की पुंज ।।
श्रीललितादिक सहचरी, अनगिन अली अपार।
युगललाल की बल्लभा, सेवें निज अधिकार ।।
लीला युगल दयाल की, नित नव भांति अनंत।
गिनैं शेष अरु शारदा, लहैं न तिन को अंत ।।

न्यारो सब ब्रह्मांडतें, निज वृन्दावन नित्त।
माया काल कलेस तहँ, व्यापत नाहीं मित्त॥
उत्पत्ति परलै सों पृथक्, स्वप्रकाश निज धाम।
सतचिद आनँद रूप मय, अति सुन्दर अभिराम॥
करे मानसी भावना, अष्टयाम सह प्रेम।
समय समय करतो रहै, तजे न यह नित नेम॥
सखी भाव श्रीराधिका, पद पंकज की आस।
कृपादृष्टि श्रीगुरू अली, मिले निकुँज निवास॥
नाम रूप लीला ललित, और जानिये धाम।
इनकी सुदृढ उपासना, करै रसिक निष्काम॥
तत्सुख सुख में नित सुखी, रहै ध्यान लव लीन।
गुप्त करे निज भावना, रसिकन सों रहै दीन॥
संग सजातिन को करै, देहि बिजाती त्याग।
ऐसी रहनी सों रहै, लहै अचल अनुराग॥
युगल नाम जपिये सदा, मुख सों बारम्बार।
बिना समर्पित वस्तुको, करै न अंगीकार॥
जब लों जीवें जगत में, भाव मानसी राख।
श्रीकुँजबिहारिनि राधिका, श्याम नाम मुखभाष॥
तीन अवस्था तीन वपु, तिनको लेह पिछान।
तुरियातन निज जान मन, दम्पति संग सुख मान॥
पञ्च भूतकी देह तजि, रंगमहल में जाय।
रहे सदा दम्पति निकट, सेव करै हुलसाय॥

युगल मिलन मारग यही, सतगुरू दियो बताय।
सरसमाधुरी भाव में, निशदिन रहै समाय।।
श्रीबलदेवी स्वामिनी, मम गुरू दीनदयाल।
सरसमाधुरी शरण की सदा करैं प्रतिपाल।।

ईति श्रीअष्टयामसेवाभावनाविलास संपूर्णम्।

श्री युग्मनिकुंजविहारी अष्टयाम सेवा पद ।

।। श्री मन्निकुञ्जविहारिणे नमः ।।

अथ श्रीयुगमनिकुंजविहारी अष्टयाम सेवापद लिख्यते

।।श्लोक।।

जयति जयति राधा कृष्णकैशोरकान्ति-
जंयति जगति कृष्णऽगारतन्वी शुकाली ।
अमरभुवन पत्नी रत्नयूथेश्वरी च
जयति चरणदासी श्री रसाचार्य्यमूर्तिः ।।
परमानन्दं परमपददं केवलं प्रेममूर्तिं
मायातीतं सुभगवपुषं रासलीलादिलक्ष्यम् ।
कुंजे सेवाकुशलममलं सर्वदा सुप्रसन्नं
भावाधीनं भवभयहरं सद्गुरू तन्नमामि ।।

।।दोहा।।

कृपासिंधु सत गुरु प्रभो, श्रीबलदेवजु दास ।
पद बन्दन तिनके करूँ, आनंद मंगल रास ।।
अष्ट याम सेवा सुषद, रसिकन जीवन प्रान ।
सरस माधुरी रचत है, श्रीगुरु उर धर ध्यान ।।
जिन्हें दई गुरु भावना, सहचरि वपु सुकुमार ।
कुंज महल की टहल को, तिनही को अधिकार ।।

नाम कुंज सम्बन्ध को, अरु सेवा गुरुदीन।
ताको अनुसन्धान कर, सेवहु युगुल प्रवीन॥
दृढ़ अनन्यता धार हिय तत्सुख रस उरभाव।
सरसमाधुरी मानसी, सेवा कर चित्त चाव॥

अथ मंगल समय की भावना वर्णयते॥
प्रथम श्रीशुकसखी श्यामचरणदासीजी की
वन्दना के पद॥
राग कालंगड़ा॥

जय शुकसखी श्यामचरणदासी,
रासबिलासी प्राण पियारी।
अष्टयाम सेवा सुख लूटत,
अष्टभाव सुन्दर वपुधारी॥
अष्टनाम प्रति कुंजनिकुंजन,
सेवत दम्पति रुचि अनुसारी।
लिये रिझाय लाड़िली लालन,
पल छिन होत नेक नहिं न्यारी॥
स्ववश किये निज प्रेम प्रीति सों,
श्रीराधाबर कुंजबिहारी।
चायन भरी रूपरस माती,
गुप्त प्रगट लीला अधिकारी॥

श्रीयूथेश्वरि रस आचारज,
विनयसुनो मोहिं दीन निहारी।
देवो निकुंज निरन्तर सेवा,
सरसमाधुरी शरण तुम्हारी ।।

अथ श्रीमंगलाकुँजभावना पद ।।

।। दोहा ।।

वय किशोर लावन्यनिधि, वसन चम्पई रंग ।
सेवा स्तवगान की, प्रेम पुलक अँग अँग ।।
लालमणिन सों जगमगत, कुंज मंगला ऐन ।
अतुलित रचना है तहां, कहत बनत नहिं बैन ।।
अग्र मंगला कुञ्ज के, सुन्दर वर दालान ।
वीन लियें कर शुकसखी, करन लगी कलगान ।।
श्यामचरणदासी सखी, लै परिकर निज संग ।
सेवासोंज ले कर खड़ी, हियमें हर्ष उमंग ।।
अरुण चम्पई वस्त्रवर, नख शिख सजि शृंगार ।
रस आचारज यूथ पति, शोभित कुंज अगार ।।

राग आसावारी व विलावल ।।

रंग महल के द्वार सुकर लै, बीन मधुर शुक सखी बजाई ।
तान तरंग रंग बर्षाकरि; दम्पति तन मन दिये छकाई ।।

जागे अनुरागे पियप्यारी, मन्द हँसत मुख लेत जँभाई।
उठि बैठे सुख सेज रसीले, रति रस नैंन छुई अरुनाई॥
माल मरगजी खँडित बीरी, रीझि दई निज निकट बुलाई।
सरसमाधुरी रूप दृगन लखि, वारि दोऊ कर लई बलाई॥

सखियन के जगावे को पद राग विलावल॥

जागो जुगल लाल बलिजाऊँ।
अरुणोदय परभात भयो है, मंगल आरति कर हुलसाऊँ॥
पुनि मुख कमल धोय दोउन को, मंगल भोग सुमधुर पवाऊँ।
यमुना जल अँचवाय प्रेम सों, मंगल समय सरस पद गाऊँ॥
श्रीशुक सखी श्यामचरण दासी, पद बन्दन कर तन पुलकाऊँ।
सरसमाधुरी छविकों निरखूँ, हरखूँ हियमांहीं सुखपाऊँ।

यथा पद राग कालंगडा॥

भोर भई जागो बलिजाऊँ, श्यामा श्याम पियारे।
रसिकराय चूडामणि दम्पति, जीवन प्राण हमारे॥
पहुपीरी मारुत वहे सीरी, छिपे गगन के तारे।
चटकत कली गुलाब सुमन सुठि, गुंजत अलि मतवारे॥
उदित भानु अवसर नियरानो, कमल खिलत हैं न्यारे।
लता पता में पक्षी बोलत, गावत सुयश तुम्हारे॥

आई श्यामचरण की दासी, सेवसोंज कर धारे।
मंगल भोग फूल फल चन्दन, धूपदीप धर थारे ।।
युगल दरस की प्यासी दासी, खड़ी कुँज के द्वारे।
नैंन चकोर रूप रस पीवन, तव मुख चन्द उजारे ।।
सरसमाधुरी बीन बजाई, मंगल गान उचारे।
सुनि धुनि जगे दरस निज दीनों, सखियन तन मन वारे ।।

पद सिंधु भैरवी ।

जागे युगल उनीदे नैंना ।
आलस गात जँभात रसीले, तुतराते बोलत मुख बैंना ।।
विथुरे बार हार उर उरझे, सुरझावत सुन्दर सुखदैना ।
अँजन अधरन पीक कपोलन, लखि लखि पावत हैं उर चैना ।।
अरस परस निरखत छबि दम्पति,देखत लजत रती अरु मैना ।
सरसमाधुरी या जोरी की, उपमा को त्रिभुवन में है ना ।।

राग विलावल यथा पद ।

निरखोरी छवि युगल अंगकी ।
फूलमाल मोतिन की माला, उरझि रही अनुराग रंग की ।।
कुच केसर तनमें लपटानी, छलक छटा रति रंग जंग की ।
सुमन सेज कुम्हलानी सयानी, रैन करी केली अनंग की ।।
सरसमाधुरी मगन भई लखि, सखी सहेली सकल संगकी ।।

(२)

देखोरी छबि युगल ललन की ।
छूटी अलक कपोलन ऊपर, अद्भुत शोभा सखी हलन की ।।
टेढ़ी बेंदी लसी भालपर, भौंह लजानी भरी छलन की ।
सरसमाधुरी दम्पति शोभा, निरख नागरी नांहि टलन की ।।

।। दोहा ।।

बैठे बिबि परियंक पर, हँसि हेरत मुसिकात ।
प्रेमभरे नैना जुरे, करत परस्पर बात ।।

श्रीप्रीतम वचन ; पद राग आसावरी विलावल ।

सुनहु किशोरी जीवनि मोरी,
निशदिन अंग संग अभिलाखूं ।
मिल्यो रहत तउतृप्ति न मानत,
तेरी सोंह सत्य मुखभाखूं ।।
तव मुख निरखि मवेली जीऊं,
अधर सुधारस हितकर चाखूँ ।
सरसमाधुरी मूरति तेरी,
मैं नितही निज हिय में राखूँ ।।

श्रीप्रियाजू वचन यथा पद ।

मम जीवनधन मदन मनोहर, प्राणनाथ प्राणन तें प्यारे ।
निशिदिन दिये रहत गलबैंयां,तन मन मिले नहीं छिन न्यारे ।।
तउतृषा नित रहत मिलन की, तृप्ति न मानत प्राण हमारे ।
क्वासि क्वासि पिय कहि अकुलाऊँ,नैन दरस हितहोतदुखारे ।।
यह संयोग विरह की वेदनि, बनी रहत उर अन्तर हारे ।
सरसमाधुरी चाह चटपटी, घटत नहीं प्रगटत नित प्यारे ।।

सखी पद राग कालंगडा ।

दम्पति की प्रीति रीति सजनी कुछ न्यारीहै ।
श्याम संग राधे को श्यामा सुठि नाम भयो,
प्यारी सँग प्यारो नाम पायो श्रीबिहारी है ।
श्याम अंग रंग सदृश नीलांबर सजत प्रिया,
कञ्चन द्युति प्रिया पीय पीताम्बर धारी है ।
नव घन घनश्याम घटा प्यारी छवि बिद्युच्छटा,
परिकर अलि मनमयूरि जीय की जिवारीहै ।।
कनकबेलि प्रिय रसाल लपटीपियतरु तमाल,
तऊ बिरह बस बिहाल रूंभ्रम हिय भारी है ।
सरसमाधुरी सरूप पीवत रस युगल भूप,
तदपि तृषित रहत लाल लाडिली हमारीहै ।।

।।दोहा।।

भोग मंगला थालभर, सखियन धरयो संवार ।
सन्मुख श्यामा श्याम के, मंगल समय निहार ।।

पद मंगल। भोग राग कहरवा ।

जेंवत हिल मिल युगल बिहारी ।
कंचनथाल धरचो चौकीपर, मंगल भोग विविधि परकारी ।।
दधि माखन अरु मिश्री मेवा, मालपुवा मोदक रुचिकारी ।
कचरी पपरी सेव सलोनी, और मधुर वहुभांति तयारी ।।
यमुनोदक झारी रुचिकारी, अँचवत हैं प्रीतम अरु प्यारी ।
सरसामाधुरी निज सेवा लखि, बीरी दई कर बहु मनुहारी ।।

यथा पद भोग ।

मंगलमय भोग प्रिया प्रीतम मिल पावें हैं ।
कंचन सजि थार धरयो चौकीपर दम्पति ढिग,
मिश्री सद्माखन दधि अलिगन पुरुसावें हैं ।।
मालपुवा मोदकबर घेवर फैंनी सुहार,
रुचि के अनुसार नारि प्रेम सों पवावें हैं ।
दार सेव अदरक नमकीन फली तली भली,
कचरी अरु पापर पा हिय में हरषावें हैं ।

अचवन करवाय जमुन शीतल जल प्याय सखी,
कमल मुख अँगोछ पोंछ हेत हिय जनावें हैं ।।
सरसामाधुरी निहार बीरी मुख दई सँवार,
हँसि हँसि आरोग युगल मोद मन बढ़ावें हैं ।।

मंगल आरती पद ।

मंगल आरति हरख उतारी ।
मंगल कुंज महल बृन्दाबन, मंगल मूरति प्रीतम प्यारी ।।
मंगल गानतान धुनि छाई, बीन मृदंग बजें सुखकारी ।
मंगल सखी समाज मनोहर, मंगल धूप महक मतवारी ।।
मंगलमय नित उत्सव मंगल, मोद विनोद प्रमोद अपारी ।
सरसमाधुरी निसदिन मंगल, जिन छबि मंगल निज उरधारी ।।

।। दोहा ।।

श्याम चरणदासी सुघर, मंगल समय पिछान ।
युगल लाल स्तव उमँग, करन लगी मुख गान ।।

स्तुति पद भैरवी ।

जय वृन्दाबन चन्द छबीले, गौर श्याम सुखदानी ।
रूप सुधारस दृगन चकोरी, दम्पति दरस लुभानी ।।

जय श्रीराधे रसिक रसीली, जय रसिया रसखानी।
रसमें मगन रहत रसरासी, नित रस केलि कहानी॥
जय जय अधर मधुर रस मादक, पीवत नांहि अघानी।
जय जय केलिकला रसकोबिद, श्रीठाकुर ठकुरानी॥
जय परियंक निसंक बिलासी, रति वर्धन रसदानी।
नेति नेति वचनामृत बोलत, प्यारपगी मृदुबानी॥
जय जय युगल अलिन की जीवनि, बार पियत नित पानी।
सरसमाधुरी सर्वस मेरी, निसिदिन निरखि सिहानी॥

दोहा

अस्तव सुनि हरखे युगल, जीवन प्राण अधार।
गलबैयां दे लाड़िले, खड़े कुंज के द्वार॥

पद अलसान राग भैरवी।

(१)

युगल के नैन छुई अलसान।
घूमत झूमत झुकत छबीले, प्यारी प्रीतम प्रान॥
उठे जँभात शिथिल पट भूषण, सुन्दरता की खान।
अधरन अंजन रेख सुहावन, पलकन लीक पीक सुखदान॥
करत निरन्तर प्रगट प्रेम रस, आलिंगन चुम्बन सन्मान।
सरसमाधुरी अघर सुधारस, पीवन की नित बान॥

(२)

कुंजद्वार ललना अरु लालन, ठाढ़े दे गलबांहीरी।
मूँद मूँद खोलत चख चंचल, अंचल की सुधि नाहींरी ।।
झुकि झुकि जात परस्पर दोऊ, आलस अंगन माहींरी।
मुख अम्बुज मकरन्द प्रकाशित, ज्यों ज्यों ले जमुहाहींरी ।।
बिथुरे बार कपोलन ऊपर, श्रमकन मुख झलकांहींरी।
सरसमाधुरी स्रवत सुधारस, अलि पीवत न अघाहींरी ।।

(३)

महल आंगन ठाढ़े पिय प्यारी।
अंसन भुजधर मदनमनोहर, नैंनन सुरति खुमारी ।।
नील पीतपट भूषन पलटे, भूले सुधि बुधि सारी।
सरसमाधुरी छके प्रेम में, छैल छबीलो भारी ।।

फुलवाई निरखन पद भैरवी ।।

(१)

कुंजभवन के आंगन दम्पति, देखत हैं फुलवाईरी।
बेली नवल चमेली हेली, हरित अनेकन छाईरी ।।
ठुमक चलत चंचल चहुँओरी, सघन लता तर जाईरी।
मन्द बिहँसि कर अंक भरत हैं, मुख चूमत हरषाईरी ।।
निरखि नैंन पुष्पन की शोभा, लालरहे ललचाईरी।
सरसमाधुरी सुठि सुगन्ध शुचि, सूँघत नाहिं अघाईरी ।।

(२)

बिहरत नजर बगीची लालन ।
घूमत फिरत करत कौतूहल,
मदगज चलत चतुर दोउ चालन ।।
फूलन के चौसर अरु गजरा,
ले आई डलिया भर मालन ।
सरस माधुरी अंग सजाये,
रीझि मिले चुम्बन कर गालन ।।

(३)

फूलि फूलि देखत फुलवाई ।
फूली लता चहूंदिशि शोभित,
त्रिबिधि समीर बहत सुखदाई ।।
फूलन की क्यारी बहु न्यारी,
सुरुचि सुगन्ध रही महकाई ।
सरस माधुरी रस मतवारे
पीवत अधर मधुर मुसिकाई ।।

❀ दोहा ❀

समय जानि श्रीशुकसखी, चरणदासि गुणखान ।
पुष्पपांयते सरस रचि, लाई कुंज अस्नान ।।

स्नानपद राग भैरवी ।,

मंजु कुंज सुख पुंज सदन में, पियप्यारी असनान करेंरी ।
वे उनको वे उन्हैं न्हवावत हँसि हँसि कसि कसि भुजन भरेंरी ।।
किलकत पुलकत प्रेम पगे दोउ, निज सखियन को चित्त हरेंरी ।
जलभारी सहचारी लीन्हें, रूप रसामृत नैंनभरें री ।।
भीजें बार निचोरत निजकर, मुक्तावत जलबिंदु झरेंरी ।
सरसमाधुरी अंग युगल की, दृगतें टारो नांहि टरेंरी ।।

वस्त्र धारण पद राग आसावरा ।।

युगल के अंगन पट पहराये ।
गीले बस्त्र उतार सहेली, सुंदर वसन सजाये ।।
धोती उपरेना सुठि सारी, सखियन साज सजाये ।
नीलांबर पीतांबर दम्पति, पहर हिये हरषाये ।।
कँगही सों रचि केश सँवारे, अलकन अतर रमाये ।
सरसमाधुरी श्याम राधिका, सिंहासन पधराये ।।

(२)

युगल को अलि बांधो कसि जूरो ।
रेशम डोर रँगीली लै कर, रच्यो अधिकही रूरो ।।
बिच बिच मुक्ता ललित लगाये, प्रियामांग रचि दियो सिंदूरो ।
सरसमाधुरी दम्पति मुख पर, बारों कोटि शरद शशि पूरो ।।

॥ दोहा ॥

मणिमय मंजुल थाल में, पिस्ता और बादाम।
मिश्री मिश्रित कलेऊ, लाई अलि अभिराम ॥
मोदक मेवा बिविध विधि, मोहन भोग रसाल।
मधुर मलाई मनहरन, पावत प्यारी लाल ॥

पद कलेऊ राग कालंगडा ॥

करत कलेऊ प्रीतम प्यारी।
मोहन भोग मलाई मिश्री, मोदक मेवा विविध प्रकारी ॥
जीमन लगे सखिन की जीवन, अरस परस कर बहु मनहारी।
सरसमाधुरी ले यमुना जल, अँचवायो श्री कुंजबिहारी ॥

श्रृंगार कुंज वर्णन पद भैरवी ॥

कुञ्ज श्रृंगार सदन में दोऊ, पिय प्यारी अनुरागेरी।
पहिरें पीत वसन आभूषण, परम प्रेममें पागेरी ॥
पीत मणिन सों कुंज प्रकाशित, निरखि सकल दुख भागेरी।
सखी समाज साज सजि पियरो, खडी सेव में आगेरी ॥
सोंन जुही अरु पीत चमेली फूलो फूल सुभागेरी।
जित देखूँ तित पीतसाज सब ऋतु बसंत सम लागेरी ॥

सतगुरु कृपा लह्यो सखि यह सुख, भाग भले अब जागेरी ।
बसो अचल छबि युगल लाल उर, सरसमाधुरी मांगेरी ।।

श्रृंगार पद ।

(१)

युगल वर कर श्रृंगार बिराजे ।
गौर श्याम अभिराम रसिक बर, सुभग पीतपट साजे ।।
मुकुट चन्द्रिका नख शिख भूषण अंग अंग छबि छाजे ।
गल फूलन के हार मनोहर, निरखि काम रति लाजे ।।
गान तान गावत अलि अनगिन, नाचत करत समाजे ।
सरसमाधुरी हँसि मुसकावत, सखियन के सिरताजे ।।

(२)

प्रिया तन ऋतु बसंत छबि छाई ।
पीत बसन पियरे आभूषण, चंपक बरन सुहाई ।।
पीत चमेली चौसर गजरा, केसर खौर लगाई ।
नैंन खिले अरबिंद अनोखे, रस मकरंद चुचाई ।।
नाना रंग फूल सजि सुन्दर, फूली मनु फुलवाई ।
कोकिल बचन बोलि अलबेली, पिय मन लियो चुराई ।।
हँसन दसन द्युति कुंद कलिसी, बिबाधर मधुराई ।
पान करन रस सरसमाधुरी, अलि अवली मिलि आई ।।

॥दोहा॥

जान सु अवसर सहचरी, लाई भोग शृंगार।
मधुर सलोने चरपरे, भरकर कंथन थार॥

शृंगार भोग।

भोग शृंगार युगल मिल पावें।
पूवा पूरी और कचौरी, जेंवत अरस परस मन भावें।
रबडी मावा और मुरब्बा, विविध अचार गिने नहिं जावें॥
खाजा खुर्मा दूध मलाई, फेनी घेवर रुचि उपजावें।
दही तिकोने सेव सलोने, शाक अनेकन भांति सुहावें॥
आरोगत रुचि सों अलबेले, सखियां हिलमिल मंगल गावें।
अचवन करि आरोगी बीरी हँसि हँसि सखियन सों बतरावें॥
सरसमाधुरी छकी दरस छबि, दम्पति को दर्पन दिखलावें।

शृंगार आरती राग विलावल।

करत शृंगार आरती आली।
नख शिख सजे नवल पट भूषण,
सजि धजि अद्भुत भाँति निराली।
निज मुख छबि ले मुकर निहारत,
अधर रची पानन की लाली।

मंद हँसी हिय बसी सखिन के,
कसकत है नहिं जाय निकाली ।।
फूल रह्यो फूलन सों श्रीवन,
सौरभ महक महा मनवाली ।
करन बलैया ले दम्पति की,
सरसमाधुरी रहत खुश हाली ।।

अथ शृंगार सन्मुख के पद राग जौनपुरी

(१)

रँगीले दोउ रंग भरे बतरावें ।
रूपरासि रसिकन की जीवनि, मंद मंद मुसकावें ।।
अति आशक्त अंस भुज दीने, नैन सों नैन मिलावें ।
सरसमाधुरी अधर सुधारस, हिल मिल पीवें प्यावें ।।

(२)

मेरो मन मधुकर अनत न जावे ।
छांड़ मुखाम्बुज युगल लाल को, और कहां सुख पावे ।।
श्वास गंध मकरंद माधुरी सूंघन को ललचावे ।
अलक कपोल गोल अधरन पै, मदमातो मँड़रावे ।।
बेसर और बुलाक बिलोकत, अति आनन्द बढ़ावे ।
सरसमाधुरी रूप सुधारस, पीवत नाहिं अघावे ।।

(३)

रसीले दोउ रस की केलि करें।
नैंन सैन में मन मोहत हैं हँसि हँसि भुजन भरें॥
अति सुकुमार मार मद मोचन, चितवत चित्त हरें।
सरसमाधुरी छबि उर धारी, टारी नाहिं टरें॥

(४)

रमे री मेरे मन में राधेश्याम।
रसना श्यामा श्याम कहत है, रटत निरंतर नाम॥
श्रीमत युगल किशोर किशोरी, कियो हिये में धाम।
सरसमाधुरी चरन कमल की, चेरी आठों जाम॥

(५)

सलोने लागें नवल किशोर किशोरी।
सुन्दर श्याम काम मद मोचन, सुमुखि सुलोचनि गोरी॥
मिलि बैठे दोउ रत्न सिंहासन, हँसि लीनों चित चोरी।
सरसमाधुरी इनके सम कोउ त्रिभुवन में नहिं जोरी॥

(६)

हमारी हेली जीवनि युगल बिहारी।
रूप निरखि निश दिन मैं जीऊँ पीऊं अधर सुधारी॥
छिन छिन लखों रङ्क के धन ज्यों, अँखियां टरत न टारी।
सरसमाधुरी बसी हिये में बिसरत नाहिं बिसारी॥

शोभा श्रृंगार पद राग जौनपुरी ।।

।। १ ।।

युगल छबि आज अनोखी लागे ।
सजि श्रृंगार डार गरबैंयां, पिय प्यारी अनुरागे ।।
मृदु मुसिक्यात गात अति पुलकित, परम प्रेम में पागे ।
सरसमाधुरी दृगन बसो दोउ, बार बार यहि माँगे ।।

।। २ ।।

युगल छबि निरखो नैंन नवेली ।
मनमोहन सोहन तन सुन्दर, झांकी अति अलबेली ।।
चितवन में चित चोरत चंचल, करत रसिक रस केली ।।
सरसमाधुरी रूप रसामृत, हिल मिल पीवो हेली ।।

।। ३ ।।

युगलकी झांकी है रँग भीनी ।
जोबन अंग उमंग भरी है, रति अनंग छबि छीनी ।।
रसिक किशोर किशोरी गोरी, जोरी रूप नवीनी ।
सरसमाधुरी हँसि हैरन में, सखियां रस बस कीनी ।।

।। ४ ।।

युगल छबि नैंनन बीच बसी ।
रसमाते रस रङ्ग करत हैं, जादू मन्द हँसी ।।

तिरछी चितवन तीर चलाबत, भौंह कमान कसी।
सरसमाधुरी घायल कीनी, फंदे प्रेम फसी॥

॥ ५ ॥

छबीले दोऊ छबि सों कुंज विराजे।
नख शिख सज शृंगार सलोने, देखतही दुख भाजे॥
प्यारी कमल लिये कर फेरत, पिय कर बंशी राजे।
सरसमाधुरी के सरवस धन, निरखि काम रति लाजे॥

॥ दोहा ॥

श्रीशुक सहचरिचरण अलि, दंपतिकी मन मेलि।
जान सु अवसर युगल की, खिलवत चौसर केलि॥

चोसरकेलि पद राग टोड़ी।

॥ १ ॥

चौसर खेलत सारन चलि के।
पासा फेंकि करत कौतूहल, रूप छटा अंगन में छलके॥
नासा मोती डोलत मटकत, बिथरी कलित कपोलन अलके।
सरसमाधुरी स्वेद मुखन पर, मानो मोती कन से झलके॥

॥२॥

चौसर खेल रच्यो पिय प्यारी ।
फेंकत पासा प्रेम परस्पर, मारत सार रसिक रिझवारी ॥
झगरत निज निज दाव नवलबर,करगहिहँसि हँसि भरिअँकवारी
सरसमाधुरी होड़ा होड़ी, चलत चाल युग बारम्बारी ॥

॥३॥

होड़ बदी रतिकी रँगभीनी ।
जो हारे दोउन में कोऊ, करे केलि रसरंग नवीनी ॥
जीती प्रिया हार पिय की भई, पीताम्बर मुरली तब छीनी ।
सरसमाधुरी नटनागर ने, बहुत भाँति रुगटैयां कीनी ॥

॥४॥

होड़ हार की माँगत प्यारी ।
सुनहु दीढ लंगर मनमोहन,
अब कहु मौन कौन विधि धारी ॥
सकुच रहैं कछु कहैं न मुख सों,
सखियां विहँसि बजाई तारी ।
सरसमाधुरी चूमि लाल मुख,
प्रिया लई पिय की बलिहारी ॥

॥५॥

श्यामा लखे श्याम सकुचाये ।
बैठे हार उनमने लालन, बोलत नहिं मन में शरमाये ॥
तब करुणाकर कुँवरि किशोरी, रमक भुजन भर कंठ लगाये ।
अधरामृत सों सींचि स्वामिनी, सरसमाधुरी रसिक छकाये ॥

॥ दोहा ॥

दो चौकी गादी बिछा तकिया दिये लगाय ।
पधराये प्रीतम प्रिया, प्रीति रीति के भाय ॥
दंपति के सन्मुख बिछा, चौकी कंचन चारु ।
थार भरो धर भोग को, सामाँ अमित प्रकार ॥
युगल कमलकर यमुनजल, धोयपोंछ हितमान ।
करी विनय आरोगिये, राजभोग सुख दान ॥
बाम दक्ष दिशि सहचरी, सामां पुरुसन हेत ।
खड़ी भई विजन लिये, दम्पति रुचि लखि देत ॥
अरस परस जेंवन लगे, प्रीतम प्यारी प्रान ।
साज बाज ले सहचरी, लगी भोग पद गान ॥

फूल कुंज में राजभोग पद राग सारंग ॥

राजभोग जेंवत पिय प्यारी ।
कञ्चन थाल अनेक कटोरी, सामग्री तिन माँहि अपारी ॥

सादा भात केसरी सुन्दर, कढ़ी पकोरी दाल बघारी ।
फुलका लघु लोने अति अद्भुत, सुर भी घृत तिन में रुचिकारी ।।
सिखरन खीर बरा बासोंधी, टेंटी पापर बहु तरकारी ।
कचरी फली तली अति लोनी, और मुँगौरी अदरक न्यारी ।।
रुचिर रायते नुकती किशमिश, पोदीना चटनी चटकारी ।
मठा मधुर अमरस दधि माखन, मिश्री मिश्रित स्वाद महारी।।
नींबू आम अचार करोंदा, मधुर मुरब्बा अति मनुहारी ।
मोहन भोग जलेबी मोदक, लुचई घेवर सरस सुहारी ।।
मठरी मोठ दाल अरु बरफी, षटरस ब्यंजन विविध प्रकारी ।
सखरी अनसखरी बहु सामां, कहँलों बरनों रसना हारी ।।
अरस परस मनुहारत दंपति, प्रियहि पवावत कुँज विहारी ।
यह सुख देख सखी शुक प्रमुदित रीझि रहत बिबि बदन निहारी
श्यामचरणदासी सुखरासी मगन युगल रसमें मतवारी ।
सरसमाधुरी श्रीदंपति की, छबि लखि मुख बोलतब लिहारी।।

(१)

भोजन करत भाँवते प्यारे ।
छप्पन भोग छत्तीसों ब्यंजन, खटरस मिठरस न्यारे न्यारे ।।
सामग्री सखरी अनसखरी, नाना शाक अनेक अचारे ।
सरसमाधुरी रसके लोभी, लेत देत मुख ग्रास न हारे ।।

(२)

राजभोग दम्पति मिल पावें ।
निज निज हाथ निहोरि नवीने, वे उनको वे उन्हें पवावें ॥
नैंन निहार रहें मुख दोऊ चिबुक परसि इकटक रहिजावें ।
कबहूं करें केलि कौतूहल हँसि हँसि पानि कपोल छुवावें ॥
ब्यंजन भूख भगी दम्पति की, रसभोगी रति को ललचावें ।
सरसमाधुरी सैंनन माहीं पियत रूपरस नाहिं अघावें ॥

(४)

जेंवत युगल रसिक पिय गोरी ।
देखहु दृगन निहारि सहेली, रस ज्योंनार रची इकठौरी ॥
तनको थाल अंग सामग्री, छवि के ब्यंजन को परुसोरी ।
भाव भोग भोगत गरवीले, पियत रूपरस नैंनन सों री ॥
तृपति न होत परस्पर प्यारे, लखि ललचानी अँखियां मोरी ।
सरसमाधुरी सीत प्रसादी, दीजे तनिक किशोर किशोरी ॥

(५)

रसभोगी रसलोभी रसिया ।
रस में मगन लगन रसहीकी, रस के फन्द रहे नित फँसिया ॥
रस बोलनि रस केलि कलोलनि, छबि को देखि दृगनदोउ हँसिया
सरसमाधुरी रसिक शिरोमणि, रसरासी मेरे मन बसिया ॥

आचमन पद राग सारंग।

अचवन करत नवल पिय गोरी।
श्री यमुनोदक शीतल सुन्दर,
पोवत कुँवर किशोर किशोरी ।।
ले रूमाल कमल कर पोंछत,
तन मन तृपति नैंनलखि जोरी।
सरसमाधुरी मूरति दम्पति,
सुन्दर श्याम स्वामिनी मोरी ।।

वीरी पद।

बीरी सरस सखी रुचि दीनी।
लई प्रीतिकर प्रीतम प्यारी, अधरन लाली लसी नवीनी ।।
मृदु मुसकात बात हँसि बोलत, सुनत सहैली रसमें भीनी।
सरसमाधुरी शयन करन की, युगललाल मन इच्छा कीनी ।।

आरती पद।

फूल आरती कर हुलसावें।
अंग अंग पर वार अलीगन, फूली तन मन नांहि समावें ।।
फूल कुँज भ्राजे पिय प्यारी, चहुँ दिशि परदा फूल सुहावें।
जाली फूल निराली आली, फूलन सेज सजी छवि छावें ।।

फूलश्रृंगार साजि सजि दम्पपि, बैठे मन्द मन्द मुसकावें।
सरसमाधुरी छवि लखि फूली युगलचन्द की बलि बलि जावें॥

मध्यान्ह शयन पद राग सारंग।

(१)

कीजिये युगल लाल आराम।
राजभोग आरोग भली विधि, आय गयो जुग जाम॥
सुमन सेज सजि लीनी सखियन, लता पता कुँज अभिराम।
हिल मिल पौढ़ि परम सुख लीजे कीजे पूरण कान॥
सुन बिनती सखियन की दम्पति सोये सुख के धाम।
सरसमाधुरी रस के माते, कुँवरिकिशोरी श्याम॥

(२)

फूल सेज सोये पिय प्यारी।
फूलश्रृंलार धार तन हिल मिल, के गलबैयां डारी॥
फूलन के गद्दा अरु तकिया, फूलन कसना कसे सँवारी।
फूलनही के फर्श गलीचा, फूल बिछायत कुँज मँझारी॥
बारहदरी बनी फूलन की, सुन्दर दर दालान तिवारी।
फूलन के लटकन लूमत हैं, फूलन ही की बंदनवारी॥
शीतल मंद सुगंध सुहावन, पदन चलत अति आनंद कारी।
सरसमाधुरी केलि युगल की, जीवन प्राण अधार हमारी॥

दोहा

राजभोग कर रसिक वर, सोये बिबि सुकुमार ।
रंध्रनलगि नवनागरी, निरखत युगल बिहार ॥

प्रमोद कुँज वर्णन ॥

॥ दोहा ॥

सोय उठे तृतीये पहर, युगल बिहारी लाल ।
उत्थापन आरति करन, लगी शुकसखी बाल ॥
अंग अंग प्रीतम प्रिया, वारि फेरि तत्काल ।
श्याम चरण दासी सखी, छबिलखि भई निहाल ॥

उत्थानपन पद राग घनाश्री ॥

जागे जीवन प्राण युगल वर ।
आय शुकसखी धोय कमल मुख,
जमुनाजल प्यायो अपने कर ॥
फूल माल पहराय दोउन को,
बनफल अरपे अति आनँद भर ।
पावत प्रमुदित प्यारी प्रीतम,
छैल छबीले लाल मनोहर ॥

श्यामचरणअलि करत मोरछल,
गावत अलिगन राग मनोहर।
सरसमाधुरी साज बाज मिल,
तान तरंगन को लागो झर।।

राग पीलू वरवा ।।

सोय उठे दम्पति सुखरासी ।
धिरि आई चहुँ ओर सखीगण, युगलरूपरसकीअति प्यासी ।।
जल सुगंध युग धोय कमल मुख, पटसो पोंछ प्रेम अभिलासी ।
लै यमुनोदक पाय परम शुचि, अंतर प्रीति प्रतीति प्रकासी ।।
किशमिश पिस्ता मिश्री भेवा, भोग घरे वहु बिधि गुणरासी ।
पावत प्रमुदित प्यारी प्रीतन, निरखत सरसमाधुरी दासी ।।

राग णंगला ।।

जागे जुगल अलिन के प्यारे ।
श्यामा श्याम सलोने दोऊ, अति सुन्दर नैंनन के तारे ।।
परम प्रसन्न बदन विधु रसनिधि, चपल चारु अंसन भुज धारे ।
हँसि मुसकात मनोहर मूरति, ब्राजरहें सखी कुंज मँझारे ।।
तन मन रँगे पगे उज्वल रस, रसिक छैल जोवन मतवारे ।
सरसमाधुरी बीरी दीनी, लेकर पावत प्राण अधारे ।।

उत्थापन आरती राग पीलू वरवा।

उत्थापन सखि करें आरती ।
यमुनोदक तुलसीदल मिश्रित, युगल प्रिया पिय अंगवारती ।।
युगलचन्द्रमुख रूपमाधुरी, सखी चकोरी दृग निहारती ।
सरसमाधुरी भूषण दम्पति, हिये हुलसि निजकरसँवारती ।।

पीलू ।

पीवत वार वार अलि पानी ।
श्यामा श्याम उठेरी सजनी,छवि निरखतबिन मोल बिकानी ।
नैनन रंग सैन सुख सूचत, मंद हँसत बोलत मृदुबानी ।
ले दरपन दिखरावत सजनी लखि रीझत दम्पति रसखानी ।।
भूषण बसन सँवारत सहचरि, सेवा करत सकल मनमानी ।
सरसमाधुरी साजबाज ले, गावत गुन छवि माँहि छकानी ।।

युगल छबि पद ।।

राजत हैं दोउ रंग रँगीले ।
नवनिकुंज सुख पुंज सदन में,
बिबिकिशोर चितवन चटकीले ।।
अति सुकुमार डार गलबैंयाँ,
रूप मनोहर रीझि रिझीले ।

पान खात मुसकात परस्पर,
गौर श्याम घन गुन गरबीले ॥
रूपरसामृत नैंन पान कर,
प्रेम महारस छकनि छकीले ।
सरसमाधुरी के मन माहीं,
बसहु रैन दिन छैल छबीले ॥

दोहा

बन बिहरन दंपति चले, लै सँग सखी समाज ।
छैल छबीले प्राणपति, रसिक राय सिरताज ॥

बनबिहार पद राग पीलू ।

बन शोभा निरखन को गवनें, सरस युगल सरकार ।
संग सहेली निज मन मेली, दोउन की रिझवार ॥
हरी भरी अवनी अति सुंदर, लता पता मन मोहन हार ।
जाही जुही चमेलौ चंपा, चटकी कुँद इंदु मंदार ॥
सुभग केवडा सरस केतकी, रायबेलि अतिही रुचिकार ।
फूल गुलाब गेंद दाऊदी, सौंन जुही बर हारसिंगार ॥
फूल सेवती सोसन फूली, चहुँ दिशि बनी बसंत बहार ।
गुलतुर्रा गुलवाँस मोगरा, फूल मोतिया अरु कचनार ॥
नाना बिधि क्यारी फुलवारी, कहों कहाँलग नाम अपार ।
ललित बेलि बृक्षन लपटाई, लहकत पत्र पवन लग डार ॥

घूमत फिरत दिये गलबैंयाँ, निरखत नई नई फुलवार ।
सरसमाधुरी श्याम राधिका, कुंज लतनतर करत बिहार ।।

वन शोभा देखन पद ।

(१)

सघन बनबीथिन करत बिहार ।
कुंजबिहारिनि कुंजबिहारी, गौर श्याम सुकुमार ।।
वे उनके वे उनके अंगन, निज कर करत सिंगार ।
भूषण सुमन सज नख सिखलों, सखियन के सरदार ।।
हिल मिल हरत परस्पर मन को, हँसि हँसि दृगन निहार ।
आलिंगन चुम्बन परिरंभन, लिपट लगत अँकवार ।।
गलबैंयाँ दीने रँगभीने, दंपति प्राण अधार ।
रहै मिलाय कपोल प्रेम कर, रसिक छैल रिझवार ।।
तन मन मिले झिले उज्ज्वल रस, छबिको अंत न पार ।
सरसमाधुरी बाँकी झाँकी, मन की मोहनहार ।।

।। २ ।।

बिहरत गह्वर बन पिय प्यारी ।
सघन कुँज कमनीय लतन में, क्रीड़त बिबिध प्रकारी ।।
कियें सुमन श्रृंगार सलोने, नख सिखलों रुचिकारी ।
संग समूह लियें सहचरि गन, ललितादिक अलि सारी ।।

फूलन गेंद बनाय चाव सों, तक मारत सुकुमारी।
धाय धाय ले धरत हरत मन, केलि कला विस्तारी।।
पुलकत प्रेम पगे मिल दम्पति, रीझि भरत अँकवारी।
सरसमाधुरी यह रस लीला, जीवनमूरि हमारी।।

राग पीलू वरवा ।।

।। १ ।।

प्रिया पिय बनछवि नैंन निहारैं।
घूमत झूमत चलत चतुर दोउ, गलमें बैयाँ डारैं।।
बिरमि बिरमि कुसुमित तरु डारी, निज कर माँहीं धारैं।
सूंघत सुमन सलोने सुखसों, मुख आहा उच्चारैं।।
गेंद बनाय गुलाब प्रसूनन, सखियन के तक मारैं।
सरसमाधुरी सघन कुंज में, भेंटत भरि अँकवारैं।।

।। २ ।।

युगलबर बनछबि देखत डोलें।
गहे परस्पर कर सुन्दर बर, धरत धरन पग हौलें।।
कुसुमित तरु वहु भांति सघन अति, तिन में द्विजगन बोलें।
बानी रससानी सुनि दम्पति, हँसि हँसि करत कलोलें।।
मंद मंद गावत हरषावत, लेतमोल बिनमोलें।
सरसमाधुरी पियत अधर रस, लता कुंज के ओलें।।

॥ ३ ॥

ललन दोउ ललित लतातर ठाढे ।
रस में मगन रसिक सुन्दर बर, दे गलबैंयां गाढे ॥
रहे मिलाय कपोल परस्पर, अतिही रति रँग बाढे ।
सरसमाधुरी छकन छकी है, छिन नाहीं सँग छाढे ॥

॥ ४ ॥

वन बिहरत पिय लाल लली ।
जोरी युगल किशोर किशोरी,संग सोहत शुक चरण अली ॥
अंसन भुजा परस्पर दीने, गति गयंद शुभ चलनि भली ।
नौसत साजि शृँगार सुअंगन, करत निकुंजन रंग रली ॥
ललितादिक नव नारि नवेली, सुमन डली लियें साथ चली ।
जै जै जै बलिहारि बोल, मुख बरसावत हैं कुसुम कली ॥
बैठे आय ललित बँगले बिच, सिंहासन युग छैल छली ।
सरसमाधुरी रसवस कीनी, मनसा बेली सफल फली ॥

॥दोहा॥

वन फल डाली साजि कर, वृन्दाजू महाराज ।
भेंट धरी सन्मुख युगल, आरोगन के काज ॥

वन फल भोग पद ।।

सखियन बन फल सरस मँगाये ।
मिष्ट आम अमरूद अँगूरी, अरु अनार ले भोग धराये ।
नारंगी केला अरु जामुन, सेव फालसा परम सुहाये ।।
सजि डाली आली अति हित सों, दंपति को निज हाथ पवाये।
पावत प्रेम मुदित प्यारी पिय, सखियन मन आनन्द बढ़ाये ।।
अचवन कर आरोगी बीरी, श्रीबन निरख हिये हरषाये ।
सरसमाधुरी फूल हार रचि, प्यारी पिय गर में पहिराये ।।

श्रीयुगल सरकार के वन से कुँजभवन में आने के पद राग पूर्वी ।

(१)

बनतें बनि आये पिय प्यारी ।
फूल शृंगार सजे सब अंगन राधा सरस विहारी ।।
निरख नैंन सव सुधि बुधि भूली, फूली सखियां सारी ।
सरसमाधुरी मूरति दोऊ, शोभा लखि बलिहारी ।।

(२)

बनतें आवत कुंजभवन में ।
लटक लटक झुक झूम झमक दोउ,
नाहिं समावत फूले मन में ।।

फूल शृंगार किये नख सिखलों,
मनु फूली फुलवारी तन में।
किंकिनि कुनितकटिन पग पायल,
ज्यों पंछी बोलत वन घन में।।
मुख अम्बुज मकरंद माधुरी,
महक रही कुछ मन्द हसन में।
अलबेली अनुरागिनि अलिगन,
मगन फिरत सब संग लगन में।।
श्याम संग शोभित श्रीश्यामा,
सन्ध्या फूली मनहुँ गगन में।
सरसमाधुरी अतुलित शोभा
इक रसना नहि आत कहन में।।

।। दोहा ।।

सन्ध्या समय सुहावनी, नौबत बजत अनूप।
सहनाई में रागनी, गौरी स्वर रसरूप।।
सुन गवने रँगमहल को, ले संग सखी समाज।
पहुँचे मध्य निकुंज के, श्रीदम्पति महाराज।।
मणि दीपन दीपावली, जगमग जोति अपार।
सिंहासन प्यारी पिया, बैठे महल मँझार।
यमुना जल झारी सरस, लाई सुन्दर बाल।
धोये दम्पति करकमल, पुनि पोंछे रूमाल।।

सन्ध्या भोग सुहावनो, सखि लाई भर थाल ।
आरोगत आनन्द सों, नवल लाड़िली लाल ।।

सन्ध्या भोग पद राग काफी ।।

सन्ध्याभोग थार सखि लाई ।
बैठे रत्न जटित सिंहासन, जीवन युगल परम सुखदाई ।।
गिरी बदाम चिरोंजी पिस्ता, मिश्री तामें मधुर मिलाई ।
लडुवा मगद बेसनी न्यारे, नाना भाँतिन धरी मिठाई ।
मिल जेंवत दम्पति सुख सम्पत्ति,हँसि हँसिकेदोउ प्रेम बढ़ाई ।
ले अचवन आरोगी वीरी,सरसनिरखिछविबलि बलि जाई ।।

सन्ध्या आरती पद राग श्याम कल्यान ।

सन्ध्या आरति सखिन उतारी ।
कञ्चन थाल बाल घृत बाती, युगल अंग अंगन पर वारी ।।
रत्न सिंहासन सुखद सुहावन, ब्राजि रहे प्रीतम अरु प्यारी ।
ताल मृदंग झाँझ अरु झालर, घंटानाद करें नव नारी ।।
मधुर तान मुख गान उचारें,रीझि रहत सुनि सरस बिहारी ।
चमर मोरछल करत दोऊ दिशि,निरखत नैनन प्राण अधारी।।
जै जै बोलि बलैयां लै लै, दम्पति की जावें बलिहारी ।
सरसमाधुरी गौर श्याम की, बांकी झांकी निज उर धारी ।।

सन्ध्या आरती पीछे गाने का पद ।।

राग ठुमरी जिला ।।

महल को आनँद कह्यो न जावे ।
सन्ध्या समय आरती करके, कोइ नाचे कोइ गावे ।।
कोइ ले बीन मृदंग रंगसों, नाना गति उपजावे ।
सारंगीरु सितार तमूरा, लै सुरताल मिलावे ।।
कोउ सखि करत प्रशंसा मुखसों, सनमुख शीस नवावे ।
कोउ कर जोरि निहोरत दम्पति, हियको भाव जनावे ।।
कोउ सहचरी परिक्रमा करके, फूली अंग न समावे ।
कोउ पुष्पांजलि लै पुष्पन की, जय जय कहि बरषावे ।।
कोउ कर लेत बलैयां हितसों, निज मस्तक परसावे ।
कोउ तृण तोरत डाठ डरन डर, हेत अधिक प्रगटावे ।।
बार वार पीवत कोउ पानी, पुलकत प्रेम बढ़ावे ।
राई नोंन उतारत कोऊ, नेह हृदय न समावे ।।
कोउ लखि लोचन छबि में छकि के, देह दशा बिसरावे ।
गदगद कंठ प्रेम जल पूरित, नैन प्रवाह बहावे ।।
यूथाधिप ले संग यूथ निज, दरस करन हुलसावे ।
गह मह भई निकुंज भवन में, नाहिं कहन में आवे ।।
कोउ सखि जाय युगल लालन ढिग, चरणन नैन छुवावे ।
सरसमाधुरी रुचि निजकर सों, बीरी पान पवावें ।।

श्री युगल छवि के पद राग श्याम कल्यान ।

॥ १ ॥

सखि छबि निरखो श्यामा श्याम ।
सिंहासन अंसन भुजदीने; ब्राजे सुख के धाम ।
नवलकिशोर किशोरी जोरी, अति सुन्दर अभिराम ॥
नख सिख भूषन वसन सलोने, लखि लाजत रतिकाम ।
मृदु मुसकनि चञ्चल चितवनि कर, मोल लेत बिनदाम ॥
सरसमाधुरी रीझ बिबस भई, सकल महल की बाम ॥

॥ २ ॥

युगल छबि देखे ही बनि आवे ।
उपमा खोज लगत नहिं पटतर, फिर कहु कैसे गावे ॥
दम्पति अंग माधुरी अतुलित, समता कुछ नहि पावे ।
मृदुबोलन सुनि प्रिया लाल को, कोकिल कंठ लजावे ।
मुखशोभा लखि सरसमाधुरी, चंब मंद ह्वै जावे ॥

॥ ३ ॥

युगल छबि निज नैंनन में धारों ।
हिय में ध्यान धरों निशिबासर, इकपल छिन न बिसारों ॥
अपनों तन मन अरु सरबस धन, मृदु मुसिकन पर वारों ।
सरसमाधुरी मुख मयंक लखि, चख चकोर नहि टारों ॥

परस्पर युगल गान पद ठुमरी।

(१)

रंगीली राधे बीना लेकर गावें।
श्याम रूप अभिराम अधर धर, बंशी सरस बजावें॥
ललित मृदङ्ग रंगसों ललिता, ठेका संग लगावें।
सरसमाधुरी निरतत सन्मुख, भाव बताय रिझावें॥

(२)

लेकर बीन किशोरी गावें।
नानागति ले तान मानसों. सुनि सुनि के प्रीतम सुख पावें॥
सप्त सुरनकी अलट पलट कर, सरगम गमक सरस उपजावें।
मींड मरोर दबाय देत रस, प्रीतम रीझ विवस ह्वै जावें॥
राग रागनी तीन ग्रामयुत, तामांहीं मूर्छनां जनावें।
ग्रीवा लटक मटक भृकुटी की, पियदिसि दोऊ नैंन चलावें॥
उचकनि कुच लचकनि कटि लखिके,
लालन निज सुधि बुधि बिसरावें।
सरसमाधुरी देखि दशा पिय, राधे अधर सुधारस प्यावें॥

(३)

प्यारी के गुण गावत प्यारो।
वंशी अधरन धार प्यार कर, रिझवत राधे प्राण अधारो।
ले ले नाम प्रशंसत पुनि पुनि, प्रेम विवस पुलकत मतवारो।
सरसमाधुरी रीझि लाडली, चूमि चपल मुख निजउर धारो॥

।।दोहा।।

चंदन चौकी पर धरयो, भर कंचन को थार।
व्यारू सामां विविधि विधि, आरोगत सरकार।।

पद व्यारू राग दरवारी कान्हडा।

(१)

व्यारू पावत प्रीतम प्यारी।
सामां रुचिर चारु चौकी पर, भरि धरि राखी कंचन थारी।।
बरफी सरस जलेबी लडुवा, मोहन भोग मलाई न्यारी।
रबडी मठरी मालपुवा सुठि, बेढई पूरी सेव सोहारी।।
सामां सरस विविधि बेलन में, पात प्रेम सों प्राण अधारी।
बोल बोल दें शीत प्रसादी, सखियनको कर कृपा अपारी।।
साज बाज सुर ताल एक कर, गावत गुण सन्मुख नव नारी।
सरसमाधुरी छकी युगल छबि, निरखत नैंन निमेष विसारी।।

(२)

व्यारू करत किशोर किशोरी।
एकहि थार मांहि मिल पावत, सुन्दर श्याम स्वामिनी गोरी।
छप्पन भोग छत्तीसों व्यञ्जन, पृथक पृथक भर धरी कटोरी।।
पूवा पूरी मगद बेसनी, लडुवा लघु लघु ललित कचोरी।।
शाक सलोने रुचिर रायते, नुकती किशमिश और पकौरी।
पापर तले भुरभुरे न्यारे, कचरी टेंटी फली फुलौरी।।

विविधि अचार चटपटी चटनी, चाखत लालन लेत बहोरी ।
सरसमाधुरी रूप लुभानी, निरखि सिरानी अंखियां मोरी ।।

(३)

ब्यारु आरोगत सरस रासी ।
षटरस व्यन्जन मिष्ट मनोहर, पावत दम्पति प्रेम विलासी।।
सेव सलोने और तिकोने, खात सराहत सुख के रासी ।
पुरस रही सामां रुचि लखिके, सन्मुख सरसमाधुरी दासी ।।

(४)

रसिक बिहारी ब्यारु पावें ।
धृतपक व्यंजन मधुर सलोने, रुचि रुचि लालन ले हरसावें ।।
कोर देत अरु लेत परस्पर, दम्पति दोउ नेह जनावें ।
सरसमाधुरी रसको चसके, हँसि हंसि के हिय में हरषावें ।।

(५)

ब्यारु करत युगल दयाल ।
रत्न चौकी जटित जगमग, धरचो कन्चन थाल ।।
मधुर सामग्री विविध विधि, पाक परम रसाल ।
अरस परस सुदेत ग्रासन, ललित प्यारी लाल ।।
करत मोद विनोद दोऊ, प्रेम रसके जाल ।
फंसी नैंनन निरखि सजनी, सरसमाधुरी बाल ।।

(६)

ब्यारू करत युगल सुखदाई ।
कंचन थार धरचो चोकी पर, तामाहीं बहु भांति मिठाई ।।
पूवा पूरी और कचौरी, मिसरी मिश्रित सरस मलाई ।
दही बरा बासोंघी खुरमा, सिखरन मोहन भोग सुहाई ।।
शाक अनेकन भांति रायते, मधुर मुरव्वा स्वाद महाई ।
अदरक चटनी सेव सलोनी, दाल आचार न जात गिनाई ।।
जेंवत पिय प्यारी आनंद सों, अरस परस मनुहार जिमाई ।
पाक प्रशंसा करत कृपानिधि, सो सुख मुख वरन्यो नहिं जाई।।
श्रीयमुनोदक लेकर झारी, भर गिलास दम्पति को प्याई ।
पुनि अचवाय दई मुख वीरी, सरसमाधुरी लेइ बलाई ।।

दूध पान करन पद राग खम्माच ।

दूध आरोगत कुँजविहारी ।
कंचनबेला में भर भामिनि, ले आई शुकसखि सुखकारी ।।
मिश्रीमिश्रत मधुर मनोहर, प्यावत प्रीतम प्रिया मनुहारी ।
पुनि प्रसाद लेकर पुलकत मन, रसिकलाल प्यारो रिझवारी।।
मोद विनोद विलास युगलवर, निरखत हर्षत हिय सहचारी।
सरसमाधुरी हँसि हंसि बतियाँ, करत परस्पर प्रीतग प्यारी ।।

ज्ञान प्रकाश वासना नाशें,
घट तें तिमिर अविद्या छीजे ।
दरशें श्यामां श्याम हिये में,
नैंन निरख रूप रस पीजे ॥
परा भक्ति को पाय परम रस,
दम्पति भाव मांहि मन भीजे ।
युगल ध्यान धुन सहज समाधी,
हरि गुरु कृपा सु पाय पतीजे ॥
श्री ठाकुर बलदेव दास गुरु,
सरसमाधुरी सुन गुन लीजे ।
भजन प्रताप पहुँच चौथे पद,
अजर अमर हो जुग जुग जीजे ॥

संत महिमा पद ।

श्री राधासरस विहारिणे नमः

श्री संत महिमा पद ।

मिले मोहे सन्त सहचरी भेश ।
रंगमहल के द्वार दया निधि, अमर नगर निज देश ।।
तिलक भाल उर माल विराजे, छके युगल आवेश ।
नाम न जाने सहज पिछाने, लखि पट पीत विशेश ।।
सुर नर मुनि जन को जो दुर्लभ, धारत ध्यान महेश ।
पावत नाँहि जाहि योगी जन, ताहि रटत नित शेश ।।
करुणा कर निकुंज दरशाई, जहां प्रिया परम परेश ।
सरसमाधुरी छकन छकाई, प्रमुदित रहत हमेश ।।

।। राग सोरठ ।।

हरि गुण के सन्त गवैया ।
प्रेम हुलस कर करें कीर्तन, राधाकृष्ण रिझैया ।।
बिन हरि मंदिर संत सभा बिन, गावें नाँहि कुछ भैया ।
रसिकन के संग रहत निरंतर, हरिजस हरस सुनैया ।।
ताना रीरी और तराना, तिनके, नाँहि कहैया ।
नांक आंख मुख नाँहि मटकावें कहे न मुख ताथैया ।।

ताल चुकाय आय सम ऊपर, लै के नांहि बढैया ।
कोरे साज बजा नहि जाने, लहरा गति बिसरैया ।।
लालच लाग पेट के कारन, नहि हरि भक्ति बिकैया ।
हलक फिराय नेक नहि जानें नहि ताली पटकैया ।।
डोम कलांवत और अताई, नांहीं भांड भवैया ।
सरसमाधुरी सतगुरु किरपा, मन में बसे कन्हैया ।।

रसिक महिमा की मांझ ।।

रसिकन की रस रीत निराली विरला जन कोई पावे ।
पढे पुराण वेद बांचे से भरम भूल नहि जावे ।।
बीजक बांचे वस्तु मिले नहि बक थकि जन्म गँवावे ।
सरसमाधुरी रसिक चरणरज दृग आंजे दरशावे ।।

मांझ !

है यह रसिकन की सम्पति दम्पति युगल बिहारी ।
कृपा साध्य साधन तें दुर्लभ लोक वेद तें न्यारी ।।
कष्ट तपस्या पढन लिखन तें ढूंढत मूढ अनारी ।
सरस माधुरी मगन भावना पावत प्रीतम प्यारी ।।

मांझ ।।

कहा भयो बहु सीखी विद्या नांहि अविद्या नासी ।
तर्क न्याय कर्मठ षट पट बहु पढचो जाय कर कासी ।।
बाद विवाद करत भटकत जग कटी न यम की फांसी ।
सरस माधुरी मगन भये बिन छूटत ना चौरासी ।।

मांझ !

समझ रमज रसिकों की कोई रसिक भले ही पावे ।
निरस नांहि पहिचानें ताको कर्म भर्म उरझावे ।।
झगरो ठानें कह्यो न मानें औरन को भरमावे ।
सरसमाधुरी रीति न जानें बृथा विवाद बढावे ।।

मांझ !

रसिक अनन्य जगत में विरले रसकी रीति पिछानें ।
व्यभिचारी बाजीगर बंचर पूजा पञ्च प्रमानें ।।
रस माधुर्य सार सब रस को हठ शठ अनरस साने ।
सरस माधुरी रसकी बातें रसिक होय सोई जानें ।।

मांझ ।

रस में मगन रसिक जन निशि दिन भाव भक्ति अभ्यासी।
जोगी जंगम कर्मी ज्ञानी पावत ना सन्यासी ॥
सबतें दूर निकट नहिं परसे खोजत फिरें उदासी ।
सरस माधुरी रसिक संग तें सहज मिलें रसरासी ॥

मांझ ।

रसिक रंगीले भावुक रसके दंपति छवि में अटके ।
मगन भावना रहै रैन दिन लेत प्रेम रस गटके ॥
नैंन बान मुसक्यान माधुरी, हिय में हरदम खटके ।
सरसमाधुरी सांचे सोई, आशिक नागर नटके ॥

मांझ ।

सबतें बडे कहावे सोई, दम्पति रस अनुरागी ।
छक रहें छवि युगल माधुरी, निन्दा अस्तुति त्यागी ॥
भीने रहे भावना में नित, पराभक्ति मति पागी ।
सरस बिहार सार निगमागम, जानें जो बडभागी ॥

मांझ ।

मेह नगर में बसे निरन्तर, दिलवर दरश दिवाने हैं ।
शबो रोज सरसार प्रेम में, इश्क अमल मस्ताने हैं ।।
दुनियाँ से बेहोश हमेशा, इक प्यारा पहिचाने हैं ।
सरसमाधुरी सरबस देके, प्रीतम हाथ बिकाने हैं ।

मांझ ।

मिले सजाती अपना कोई, दिलको खोल करो बतियां ।
इष्ट समान जान जिय अपने,लिपट लगो तिनकी छतियां ।।
जिनके हाथ हाथ अपने की, लिख पठवो पियको पतियां ।
सरसमाधुरी रंग में राचें, जान परे नहिं दिन रतियां ।।

मांझ ।

बंध मुक्त दोनों को तज के, आशिक हरि रंग राते हैं ।
लगे रहें महबूब याद में, यों निशि दिवस बिताते हैं ।।
गम की गिजा खुरदनी जिनके, इस्क अमल मदमाते हैं ।
सरसमाधुरी रहे श्याम संग, आते कहीं न जाते हैं ।।

मांझ ।

बच्छा के नित संग संग धावत, ज्यों धेनु लवाई है ।
त्यों सन्तन के साथ श्याम घन, रहत सदा सुखदाई है ।।
भक्तन से हित कियें बसत हिय तत छिन कुंवर कन्हाई है ।
सरसमाधुरी हरि प्राप्ती की, सतगुरु रीत बताई है ।।

इति सन्त महिमा सँपूर्णम् ।

श्री सत्संग महिमा ।

श्री राधा सरसविहारिणे नमः

श्री सत्संग के पद।

दोहा

प्रेम भक्ति एकहु पलक, कोटि वर्ष को योग।
प्रेम भक्ति सब योग है, योग प्रेम बिन रोग॥
प्रेम भजन सतसंग की, खोली सरस दुकान।
आढ़त है हरि जनन सों, निश्चय लीजे जान॥
आवें सो सौदा करें, हरिजन अधिक सुजान।
इष्ट मिष्ट सज्जन सुखद तिन पर वारूं प्रान॥
परा भक्ति की पैंठ में, ठाडे रसिक दलाल।
हिल मिल के सौदा करें, युगल बिहारीं लाल॥
अनन्य साधन संबंध अनन्य, अनन्य प्रयोजन जान।
ऐसी सुदृढ अनन्यता, विरले में पहिचान॥

सेवक लक्षण॥

सेवक जो सेवा करै, रहै युगल प्रभु पास।
सेवा को चूके नहीं, चरण कमल की आस॥
चरण कमल की आस, सदा दंपति गुण गावे।
हर्ष न हृदय समाय, पुलक सब तन में छावे॥
नयन अश्रु धारा बहै, सरस दरस की प्यास।
सेवक सो सेवा करे, रहै युगल के पास॥

राग सारंग।

जो कोई जग में प्रेम दिवाने, जक्त भोग सब रोग पिछाने।
ऋद्धी सिद्धी लगी फिरे नित, तिनकी ओर दृष्टि नहिं ताने॥
तीन लोक को राज तुच्छ सम, धूर सुमेरु कुवेरु बखाने।
पुन्य महातम साधन सिद्धि, इनसों रुचि सुपने नहिं आने॥
अनुरागी राधाबल्लभ के, रूप माधुरी माँहिं छकाने।
सरसमाधुरी मगन रैन दिन, पिय प्यारी के हाथ बिकाने॥

राग सिंदूरा।

जानत प्रीति की रीति बिहारी।
भावाधीन मीन जल जैसे, भक्तन के भय हारी॥
वात्सल्य भक्तिवश हो के, प्रगटे ब्रजहि मँझारी।
नंद नंदन यशोदा नंदन, हो श्याम रूप तन धारी॥
विश्वम्भर कहि वेद बखानें, प्रभुता अपरम्पारी।
माखन चीर चोर कहलाये, लोक लाज तज सारी॥
सखा भाव ग्वालन संग गवने, वन में श्री वनवारी।
वत्स धेनु सह प्रीति चराई, खाई छाक कुठारी॥
ब्रज गोपिन को प्रेम अलौकिक, लख मोहन तेहि वारौ।
बेन बजाय बुलाई बन मैं, रास रच्यो रिझवारी॥
प्रेम परीक्षा कारण प्रभु तब, दुरे विपिन गिरिधारी।
जानि विरह व्याकुल पुनि प्रगटे, विनय करी वड भारी॥

मांगी क्षमा मदन मोहन ने, हाथ जोर बहु वारी।
जन्म जन्म प्रति ऋणी तुम्हारो,यह मुख गिरा उचारी।।
परम दयाल कृपाल महा प्रभु पुरुषोत्तम हितकारी।
शरणागत रक्षक राधावर, सरस माधुरी वारी।।

॥ पद ॥

जगत में भक्ति बड़ी सुख दानी ।।
जो जन भक्ति करे केशव की, सर्वोत्तम सोई प्रानी।
आपा अर्पन करे कृष्ण की, प्रेम प्रीति मनमानी।।
सुमेर सु रुचि सनेह श्याम को, सहित कर्म मन बानी।
श्रीहरि छ्दि में छको रहत नित,सोइ सच्चा हरि ध्यानी।।
सब में देखे इष्ट आपनो, निज अनन्य पन जानी।
नैंन नेह जल द्रवत रहत नित, सर्व अंग पुलकानी।।
हरि मिलने हित नित उमगे चित,सुध बुध सब बिसरानी।
विरह व्यथा में व्याकुल निश दिन,ज्यों मछली बिन पानी।।
ऐसे भक्तन के वश भगवत, वेदन प्रगट बखानी।
सरसमाधुरी हरि हँस भेटें, मेटें आवन जानी।।

मांझ ।

(१)

कृष्णहि साधन कृष्ण प्रयोजन, कृष्ण संबंधी हो जावे।
भाव उदय कर कृष्ण हि प्रीतम, नैंनन प्रेम प्रवाह बहावे।।
कृष्णहि प्रीति प्रकाश करे उर, कृष्णहिं ले मन मोद बढावे।
सर्स की माधुरी रूप रसामृत, प्यायके कृष्ण सुप्रेम दृढावे ।।

(२)

मन जब जक्त बासना भूले, भाव रूप में जाय समाय।
पर सरूप प्रत्यक्ष होय तब, सेव मानसी बनि है आय ।।
गौर श्याम अभिराम धाम छबि, नैंनन के मांहीं झलकाय।
सरसमाधुरी मगन रहै नित, देह गेह की सुधि बिसराय ।।

(३)

गोपी जन की रती समर्था, तत् सुख तामें गिनों प्रधान ।
समंजसा पटरानी की रति, तत्सुख स्वसुख दोनों जान ।।
साधारन कुब्जा की रति है, स्वमुख काममइकरी बखान।
सरसमाधुरी तीन भाव ये, रतिके सज्जन लेहु पिछान ।।

(४)

सबसे उत्तम कहैं वैष्णव, मर्यादी तिन तें अधिकाय ।
तिन तें बडे कहैं सनेही, प्रेम मांहि सो रहे छकाय ।।
तिनते हैं आसक्तिवान बड, मन दम्पति दर्शन ललचाय ।
सरसमाधुरी व्यसनवान सो, सर्वोपरि कहे रसिकन गाय ।।

(५)

बिना लखे प्यारी प्रीतम के, सर्व अंग में ज्वर चढ जाय ।
व्याकुलता मन ग्लानी होयपुनि,उद्वेग उन्मादहि प्रगटाय ।।
सोच हर्ष हो रुदन करे अति, व्यभिचारी सोइ भाव कहाय ।
सरसमाधुरी यही अवस्था, कहि सर्वोपरि सबन सुनाय ।।

(६)

लगन लगाय लाडली लालन, निश दिन गुणगण गाना ।
रचि के प्रेमरंग श्री दम्पति, नचि बहु भाव बताना ।।
गौर श्याम अभिराम रूप रस, पीकर प्रेम छकाना ।
सरसमाधुरी ध्यान धार उर, रहिये मन मस्ताना ।।

(७)

अनुभव योग्य वैष्णव सो है, ध्यान किये आपत्ति नशाय ।
सोई सहवास योग्य भल जानों,पर उपकार करे चितलाय।।
संभाषण के योग्य सोइ है, इष्टदेव में प्रेम दृढाय ।
दर्शन योग्य भेष धारीहै, कर सत्कार सरस सुखपाय ।।

(८)

केवल भोजन ज्ञान हुयेसे, भूख जीव नहिं जाती है ।
अरु राजा के ज्ञान मात्र से, कुछ सिद्धी नहिं पाती है ।।
यों ही ज्ञान जान लेने से, ठण्डी होत न छाती है ।
सरसमाधुरी भक्ति कियें तें, हरिपद सुरति समाती है ।।

(९)

सांत दास्य वात्सल्य सख्य रस, उत्तम जो मन भावे ।
इन सबतें श्रृंगार सर्व पर, बिन गुरु कृपा न पावे ।।
चारों रस या में नहिं मिश्रित, यह सब में झलकावे ।
सरसमाधुरी सर्वोपरि यह, रसाधीश कहलावे ।।

(१०)

जितने हैं मत पंथ जक्त में, तिनसे प्रेम निराला है ।
ज्ञान विराग योग जप तप से, तिनका दर्जा आला है ।।
करम धरम सब नीची मंजिल, यह सबही से बाला है ।
सरसमाधुरी प्रेम प्रीतिसे प्रगट मिलत नन्दलाला है ।।

(११)

विन सतसंगति रंग लागे नहीं, रहस रीति नहिं पावे ।
भाव न उपजे नेंक भक्ति का, प्रीति न जानी जावे ।।
प्रेम बिना नहिं नेम कामको, निश्चल बुद्धि न आवे ।
सरसमाधुरी मिलें रसिक गुरु भाव सिंधु उमगावे ।।

(१२)

दीपक बुझे तेल बिन पूरे, अग्नि काष्ठ बिन जाय नसाय ।
घोड़ा अडे बिना फेरे, त्यों विद्या बिन पाठ भुलाय ।।
मार्जन किये बिना मंदिर में, कूडा बढे अधिक अधिकाय ।
सरसमाधुरी रसिक संग बिन, भजन भाव भक्ति घटजाय ।।

(१३)

जोलों जग मायक शरीर सों, वन्यों रहैं या जिय को संग ।
तो लों रसिक संत भक्तन को, नित्य प्रति करिये सतसंग ।।
भजन भावना बढ़े रैन दिन, नेम प्रेम में परे न भंग ।
सरसमाधुरी परा भक्ति को, चढे नित्य नूतन नवरंग ।।

श्रीमद्भगवत सेवा के बत्तीस अपराध

* दोहा *

वाहनादि असवार हो, पहर खडाऊ पांय ।
पदत्राण को पहर के, हरि मन्दिर नहिं जाय ।।
जन्मअष्टमी आदि ले, हरि उत्सव दिन जान ।
सेव करे नहिं श्रीहरी, यह अपराध पिछान ।।
हरि मन्दिर में जाय के, करे नहीं परणाम ।
नमन करे नहिं प्रेम सों, श्रीमत श्यामां श्याम ।।
अशुचि अंग जूंठे वदन, लघु शंकादिक जान ।
बिन धोये कर दंडवत, यह अपराध प्रमान ।।
एक हाथ सों ही करे, श्रीहरि चरण प्रणाम ।
युगल हस्त जोडे नही, यह अपराध निकाम ।।
श्री हरि मूरति सामने, करे प्रदक्षिणा कोय ।
मन में निश्चय कीजिये, यह अपराधहि होय ।।
हरि मूर्ति के अगाडी, बैठे पांव पसार ।
करे अवज्ञा सम्भ्र बिन, पातक लेहु निहार ।।
कमर प्रष्ट घुटनोंन को, वस्त्र बांध कर जोय ।
सन्मुख बैठे श्री हरि, यह अपराधहि होय ।।
श्री मूर्ति के सामने, सोवे पाँव पसार ।
यह भी पातक प्रगट है, कियो शास्त्र निर्धार ।।

श्री हरि सन्मुख बैठके, भोजन करे जो आन ।
यह भी पाप प्रत्यक्ष है, समझें सन्त सुजान ।।
हरि मन्दिर में बैठ के, मिथ्या बोले जोय ।
झूंठ बखानें वार्ता, यह भी पातक होय ।।
हरि मूर्ति सन्मुख कोई, करे पुकार बकवाद ।
यह भी है अपराध ही, करनों वाद विवाद ।।
हरि मन्दिर में बैठ के, जग चरचा अनुवाद ।
मनुष्य मण्डली जोरके, करे सहित उन्माद ।।
मृतक भये प्राणीन कों, और जक्त संताप ।
रोवे मन्दिर बैठ के, सो भी कहिये पाप ।।
मन्दिर मांही बैठ के, करे इर्षा जोय ।
द्वेश करे प्राणीन सों, यह भी पातक होय ।।
हरि मूर्ति के सामने, देहि किसी को दण्ड ।
क्रोध करे मारे हने, यह भी पाप प्रचण्ड ।।
श्री ठाकुर के सामने, जग लोगन को जान ।
देवे आशीर्वाद ही, सोहू पाप पिछान ।।
हरि मन्दिर में बैठ के, बोले वचन कठोर ।
चित्त दुखावे और को, यह पातक शिरमोर ।।
ऊन उपरणा ओढ के, हरि सेवा में जाय ।
बाल गिरे मन्दिर विषे, यह अपराध लखाय ।।

ठाकुर संमुख बैठ के, निन्दा करे बखान ।
यह भी पाप पिछानिये, होय पुन्य की हान ।।
श्री हरि मूर्ति सामने, अस्तुति भाषे और ।
करे बडाई लोक हित, यह पाप अति घोर ।।
हास्य करे जिय और की, बोले वचन अयोग ।
मन्दिर मांही बैठ के, जीव दुखावे लोग ।।
मन्दिर मांहीं बैठ के, छोडे वायु अपान ।
शुचि पवित्रता नष्ट हो, यह भी पातक जान ।।
निज समर्थ तज लोभवश, करे कृपणता जान ।
सेवे नहिं श्री हरि को, यथा शक्ति हित मान ।।
बिना समर्पे प्रभू के, भोग लगे बिन जान ।
भखे वस्तु जो जीव यह, सो पातक अनुमान ।।
ऋतु फल भोग धरे नहीं, श्रीमत राधेश्याम ।
लाड लडा सेवे नहीं, सो भी पाप पिछान ।।
भूत पितर अरु देवता, तिनके भोग लगाय ।
सोइ समर्पे प्रभु को, यह भी पाप कहाय ।।
पीठ फेर के बैंठनो, श्री ठाकुर की ओर ।
यही अवज्ञा विमुखता, अतिशय पाप कठोर ।।
ठाकुर सेवा करत में, जग जिय करे प्रणाम ।
नमन करे डर लोभ बस, यहै पाप को काम ।।

गुरु महिमां कोऊ करे, सुनत रहे चुपचाप ।
निज मुख अस्तुति नहिं करे,सो भी कहियत पाप।।
और देवता की करे, निन्दा आप बखान ।
यह भी कहिगत पाप है, मन में समझ सुजान ।।
अपने मुख ही सों करे, आप बढाई जान ।
लघुता गुण धारे नहीं, यही पाप ले मान ।।
यह बत्तीस जो पाप है, त्याग करो हरि सेव ।
अपनावें ताको प्रभो, ह्वै प्रसन्न हरि देव ।।
श्री वाराह पुराण में, यह सेवा अपराध ।
इन को तज के प्रीति सों, भगवत पद आराध ।।
भक्ति भाव कर सेइये, श्री अरचा अवतार ।
सरसमाधुरी कर कृपा, मिले युगल सरकार ।।

इति श्रीसत्संगमहिमा संपूर्णम् ।

श्री सिद्धान्त प्रकरण महिमा ।

॥ श्री राधा सरसविहारिणे नमः ॥

सिद्धान्त प्रकरण।

॥ दोहा ॥

प्रेम सिन्धु उमगे जबहि, लीजे घट भरवाय।
घट भर लीनों सो रह्यो, बाकी गयो बहाय ॥
विरह अग्नि सों मन द्रवे, मोम सरिस ह्वै जाय।
तामें भाव सुरोपिये, सदा रहे थिर थाय ॥
बीर चढे जब बाम के, तब कछु करे सो होय ।
त्योंही प्रेम उदय भये, मिल चाहे कछु सोय ॥
सत्सँगति की पैठ में, सतगुरु खडे दलाल ।
प्रेम रतन दे लीजिये, युगल लाडली लाल ॥
मो सम अधम न दूसरो, तुम सम अधम उबार ।
नाथ निवाहे ही बने, आन पड़्यो हों द्वार ॥
तुम तज प्यारे कौन सों, अब मैं करो पुकार ।
कौन सुने मो दीन की, अर्जी युगल सरकार ॥
अँगी अंग सु एक हैं, या में मीन न मेष ।
अंगी की सेवा करे, अरी धर्म निज लेख ॥
जीव जुदा नहि ईश तें, अंशी अंश पिछान ।
अंशी के आधीन है, अंश लीजिये मान ॥

सीव जीव दोउ नित्य हैं, जोव सीव ग्राधीन ।
सेवक स्वामी भाव भल, समझे सन्त प्रवीन ।।
ग्रंगीको जो ग्रंग है, जो होवे बेकार ।
ताहि काट विलगाई करे, रखे न ग्रपने लार ।।
स्वामी सेवक भेद कूं, लखे भली प्रकार ।
सरसमाधुरी समझ मन, सकल शास्त्र को सार ।।

दोहा

ग्रवलंबन तज दीजिये, कर एकान्त निवास ।
मौन धार जप ध्यान कर, लेह परम पद वास ।।

सवैया ।।

नामरु धामरु लीला सरुप में,प्रीति जहां तहां ध्यान लगावे।
निश्चय बुद्धि करे ग्रति ही,ग्ररु नित्य निरंतर भाव बढावे।।
श्री गुरु को विश्वास धरे उर, सुरति सदा युग रूप समावे ।
ग्रास जहां दृढ वास लहे सुन, सरस गुरु बलदेव बतावे ।।

सवैया ।।

दम्पति नाम रटे निशि वासर, टेक टरें यह नेंक न टारी ।
ध्यान रहे हिय में नितही,चितवें नित चितत कुंजविहारी ।।
जो षटमास सधे यह साधन, सूज़ि परें सहजे पिय प्यारी ।
सरसकी माधुरी जीव लहे,ग्ररु जीवनमुक्ति मिले सुख भारी।।

छप्पय ।।

जयति जयति शुकसखी, जयति चरणकीदासी ।
रस आचारज मुख्य, श्याम राधिका उपासी ।।
छिन नहिं छांडत संग, अंगजा आनंद रासी ।
नित नव लाड लडाय, युगल की करत खवासी ।।
टहल महल तत्पर सदा, निरखत केलि उमंग सों ।
निश दिन मदमाती रहे, सरसमाधुरी रंग सों ।।

छप्पय ।।

जयति जयति शुकसखि, चरणदासी सुख दानी ।
जोरी गोरी श्याम, नैंन निज कुंज बसानी ।।
दुलरावत दिन रैंन, रसिक दम्पति मन मानी ।
छटा छबीली लली लाल, हिय माँहि समानी ।।
प्यारी प्रीतम अंगजा, कृपा रूप रस खानी ।
सरसमाधुरी यूथपति, वारत तुम पर प्रानी ।।

राग ठुमरी ।।

राधिकाबल्लभ ध्यान धरो उर, राधिकाबल्लभ इष्ट हमारे।
राधिकाबल्लभ नाम जपो नित, राधिकाबल्लभ ही हियधारे।।
राधिकाबल्लभ जीवन है मम, राधिकाबल्लध प्राणतें प्यारे ।
राधिकाबल्लभ नैंन बसे, सरसमाधुरी होत नहीं छिन न्यारे।।

पद राग सोरठ ।।

जन्म लियो जग में तैनें प्रानी, हरि गुण गाले रे।
नर तन पाय न चूक दाव यह, कृष्ण रिझाले रे ।।
साधु संग में बैठ बावरे, जुगल लडाले रे ।
नाम राधिका श्याम प्रेम सों, नेह लगाले रे ।।
सुकृत उदय भयो भल तेरो, मन समझाले रे ।
अब की चूक हूक जो तेरे, जुग जुग साले रे ।।
धन जोबन परिवार नारि सुत, संग न चाले रे ।
हंस अकेला छांड सिधारे, सुन मतवाले रे ।।
ज्ञानी गुणी भक्त सोई सांचो, प्रथम सम्भाले रे ।
सरसमाधुरी शरण चरण की, भव भय टाले रे ।।

पद राग होरी काफी ।।

युगल बिहारी गाऊँ । सुमिर मन मोद बढाऊँ ।।
दम्पति इष्ट मित्र हैं मेरे, जिनको ध्यान लगाऊँ।
रहूँ लगन में मगन रैन दिन, दोउन को दुलराऊँ ।
दरश करके पुलकाऊँ ।।
भूलूं देह गेह सुधि सगरी, भक्ति भाव प्रगटाऊँ ।
रहूँ सदा लौ लीन भजन में, सेवा कर हूलसाऊँ ।।
रूप सहचरी बनाऊँ ।।

निरखत रहूं रंक के धन त्यों, छबि लखि मांहि छकाऊँ ।
लीला ललित निकुंज भवन की, ताही सो मन लाऊँ ॥
अंत नहिं चित्त डुलाऊँ ॥
रसिक जनन सों रहूं निरंतर, संगति कर सुख पाऊँ ।
सरसमाधुरी वृन्दावन बस, अंत कहूं नहिं जाऊँ ॥
विनय कर जोर सुनाऊँ ॥

राग खम्माच ।

लगन जिन की दम्पति सूँ लागी ।
मगन रहे महबूब याद में, घर ही में बैरागी ॥
नाम रूप रस में मतवारे, प्रेम भक्ति हिय जागी ।
पगे रहैं नितही छबि निधि में, सोइ सज्जन बडभागी ॥
निश दिन गरक सनेह नशे में, देह गेह सुधि त्यागी ।
तन जग में मन रंग महल में, सोइ सच्चे अनुरागी ॥
दृग अनन्य आशिक लाशिक सोई,प्रीति रीति मतिपागी ।
सरसमाधुरी युगल लाल की, परम प्रीति जिय जागी ॥

राग मांड की धुनि ॥

श्रीकृष्ण कहत निर्धारा, प्रेमी जन हमको प्यारा ।
अति अनन्य निष्काम भक्त जो,जिनका नित राखन वारा॥

भक्त जाय जहां संगही जाऊं, उनको अर्पित भोजन पाउं ।
यह मैंने प्रण धारा ।।
आरत बचन सुनत अकुलाऊं, ताहीछिन उठकर मैं धाऊं ।
नेक न करत अँवारा ।।
निज भक्तन को सरवस देहूं, पल पल में उनकी सुधि लेहूं ।
करूं सदा प्रतिपारा ।।
भक्तन हित नाना तन धारूं, भू को सबही भार उतारूँ ।
युग युग लों अवतारा ।
जाको जैसो भाव पिछानूं, तासूं तैसी ही रति ठानूं
रसिकन प्राण अधारा ।
ध्यान भक्त धारूं दिन रैना,भक्त बिना मोहि परै न चैना
दूं उनको निज दीदारा ।
हम भक्तन के भक्त हमारे, मैं निज जन उर अन्तर धारे
नाता टरत न टारा ।
भक्तन को ऋनिया कहलाऊं,नित प्रति उनको हुकुम उठाऊं
जाने जानन हारा ।
कपटिनसों नहिं मेल करूं मैं, गर्ब बचन सुन अधिक जरूं मैं ।
उनको भेजूं यमद्वारा ।।
द्रोही भक्त हमें नहिं भावें, देखेहू नहिं हमें सुहावें ।
तिन को करूं गर्व परिहारा ।।

भक्तहि मात पिता परिवारा, सजन सनेही सुत अरु दारा ।
सत यह वचन हमारा ।।
सरसमाधुरी युगल उपासी, करे भावना उमँग हुलासी ।
पावे नित्य विहारा ।।

राग झंझोटी ठुमरी ।

हमारो महल महा सुखदाई ।
निर्गुन सगुन कोट चहुँ ओरी, ब्रह्मानंद गहर जहां खाई ।।
निह अक्षर है छरीदार जित, मुक्ति मजूरी करत तहाँई ।
वेद चार वंदी जन ठाडे, नेति नेति गावत हरषाई ।।
श्रीपति ध्यान धरत निश वासर, शिव विरंचि रहें शीस नवाई।
चतुर व्यूह चारों दरवाजे, पहरो देत सुहेत लगाई ।।
काल कर्म गुण बँदुवा जितके, नीचे नैंन किये शिरनाई ।
सप्तपुरी अरु अडसठ तीरथ, परिक्रमा देवे हुलसाई ।।
नौधा द्वार खरी अलबेली, दशधा धाम मांहि पहुँचाई ।
परा रहत परिकर में हिलमिल, गुरु बिन मिलन जासु कठिनाई
भाव सहचरी ध्यान मानसी, करें रसिक जो प्रेम बढाई ।
सो पावत परधाम प्रिया पिय, सेवें श्यामा श्याम लडाई ।।
श्री शुकसखी सर्वोपरि स्वामिनि, चरणदासि आचारज भाई।
सरसमाधुरी सम्पति दम्पति, श्रीबलदेव दयाल बताई ।।

राग विहाग ।

हमारे युगल विहारी प्रान ।
श्री राधा हरनी भव बाधा, सुन्दर श्याम सुजान ।।
नाम धाम लीला गुण इन के, करूँ दिवस निशि गान ।
और कर्म सब भरम पिछाने, इन सम लखे न आन ।।
यहि जप तप नित नेम कृपा व्रत, वेहि तीरथ अस्नान ।
गायत्री सन्ध्या अरु तरपन, पूजा पाठ पिछान ।।
त्याग विराग तपस्या येही, येही पुन्य अरु दान ।
येही जोग की जुगति हमारे, साधन प्रान अपान ।।
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय है यही, येही ध्याता ध्यान ।
ध्येय वस्तु इन्ही को जानें, सकल सुखन की खान ।।
चतुरवर्ग साधन फल येही, करुणा करन महान ।
अवतारन हूं के अवतारी, विभु व्यापक भगवान ।।
इन ही की महिमां को गावें स्मृति अरु वेद पुरान ।
परमतत्व परमातम येही, अध्यातम विज्ञान ।।
तात मात भ्राता सुत येही, सजन सुहृद लिये मान ।
छिन छिन रक्षा करत हरत दुख, पूरण कृपा निधान ।।
ओं सोहं की बात उरे ही, अजपा की तज बान ।
क्षर अक्षर निह अक्षर आगे, जिनको है अस्थान ।।

ब्रह्मानंद निरस अति लागत, लखि तिन मृदु मुसक्यान ।
परमानंद प्रेमरस बकसत, निज जन अपने जान ।।
भुक्ति मुक्ति परम सनेही, येही पद निरवान ।
सरसमाधुरी रूप सिंधु में, रहूं सदा गलतान ।।

राग सोरठ ।

श्री कृष्ण कृष्ण नहिं गाया जग भरमाया रे ।।
कर विचार कोइ उमर गमावे, कोई ब्रत की बात बनावे ।
इन साधन कर हाथ नहीं कुछ आया रे ।।
कोई सर्वोतम भाव बिचारे, एक अद्वैत ज्ञान उच्चारे ।
सोहं हंस सरूप में ही ललचाया रे ।।
परम हंस परमात्मा प्यारा, पुरुषोत्तम परब्रह्म अपारा ।
जाका जक्त पसारा सो नाहिं लखाया रे ।।
भारत और भागवत गीता, व्यास वचन सुन करो प्रतीता ।
वासुदेव सों बिलग न ब्रह्म बताया रे ।।
श्री शुकदेथ दयाल गुसाईं, परम हंस तिन सम कोइ नाहीं ।
नंदनंदन का निश दिन ध्यान लगाया रे ।।
श्री सतगुरु बलदेव हमारे, जिनके वचन हिये में धारे ।
श्यामसुन्दर का सुमरन सार वताया रे ।।
सरसमाधुरी छवि में अटके, सहजहि छूटे जक्तके खटके ।
अंत कहूं नहीं भटके प्रीतम पाया रे ।।

राग विहाग ।

श्रीमत वेद ब्यास को नंदन, श्री मुनिवर शुकदेव न गायो।
श्रीभागवत सुनी नहीं श्रवणन, वृथाजन्म जगमें तिनपायो ॥
सेये नहीं श्री दंपति निजकर, बिषय बिकारन मांहि लुभायो।
बसो नहीं श्रीबृन्दाबन में, सत्संगति में मन न लगायो।
ध्यान मानसी कियो न कपटी,पर तिय पर धनको ललचायो
सरसमाधुरी महा मूढ नर, नरतन रतन श्रमोल गमायो।

राग विहाग ।

हमारे श्री दम्पति सुख रास ।
गौर श्याम सुन्दर सोभा निधि, नित नव नेह प्रकाश ।
करत केलि श्रीवन कुंजन में, श्रद्भुत रास विलास
श्रति श्रानंद श्रलौकिक लीला, लखि मन होत हुलास ।
श्री शुकसखी चरणकीदासी, जिनकी खास खवास
रुचि श्रनुकूल करें सिवकाई, नित्त निरन्तर वास ।
श्रनगिनसखि सहचरी प्यारी, तिन को तहां निवास
युगल लाल सेवा हित तिनको, नित वृन्दाबन वास ।
श्री बलदेवी सखी स्वामिनी, मोहि तुम्हारी श्रास
सरसमाधुरी टहल महल की, मिले यही विश्वास ।

राग बरबा ।।

हमारो श्री हरि सों अनुराग है ।
जो जो भंग भजन में डारें, तिन सबही को त्याग है ।
युगल बिहार अहार अलौकिक, तामें चित्त रह्यो पाग है ।।
लगन लाल में मगन रहें नित, यह जप जोग बिराग है।
आठों पहर प्रेम परिपूरन, अब जागे सखी भाग है ।।
सरसमाधुरी मिली श्याम सों, पायो अचल सुहाग है ।

राग धनाश्री ।।

सर्वेश्वर श्री सरस बिहारी ।
परतें पर जिन नाम धाम है, लीलारूप कहत श्रुति चारी ।
अवतारन की भक्ति करें बहु, तब प्रापत होवें अवतारी ।।
जिनकी परम कृपा करुणा तें, होय चरण रति राधे प्यारी।।
तब भाविक को भाव सफल हो, करे सेव होवे सहचारी ।
सरसमाधुरी मगन रैन दिन, दंपति रंगमहल अधिकारी ।।

राग भैरवी ।।

विहारी तेरी लीला के बलिहार ।
गुप्त प्रगट सब तूही तू है, तेरा भेद अपार ।।

एक से भये अनेक आप तुम, कियो जक्त बिस्तार ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अनगिन, देव दनुज नर नार ।।
नाना योनि रूप किये अनगिन, जिनको वार न पार ।
गरणपति शेष शारद आदिक, गिनत गिनत गये हार ।।
सब में रमें पृथक सबही तें, अद्भुत खेल तुम्हार ।
अवतारी अवतार भेद बहु, तिन के अमित प्रकार ।।
नित नव कला प्रभु प्रगट तेरी, हो कौतुक भण्डार ।
पञ्चतत्व त्रय गुरण मिश्रित कर, रचो सकल संसार ।।
आप खिलाडी खेल रचैया, आपहि खेलनहार ।
हो सर्वज्ञ व्याप रहे सब में, आदि पुरुष अघहार ।।
दूर से दूर कहावत तुमही, बुधजन करत विचार ।
निकट तें निकट तुमही नट नागर, सर्वेश्वर सरकार ।।
गुरण अनंत अगनित स्वरूप है, नेति कहत श्रुतिचार ।
रहत स्वतंत्र अनंत अगोचर, अविनाशी अविकार ।।
अकथ अनीह अखिल जगस्वामी, अद्भुत सिरजन हार ।
बुधि बाणी से परे प्रभू तुम, अनभ बजावत हार ।।
कृपासमुद्र दयानिधि कहियत, दीनबन्धु दुख हार ।
भक्तवत्सल करुणामय केशव, अति कृतज्ञ दातार ।।
विपति विदारण विरद दयालू, निज जन लेत उबार ।
सच्चे सैंयां आप गुसैंयां, सुहृद सजन दिलदार ।।

प्रेमिन के ऋणियां तुम प्यारे, फिरत रहत तिन लार ।
प्रीति अलौकिक पालत जन सें, प्रियवर परम उदार ।।
प्रेम विवश परतन्त्र महा प्रभु, संतन के सरदार ।
अपने जन के निकट रहत नित, छैल छबीले यार ।।
भावाधीन मीन जल जैसे, रसिकन के रिझावर ।
रसस्वरूप रंगभीगे हो तुम, प्रीतम प्राण अधार ।।
एक नेह को नातो मानत, प्रभुता देत विसार ।
सुन्दरता की खान प्राण धन, नटवर नन्द कुमार ।।
हँस भेटत मेटत दुख जन के, होत हृदय को हार ।।
सरसमाधुरी शरण हरण मन, संकट देत निवार ।।

पद राग भैरवी ।

परमातम पुरुषोत्तम प्यारा, परब्रह्म अवतारी है ।
एक अनेक भयो है आपहि, लीला जग विस्तारी है ।।
पुरुष प्रकृति होय पुनि आपहि, महत्तत्व वपु धारी है ।
पंचतत्व त्रिय गुण की रचना, आपहि सुघर सँवारी है।।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अनगिन, सुर नर किये अपारी है।
कबहुँ अनेक एक हो कबहु, ऐसे खेल खिलारी है ।।
स्वयं आकाश धाम है आपहि, लीलारस विस्तारी है ।
रास खिलैया रास रचैया, आप रसिक रिझवारी है ।।
गुरुगम भान उदय भयो हिय में, दिव्य दृष्टि भई प्यारी है।
सूझ परी सांची सब लीला, आनंद भयो अपारी है ।।

मो में हरि हरि में मैं मिल रह्यो, वस्तु नहीं कुछ न्यारो है।
नित संयोग वियोग न कबही, लगी श्याम सों यारी है।।
श्री गुरु कृपा प्रेम रस पीवत, जासों मोरि जिवारी है।
सरसमाधुरी हर दम मिल, हरषत हृदय मँझारी है।।

राग विहाग।

श्री शुक संप्रदाय आश्रित जन, जिनकी गति मति विरले जानें।
उज्जवल रस लीला रंग भीनें, रसिक होय सोइ मर्म पिछाने।।
नाम जपे मुख कुँजबिहारी, सहचरि रूप आपनों ठानों।
सेव मानसी मगन रैन दिन, दंपति की छवि मांहि छकाने।।
वृत्ति सतोगुण परम वैष्णव, श्री तिलक पीताम्बर बाने।
तुलसी कंठ माल गल शोभित अमृत के सम वचन बखाने।।
सबके प्यारे सबसों न्यारे, यही भाव दृढ उर में आने।
अति अनन्य अनुराग भरे मन, श्री हरि हित कर और न माने।।
एक आस विश्वास युगल के, प्रेम मगन तन दशा भुलाने।
सरस माधुरी रंगमहल में, श्री राधा बर दरश लुभानें।।

राग सोरठ।

सखी हम दम्पति रहस्य उपासी।
रस लीला आराधक निश दिन, निज वृन्दावन वासी।।

जोगी रोगी सोगी नाहीं, विरक्त नहीं उदासी ।
ज्ञानी अभिमानी हम नाहीं, नहिं मौनी सन्यासी ।।
षट कर्मी भर्मी हम नाहीं, नहिं जप तप अभ्यासी ।
मगन मानसी सेवा में नित, निरखें कुंज बिलासी ।।
रसिक सजाती बंधु हमारे नित संग प्रीति प्रकासी ।
भगवत बिमुख भूल नहिं भेटें, गति अनन्य रस रासी ।।
निराकार निरगुण नहिं मानें, प्रेमानंद हुलासी ।
श्री शुक सखी चरण शरणागति, सरसमाधुरी दासी ।।

राग पीलू ।

हमारी हेली स्वामिनि श्यामा प्यारी ।
भान भवन की भूषण भामिनि, कीरति कुल उजियारी।।
प्राणाधार प्रिया प्रीतम की, सखियन की सुख कारी ।
सरसमाधुरी शरन चरन की, शोभा लखि बलिहारी ।।

राग झंझोटी ।

हमारे प्यारे राधा सरस बिहारी ।
करत केलि कमनीय कुंज में, अवतारन अवतारी ।।
अंश कला इन ही की जानो, विधि विष्णू त्रिपुरारी ।
नित्य किशोर रूप की राशी, बिच वृन्दावन चारी ।।

माया काल कर्म गुण तीनों, इनके आज्ञा कारी ।
सरसमाधुरी के स्वामी की, सबसे लीला न्यारी ॥

राग ठुमरी ।

हमारे सखी इष्ट निकुँज बिहारी ।
रसिक रंगीले छैल छबीले, सो मेरे हितकारी ।
प्यारी के जीवन धन मोहन, जिन की जीवन प्यारी ॥
मेरे तो जीवन धन दम्पति, प्रीतम प्राण अधारी ।
निश दिन रंग लली लालन के, प्रेम मगन मतवारी ।
सरसमाधुरी शोभा ऊपर, तन मन धन सब वारी ॥

राग विहाग ।

जय जय श्री युगल विहारी ।
कुँज नृपति नव नागरि नागर, रस सागर रसिकन रिझवारी॥
अधम उधारन जन निस्तारन, तारन तरन भक्त भयहारी ।
श्यामल गौर किशोर किशोरी, जोरी भोरी अति सुकुमारी ॥
विधि हरि हर विनवत निश वासर, अवतारन हू के अवतारी
कीजिये कृपा कमल पद सेवा, सरसमाधुरी शरण तिहारी ॥

राग जौन पुरी टोडी ।।

ठाकुर राधेश्याम हमारे ।
निर्गुण सर्गुण कला हैं इनकी, ये दोउन तें न्यारे ।।
वेद पुरान पार नहीं पावत, नेति हि नेति पुकारे ।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव अनगिन, रहें हुकम में सारे ।।
जोगी जपी तपी सन्यासी, बैठें खोज बिचारे ।
सुर नर मुनि जन चारों युगके, ध्यान लगा कर हारे ।।
कोइ कोइ तत्व अकाश समाये, कोई जोत में जारे ।
कोइ कोइ जाकर शून्य समाये,युगल मिले नहिं प्यारे ।।
जिनको मिले रसिक श्री सतगुरु, ध्यान मानसी वारे ।
प्रेम परा भक्ति लहि तिन सूँ, सो परधाम पधारे ।।
भुक्त मुक्त के पर पुरुषोत्तम, भक्तनके रखवारे ।
अमर लोक बिच अचल सिंहासन, ब्राजें प्राण अधारे ।।
उत्पत्ति प्रलय होत जहां नाहीं, काल कर्म गुण टारे ।
आवागमन त्रास चौरासी, सङ्कट छूटें भारे ।।
श्री सतगुरु बलदेव दास प्रभु, चरन कमल उर धारे ।
सरसमाधुरी शरण कृपा बल, लाडिली लाल निहारे ।।

राग प्रभाती ।

जीवन मुक्त भये जो प्राणी, जिन पाया गुरु ज्ञाना है ।
गर्क रहे गोबिंद गुण माहीं, किया प्रेम रस पाना है ॥
सतगुरु ने निज मंत्र सुनायो, सो सांचा कर माना है ।
तिलक भाल तुलसी गल माला, सुन्दर यह ही बाना है ॥
मगन मानसी सेवा में नित, सोई अधिक सयाना है ।
सरसमाधुरी रंग महल तज, अंत कहूं नहिं जाना है ॥

श्याम कल्याण ।

कृष्ण कृपा से सब ही बनि आवै,
मन मेरे अंत कहां भटकावै ।
तीर्थ नहान देवे बहु दान,
पिय नाम समान नही श्रुति गावै ॥
जोग अरु ज्ञान विधान क्रिया किये,
प्रेम भक्ति नहीं प्रगटावै ।
ब्रत बैराग अरु त्याग तपस्या से,
दृढ अनुराग नहीं और छावै ॥
रसिक अनन्यन संग किये तें,
मानसी ध्यान हिये में समावे ।
दर्शन दम्पति होन लगे जब,
सो सुख मुख वरना नहिं जावे ॥

हो निष्काम श्याम अरु श्यामा सों,
नित्त निरन्तर नेह लगावै ।
सरस की माधुरी मौज लखे,
अरु रंग उमंग हिये में बढावै ।।

राग मलार ।।

हमारी माई श्यामा जू सरदार ।
जिनके गुण गावत बंशी में, नित प्रति नन्द कुमार ।।
पावत रीझ प्रिया सों पीतम, नवल निकुंज विहार ।
सरसमाधुरी रस बस ह्वै पिय, देत अपनपौ वार ।।

कुण्डली ।

सम्प्रदाय श्री शुकसखी, सरसमाधुरी छाप ।
नित्य विहार उपासना, युगलनाम मुख जाप ।।
युगलनाम मुख जाप, पगे छबि युगल विहारी ।
उज्जवल रस आवेश छके, श्री प्रीतम प्यारी ।।
दृढ अनन्य संबंध, मिलें बिन होत न कारज ।
श्यामचरण के दास, प्रगट भये रसिकाचारज ।।

कुण्डलियां ।

॥ १ ॥

रसिक हमारी जात है, रसिक हमारी पात ।
रसिक हमारे श्री गुरू, त्रिभुवन में विख्यात ॥
त्रिभुवन में विख्यात, श्री शुक मुनिवर स्वामी ।
रसाचार्य श्याम चरणदास, तिन पथ अनुगामी ॥
इष्ट मिष्ट अभिराम, बिहारिन नित्य विहारी ।
सरस भागवत ग्रन्थ, पराको पंथ सुखारी ॥

॥ २ ॥

रसिक हमारे प्राण धन, हम रसिकन आधीन ।
प्रीति परस्पर प्रेम निधि, तामें नित लवलीन ॥
तामें नित लवलीन, संग रसिकन को भावे ।
बिछुरत ज्यों जल मीन, महा मन में अकुलावे ॥
रहैं निरंतर संग, रहस दम्पति मन दीनें ।
सरसमाधुरी छकन छकें, निश दिन रंग भीनें ॥

॥ ३ ॥

गावें श्यामा श्याम को, ध्यावें श्यामा श्याम ।
निरखें श्यामा श्याम को, यही हमारो काम ॥

यही हमारो काम, नाम दम्पति लो लागी ।
निज सेवा सुख रंग, महल लीला अनुरागी ।।
सरसमाधुरी रंग रंगे, मदमाते डोलें ।
मिलें सजाती संग खोल, अंतस मृदु बोले ।।

।। ४ ।।

नाम रूप लीला ललित, श्री वृन्दावन धाम ।
रसिक रमें इन चार में, औरन ते नहिं काम ।।
औरन तें नहिं काम, अंत मन नेक न लागे ।
ज्यों चातक जल स्वाँति, बिना औरे जल त्यागे ।।
योंहो रसिक अनन्य, अन्य चित में नहिं लावें ।
सरसमाधुरी रस विहार, निरखें अरु गावें ।।

।।५।।

सब धामन सें सोहनों, श्री वृन्दावन धाम ।
सब जग को मन मोहनों, नाम राधिका श्याम ।।
नाम राधिका श्याम, रूप छबि निधि पिय प्यारी।
सर्वोपरि सुख रूप, रास लीला मनहारी ।।
कुंज विहार अहार, प्राण धन युगल विहारी ।
सरसमाधुरी निरख नैंन, दम्पति पर वारी ।।

॥६॥

जोरी युगल किशोर की, अति सुन्दर अभिराम ।
प्रगटी भूतल भाव बस, गौर वरण तन श्याम ॥
गौर वरण तन श्याम, तडित घन की उनहारी ।
सदा संग रस रंग रंगी, छिन होत न न्यारी ॥
रसिक मोर मन मुदित, निरख नैना अनुरागे ।
सरसमाधुरी सरस रंग, आनन्द रस पागे ॥

॥७॥

रजधानी वृन्दा विपिन, राजा राधेश्याम ।
ब्रज चौरासी कोस में, राज परम अभिराम ॥
राज परम अभिराम, कुँज जानों चौरासी ।
रसिक गुरु जब मिलें, लहें तब महल खवासी ॥
पावे नित्य विहार, परम उज्वल रस चाखे ।
सरसमाधुरी युगलभाव, निश्चय दृढ जाके ॥

॥८॥

रसिक संत हरि गुरुन में, जाको दृढ़ विश्वास ।
मगन मानसी सेव में, चरण कमल की आस ॥
चरणकमल की आस, भाव निज सखि विचारे ।
समय समय की सेव करे, आपनपौ वारे ॥

रटे नाम अभिराम रसिक प्रीतम अरु प्यारी ।
सरसमाधुरी सोई रसिक रस, को अधिकारी ॥

।६॥

तीन अवस्था तीन तन, श्रीगुरु गम ते त्याग ।
नव किशोर लावण्य निधि, तुरिय रूप में जाग ॥
तुरिय रूप में जाग, भूल आपनपौ जइये ।
निज स्वरूप को चीन्ह, रूप पर की सुधि लहिये ॥
सदचिदघन आनंद, परा को पंथ पिछानों ।
सरसमाधुरी रसिक संग, दंपति रंग मानों ॥

॥१०॥

माया कालरु कर्म गति, नहीं त्रिगुण विस्तार ।
इकरस धाम अखंड नित, ताको वार न पार ॥
ताको वार न पार, सर्वोपरि स्थिर सोई ।
परमतत्व निर्धार, लखे जो गुरु मुख होई ॥
स्वयं प्रकाशी धाम है, धामी युग सरकार ।
सरसमाधुरी करत तहां, नित नव विविध विहार ॥

॥११॥

जोगी जंगम थकि रहे, मौनी साधी मौन ।
वैरागी बौरे भये, वरण सके अब कौन ॥

वरण सके अब कौन, वेदहू नेति बखाने ।
कुंज महल की बात, कोई महली ही जाने ।।
मरमी सतगुरु रसिक वर, श्री वलदेव उदार ।
सरसमाधुरी तिन शरण, निरखत नित्य विहार ।।

छप्पै ।।

उलट लगे मन श्याम, भाव श्यामां तब पावे ।
सखी भाव तब लहे, पुरुष को भाव मिटावे ।।
करे सजाती संग, विजाती निकट न जावे ।
तब अंत समय तुर्य रूप, निज नैंन लखावे ।।
पर सरूप पहिचान, भोग तत्सुख सुख माने ।
सरस माधुरी स्वाद, सोई निश्चय कर जाने ।।

छप्पय ।

अवलंबन तज देइ, बास एकांत करीजे ।
मौन होय हरिनाम जपे, आनंद रस पीजे ।।
मगन मानसी ध्यान, रूप में चित्त लगावें ।
अष्टयाम की रीति भांति, कर युगल लडावें ।।
यहि विधि जो रहनी रहै, लहे परम पद धाम ।
सरसमाधुरी रीझि के, मिलें राधिका श्याम ।।

मांझ।

योग वाशिष्ट वशिष्ट न भाषा, यह निश्चय कर जाना है।
गाया जो आतम पुराण, इसका कहीं नहीं प्रमाना है॥
कहै पुराण अठारह जिन को, जाने सकल जहाना है।
सरसमाधुरी कल्पित पुस्तक, सो मन में नहिं माना है॥

मांझ।

मुक्ति चाह तज मुक्त हुये, हमें बंधन प्रेम पियारा है।
अहं ब्रह्म अज्ञान आसुरी, शिर से पटका भारा है॥
भक्ति गरीबी गही दीनता, दास्यभाव उर धारा है।
सरसमाधुरी के रसके आगे, और लगे रस खारा है॥

मांझ।

अहं ब्रह्म अहमक बकते हैं, जिनके हिये अंधेरा है।
आशिक सादिक हुये जिन्हों ने, तुही तुही कर टेरा है॥
मजा अजायब इश्क पंथ में, मन मुरशद ने फेरा है।
सरसमाधुरी कहे जबाँ से, मैं तेरा तू मेरा है॥

मांझ

वह मुरशद गुरु पीर जिन्होंने, सत् सिद्धान्त सुनाया है।
ईश जीव माया स्वरूप को, भिन्न भिन्न समझाया है॥
माया जीव दोउनका मालिक, ईश्वर को बतलाया है।
सरसमाधुरी गीता का मत, मेरे मन में भाया है॥

मांझ !

ईश्वर अंश जीव अविनाशी, माया संग भुलाया है।
पय पानी संग एकमेक हो, निःस्वरूप बिसराया है॥
हंस रूप सतगुरु ने दीनी, तब ही भिन्न लखाया है।
सरसमाधुरी चित्त चेतन हो, विषयानंद नशाया है॥

मांझ

आफताब के तेज नूर से, ज्यों जर्रा चमकाता है।
ऐसे ईश्वर की सत्ता से, जिय चैतन्य कहाता है॥
अंशी अंश भेद इतना है, बिन गुरु लखा न जाता है।
सरसमाधुरी रमज़ आशिकी, आशिक हो सो पाता है॥

मांझ

अहं ब्रह्म कह ईश्वर निन्दे, नशा नीच ने खाया है।
बेहोशी तज होशियार हो तू, किसने यों बहकाया है।।
मैं मैं परहर तुही तुही कर, उनहींने पिय पाया है।
सरसमाधुरी हरि हरि कह के, प्रीतम से लो लाया है।।

मांझ।

गुण अनंत संयुक्त ताहि शठ, निर्गुण ही ठहराते हैं।
जिस से सब आकश प्रकट वह, निराकार बतलाते हैं।।
इन दोनों से जुदा सदा, आशिक उससे मन लाते हैं।
सरसमाधुरी इश्क किये से, उस प्रीतम को पाते हैं।।

मांझ।

माया के मखलूत नहीं गुन, यों निरगुन कहलाया है।
माया से आकार बना नहिं, निराकार यों गाया है।।
अमित अमायक गुन तन नूरी, ऐसा प्रीतम पाया है।
सरसमाधुरी सनम सलौना, मेरे मन में भाया है।।

मांझ।

अगुन सगुन दोउ नाम श्याम के, वह दोनों से न्यारा है।
लासानी दिलजानी दिलबर, जीवन प्राण हमारा है।।
अद्वितीय उस सा दूजा नहिं, वेदों प्रगट पुकारा है।
एको ब्रह्म दूसरो नाहीं, सरस माधुरी प्यारा है।।

मांझ !

वेद नेति कर बोलत जिसको, शंभु समाधि सँभारी है।
थके गणेश मुनी जन जितने, बुद्धि शारदा हारी है॥
गुण ऐश्वर्य्य गिने नहिं जावें, भेद अनंत अपारी है।
यही समझ के सरस माधुरी, छवि प्रीतम उर धारी है॥

मांझ।

कोई कहै बडा निर्गुण है, कोई कोई सगुण बताता है।
इन बातों की बहस वाद में, हाथ नहीं कुछ आता है॥
सूद नहीं कुछ बकवादों में, नफा भाव में आता है।
सरस माधुरी प्रेम किये तें, उस प्रीतम को पाता है॥

मांझ।

चश्मों से जो चमन लखा, सबमें आती बू तेरी है।
चन्दा सूरज और सितारे, सबमें अधिक उजेरी है॥
दमक चमक हर तरफ चारसू, तेरी जीवन मेरी है।
सभी जगह भरपूर तुही तू, सरस माधुरी चेरी है॥

मांझ।

मर्कट सुवन मात उर लिपटत, दृढ कर उसको गहता है।
तब ही लो संजोग उसीका, माता के संग रहता है॥
जो कदापि छुटजाय हाथ तो, गिर धरनी दुख सहता है।
योंहीं गति ज्ञानी की जानो, सरस सत्य मुख कहता है॥

मांझ।

मार्जारी अपने बच्चों को, निज मुख पकर उठाती है।
उत्तम ठौर ठिकाने हित कर, भली भांति ले जाती है॥
मात भरोसे मगन अकर्ता, भक्ति रीति इस भांती है।
सरस माधुरी गति अनन्यता, विरले जन में आती है॥

मांझ।

जैसे ईख उस ही के रस से, गुड़ शक्कर हो जाता है।
लाख जतन से गुड शक्कर, गन्ना होने नहिं पाता है॥
योंही जीव ब्रह्म से बन फिर, द्वैत भाव कहलाता है
सरसमाधुरी स्वामी सेवक, इस जीवन का नाता है॥

मांझ।

स्वांति बूंद सीपी में पड, मोतीबन उज्वल जोतिलही।
मोती सें पानीं फिर होना, ऐसा देखा सुना नहीं॥
ब्रह्म रूप से विलग जीव हो, उलट ब्रह्म फिर बना कही।
सरस माधुरो वचन सत्य, सिद्धान्त उरमें धार सही॥

मांझ।

प्रथम दूध से दही जमा, उसको मथ के घृत काढो सार।
मिले नहीं फिर दूध दही में, कीने यत्न अनंत अपार॥
द्वैत हुआ अद्वैत न होवे, बुध जन याको करो विचार।
सरसमाधुरी सनम प्रान, प्यारा मेरा मन मोहन यार॥

मांझ

मिश्री को चखना अच्छा, मिश्री बननें में कुछ नहीं स्वाद।
कोशिशि करी मजा नहीं पाया, महनत को खोई बरबाद॥
प्रेमी बन प्रीतम को पावे, पंथ इश्क का यही अनाद।
सरसमाधुरी रस को चसके, छोड सकल झगडे बकवाद॥

मांझ

स्वाति बूंद का प्यासा चातक, पी पी रटे सहित उम्मेद।
पाय बूंद परमित सुख पावे, बिना मिले माने मन खेद॥
जो कदापि वह बने स्वाति खुद, भक्तिभाव की टूटे कैद।
सरसमाधुरी रमज आशिकी, आशिक हो सोई जाने भेद॥

मांझ

मूल रकम से अधिक बढाना, सब कोई जन करता है।
एक रुपये से सात सहस्त्र पुनि, अनगिन वित चित धरता है॥
जो खोदे वे मूल लाभ की, आशा कूं परहरता है।
सरसमाधुरी मूल गवाना, इस से चित नित डरता है॥

मांझ

प्रेम भक्ति सीपी सम जानो, स्वाति बूंद पर समझो जीव।
ब्रह्मभाव जलनिधि ज्यों गिनिये रखियो यहां ख्याल सदीव॥
आतम तत्व एकता किये, द्वैत भाव मिटि मिश्रित सीव।
प्रेमपरा में परें भाव जब, सरसमाधुरी पावें पीव॥

मांझ

पद निर्वाण दात्री मुक्ति, अरु हरि रूप सरूपा नाम ।
जैसा जो अधिकारी जिसका, जहां होय निश्चय विश्राम ।।
एक मिले मूल मिट जावे, दूजो मिले नफा अभिराम ।
सरसमाधुरी मूल न खोना, नफा मिले सो करना काम ।।

मांझ

चोबे चला होने को छब्बे, खोये दोय ठगों के साथ ।
दुब्बे ही रह गया नफा, तब भी देवेगा उसको नाथ ।।
मूल नष्ट जिसका होजावे, वह रोवे मल मल के हाथ ।
सरसमाधुरी मिले न उसको, जो मारे पाहन निज माथ ।।

मांझ

जल के कहे तृषा नहिं भागे, भोजन कहे भूख नहिं जाय ।
मीठा कहे न मुख हो मीठा, अग्नि कहे पग नहीं दझाय ।।
ये सब हैं जड रूप अचेतन, सरसमाधुरी कहे सुनाय ।
गोविंद कहे मिले आ गोविंद, भजो भक्तजन प्रीति लगाय ।।

मांझ

धन धन कहे मिले धन नाहीं, जो जप करो कल्प पर्यन्त ।
धन तो है जड रूप आप ही, कहे सकल हरिजन बुधवंत ।।
सकल नियंता साक्षी गोविंद, भजे ताहि सो मिले तुरंत ।
सरसमाधुरी श्याम सुमरिये कही यही निश्चय श्रुति संत ।।

मांझ

योगी साधन साध्य श्याम है, भाव रूप भक्तन आधीन ।
साधन सधे सुलभ हरि ताकूं, विन साधन मन रहे मलीन ॥
भाव मांहि हरि बसे निरंतर, प्रीति परस्पर ज्यों जल मीन ।
सरसमाधुरी सैंन बैंन को, समझे कोई संत प्रवीन ॥

मांझ

स्वतः सिद्ध है रूप भाव का, भाव ग्राही श्री गोविंद ।
भाव स्वरूप जान भगवंतहिं, सहित चांदनी जैसे चंद ॥
बने नहीं जो कबहुँ साधन, तो नहिं ताको मिले मुकुंद ।
सरसमाधुरी भाव रूप में, देखा सब ही विधि आनंद ॥

मांझ

भाव मांहि विक्षेप न दीखे, हरि में लीन सदा हरि भक्त ।
साधन में संकट बहु भांती, जीते सकल वासना जक्त ॥
भाव प्रेम में पगे निरंतर, हरि से हरिजन नित अनुरक्त ।
सरसमाधुरी साधन परिहर, भाव भजन में मन आसक्त ॥

मांझ

करी भक्ति निष्काम जिन्होंने, लही मुक्ति सालोक निवास ।
ध्यान किया श्रीकृष्णचन्द्र का, मिली मुक्ति सारूप विलास ॥
राज मानसी सेवा कीन्हें, लहे मुक्ति सामीप जो खास ।
सरसमाधुरी जोग जुगत से, मिले जोति सायुज्ज प्रकास ॥

मांझ

व्यापक ब्रह्म अनीह अनामय, सतचित आनंद समझ प्रवीन ।
जीवनमुक्त विदेह मुक्त ह्वै, अधिकारी हो उस में लीन ।।
सांख्य योग से जीवन मुक्ता, तत्व ज्ञान विदेही चीन ।
सरसमाधुरी छहूं मुक्ति से, न्यारे रहैं रसिक रंगीन ।।

मांझ

विषयानंद प्रथम कहियत हैं, दूजा कहिये ब्रह्मानंद ।
तीजा प्रेमानन्द सर्वोपरि, रसिक जनों को अधिक पसंद ।।
विषय स्वाद में भूले जो नर, सो अति ही समझो मति मंद ।
ब्रह्मानंद निरस तज रांचे, प्रेमानंद सरस गोविंद ।।

मांझ

करे भावना अष्टयाम की, सखी भाव धर सुंदर रूप ।
तत्सुख सुखी रहै निशि वासर, टहल महल की लहै अनूप ।।
छहों मुक्ति साधन अधिकारी तिन सब पद से यह पद भूप ।
सरसमाधुरी अकथ कथा यह, जाने जो जन हो तद्रूप ।।

मांझ

जोगी जोग जुगति कर अपनी, सुरति पठावे असि पद ठाम ।
निज अनन्य अपने जन के हित, आप छांडि आवे निज धाम ।।
दरजा प्रेम योग से आला, जिस का इश्क इलाही नाम ।
सरसमाधुरी रसकी महिमां, निज मुख गाई श्यामा श्याम ।।

मांझ

ज्ञानी कहै मुक्तिके तालिब, जोगी तालिब जोति सरूप
भक्त कहे भगवत के तालिब, जिन का दर्जा अधिक अनूप
ज्ञानी मिले धूप सूरज में, जोगी परे नूर के कूप
सरससाधुरी आशिक प्यारे, पावें दिलबर सबके भूप

मांझ

ईश्वर जितने जीव जक्त में, सबही का सुख दाता है
निज अनन्य निष्काम भक्ति से, स्वयम् श्याम सुख पाता है
योगी ज्ञानी कर्मी धर्मी, इन्हें अभिष्ट प्रदाता है
सरसमाधुरी भक्त जनों का, भिक्षुक ऋणी कहाता है

मांझ

चौसर की बाजी खेलन में, पके सार निज घर में आय
फेर होय कच्ची खेलन हित, चौरासी घर घूमें जाय
अपने संग करें बहु पक्की, खास जगह देवें पहुँचाय
यों आचारज आय धाम से, सरस देंय परलोक पठाय

मांझ

कंसादिक शिशुपाल असुर, चारों युग मेंप्र गटाये हैं
लही मुक्ति सायुज्य जिन्होंने, वैर भाव हरि ध्याये हैं
भक्ति अनन्य मुक्ति ठकुराई, दासन दास कहाये हैं
सरसमाधुरी परा परमपद, परिकर निकट बसाये हैं

मांझ ।

चौरासी यमदंड नरक दुख, भोग लहे फिर मनुष शरीर ।
संग पाय हरि भक्त जनों का, परम धाम लह मेटे पीर ।।
ज्ञान करत है हानि प्रेम की, मिलि है जाय नीर में नीर ।
सरसमाधुरी कभी न पावे, सगुन श्याम सुंदर बलबीर ।।

माँझ ।

नरक त्रास चौरासी दुख सुख, मुक्ति होन हरगिज न भला ।
सर्व खोय रोय सर मारे, जल में जैसे नोंन मिला ।।
प्रेम परा पद में नहिं पहुँचा, माया ठगती उसे छला ।
सरसमाधुरी सगुन ब्रह्म सुख, अहं ब्रह्म बकि खोय चला ।।

मांझ ।

वय किशोर नायका नायक, मिल रति रस प्रगटे अधिकाय ।
बाला तरुण बाल भर्ता संग, उद्दीपन रति जाय नशाय ।।
त्यों ही मधुर सजाती सों मिल, रस समुद्र अतिशय उमगाय ।
सरसमाधुरी निरस विजाती, संग प्रेम रंग जाय विलाय ।।

मांझ ।

सोना संग सुहागा मिलके, अनल संग गल जाता है ।
इस बिन और अनेक जतन से, ज्यों का त्यों रह जाता है ।।
त्यों ही मन माधुर्य प्रेम संग, द्रवी भूत हो जाता है ।
शुष्क ज्ञान से सरस माधुरी, जडवत जीव कहाता है ।।

मांझ ।

पर कहिये गोलोक नाथ प्रभु, व्यूह बसे बैकुंठ सुधाम ।
विभव बसे आवरण धाम में, अंतरयामी आत्मा राम ।।
अर्चा प्रभु भूतल लीला कर, अति परतंत्र भक्त अभिराम ।
सरसमाधुरी अर्चा सेवक, सोई धन्य पुरुष अरु बाम ।।

मांझ ।

कृपा पात्र सोई जन जग में, जिनके घर अर्चा हरिदेव ।
एक अनन्य अखंड लिये व्रत, अरु आचार्य भागवत सेव ।।
नवों अंग नवधा नित प्रापत, प्रेम परा को पावे भेव ।
सरसमाधुरी धन्य सोई जन, सादर तिन पद तीरथ लेव ।।

मांझ ।

अति अल्पज्ञ जीव माया वस, जान दयानिधि परम उदार ।
अतिशय सुलभ प्राप्त सब ही को, प्रगट भये अर्चा अवतार ।।
जिन जिन भाव भक्ति कर सेये, तिन पर कीनी कृपा अपार ।
सरसमाधुरी निज दर्शन दे, जीव किये जग के उद्धार ।।

मांझ ।

वासुदेव शंकर्षण समझो, अरु प्रद्युम्न अनिरुद्ध विचार ।
कहैं वेद अरु शास्त्र सकल मिल, चतुर्व्यूह संख्या यह चार ।।
वासुदेव षट गुण संयुत हरि, द्वै द्वै गुण त्रय रूप मँझार ।
सरसमाधुरी निज निज कारज, करें यथा अपने अधिकार ।।

मांझ ।

बल ऐश्वर ज्ञान और शक्ती, तेज वीर्य को लीजे जान ।
ये षट गुण संपन्न कृपा निधि, वासुदेव कहियत भगवान ।।
शक्ति तेज शंकर्षण द्वै गुण, ज्ञान अरु बल प्रद्युम्न पिछान ।
वीर्य और ऐश्वर्य उभय गुण, सो अनिरुद्ध सरस मन मान ।।

मांझ ।

रज गुण रूप जानिये ब्रह्मा, सो प्रद्युम्न सृष्टि कर्तार ।
सतगुण रूप विष्णु प्रति पालक, सो अनिरुद्ध सुलेहु विचार ।।
तम गुण रूप शंभु संहारक, संकर्षण सो लेहु निहार ।
वासुदेव त्रियरूप सरस ह्वै, निज निज कार्य करे संसार ।।

मांझ ।

दर्जा प्रथम फना फिल्ला का, ज्ञानी वहदत पाते हैं ।
जोगी सोइ जलाली जानो, जलवे जोति समाते हैं ।।
प्रेमी कहैं जमाली जिनको, प्रीतम गले लगाते हैं ।
सरसमाधुरी तीन भेद, सतगुरु शिष्य को समझाते हैं ।।

मांझ ।

शास्त्र श्रवण जो ज्ञान हुआ, इलमुल यकीन कहलाता है ।
नैंनों से देखा जिसको, ऐनुल यकीन जग गाता है ।।
प्राप्त वस्तु के होने से, हक्कुल यकीन बतलाता है ।
सरसमाधुरी भेदभावना, समझे सें सुख पाता है ।।

मांझ ।

चेतनत्त्व आत्मत्व और, शेषत्व पारतंत्रहि पहिचान ।
किंचित गुण कर्तृत्व कहावे, जीव लक्ष्य इस विधि ले जान ॥
पर स्वरूप स्वामित्व और, भोगत्व रक्षणत्वहि अनुमान ।
पुनि शेषीत्व नियंत्रत्वहि गुण, सरस समझ संशय सब भान ॥

मांझ ।

कर्म ज्ञान अरु भक्ति प्रापति, पुनि आचार्य अचल अभिमान ।
पंच उपाय कहे सद ग्रंथन, मोक्षादिक प्राप्ती फल जान ॥
अक्षरत्व अशरणत्व अशेषी, इन्हें विरोधी लेहू पिछान ।
सरसमाधुरी भेद गुप्त अति, समाझाये गुरु कृपा निधान ॥

मांझ ।

ईश्वरत्व को भाव विरोधी, अन्य देव ईश्वर ठहराय ।
भक्ती आदि उपाय विरोधी, विषयन में मन भरमे जाय ॥
मोक्षादिक फल जान विरोधी, अस्थिरत्व अल्पत्व सुनाय ।
सरसमाधुरी भेद गूढ यह, बिन गुरु गम नहिं जान्यो जाय ॥

मांझ ।

अविश्वास अरु अरुचि असंगति, प्रकृति प्रीति जग में अनुराग ।
इत्यादिक औगुण अति दुष्कृत, इनमें भूल न करिये राग ॥
ये सब ठग हरि मगके मांहीं, लूटें तोहि वेग उठ भाग ।
सरसमाधुरी समझ सैन गुरु, सोवत कहा जाग नर जाग ॥

माँझ।

नित्य मुक्त पार्षद प्रभु समझो, पूर्वाचारज मुक्त विचार।
कहियत ब्रह्म जीव संसारी, भक्त मुमुक्षू लेहु निहार॥
अद्वैती कैवल्य कहावे, सद ग्रंथन कीनों निरधार।
सरसमाधुरी गुरु समझाये, भेद जीव के पंच प्रकार॥

माँझ।

अति सन्निकट बसें हरि ताके, जिय निश्चय कर विश्वास।
तर्क माँहि वहु फर्क यारका, अतिशय दूर मिलन हरि खास॥
आस्तिकता उपजे जब जिसको, नास्तिक बुद्धि होय तब नाश।
सरसमाधुरी छवि उर झलके, स्वयं सनम निज करे प्रकाश॥

माँझ।

ज्यों दोपक से प्रगट चांदना, तिमिर तुरत मिट जाता है।
निर्मल जो आदर्श उसी में, निज मुख बिंब दिखाता है॥
कारण भिन्न उभय निर्णयकर, कारज खास विलाता है।
सरसमाधुरी परम पदारथ, इस विधि हाथ न आता है॥

माँझ।

हद से बेहद खोज किये सें, निरस सब ही हो जाय मजा।
शुष्क वाद उसको कहते हैं, रसिक जनों नें जान तजा॥
रस स्वरूप सों प्रीतम प्यारा, आशिक जन की वही गिजा।
सरसमाधुरी छवि में छकना, मन बच क्रम कर यही भजा॥

माँझ ।

ज्यों आदर्श माँहि लखि निज मुख, मन में खुशी मानता है ।
ऐसे ज्ञानी निज स्वरूप के, ध्यान माँहि सुख पाता है ॥
ज्यों आशिक माशूक मिलें, खुश मजा कहा नहिं जाता है ।
सरस द्वैत अद्वैत भाव में, इतना भेद दिखाता है ॥

माँझ ।

कही बैखरी जाग्रत बाणी, स्वप्न मध्यमा नाम बखान ।
हिय सुशुप्ति समझ मन अपने, नाभि तुर्य को लेहु पिछान ॥
चार अवस्था चारों बाणी, भजन भाव दर्जे सुन कान ।
सरसमाधुरी सीख गुरु से करो, नाम निज अमृत पान ॥

माँझ ।

सर्व अंग में दूध गऊ के, व्यापक पता न पाता है ।
थन के द्वार मिले बच्छा को, पाकर खूब अघाता है ॥
व्यापक ब्रह्म मिलन अति मुशकिल, गुरु बिन लखा न जाता है
सरसमाधुरी समझ सैंन को, गुरु मुख प्रभु रंग राता है ।

माँझ ।

अंतर काष्ट अग्नि व्यापक है, दाह शक्ति बिन कछू न काम ।
प्रगट अग्नि बिन जड समझ सोई, यथा सर्वगत आतमराम ॥
सगुण ब्रह्म जाजुल्य अनलवत, जारे पाप देहि निज धाम ।
सरसमाधुरी व्यापक परिहर, भजो प्रीति युत श्यामा श्याम ॥

मांझ ।

मंत्र रूप मूरति श्री हरि की कर, उपदेश शिष्य के कान ।
अष्ट कमल दल हृदय सिंहासन, पधरावें गुरु कृपा निधान ।।
नवधा भक्ति बताई सेवा, प्रेमा होय उदय जब आन ।
सरसमाधुरी प्राप्ति सिद्धि फल पाय होय परिपूरन ध्यान ।।

मांझ ।

करें मंत्र उपदेश गुरु जो, सोई बीज निज लेहु विचार ।
हृदय भूमि में शिष्य के बोवें, सीचें नोधा नीर अपार ।।
प्रेम भक्ति फल प्रगट ताको, सोई समझ युगल सकार ।
सरसमाधुरी परा भक्ति में, आस्वादन हो भली प्रकार ।।

मांझ ।

स्वयं श्याम पूरण पुरुषोत्तम, परब्रह्म है जिनका नाम ।
सारस्वत सौकल्य कहावें, तामें प्रगटें सुख के धाम ।।
करें भक्ति को दान कृपा कर, देंहि मया करके निज धाम ।
सरसमाधुरी अन्य कल्प में, विष्णु अंश से प्रगटे श्याम ।।

मांझ ।

विष्णु अंश से कृष्ण अवतरें, दान मोक्ष तिनको अधिकार ।
कल्प कल्प प्रति प्रगट कृपा निधि, करें धर्म रक्षा संसार ।।
कल्प सारस्वत पूर्ण प्रगटें, अन्य कल्प अंशा अवतार ।
सरसमाधुरी अंशी प्रभु को, इष्ट मिष्ट आनंद अपार ।।

मांझ ।

लीलात्मक भागवत रूप हरि, प्रथम द्वितीय प्रभु पद पहिचान।
तृतीय चतुरउर जंघ पंच षट, सप्तम द्वादश हस्त विधान ।।
अष्ठम नव स्थन युग जानो, दशम हृदय समझो बुधवान ।
सरसमाधुरी एकादश को, मस्तक भाव समझ उर ध्यान ।।

मांझ ।

भाव भये सें रति हिय उपजे, रति तें प्रेम प्रकट होय आन ।
प्रेमहि में दर्शन प्रभु पावें, परा भक्ति को लक्ष्य पिछान ।।
गुरु की सेवा ध्यान गुरूको, किये सिद्ध फल होवे आन ।
एक जन्म में होय कृतार्थ, सरस कृपा गुरु की बलवान ।।

मांझ ।

दिव्य देह इंद्रिय प्रभु देवें, तबही दिव्य रूप दर्शाय ।
प्राकृतिक इंद्रिय देह न पावे दर्शन हरि दुर्लभ श्रुति गाय ।।
दिव्य चक्षु अर्जुन को प्रभु दी विश्व रूप तब दियो दिखाय ।
अप्राकृति तन मन होय जबही, सरसमाधुरी छवि उरछाय ।।

मांझ ।

प्रेम सहित हरि सेवा कीये, पुलक पुलक प्रभु के गुन गाय ।
याबिधि नौधा करे निरंतर, भक्ति अलौकिक उपजे आय ।।
दिव्य देह तब होय दास की, प्राकृतिक गुन सव जाय बिलाय ।
दिव्य महल की टहल मिले जब, सरसमाधुरी कहै सुनाय ।।

माँझ ।

एक देह सम्बन्ध कहाये, द्रुतिय भाव सम्बन्ध पिछान ।
इन तें प्राप्ती पुरुसोत्तम की, भावक जन निश्चय लो जान ।।
नंद यशोमति देह, नात कर, पाये पुत्र श्याम घन मान ।
सरस भाव सम्बन्ध गोपिकन, लहे प्रानपति प्यारे कान ।।

माँझ ।

द्वापर युग पच्चीस वर्ष रहे, प्रगट भये जब श्री घनश्याम ।
ग्यारह वर्ष करी ब्रजलीला, मथुरा चौदह वर्ष ललाम ।।
इकशत वर्ष द्वारिका लीला, कर पुनि गये स्वयं निज धाम ।
वर्ष सवा सौ भूतल दर्शन, दिये सरस पूरे जन काम ।।

माँझ ।

चार वेद से भेद अलहदा, उज्वल रस का रसिक पिछान ।
वेदों में ईश्वरता वर्णन, सर्व वस्तु का सम्यक ज्ञान ।।
रस रहस्य का भेद गुप्त अति, करें रसिक निज अमृत पान ।
सरसमाधुरी रस में राचे, सोहं ब्रह्म छाड अभिमान ।।

माँझ ।

ईश्वर सँग ईश्वरी माया, जीव संग आसुरी जो नाम ।
चिद शक्ती ईश्वरी कहाई, लीला करै ताहि ले श्याम ।।
छूटे बंधन जीव संग आसुरी, करे भजन ईश्वर निष्काम ।
पहुँचे जाय जीव निज धाम ।।
सरसमाधुरी जग बंधन तज, पहुँचे जाय जीव निज धाम ।।

मांझ ।

राजा का दीवान मुसाहिब, सब से बडा कहाता है।
दफतर कोष मुल्क आदिक का, हाल खोल बतलाता है ॥
अंतः पुर का भेद भाव, उसको जाना नहिं जाता है।
सरसमाधुरी सखी महल की, गुप्त भेद की ज्ञाता है ॥

मांझ ।

त्वं पद अक्षर जीव कहावे, तत पद क्षर माया ले जान ।
असिपद निह अक्षर कहियत जो, ब्रह्मरूप मन मांहि पिछान ॥
अक्षरातीत चौथा मम स्वामी, स्वयं श्यामसुन्दर भगवान ।
सरसमाधुरी इष्ट हमारा, अमरलोक है उसका स्थान ॥

मांझ ।

चारों मुक्ति जहाँ कर जोरें, हाजिर रहे हमेश हुजूर ।
नैंन निहार रूप रस पीवें, भई प्रेम में चकनाचूर ॥
जोगी ज्ञानी मिले मुक्ति में, रहा परा-पद उन से दूर ।
सरसमाधुरी छके युगल छवि, नैंनों में नित रहे सरूर ॥

मांझ ।

काल कर्म अरु गुण सुभावयुत, माया तहाँ न व्यापे ताम ।
अखिल लोक के पार अनादि, स्वयम् सिद्ध बृन्दावन धाम ॥
सर्वाधार नियंता साक्षी, सगुन रूप शोभित श्री श्याम ।
सरसमाधुरी चिद शक्ती प्रिया, वाम अंग भ्राजे अभिराम ॥

मांझ ।

किरण सूर्य से जुदा न हो छिन, यों दम्पति संग सखी समाज ।
चिन मय रसमय रहस रंग मय, नित नव प्रेम प्रीत सुख साज ।
विलसन मधुर माधुरी अमृत, गान मृदंग बीन सुर बाज ।
श्री राधा पटरानी राजा, सरस बिहारी सब सिरताज ।।

मांझ ।

देशांतर और विरह बनांतर, ब्रज लीला में लै हो निहार ।
पलकांतर प्रत्यक्ष विरह दो, नित्य निकुंज में तासु प्रचार ।।
जो जा विधि के रसिक उपासन, सो समझे इस रस की सार ।
सरसमाधुरी मिले सकल रस, यथा भाव जिसका अधिकार ।।

मांझ ।

ब्रज गोपी लीला रस ओपी, देशांतर बन अंतर लीन ।
पलकारत निकुंज की आली, बिना लखे युग होत मलीन ।।
विरह प्रत्यक्ष प्रिया प्रीतम दोउ, अनुभव करें हरें दुख झीन ।
सरसमाधुरी रसिक उपासक, सकल रसन के ज्ञाता चीन ।

मांझ ।

पूरन आतम ज्ञानी सें, रसिकों को लाभ न होता है ।
रसिक उपासिक ज्ञानी हू को, रसके मध्य डुबोता है ।।
ज्यों फीके जल में बूरा को, डाल निरसता खोता है ।।
सरसमाधुरी रस समुद्र में, रसिक लगाता गोता है ।

मांझ ।

भजन भाव के मध्य समझले, बालक हैं ये चार पिछान ॥
लय[1] कषाय[2] विक्षेप[3] कहावे, रसाभाष[4] जानों बुध जान ।
इनको जीत गुरु कृपा से, करो सप्रीति मानसी ध्यान ॥
सरसमाधुरी रूप रसामृत, नैंनन सों करिये नित पान ।

मांझ ।

लय समझो निद्रा आलस को, सो जप ध्यान छुटाता है ।
सुन विक्षेप कहे उसको मन, भजन छोड वह जाता है ॥
पुनि कहियत काषाय वही, विपरीत भाव दिखलाता है ।
रसाभाष वहि जान सरस, उपमा उपमेय मिलाता है ॥

मांझ ।

सूक्ष्म किये आहार सतोगुण, लय आलस मिट जाता है ।
प्राणायाम करें ते मन, विक्षेप भाव नहिं पाता है ॥
कर भजन निष्काम तभी, काषाय नहीं ठहराता है ।
सरसमाधुरी दिव्यदृष्टि सों, रसाभास विलाता है ॥

मांझ ।

मैथुनसृष्टि कर्म अधिकारी, स्वर्ग मांहि सो पावे बास ।
मानस सृष्टि श्री सनकादिक, ज्ञान परायण मुक्ति निवास ॥
रसिकाचार्य नाद की सृष्टी, पराभक्ती लहि कुंज विलास ।
सरसमाधुरी श्रीसतगुरु ने, त्रिधा भेद समझाये खास ॥

मांझ

मैथुन अरु मानसी सृष्टी, तिन गति मति दई बताय ।
रसिकन संग पाय सो निश्चय, रहस्य उपास्य करे मन लाय ।।
उच्च संग पा उन्नति होवे, स्वर्ग मुक्ति तज निज पद पाय ।
सरसमाधुरी रसकी महिमा, सर्वोत्तम गुरु दई बताय ।।

मांझ

भक्तों की रक्षा करने को, भक्ती जग में आती है ।
अपने संग रंग से सब को, प्रभु पद में पहुँचाती है ।।
शुभ अरु अशुभ कर्म जीवों के, तिनसे तुरत छुड़ाती है ।
निन्दा अस्तुति कर्ता को कहैं, सरस तिन्हें भुगताती है ।।

मांझ

गन्ने का जो मूल इसो विधि, कर्मकांड समझो कर ध्यान ।
मध्य भाग में रस रहता है, प्रेम भक्ति सोइ लेहु पिछान ।।
रहा तीसरा भाग उर्द्ध का, निरस ज्ञान को लीजे जान ।
सरसमाधुरी अधो उर्द्ध तज, मध्य प्रेम रस कीजे पान ।।

मांझ

शालिग्राम प्रथम पूजाकर, चित्र सेव दूजे ले जान ।
तीजे श्री मूर्ति को सेवे, राग भोग करके रँग मान ।।
चौथे कर आवेश अराधन, परम मनोहर जीवन प्रान ।
सरसमाधुरी पर सरूप में, और इन में नहिं भेद पिछान ।।

मांझ

जह प्रत्यक्ष आवेश विराजे, तहां सकल विधि पूरन काम।
चारों एक जगह ह्वै प्रापति, नाम रूप और लीला धाम॥
रसिक रँगीले भावक रस के, रस को पीवें आठों याम।
सरसमाधुरी मूरति दोऊ, श्रीराधे अरु सुंदर श्याम॥

ईश्वर के चार भेद॥

मांझ

स्वगत भेद तें प्रगट भये हैं, ब्रह्मा जू लीजे पहिचान।
और सजाती जान लीजिये, मत्सादिक अवतार सुमान॥
जीव विजाती जान ईश तें, वेद सिद्ध करिये उनमान।
प्रकृति विजाती कही जीव तें, सरसमाधुरी सत्य प्रमान॥

मांझ

सगुण ब्रह्म में चार भेद ये, सिद्ध होत हैं भली प्रकार।
ब्रह्म नपुंसक शब्द कहावे, तामें रंचन यह व्यवहार॥
निराकार साकार न होवे, बुध जन याको करो विचार।
जस कारन तस कारन प्रगटत, सरस करो निश्चय निरधार॥

मांझ

मत्स्य कूर्म बाराह अरु वामन, सो कहियत अंशाअवतार।
गुन अवतार बिष्णु अरु ब्रह्मा, वेद शास्त्र कीनों निर्धार॥
वेद व्यास शुक आदि अचारज सो समझो भक्ता अवतार।
अवतारी श्रीकृष्ण कलानिधि, सरसमाधुरी इष्ट हमार॥

मांझ ।

मथुरा द्वारावती श्रादि में, करी जहाँ लीला विस्तार ।
तिनको कहत प्रकाशरूप प्रभु, जानें जिन्हें रसिक रिझवार ।।
लीलारास विलास व्यक्ति बहु, प्रगट दियो गोपिन सुखसार ।
सरसमाधुरी पुरुषोत्तम के, रूप अनूप अनंत प्रकार ।।

मांझ ।

आल्हादनी श्रीमती शक्ती, लीला शक्ती लक्ष्मी जान ।
भू शक्ती सोई कही जनकजा, सद शास्त्रन में किये प्रमान ।।
तीन शक्ती नित रहे कृष्ण संग, जुदी नहीं पल छिन पहिचान ।
एक एक जहाँ शक्ति रहे संग, सो अवतार सरस उनमान ।।

।। कवित्त ।।

रज्जू में सर्प भ्रान्त मिथ्या ही भाषत है,
यही तो विवर्तवाद शंकरमत गायो है ।
ब्रह्म ही जक्तरूप होय रह्यो सर्व ठौर,
रूप परिणामवाद बल्लभ मत कहायो है ।।
मकरी सों तार जैसे ईश्वर सों जक्त भयो,
रामानुज निम्बार्क परिणाम वाद भायो है ।
परिमाणू वाद सर्व सृष्टि को है कारण,
नैयायिक मत को सिद्धान्त यह लखायो है ।।

।। छप्पै ।।

श्री ललिता बीरी देहि, विसाखा बसन सजावें ।
चित्रा प्यावें नीर, चंपक लता बिजन ढुरावें ।।
तुँगविद्या कर गान, इंदुलेखा सु कहानी ।
रंगदेवी भूषन सुधार, अंगन रुचि मानी ।।
अतर लगा बेनी गुहें, सखी सुदेवी जानिये ।
अष्ट अली सेवा यही, सरस समझ सुख माँनिये ।।

इति श्रीसिद्धान्तप्रकरण संपूर्णम्

वैराग्य मनशिक्षा व उपदेश ।

❀ श्री राधा सरसविहारिणे नमः ❀

वैराग्य मनशिक्षा व उपदेश।

॥ पद वैराग्य राग कहरवा ॥

जगत यह ठग नगरी निरधार।
काम क्रोध मद लोभ मोह मिल, बैठे हाट पसार ॥
जीव बटाऊ जान जतन कर, लूटत बीच बजार।
सुकृति छीन विषय सौदा दे, करै बहुत ही प्यार ॥
इनके छल बल में जो आये, गये जन्म सब हार।
भोगे भोग नरक फिर पीछे, चौरासी की धार ॥
उबरे संत शूरमा पूरे, जिन सुमरे करतार।
सरसमाधुरी जीत जनम को, पहुँचे हरि दरबार ॥

॥ राग कालंगडा ॥

जगत को झूँठो है सब ख्याल।
झूँठो तन धन धरा जानिये, झूँठे कंचन माल ॥
झूँठे कुटुँब कलह की मूरति, जैसे इंदर जाल।
झूँठे सम्बन्धी और भाई, झूँठी घर की बाल ॥
झूँठे महल बहल गज घोडें, सकल जीव के साल।
झूँठो जोवन रूप जवानी, नर को करै विहाल ॥
पाँच तत्व तीनों गुन झूँठे, स्वर्ग मृत्यु पाताल।
सरसमाधुरी सत्य नाम हरि, गुरु गोविंद दयाल ॥

॥ राग कालंगडा ॥

जगत यह जान रैंन का सपना ।
मात पिता परिवार नारि नर, हरि बिन कोउ न अपना ॥
निज स्वारथ के सगे सनेही, त्रिविधि ताप में तपना ।
बिछुरन मरन मिलन जीवन में, करिये नहीं कल्पना ॥
माया जाल जीव उरझायो, उपज उपज फिर खपना ।
सरसमाधुरी समझ मूढ मन, साँचा हरि हरि जपना ॥

॥ राग कालंगडा ॥

जगत में सकल बटाऊ लोग ।
कोई आवत कोई जात यहाँ ते, झूँठो सुख संजोग ॥
भुगते करम भरम चौरासी, जनम मरन दुख रोग ।
जो उपजै सो निश्चै विनसे, का को कीजे सोग ॥
करै भजन निष्काम श्याम को, फिर नहि होत वियोग ।
सरसमाधुरी सत्य कहत हैं, करे अमर पुर भोग ॥

।। मन शिक्षा ।।

।। दोहा ।।

थोड़ा जीवन जक्त में, सुन मेरे मन यार ।
सरस माधुरी सबन सों, करो परस्पर प्यार ।।१।।
राजी राखो सबनको, राजी रहिये आप ।
सरसमाधुरी सुहृदता, मेटत त्रयविधि ताप ।।२।।
जग सम्पति सब छांड के, जावे खाली हाथ ।
सुमिरन सेवा भावना, चले जीव के साथ ।।३।।
सुपना यह संसार है, मोह नींद सें जाग ।
नेकी करो प्रभु से डरो, हरि सुमरन को लाग ।।४।।
जो जन सुमरे नाम हरि, जागे जाके भाग ।
सरसमाधुरी सोइ सुखी, लहै युगल अनुराग ।।५।।
यही ज्ञान अरु ध्यान है, यही योग तपत्याग ।
सरसमाधुरी समझ मन, विषियन में मत पाग ।।६।।

मन वैरागी मोरांरी की चाल ।

सुन मन मित्र सिखावन मेरी, तुझको निज घर जाना है ।
उठ चल पल पल होत अबेरी, यह तो देश बिगाना है ।।
हरिसुमरन को यहां तू आया, उलटा तैंने मूल गमाया ।
पूँजी स्वांस वृथा तें खोई, माया मांहि भुलाना है ।।
पछतावे मत आयु गई को, जो कुछ बाकी राख रही को ।
करले भजन श्याम सुंदर को, अंत काम यहि आना है ।

विषय भोग से चित्त हटावो, हरि सुमरन से हेत लगावो।
प्रेम प्रीति सें प्रभु गुन गावो, हँस भेटें भगवाना है॥
जन्म मरन यम दंडनसावे, अविचल बास अमर पुर पावे।
सरसमाधुरी छवि दम्पति में, सदा रह गलताना है॥

सभा में तुही करेगा निस्तारा के वजन पर

सुमर मन श्री हरि बारम्बारा।
कलियुग में केवल हरि जप, सें होय जीव निस्तारा॥
जन प्रहलाद राम मुख गाया, निडर होय शंका नहि लाया।
पिता खड्ग ले मारन धाया, होय नृसिंह उबारा॥
ध्रुव बालक बन उठ धाया, गुरु नारद हरि नाम सुनाया।
श्री कृष्ण आ दर्शन दीनें, सिर कर धर पुचकारा॥
अंबरीष निज भक्त कृपाला, ताका प्रभुने संकट टाला।
दुर्वासा को चक्र सुदर्शन, ताप दिया बहु भारा॥
द्रौपदि लाज सभा में राखी, ताकी प्रगट जक्त में साखी।
चीर बढो अंग उघरो नाहीं, दुःशासन पचहारा॥
ग्राह मार गज लियो छुडाई, नाम देव की छान छवाई।
बाल दलाये जन कबीर के, खूब कियो भंडारा॥
अजामील अरु गनिका तारी, सैना सदना लिये उबारी।
झूँठे फल शिवरी के खाये, नहि आचार विचारा॥
श्री सतगुरु बल देव दयाला, नाम दान दे कियो निहाला।
सरसमाधुरी फेरत माला, राधेश्याम उचारा॥

॥ राग सोरठ ॥

कृष्ण प्यारा रे मन तू भजले बारंबारा ।
सुरति शब्द से है वह न्यारा, जाने विरला जानन हारा ॥
या ही तें वेदों ने नेति पुकारा रे ॥
कोइ सुन्न स्वरूपी गावें, निराकार कोइ ज्योति बतावें ।
सब ज्योतिन की ज्योति सों श्याम हमारा ॥
कोई अनहद ध्यान लगावें, याही को सब कुछ बतलावें ।
जासें प्रगटा नाद सो नाहिं निहारा रे ॥
कोई निरगुन ही ठहरावें, गुरु बिन भेद नहीं कुछ पावें ।
बक थक कर बकवाद भरमा संसारा रे ॥
श्री सतगुरु बलवेव बताया, जैसा प्रभु तैसा दरशाया ।
सरसमाधुरी चित से टरे न टारा रे ॥

॥ राग जंगला ॥

हरदम हरी सुमरो मन मेरा, जासु जनम सफल हो तेरा ॥
भरम नींद में बहु दिन सोया, खोया स्वाँस घनेरा ।
अब तू जाग त्याग दे ममता, जगत जाल उरझेरा ॥
चार दिनाँ की जगत चाँदनी, आवत अन्त अँधेरा ।
सतगुरु शरण सँभार सिदोसी, काल कर रहा घेरा ॥
महल द्रव्य परिवार नारि सुत, झूठा सकल बखेरा ।
जीव निकस जब जाय बावरे, जंगल होंगे डेरा ॥

यमपुर बास त्रास नरकन के, पावे दुख बहुतेरा।
बिन प्रभु भजन मिटे नहीं तबहीं, चौरासी का फेरा॥
सेवा कर धर ध्यान मानसी, तज दे विषय बखेरा।
सरसमाधुरी धाम श्याम की, पहुँचे जाय सबेरा॥

राग कल्यान !

भज मन श्री राधा गोबिन्दा ।
गौर श्याम अभिराम रसिकबर, वृन्दाबन के चंदा॥
चित्त चकोर कर रूप नैंन भर, छोड कपट छल छंदा।
शीश चन्द्रिका मुकट विराजे, निरख निरख आनन्दा॥
नील पीत पट नख शिख भूषण, सुंदर आनंद कन्दा।
जो जन ध्यान करें दम्पति को, परें न भव के फन्दा॥
मधुकर होय खोय चञ्चलता, सुनरे शठ मति मन्दा।
सरसमाधुरी चरण कमल की, निश दिन ले मकरन्दा॥

राग कल्यान !

भजमन श्री राधे गोपाल ।
करुणा निधि कोमल चित तिन को, दीनन को प्रतिपाल॥
जिनको ध्यान किये सुख उपजै, दूर होत दुख जाल।
माया रहत चरनकी चेरी, डरपत जिनसो काल॥
विहरत श्री वृन्दाबन मांहीं, दोउ गल बैयां डाल।
विलसत रास बिलास रंगीले, गावत गीत रसाल॥

हँस हँस छीन लेत मन छल, कर चञ्चल नैंन विशाल ।
सरसमाधुरी शरनागत कों, छिनमें करें निहाल ।।

राग कहरवा ?

भजमन राधा सरस बिहारी ।
नवल किशोर चोर चित चंचल, चितवन तिनकी प्यारी ।।
रंग रंगीले छैल छवीले, अलबेले रिझवारी ।
गोपी जन जीवन धन नोऊ, बल्लभ प्राण अधारी ।।
कूंज बिलासी प्रेम प्रकाशी, रस रासी सुख कारी ।
सरसमाधुरी मूरति दम्पति, शरणागत भय हारी ।।

।। राग सोरठ विहाग ।।

धर मन राधिका कर ध्यान ।
जिन्हें सेवत कुंज में नित, रसिक श्याम सुजान ।।
सतत चितत शंभु अज जिहि, सकल सुख की खान ।
भनत महिमा अमित जिनकी, शास्त्र वेद पुरान ।।
अष्ट द्वै अंगुष्ठ अंगुरी, गनित दस अनुमान ।
देत दस सा भक्ति जो नित, करे अनुसंधान ।
चंद्र नख की चंद्रिका सो, हरत हिय तम जान ।
कंज ते कोमल कलित सो, सरस जीवन प्रान ।।

।। राग सोरठ विहाग ।।

रट मन राधिका दिन रैन ।
जोग जज्ञ आचार जप तप, जासु समतुल हैन ।।

जपत नित नव मुरलिका में, श्याम घन सुख दन।
ध्यान हिय धारत निरंतर, लहत तब ही चैन॥
भुक्ति मुक्ति परात्पर जो, कुंज मंजुल ऐन।
सरस रस की माधुरी, तहां नित्य निरखे नैन॥

॥ राग विहाग ॥

रट मन राधिका उठ प्रात।
जपो जाप अखंड रसना, प्रेम पुलकित गात॥
चेत चतुर विचार बेगहि, अवधि बीती जात।
यह शुभवसर मिलन दुर्लभ, समझ मूरख बात॥
सजन संगी चार दिन के, मात पित सुत भ्रात।
स्वप्न सम ससार मिथ्या, शठ कहा इतरात॥
कठिन योग विराग कलि में, सोच चित में तात।
नाम सुमिर सनेह युत, नहिं काल करि है घात॥
भजन श्यामा को कियो, घनश्याम सन्मुख आत।
सरस कर बहु प्यार प्यारो, ताहि कंठ लगात॥

॥ राग काफी ॥

करो मन नित्य अनित्य विचार।
ताके किये सुमति उपजत है, सहज होय भव पार॥
माया जनित अनित्य पदारथ, जान सकल संसार।
सत्य नाम अरु धाम श्याम को, लीला रूप अपार॥

नित्य रहत इक रस स्थिर सोइ, हिय के नैंन निहार ।
जगत असत्य स्वप्न सम मिथ्या, बिन संत लगे न वार ।।
मिटते सो नेह नहिं कीजे, रहते सो कर प्यार ।
तब तो तू है बुद्धिमान नर, नां तर मूढ गँवार ।।
जान बूझ अकरम आराधत, सो जीवन धिक्कार ।
पशु प्राय है सोइ प्रानी, नर हो अथवा नार ।।
यही भाषत है संत सयाने, निज मुख वचन उचार ।
श्रुति पुराण श्री भागवत गीता, कहत पुकार पुकार ।।
भक्ति गहो जो चहो अचल सुख, सुमरो सिरजन हार ।
सरसमाधुरी शरन कहत है, सद ग्रन्थन को सार ।।

।। राग बहार धुन नाटक ।।

श्याम के गुन गाय मनवा ।।
राधा रमन रिझाय मनवा ।
जाकी है ब्रज गोपी प्रान से प्यारी ।
तिन के संग में रास करैं साँवरे बिहारी ।
ताता थेई बोल लाल डारी गलबैयां ।
छबि दरशाय जगात मदनवा ।।
भूषन वसन सजे नंद लाला ।
सरस सखी पूजत चरनवा ।
प्रेम कर रहे मन मगनवा ।।

राग सोरठ ।

भजोरे मन सुन्दर श्याम कन्हैया ।।
संत जनन को सदा सँगाती, भक्त जनन को भैया ।
प्रेम विवश रहे संग रैन दिन, ज्यों बच्छा संग गैया ।।
सैंन भक्त के संशय मेटे, नामां छान छवैया ।
गज के काज पयादे धाये, द्रौपदि चीर बढैया ।।
भारत में सारथि पारथ के, बने आय जदुरैया ।
दीन जान अंडा भरई के, घण्टा तोर बचैया ।।
संकट परो जहां सन्तन को, कीनी तहाँ सहैया ।
सरसमाधुरी सांचे स्वाभी पार लगा दें नैया ।।

राग रेखता ।

करो विश्वास मन मेरे, भजन सों जीव तरजाई ।
भजन बिन और सब करतब, किये कुछ हाथ नहीं आई ।।
किये हो जोग के रोगी, मरे बिन मोत पछताई ।
कहै मुख ज्ञान की बातें, बिषय नहि छूटते भाई ।।
करम कोरे करो कितनै, रहे फल चाह चित छाई ।
बिना निष्काम के हुये, न मन की बासना जाई ।।
भक्ति नौधा किये हरि की, हो प्रेमा अंग प्रगटाई ।
परा भक्ती उदय हो जब, मिले भगवान सों जाई ।।
कहैं सतगुरु श्री बलदेव, सुनों सब सन्त चितलाई ।
सरस छवि माधुरी मूरति, जुगल का ध्यान सुख दाई ।।

मांझ।

रसिक रंगीलों की संगति में, ए मन निश दिन जायाकर।
नव निकुंज की चरचा सुंदर, उनसे सुन सुख पायाकर॥
भाव स्वरूप चिंतवन करके, सेवा कर हुलसाया कर।
सरसमाधुरी रूप निरखिके, छबि में नैंन छकाया कर॥

मांझ।

सब संशय तज भज मन मेरे, राधा सरस बिहारीरे।
गौर श्याम अभिराम धाम छबि, सो तेरे हित कारी रे॥
ध्यान धरो दम्पति को नित प्रति, सकल प्रपंच बिसारी रे।
सरसमाधुरी निश्चय मिलि हैं, मोहन श्यामां प्यारीरे॥

राग पंजाबी॥

राधे कृष्ण कृष्ण श्री राधे, राधे भज मन भाई रे॥
लोक और परलोक दोउन में, सो तेरे सुखदाई रे।
अवसर भलो बनो है तेरो, दिन दस ले गुन गाई रे॥
जाग जाग सोवत है क्यों शठ, जावत उमर बिहाई रे।
तज के सकल प्रपंच जगत के,ध्यान धरो मन लाई रे॥
सुख देवें सब दुख हर लेवें, संकट माँहि सहाई रे।
बसे जाय गोलोक धाम में, निश्चय कर दृढताई रे॥
भूल विसर मत जाय बावरे, दाव बनो है आई रे।
सरसमाधुरी भव तरने की, यह सहज उपाई रे॥

राग दरबारी ।।

बसो मन वृन्दावन की गलियाँ ।
कुंज निकुंज मंजु मन भावन, बनी रास अस्थलियाँ ।।
कंचन भूमि जटित मनि मानिक, झलकत भांति सु भलियाँ।
षटऋतु महल मनोहर सुंदर, बसत तहाँ बहु अलियाँ ।।
गान तान धुनि छई छबीली, सुनत खिलत हिय कलियाँ ।
रमत रास श्री सरस विहारी, भानु राय की ललियाँ ।।
हँसि कसि भरत भुजन सो भामिनि, करत रंग रस रलियाँ ।
देत लेत सन्मान अधर रस, उठत प्रेम कलमलियाँ ।।
सदा सुहागिन अति बडभागिन, सेवें जुगल सहलियाँ ।
सरसमाधुरी रस की सजनी, बेलि मनोरथ फलियाँ ।।

राग कहरवा ।।

मन तू कर मोहन सों प्रीति ।
मात पिता परिवार नार सुत, सब स्वारथ के मीत ।।
अपनों अपनों सुख सब चाहें, ऐसी इनकी रीत ।
परमारथ की राह भुलावें, बुद्धि करें बिपरीत ।।
काम क्रोध मद लोभ मोह में, गई उमर सब बीत ।
अजहूं चेत हेत कर हरि सों, बैठो कहा नचीत ।।
दया धर्म सतसंग भजन से, जन्म जावोगे जीत ।
सरसमाधुरी वचन हमारे, कीजे सत्य प्रतीत ।।

राग कहरवा ।

सुन ले मन मूढ दिवाना रे ।
कहां से आया कहाँ जायगा, कहाँ आप उरझाना रे ।।
किसने भेजा कौन काम को, इसको भी कुछ जाना रे ।
कितने दिन तुझको यहाँ रहना, करना कहाँ पयाना रे ।।
नर तन मिलन कठिन सो कबहू, भाषत वेद पुराना रे ।
ऐसी करनी करले प्यारे, फिर नहीं जग में आना रे ।।
विषय भोग में उमर गमावै, तो सम को अज्ञाना रे ।
स्वास अमोल रतन नित छीजे, होत देह की हाना रे ।।
लै गुरु शरण करो सत्संगत, भज ले श्री भगवाना रे ।
नवधा भक्ति भाव सों मन धर, कर अमृत रस पाना रे ।।
जीत जन्म ईश्वर चरणों में, कर ले ठौर ठिकाना रे ।
सरसमाधुरी बातें हित की, समझे सोई सयाना रे ।।

राग सोरठ विहाग ।

जप मन राधिका मुख जाप ।
कटें कोटि कलेश कलिमल, मिटें त्रिविधि ताप ।।
प्रेम भक्ति को प्रदाता, हरत अगनित पाप ।।
सरस मोहन रीझ ताको, मिलें हित कर आप ।।

राग अल्हैया ।

गायो न राधा गोविन्द, भयो मूढ मति मंद
फँस्यो आय माया फंद, ऐसो बुद्धि हीनों है ।

किये नाँहि साधु संग, हरि को न लाग्यो रंग
झूठे जग जाल माँहि खोये पन तीनों हैं॥
गुरु की न शरण आयो, कियो सब मन भायो
भरम भुलायो दुख सुख मान लीनो है।
कहै सरसमाधुरी पुकार, यही बार बार
कृष्ण नाम सार जाहि जपे सो कुलीनो है॥

राग आसावरी।

समझि सोच ले रे मन मूरख, जग में सदा न रहना भाई।
भूलो कहाँ मोह माया में, मिथ्या मैं मैं कहाँ लगाई॥
आया आप अकेला जग में, अंतहु आप अकेला जाई।
आप ही दुख सुख सहत जगत के, चेत अचेत छाँड मचलाई॥
यह संसार रैन का स्वपना, सतगुरु कहत सुनो चित लाई।
सरसमाधुरी नर तन नवका, फेर मिलन अति ही कठिनाई॥

राग बिलावल कल्यान॥

भज मन राधे प्यारी कृष्ण कन्हाई रे।
रट रैन राधिकाबल्लभ, अपनों जन्म सफल कर भाई रे॥
भूलो कहा मोह माया में, चेत यही तेरी चतुराई रे।
जाग जाग सोवे मत मूरख, कर अनुराग नाम लो लाई रे॥
प्रेम अमी प्याला पी प्यारे, अजर अमर हो हरि गुन गाई रे।
गुरु की शरण साधुसेवा कर, सत्संगत सब विधि सुखदाई रे॥

सुकृति पूजा संग चलेगी, और विभव इत ही रह जाई रे ।
सुमिरन किये कटैं चौरासी, नरक त्रास यमदंड नसाई रे ।।
जग स्वपना कोई नहिं अपना, हरि जप होय सहज मुक्ताई रे।
वेद चार को सार यही है, सरसमाधुरी दियो बताई रे ।।

राग सोरठ ।

अमर पुर चल बसिये मन भाई ।
मृत्युलोक मृतकन को कहिये, तू चेतन्य सदाई ।।
माया जाल बिछाय जुगत सूँ, जीव फँसे जहाँ आई ।
काल कलेवा करत निरन्तर, गिन गिन सबको खाई ।।
चार खान चौरासी भुगतत, बहु गये समय बिताई ।
चेतो नाँहि अचेत भयो तू, फिर चौरासी आई ।।
काके मात पिता को बन्धू, को भगनी को ताई ।
पुत्र कलत्र कोऊ नहिं तेरे, झूँठी लोक बडाई ।।
जग स्वपना कोई नहिं अपना, जीव अकेला जाई ।
देह खेह हो जाय छिनक में, माटी में मिल जाई ।।
सतगुरु खोज शरण गह प्यारे, तोहि कहूं समुझाई ।
नाम सुधारस पी मन मेरे, अविनाशी हो जाई ।।
श्री बलदेव दयाल दया कर, सोवत लियो जगाई ।
सरसमाधुरी ले संग स्वामी, अविचल धाम बसाई ।।

राग विहाग ।

रसिक मिल रस की बतियाँ कीजे ।
छोडो विष सम विषय भोग को, प्रेम प्याला पीजे ।।

युगल नाम जीवन है जिय को, ताको निश दिन लीजे।
सरसमाधुरी ध्यान प्राण सम, ताही में मन दीजे ॥

राग आसावरी ॥

श्रीहरि सों मिल जावे,अरे मन या विधि लगन लगावे।।
नैंन नासिका कान और मुख, ताली युक्ति जमावे।
चित अस्थिर कर त्रिकुटि महल में,ज्योति जहाँ प्रगटावे।।
जगमग जगमग होय उजाला, निरख नैंन मगनावे।
आगे ज्योति सुरति ता पाछे, गगन मंडल में धावे ॥
तेज पुंज के भींतर हो के, आगे जा ठहरावे ।
भानु अनंत प्रकाश जहां है, तहां जाय घर छावे ॥
परमसुन्न के पार परम पद, अमर लोक कहलावे।
अनहद ध्वनि दरवाजे बाजे, सुन मन मोद बढावे ॥
रंगमहल सर्वोपरि राजे, छबि वरणी नहिं जावे ।
चौसठ कलश कँगूरन माहीं, नग पन्ना चमकावे ॥
मध्य महल मन हरण सिहासन, छत्र महा छबि पावे।
अद्भुत रास विलास होत जहां, नांहि कहन में आवे ।
बाजत ताल मृदंग बीन जहां, कोई कोई गावें ॥
रसिक गुरु योगी रस भोगी, शिष्य तहां पहुँचावे।
सरसमाधुरी बसे जाय जहाँ, जन्म मरण बिसरावे ॥

पद ॥

हमें अब चलना है निजधाम ।
अजर अमरपुर महल हमारो, जहाँ श्रीश्यामा श्याम ॥
जित सब वस्तु अमायिक जानों, चिन्मय ललित ललाम ।
शरद बसंत बहार बाग बन, अनगिन महल मुकाम ॥
जगमग ज्योति रहत उजियारी, ऐसी अनुपम ठाम ।
हीरा मणि माणिक की रचना, जहाँ अलिगण विश्राम ॥
प्रेमानंद नई नित लीला, उज्वल रस अभिराम ।
नित संयोग वियोग न कबहूं, जन मन पूरण काम ॥
नव निकुंज सेवा छटे राखो, सरसमाधुरी नाम ।
जय जय श्री बल्देव सतगुरु, स्वामी सब गुण ग्राम ॥

राग सारंग ॥

बातें ये उपदेश की, प्यारे मेरे मन मान तू ।
चित्त को देके समझ ले, सुनले गुरु का ज्ञान तू ॥
पाया नरतन करले सुमरन, तेरा रक्षक श्याम है ।
लोक और परलोक में, प्रभु को हितु पहिचान तू ॥
चार दिन की जिन्दगी है, चलना है रहना नहीं ।
चेतकर हरि को सुमिर, दो दिन का है महमान तू ॥
नेकी करले डर बदी से, चाहे जो अपना भला ।
तेरी है इसमें भलाई, निश्चय ले अब जान तू ॥

ले शरण सतगुरु चरण की, ध्यान धर हरि हर घडी ।
प्रेम से दे लौ लगा, छबि बीच हो गलतान तू ॥
रह सदा रसिकों के संग में, कर सदा सत्संग को।
गुण प्रिया प्रीतम के प्यारे, कर निरन्तर गान तू ॥
सरस रस की माधुरी, झाँकी है बांकी रस मई ।
रूप दम्पति रैन दिन, नैनों से नित कर पान तू ॥

राग खम्माच ॥

भज रे मन मेरे राधे, श्याम श्याम श्यामाँ ।
युगल नाम जपत जीव, पावत निज धामाँ ॥
सतयुग में सत्य सार, त्रेता तप करत पार ।
द्वापर में पूजा कलि, केवल हरि नामाँ ॥
बालक और वृद्ध तरुण, सब को संताप हरण ।
भगवत भज भव से तरे, पूर्ण होय कामाँ ॥
श्रुति पुराण कहैं पुकार, कीर्तन है सर्व सार ।
प्रेम प्रीति कर प्रतीत, सुमरो निशि जामाँ ॥
सकल विकल भर्म त्याग, नाम जपो सानुराग ।
सरस चरण कमल सेव, मिलि है अभिरामा ॥

॥ उपदेश ॥

दोहा ॥

जो सेवा श्री युगल की, तन सों बने न मित्त ।
तो मनसों कर भावना, समय समय की नित्त ॥
गृह बन में जित तित रहो, गहो मानसी सेव ।
सरसमाधुरी भाव सों, सहचरि बन सुख लेव ॥
श्री शुक सखि के लाडिले, कुंज बिहारी जान ।
श्याम चरण दासी सरस, तिनके जीवन प्रान ॥
सुख की दम्पति राशि हैं, तिनसो प्रेम बढाव ।
सरसमाधुरी टहल को नित प्रति रख चितचाव ॥
युगल लगन में मन मगन, राखहु आठों याम ।
सरसमाधुरी सुरति सों, सुमिरहु श्यामा श्याम ॥

दोहा ॥

ध्यान धरो सुमिरण करो, श्रीमत राधे श्याम ।
गावो गुण गण प्रेम सों, पल छिन आठों याम ॥
जपो जपावो युगल को, अनुपम सुन्दर नाम ।
सरसमाधुरी पाओगे, निज परिकर परधाम ॥

दोहा ॥

हिंसा जुआ मांस मद, व्याज चरस अरु भंग ।
लस्सन दाल मसूर की, पर नारी परसंग ॥

पानी चरसा रहट को, गाजर भखे न जान ।
पिये न पत्र तमाल को, सोई सन्त सुजान ॥
वस्तु यही चौदह कही, तज भज युगल किशोर ।
जीव छुटे जग जाल से, लहै अमर पुर ठोर ॥

दोहा ॥

तन के तीनों पाप ये, समझो सन्त सुजान ।
चोरी जारी जीवकी, हिंसाकी तज बान ॥
मन के पातक तीन हैं, तिनको त्यागो जान ।
खोटी चितवन बैरही, अरू कहियत अभिमान ॥
मिथ्या बोलन दुर्वचन, हरिचरचा बिन आन ।
परनिंदा नहिं कीजिये, बचन पाप पहिचान ॥

कुण्डली ॥

(१)

परम्परा गुरु धर्म नहिं, कथें मनमुखी ज्ञान ।
तिलक छाप कंठी नहीं, सो हैं पशू समान ॥
सो हैं पशू समान भ्रमत गर्धव ज्यों डोलें ।
भोंके आठों जाम समझ मुख बात न बोलें ॥
निंदा निश दिन करैं जरैं मन माँहि अभागे ।
सरसमाधुरी बुद्धिवंत, इन को संग त्यागे ॥

(२)

विधवा नारी अंग निज, करे नहिं शृंगार ।
त्यों ही भक्ति बिहीन नर, त्यागे तिलक अचार ॥

त्यागे तिलक अचार कँठ कंठी नहिं राखे ।
सदाचार को छांड मनमुखी बानी भाखे ।।
करे नहीं जप ध्यान विमुखता उर में धारे ।
सरसमाधुरी रंग बिना जग में झक मारे ।।

मांझ ।

आशिक होकर इश्क कमावे, सो प्रीतम मन भाता है ।
लोक वेद की कैद दूर कर, प्रेम देव को ध्याता है ।।
रोवे हँसे मौन हो बैठे, प्यारे के रँग राता है ।
सरसमाधुरी का रस पीकर, दिलबर के गुण गाता है ।।

मांझ ।

हिर्स हवा तज दीन दुनी की, अबस उम्र क्यों खोता है ।
इश्क समंदर अंदर प्यारे, लेता क्यों नहीं गोता है ।।
प्रेम पंथ में पग को धरके, फिर काहे को रोता है ।
सरसमाधुरी शरण श्याम की, पांव पसारे सोता है ।।

मांझ ।

छोड दिये मत पंथ दुनी के, प्रेम पंथ को गहना है ।
पद्मपत्र जल मांही जैसे, ऐसे जग में रहना है ।।
सुन के बात सबों की प्यारे, हां ना कुछ नहिं कहना है ।
सरसमाधुरी रस में डूबे, इत वित को नहिं बहना है ।।

मांझ ।

हमको योग समाधि सांख्य मत, ज्ञान शुस्क नहिं गहना है ।
अहं भाव अज्ञान नदी में, भूल कभी नहीं बहना है ।।

रसिकों की पद रेणु शीश धर, विरद भरोसे रहना है।
सरसमाधुरी नाम राधिका, श्याम निरन्तर कहना है॥

मांझ

बेशक अपने इष्ट देव के, हम पूरे अभिमानी हैं।
रसिक अनन्य हमारे प्यारे, सब विधि सों सुखदानी है॥
व्यभिचारी बाजारी जितने, उनसे हमें ग्लानी है।
सरसमाधुरी मिलें सजाती, उन ही से रति ठानी है॥

मांझ

अष्टसिद्धि नवनिद्धि लुभाने, जिनका तन मन मैला है।
बिना भजन भगवंत अंत सब, भानमती का खेला है॥
छांडि विषयविष हरि रस पीवे, सो आशिक अलबेला है।
सरसमाधुरी सच्चे गुरु का, समझ वही निज चेला है॥

मांझ

मौनी अरु मजजूब जिन्होंसे, मुतलक़ फैज न होता है।
तो फिर उम्र अजीज अजायब, उनके संग क्यों खोता है।
सालिक सच्चा मुरशद सोइ, दाग जिगर के धोता है।
सरसमाधुरी बीज इश्क का, दिल जमीन में बोता है॥

मांझ

जो तू हरि से मिला चहे, पहिले मिल हरि के यारों से।
शबोरोज हिल मिल रहे तिनमें, बच सोहबत मक्कारों से॥
सीख इश्क आशिक सादिक से, तज मिलना बदकारों से।
सरसमाधुरी का रस चसको, हित कर प्रभु के प्यारों से॥

मांझ

जो आशिक हैं श्याम सनम के, जिनका दिल नित जिंदा है।
दुनियां दार करें जो गीबत, होय नहीं शरमिन्दा है।।
कोइ कहे बदजात बदचलन, कोई बतावें रिंदा है।
निंदा वर्जे सरस शहदाने, सोई होय चुनिंदा है।।

मांझ

हम ज्ञानी हम ध्यानी मौनी, अहंकार रंग राते हैं।
आलिम फाजिल अकलमन्द बन, तन में नहीं समाते हैं।।
सरतापा अज्ञान भरे, आशिक दरजा नहीं पाते हैं।
सरसमाधुरी ऐसे जग में, फिर फिर गोता खाते हैं।।

मांझ

आलिम से बेइल्म बनें, खुद को तज बेखुद हुये सही।
बहस बहाई इश्क वहर में, मतलब को पा मौन गही।।
दिलाराम से मिला लिया दिल, और किसी से काम नहीं।
सरसमाधुरी समझो मन में, आशिक लाशिक अस्ल वही।।

मांझ

जो मिलने का इश्क यार से, समझो रमज दिवानों की।
सीखो रीति राह उनमें मिल, इश्क अमल मस्तानों की।।
मुतलक इश्क हसूल न हो, जिनको सोहबत दहकानों की।
सरसमाधुरी तज रस चाहे, ये वातें खफकानों की।।

मांझ

सञ्चित और प्रारब्ध कर्म, पुनि क्रीयमाण कहलाता है।

त्रविधि कर्म घटवत आकश ज्यू, जीव करे तहँ बासा है ॥
कर्म स्वरूपी घट फूटे से, प्रभु पद को जिय पाता है।
सरसमाधुरी तज संश्रित जग, पुनरावृत्ति मिटाता है ॥

मांझ

छूटे प्रान जाग्रति के मांही, तो पुनि धरे मनुष्य को रूप।
स्वप्न अवस्था तजे कलेवर, पशू योनि को धरे स्वरूप ॥
माहि शुशुप्ति छूटे काया, थावर योनि लहे तम कूप।
सरसमाधुरी तुरिया मांहि, मिले सगुन सरकार अनूप ॥

मांझ

चौथी कहो अवस्था तुरिया, जिसके जानों दोय प्रकार।
सगुण निगुण जैसा भावक हो, वैसाही पावे अधिकार ॥
ज्ञानी शुस्क सून्य में सोवें, प्रेमी मिलें युगल सरकार।
सरसमाधुरी रस नित पीयें, युग युग जियें रसिक रिझावर ॥

मांझ

गुणातीत तुरिया अतीत, अक्षरातीत पद गाया है।
परा भक्ति से परम धाम में, सतगुरु ने पहुँचाया है ॥
अनिर्वाच्य आनंद अनूपम, कोई बिरले जन पाया है।
सरसमाधुरी कृपा गुरून की, सुखके सिंधु समाया है ॥

मांझ

स्वाति बूंद जो परे सीप में, सो मोती सुंदर बनजाय।
सीपी में जो बूंद परी नहिं, सो गई सागर मांहि समाय ॥
ब्रह्मानंद प्रेमबिन सूना, निराकार मांहीं मिलजाय।

भजन भावना सरस रूप हो, तुरिया तन लेवे सो पाय ।।

मांझ

तुरिया ब्रह्मानंद सिंधु में, प्रेम कसक जुत गोता खाय ।
डूबे नहीं किसी विधि सें वह, जल के ऊपर उछले जाय ।।
पार जहां दिलघर यार है, निकल चले उत ही को धाय ।
सरसमाधुरी श्याम सनम को, लेवे अपने कंठ लगाय ।।

मांझ

परमानंद रूप पिय प्यारा, परम धाम जिसका है खूब ।
ब्रह्मानन्द बीचमें हायल, तिसका है आनंद अजूब ।।
प्रेम नाव चढ़ पार पहुँचना, बिना नाव विच जावे डूब ।
सरसमाधुरी पावे सोई, जिसे इश्क दिलबर मरगूब ।।

मांझ

स्वसरूप सुख रूप समझ के, हुये अमित जन जिसमें लीन ।
इसके आगे पर स्वरूप में, पहुँचे कोई रसिक प्रवीन ।।
मकां यार पहिचान सहल है, मुश्किल लखना यार मकीन ।
सरसमाधुरी मिले रसिक गुरु, प्रेम पंथ दरशाया झीन ।।

मांझ

नटने शून्य समाधि लगाई, सुरत हुई असिपद ले लीन ।
रही वासना रीझ मिलन की, नृप दरबार बन्यो जित दीन ।।
जगी समाधि तभी मुख बोल्यो, मोको मिले इनाम नवीन ।
जहां आस तहां बास जीव को, सरसमाधुरी समझ प्रवीन ।।

मांझ

प्रेम सिंधु गोविंद प्रभू का, जिसका विषयानंद इक बिंद।
फँसे सभी सचराचर तामें, नर अरु नाग मुनींद्र सुरींद्र॥
विषयानंद पार नहिं पावे, प्रेमानंद अपार बलंद।
सरसमाधुरी बूडे तामें, छूट जाय सब जग के फन्द॥

मांझ

अति बलवंत जान हरिमाया, काहू विधि कर तरी न जाय।
प्रेम लगो गोविंद चन्दसे, बिन प्रयास माया छुट जाय॥
पच हारे सबने सरमारे, चली किसीकी कुछन बसाय।
सरस लगाओ प्रीति प्रभू से, फिक्कर तन की करे बलाय॥

मांझ

प्रारब्ध भोगतव्य अटल, जिसके हित उद्यम करता है।
बिन पुरुषार्थ भजन नहिं बनता, जिसका उद्यम परहरता है॥
उलटी गति इस मन की देखी, अन करनी चित धरता है।
सरसमाधुरी जो कुछ करनी, उसको भूल न करता है॥

मांझ

जो हरि भजे भाव दृढ करके, जो इच्छा जापक मन माँहि।
चार पदारथ सुलभ सहज में, प्रभु कृपा कछु दुर्लभ नांहि॥
जपे न कभू जनार्दन को, शठ चाहे भुक्त मुक्त पद छांहि।
सरसमाधुरी भजन बिहीना, रो रो मरे जगत के मांहि॥

मांझ

मुख से युगल नाम जप करना, यही बैखरी भजन निहार।

मौन होय जपिये गुरु मंतर, कंठ मध्यमा भजन निहार ।।
हिये ध्यान धर स्मरण करना, यह पश्यंती जप उर धार ।
सरसमाधुरी नाभि नाम जप, परा भजन निश्चय निरधार ।।

मांझ

जिह्वा जप कर जाग्रति जीते, कंठ जाप से स्वप्न पिछान ।
हिय के जाप सुसुप्ति कर बस, नाभि जाप तुरिया थिर मान ।।
गुरु सों समझ करे यह साधन, तो शिष करे सरस रस पान ।
बिना गुरु गोते खाय घनेरे, जाय वृथा श्रम फल की हान ।।

मांझ

क्रीयमान जाग्रति में उपज, स्वप्न भोग प्रारब्ध लखि लेव ।
सँचय कर्म सुसुप्ती मांही, समझाये सब विधि गुरुदेव ।।
कर्म रहित तुरिया पहिचानों, गुरु मुख होय सो समझे भेव ।
सरसमाधुरी सतगुरु समरथ, मन वच कर्म निरन्तर सेव ।।

मांझ

चोरी जारी हिंसा जानों, तन त्रियकर्म पाप के मूल ।
खोटी चितवन वैर भाव, अभिमान जान मन के त्रियशूल ।।
निंदा मिथ्या दुष्ट वचन तज, मौन गहें लक्षण अनमूल ।
सरसमाधुरी हरि चर्चा बिन, बके जासु के मुख में धूल ।।

।। राग होरी काफी ।।

मन भावन मम प्यारी ।। सखी सुन बात हमारी ।।
बहुत युगन सों भटकत डोले, निज घर सुरति बिसारी ।
यह परदेश पिछान छबीली, निश्चय लेहु बिचारी ।।
भरम मन दूर भगारी ।।

सुधि तेरी कर रह्यो सांवरो, समझ सोच चित दारी ।
चल चल री प्यारी प्रीतम ढिग, पल पल होत अँवारी ।।
ढील नहिं नेंक लगारी ।।

सदा बसंत रहत बालम घर, फूल रही फुलवारी ।
महल मनोहर रत्न जटित जहां, जगमग ज्योति अपारी ।
निरखि छबि न्यारी न्यारी ।।

झुंड अनेक जहां सहचरि गरण, वय किशोर तन वारी ।
भूषन वसन सजे प्रति अंगन, चमक दमक अति भारी ।।
सकल सेवा अधिकारी ।।

रास रंग कौतूहल नित प्रति, नृत्य गान सुखकारी ।
रीझ रीझ रसिया बोलत मुख, गलबैयाँ दे डारी ।।
काम रति तापर वारी ।।

निश दिन नये नये जहां उत्सव, नइ नइ विपिन बिहारी ।
बिलसन परमानंद प्रेम रस, जाको अंत न पारी ।।
समझ मन में हुलसारी ।।

लै संबंध नाम अरु सेवा, सखि भावना भारी ।
श्रीगुरु परम दयाल कृपाबल, प्रीति रीति पढ जारी ।।
जुगति तोहि दई बतारी ।।

नित विहार श्रुति सार सर्व पर, तत्सुख निज हिय छारी ।
सरसमाधुरी दंपति के संग, नित नई मौज मनारी ।।
कहुँ तोहि बारम्बारी ।।

।। राग बसन्तबहार भैरवी ।।

श्रीशुकदेव कुंज रस वरन्यो, ताकों निश दिन गाव रे ।

ध्यान धार उर राख भावना, दंपति को दुलराव रे ।।
सहचरि रूप समझ मन दृढ कर, सेवा कर चित चाव रे ।
उत्थापन ते आदि सैन लो, विधिवत कर सुख पाव रे ।।
रसिकन मिल हरि रस अमृत पी, विषयानंद नसाव रे ।
श्रीगुरु में सत राख नेह नित, सतसंगति मन लाव रे ।।
युगल नाम जिह्वा से जपिये वृथा, न स्वांस गमाव रे ।
हरि भक्तन सों सांचों नातों, छल को छांड निभाव रे ।।
आन बन्यों संयोग भाग सों, चूक न ताको बावरे ।
सरसमाधुरी निज बृन्दावन, वस तज अंत न जाव रे ।।

।। राग गौड सारंग ।।

शरण श्री वृन्दावन की जइये ।
युगल बिहारी चरण कमल सों, निश दिन नेह लगइये ।।
सेवा कुँज समीप बैठके दम्पति ध्यान समइये ।
होय भावना सिद्ध सहज ही, निरखि नयन हुलसइये ।।
ले ले सीत रसिक संतन की बाधा भूख भगइये ।
शीतल सुंदर जल यमुनाको, पी पी प्यास मिटइये ।।
राधे श्याम नाम रट रसना, आँसू दृगन बहइये ।
सरसमाधुरी पिय प्यारी के प्रेम पुलक गुण गइये ।।

।। राग पीलू ।।

कहा भयो जो नर तन पायो ।
श्री गुरु शरन गही नहीं लंपट, मिथ्या माया में ललचायो ।।
संतन की सेवा नहिं कीनी, रसिकन सों नहि नेंह लगायो ।

गयो नही वृन्दावन मांहीं, श्री यमुनाजू में नंहि नहायो ।।
रसना राधेश्याम जपे नंहि, नैंन मूंद नंहि ध्यान समायो ।
मान मनी के मद में मातो साधुन को नंहि शीस नवायो ।।
सीत प्रीत कर लियो न कबहूं, चरणामृत मुख नंहि अँचवायो ।
ब्रज रज तिलक माल गल तुलसी, भक्तन को नंहि भेष बनायो ।।
मानत नहीं सीख सतगुरु की, समझत नहीं घनो समझायो ।
सरसमाधुरी सत्य कहत है, अंत समय शिर धुन पछतायो ।।

।। राग सोरठ ।।

बृथा जन्म जग में जिन लीनो ।
गुरु मुख होय करी नंहि भक्ती, वैष्णव भेष कियो न नवीनों ।।
बृज मंडल में रम्यो न कबहूं, वृन्दावन नंहि बसो कमीनों ।
श्री भागोत सुनी नंहि कबहू, श्री यमुना जल पान न कीनों ।।
नंदग्राम बर्षानों गोकुल, गया न कबहूं मति को हीनों ।
सरसमाधुरी सरवस हारो, भजो न कृष्ण कुँवरि रंग भीनों ।।

।। राग झँझोटी ।।

जाग जाग जो हरि गुण गावे ।
सोइ सुकृती सोइ सज्जन जानो,
सोइ भक्तन शिरमोर कहावे ।।
आप भजन कर होय कृतारथ,
और जनन ते भजन कारवे ।
संगत को संग कर उमंग सो,
प्रेम भक्ति को रंग चित लावे ।।
प्रथम सुनीधा नवों अंग को,

करके कलिमल धोय बहावे ।
पुनि प्रेमा उपजे हिय अंतर,
विरह विथा तन मनहिं तपावे ।।
हा प्यारी प्रीतम मुख निकसें,
नैंनन नेह अश्रु झलकावे ।
विकल मूर्छा होत छिनहिं छिन,
तलफत प्राण अधिक अकुलावे ।।
ऐसी दशा होय जब प्राप्त,
परा भक्ति तब ही प्रगटावे ।
दिव्य देह हो दर्शन जब ही,
मिल दंपति रंग रली मनावे ।।
भाव रूप संबंध भली विधि,
गुरु जो दई सोई सब पावे ।
परिकर में जा बसे धाम में,
युगल सेव कर लाड लडावे ।।
जन्म मरण मिट लहे अचल सुख,
परमानंद नैंन हिय छावे ।
सरसमाधुरी रस नित पोवे,
मगन रहे छवि निरखि छकावे ।।

।। राग पीलू बरवा ।।

सुख समूह श्यामा श्याम गुण गान में ।
नाहीं सुख सर्व वेद शास्त्र के पढेतें कछु,
नाही सुख तप में न तीरथ व्रत दान में ।।

नाहीं सुख अष्ट अंग जोग में न भोग में ।
नाहीं ब्रह्मचर्य में न गीता में न ज्ञान में ।
नाहीं सुख राजा के समाज हुक्म हासिल में ।
नाहीं सुख त्रिद्या रूप गर्व के गुमान में ।।
कहे सरसमाधुरी प्रत्यक्ष सुख देखियत ।
बृजा की लतान बृज वासिन की बतान में ।।

।। राग रामकली ।।

तू हरि को सुमरि रे ।।
कांन सुजान निधान कृपा के, तांहींको ध्यान हिये तू धरि रे ।
दीनदयाल गुपाल विश्वम्भर, नंदलाल के चरनों में परि रे ।।
रैन दिना रट राधिकाबल्लभ, सहजाहि भवसागर को तरि रे ।
सरसमाधुरी मदन मनोहर, ताको मन सों मति न बिसरि रे ।।

।। राग रामकली ।।

तू हरि गुण गारे ।।
बीत गई तेरी बहुत उमरियां, कृष्ण कुंवरि सों प्रीति लगा रे ।
तज झूंठे जंजाल जक्त के, श्याम सुंदर की शरण में आ रे ।।
माया मोह त्याग दे दिल सों, मन मोहन में मन उरझा रे ।
सरसमाधुरी रीझ रसिक वर, भव सागर सों पार उता रे ।।

।। राग कालिंगडा ।।

जगत में रहना है दिन चार ।
चेत हेत कर हरि सों प्यारे, हरि सुमरन की बार ।।
घरी पलक का नांहि भरोसा, मौत बिछाया जार ।
इन्द्री भोग विषम बस हूये, फँसें सकल नर नार ।।

करले भजन संत गुरु सेवा, सब करनी को सार।
सुकृत सौदा सत्य यही है, जीत जनम मत हार।।
चला चली लगरही रैन दिन, मन में सोच बिचार।
चलागया कोइ चला जात, कोइ चलने को तैयार।।
स्वांस स्वांस में सुमिर श्याम को, दया धर्म उर धार।
सरसमाधुरी नाम नाव चढ, उतरो भव जल पार।।

।। राग कालिंगडा ।।

भजन बिन नर मरघट को भूत।
श्यामा श्याम रटे रसना से, जिनको जान सपूत।।
बिन हरि भजन करम सब अकरम, आठों गाठ कपूत।
एक अनन्य भक्ति बिन कीये, धृग करनी करतूत।।
निश दिन करत कपट छल बाजी, समझे नहीं अऊत।
सरसमाधुरी अंतकाल में, मारेंगे यमदूत।।

।। राग विहाग ।।

भजन बिन नर सब पशू समान।
खान पान में उमर बितावत, और नहीं कुछ ज्ञान।।
मिल्यो आय भागन सों नरतन, अबतो समझ अजान।
सतसंगत में बैठ ऐंठ तज, कर गोंबिद गुण गान।।
छिन पल घडी घटत है स्वांसा, काल रह्यो सर तान।
आय अचानक तक मारेगो, मौत सरूपी बान।।
फेर कछू नाहीं बनि आवे, निकस जाय जब प्रान।
सरसमाधुरी सब तज हरिभज, कही हमारी मान।।

॥ राग विहाग ॥

जो कोउ कुंजबिहारी गावे ।
जाको युगल लाडिली लालन, कृपा कर अपनावे ॥
श्रीशुकसखी चरणदासी को, नाम रूप लौ लावे ।
ताको कुंवरि किशोरी राधे, वृन्दाविपिन बसावे ॥
कर बहु प्यार दुलार दरश दे, परिकर मांहि मिलावे ।
सेवा श्री अंगन की देके, निज छवि छकन छकावे ॥
रास विलास हुलास लखे नित, नवल नेह हिय छावे ।
प्रेम लगन में मगन रहे नित, देह दशा बिसरावे ॥
परमानंद परायण निश दिन, हर्ष न हृदय समावे ।
सरसमाधुरी नाम धाम, लीला स्वरूप रस पावे ।

॥ श्याम कल्याण ॥

सुन मेरी सुरता बुलाई बिहारी,
श्याम मिलन की तू करले तैयारी ।
शील सरोवर में सखी न्हाले,
प्रेम के वस्त्र तू अंग सजारी ॥
भाव के भूषण पहर रसीली,
रंग उमंग की मांग भरारी ।
सुमति की मिस्सी दांत रचाले,
प्रीति ही के मुख पान चबारी ॥
छोड कपट छल चल पिया आगे,
चूक क्षमा तेरी हो सारी ।
दीन अधीन हो गहियो चरण को,

कहियो दासी हूं औगुणगारी ॥
रीझ के सैयां गहै तेरी बैयां,
मुख से कहेंगे तू भई है हमारी ।
समझायो गुरु सरसमाधुरी,
है तू सुहागन चातुर नारी ॥

॥ राग ठुमरी ॥

गायो ना बिहारी चित लायो ना किशोरी प्यारी,
सुनी नांहि भागवत शुक मुनि उचारी है ॥
सेये ना युगल लाल जासों उर जाय काल,
फँस रह्यो माया जाल ऐसो तू अनारी है ॥
जपो ना युगल नाम वृथा बक्यो आठों जाम,
नारी के गुलाम दाम चाम प्रीति धारी है ॥
गयो नांहि वृन्दाबन खोय दिये तीनों पन,
घर ही घर मांहि दई देह गारी है ॥
सरस कहै बारम्बार लाख है धिक्कार तोहि,
मेरे अज्ञान तैंने जीती बाजी पारी है ॥

॥ बारह मास चाल में ॥

जागो प्यारे हरि गुण गावो,
सोय सोय क्यों उमर गमावो ॥
आलस त्याग भाग विषियन ते,
हरि सुमिरन तें सुरति लगावो ॥
जो सोया जिन सरवस खोया,
औसर गये बहुत पछतावो ॥

जग स्वपना कोई नहिं अपना,
ममता से मन बेग हटावो ।।
प्रेम करो प्यारी प्रीतम सों,
सतगुरु के शरण चल आवो ।।
सत्संगति को करो रैन दिन,
जग में दासन दास कहावो ।
शुभ लक्षण को धार हिये में,
काम क्रोध मद लोभ मिटावो ।।
तज अभिमान इर्षा दिल से,
जीवन का मत चित्त दुखाओ ।
सत संतोष दया उरु मैं धरि,
शील क्षमा मन मांहि बसावो ।।
दीन होय दिल शुद्ध करो तुम,
चितपर रंगति प्रेम चढावो ।।
नेकी करे नफा प्राप्त हो,
बदी बिसर हरिजन बन जाओ ।।
रटो रैन दिन श्री दंपति को,
ध्यान मानसी सहज लगावो ।
सरसमाधुरी सत्य कहत है,
या विधि किये परम पद पावो ।।

।। राग ठुमरी जिला ।।

सरस बिहारी सलोने लगें सखि, सरस बिहारिहि मोर सगे री
सरस बिहारी सों प्रीति करी, तब सों संशय दूर भगे री ।

सरस बिहारी बसे मम नैंन में, सरस बिहारी के प्रेम पगे री।
सरस की जादू भरी मुसकान ने, तन मन प्रान हमारे ठगे री ।।

।। राग ठुमरो जिला ।।

कुंज बिहारी हमारी है जीवन,
कुंज बिहारी है सरवस मेरी।
कुंज बिहारी है इष्ट अनूपम,
कुंज विहारी की हो नित चेरी ।।
कुँज बिहारी का नाम जपो मुख,
ध्यान धरों उर सांझ सवेरी।
कुंज बिहारी विहारिनि राधिका,
सरस के नैंन में आय बसेरी ।।

।। राग ठुमरी जिला ।।

राधिका कृष्ण को नैंन लखों सखि,
राधिका कृष्णहि के गुण गाऊँ।
राधिका कृष्ण रटों रसना नित,
राधिका कृष्णहि को उर ध्याऊँ ।।
राधिका कृष्ण की मोहनि मूरति,
ताकी सदा शुचि झूठन पाऊँ।
सरस कहे करों सेवा निरंतर,
कुँज को त्याग अंत न जाऊँ ।।

।। राग ठुमरी जिला ।।

राधिका कृष्ण रंगीले लगें सखि,
राधिका कृष्ण रसीले छबीले।

राधिका कृष्ण अनूप अली तिन,
दोऊ नैंन हैं बान नुकीले ।।
राधिका कृष्ण रमें मम प्राण में,
राधिका कृष्ण हैं मंद हँसीले ।
सरस कहे सुन एरी सखी,
श्रीराधिका कृष्ण हिये में बसीले ।।

।। पद राग ठुमरी जिला ।।

कुँज बिहारी सों यारी करी सखी,
कुँज बिहारी की हों निज दासी ।
कुँज बिहारी को ध्यान धरो नित,
कुँज बिहारी के नाम उपासी ।।
कुँज बिहारी हि प्यारे लगे मोहे,
कुंज बिहारी के रूप की प्यासी ।
सरस कहै सुन एरी सखी,
हिये कुंज बिहारी की प्रीति प्रकासी ।।

।। पद राग आसावरी ।।

सतगुरुने निजज्ञान दिया वो, बिमुख जनों से कहना क्या रे ।
हीरा नाम हरीधन पाया, फिर कौडी कर गहना क्या रे ।।
परमानंद सरस रस पीया, और विषय में बहना क्या रे ।
ध्यान धरा प्यारी प्रीतमका, और किसीका चहना क्या रे ।।
लाभ हुवा जब प्रेम भक्तिका, ज्ञान जोग में लहना क्या रे ।
सरसमाधुरी छविमें अटके, जगके खटके सहना क्या रे ।।

॥ पद राग भैरवी ॥

श्रीगोबिन्द श्रीगोबिन्द, श्रीगोबिन्द गाव रे।
राधिका किशोरी जू की, चरण शरण आव रे ॥
दम्पति छबि ध्यान धार, इकपल छिन मत बिसार।
सुमिरनकर सार लगन, दिवस निशि लगाव रे ॥
बड भागन लगो दाव, श्रीगुरु की शरण आव।
उनमें नित राख भाव, युगल को लडाव रे ॥
लोक लाज सकल त्याग, विषयन सों अलग भाग।
अपनो अनुराग गौर, श्याम सों बढाव रे ॥
भावरूप याद राख, प्रेमामृत स्वाद चाख।
जय जय जय मुख सों, भाष भरम मन भगाव रे ॥
सरसमाधुरी विलास, निरख हरष देख रास।
वृन्दावन वास खास, सहचरी कहावरे ॥

॥ पद राग खडी चाल ॥

भगवत् का घर बडी दूर है, पहुँचे कोई सन्त हुजूर है।
बाचक ज्ञानी अति अभिमानी, मुखसे भाषे मिथ्या बानी ॥
नरक पड़नकी येही निशानी, तेरे चहरे पर नहीं नूर है।
ऐसे अज्ञानी सर धूर है ॥१॥
मन इन्द्रिय बश में नहीं आवे, आपही आप ब्रह्म बन जावे।
धर्म कर्म को तुच्छ बतावे, तू पापी भरपूर है ॥
बेहूदा बड़ा बेशऊर है ॥२॥
हरिप्राप्ती का तज दिया गैला, कौन गुरु किसका तू चेला।
पाखण्डी करता बद फेला, बना फिरे मगरूर ॥

छोड़ कर तत्त्व लिया तैं बूर है ।।३।।
भोले लोगों को बहकाया, सारा जग ठगठग के खाया ।
करना भक्तिका बिसराया, भ्रष्ट बडा अति क्रूर है ।।
तू विषय बीच चकचूर है ।।४।।
सरसमाधुरी कहै तू रिन्दा, गिरे गले तेरे यम फन्दा ।
अन्त काल होगा शरमिंदा, छोडा नहीं फितूर है ।।
तू बद सारे मशहूर है ।।५।।

।। पद राग जंगला ।।

समझ मन श्री हरि क्यों नहिं गावै ।
श्री गुरुदेव दई जो सम्पति, ताको मत बिसरावै ।।
संग्रह त्याग छांड सब संशय, क्यों नहिं मन बिसरावै ।
कृप गुरुन की से तू प्यारे, घर बैठे प्रभु पावै ।।
परालब्ध दुख सुख ये दोऊ, भोगे ही बन आवै ।
हानि लाभ को समकर समझै, सोई सज्जन सुख पावै ।।
दृढ विश्वास भरोसे निर्भय, आनंद क्यों न मनावै ।
रक्षक तेरो सदा सांवरो, ताहि भूल मत जावै ।।
सुमिर सनेह सहित श्री दम्पति, क्यों नहिं लगन लगावै ।।
सरसमाधुरी सुखी रहै नित, अन्त परमपद पावे ।।

।। गजल राग रेखता पीलू बरबा ।।

नसीहत नेक के मसले, सुनें जिसको सुनाते हैं ।
जहां दरबार रसिकों का, वहां हम आते जाते हैं ।।
सुमारग में चलें निश दिन, चलें जिसको चलाते हैं ।।
कुमारग और अकर्मन से, हिदायत कर बचाते हैं ।।

भला हो दीन दुनियाँ में, इल्म वोही सिखाते हैं।
सुलह कुल का सबक यारो, पढे उसको पढाते हैं ।।
पडा हो ख्वाब ग़फलत में, उसे हित कर जगाते हैं।
सुना कर ज्ञानकी चरचा, भरम दिलका भगाते हैं ।।
पिलाकर प्रेमका प्याला, हरी रसमें छकाते हैं।
नशे में छबि छटा दम्पति की, हम हरदम दिखाते हैं ।।
हमेशा रहते भक्तों में, हरी गुण गान गाते हैं।
हमारा इष्ट है प्यारा, सुनो उसको रिझाते हैं ।।
किसी की आत्मा को हम, नहीं यारो दुखाते हैं।
खुशी औरों को करके हम, खुशी मनमें मनाते हैं ।।
जो हों मगरूर मुनकिर नर, न मन उससे मिलाते हैं।
कपट तज जो मिले हम से, उसे हिर्दय लगाते हैं ।।
नहीं हम सिद्ध बनते हैं, न सिद्धी को जताते हैं।
किसी से हम नहीं डरते, न औरों को डराते हैं ।।
नहीं तालिब हैं हम ज़रके, हैं मुतलाशी श्रीहरि के।
भरोसे नित हैं गिरधर के, मजे से दिन बताते हैं ।।
निरस जो जन मिले हम से, सरस उसको बनाते हैं।
परस्पर प्यार के रिश्ते, मुहब्बत को बढाते है ।।

।। पद ।।

भरोसो हरि को रख मन भाई।
जा विधि कृष्ण रखें ताही विधि, रहिये हिय हुलसाई ।।
दृढ विश्वास आस उर धरके, सेव चरण चितलाई।

शरणागत रक्षक प्रभु प्यारे, सब विधि करत सहाई ।।
जहां रखें रहिये आनंद सों, करके मन दृडताई ।
सुख कर्ता सब ही दुख हर्ता, ऐसे त्रिभुवनराई ।।
बिगरी भई अनेक जन्म की, पल में देहैं बनाई ।
हो निश्चिन्त अन्त मत भटके, भय भ्रम देहु भगाई ।।
खेवटिया तेरी नवका को, श्यामसुन्दर सुखदाई ।
सरसमाधुरी तर भवसागर, पहुँचे परमपद जाई ।।

।। राग पीलू बरवा ।।

श्यामसुन्दर के गुणों को, जो दिला तू गायगा ।
एक दिन करके कृपा, तुझसे वो मिल जायगा ।।
जो तू उसकी याद में, हरदम रहेगा होशियार ।
रीझ के श्रीकृष्ण प्यारा, तुझ को कंठ लगायगा ।।
वक्त है सुमिरन भजन का, भूलना नहिं याद रख ।
वरना इस सँसार सागर, में तू गोते खायगा ।।
प्रेम भक्ती के बराबर, और इबादत हैं नहीं ।
प्राणों का प्यारा फक्त एक, प्रेम ही से पायगा ।।
ध्यान में गलतांन कर, तू तसद्दुक प्राण को ।
नेह निश्चल देखवो, नैनों में आन समायगा ।।
हिज्र में हरि के हजारों, हो चुके हैं कामयाब ।
आशिकों की सुन हिकायत, दिल तेरा खिल जायगा ।।

छोड कर सब फिक्र उसके, जिक्र में लौ को लगा ।
सरसरस अपने लबों का, प्यारा आप पिलायगा ।।

।। राग पीलू बरवा ।।

सांवरे दिलदार ही से, प्यार करना चाहिये ।
उसही को अपना सनम, गमखुवार करना चाहिये ।।
नाम को रट नित जवां से, दिल में हरदम ध्यानधर ।
प्रेम में मख़मूर हो, गुफ्तार करना चाहिये ।।
श्यामसुन्दर से सलोना, दूसरा देखा नहीं ।
उसको अपना खास करके, प्यार करना चाहिये ।।
इश्क मोहन में अगर, ये जान भी जाती रहे ।
सर कलम जो हो, नहीं इनकार करना चाहिये ।।
झूँठे झगडे छोड के, कर याद दिलवर दम बदम ।
दूर कर परदा दुई, दीदार करना चाहिये ।।
हिज्र में हरि के हजारों, रंजोग़म खाना रवा ।
दुख दरद सहना, नहीं इजहार करना चाहिये ।।
सरस सुबहो शाम, आठों जाम उसके प्रेम में ।
पी शराबे शोक दिल, सर शार करना चाहिये ।।

।। पद राग दादरा ।।

राधे गोविंद के गुण तुम, गाये जावोजी ।।
दंपति के ध्यान में जो, अपना मन लगावोगे ।

सुख चैन से रहोगे, फल प्रेम पावोगे ।।
भक्ति भाव को सदा तुम बढाये जावोजी ।।१।।
हरि नाम को जो हरदम रटना लगावोगे ।
इस नाम हीके सुमरे, निज धाम पावोगे ।।
प्रभू नाम की कमाई, कमाये जावोजी ।।२।।
जो जाप युगल नाम का, दिन रात करोगे ।
साक्षात हरि को देखोगे, संसार तरोगे ।।
उमर अपनी इसीमें, बिताये जावोजी ।।३।।
रसिकों संग रंग सो, कर प्रीति प्यार रहना ।
सेवो महल मानसी, मजबूत दृढ कर गहना ।।
सत संगियों से नेह को निभाये जावों जी ।।४।।
हरि नाम हरि की भक्ति है, वेदों का तत्व सार ।
सब छोड इस में सुरत जोड, गुरु कहे पुकार ।।
सरसमाधुरी श्याम शरण आये जावोजी ।।५।।

।। गजल राग पीलू बरवा ।।

भक्ति हरिकी गर न की तो, क्या किया कुछ भी नहीं ।
नाम प्रभुका नहिं लिया तो, क्या किया कुछ भी नहीं ।।
तान टप्पे और ठुमरी, गा रिझाया जगत को ।
गुण न गाया कृष्ण का फिर, गाया क्या कुछ भी नहीं ।।

नारियों से प्यार करके, जो पिया अधरों का रस ।
प्रेम रस पीया नहीं तो, क्या पिया कुछ भी नहीं ।।
मोह ममता में लगाया, मन किया जो मोमसा ।
पीर पर की में न पिघला, तो हिया कुछ भी नहीं ।।
सीख के विद्या बहुत सी, बादशाहों से मिला ।
श्यामसुन्दर से मिला नहिं, तो मिला कुछ भी नहीं ।।
पाके नरतन गुरु शरण में, जो न आया जीव यह ।
जगत में जीवन का फल फिर, पाया क्या कुछ भी नहीं ।।
विरह बिन बृजचन्द के जो, सरस पाई उम्र बहु ।
हो के चिरजीवी जगत् में, क्या जिया कुछ भी नहीं ।।

।। गजल राग रेखता ।।

हरी से जो मिला चाहे, लगन हरदम लगाताजा ।
सकल संसार मिथ्या है भरम मन से भगाताजा ।।
गुरू की शरण में आकर के करो ईश्वर की सद्भक्ती ।
सदा हरि प्रेम में प्यारे, सुरत अपनी समाताजा ।।
मिलाकर सन्त भक्तों से, कपट को तज के कर सेवा ।
युगल जीवन तसव्वुर में तू अपना मन जमाताजा ।।
भरम में भूल मत भटके, सुमर निज नाम तज खटके ।
पीया कर प्रेम के गटके, प्रभू गुण गान गाताजा ।।

चढे जब इश्क अलमस्ती, खुदी की खुद मिटे हस्ती ।
बुलन्दी हो न फिर पस्ती, यहां बुद्धि को बसाताजा ॥
नजर जब यार आजावे, नशा आंखों में छाजावे ।
दिवाना हो के मस्ताना, सनम दीदार पाताजा ॥
पहुँचना खास खिलबत में, जुदाई दूर हो तेरी ।
चलाचल आशिकों के संग, क़दम आगे बढाताजा ॥
सरस रस का तू पी प्याला, रहा कर यार मतवाला ।
दुई के परदे को प्यारे, सफे दिल से उठाता जा ॥

॥ गजल राम पीलू बरवा ॥

इश्न बाजों से मिलाकर, इश्क जो दरकार है ॥
इश्क आशिक से मिलेगा, जिस के बस दिलदार है ॥
आशकी का फन ए मन तू, सीख मुरशद से जरूर ।
इश्क बाजी से तुझे, मिलजावे मोहन यार है ॥
इश्क कर दिल में न डर, खोफो खतर सब छोडदे ।
इश्क के मैदान में, मिलने को हरि तैयार है ॥
सरको कर पहिले क़लम, फिर धर कदम इश्के चमन ।
देख ले बैठा वहां, माशूक खुश गुफतार है ॥
दिलरुवा की देख सूरत, होगा जिसदम तू निसार ।
तुझ को सीने से लगा, प्यारा करे अति प्यार है ॥

चढे जब इश्क अलमस्ती, खुदी की खुद मिटे हस्ती ।
बुलन्दी हो न फिर पस्ती, यहां बुद्धि को बसाताजा ।।
नजर जब यार आजावे, नशा आंखों में छाजावे ।
दिवाना हो के मस्ताना, सनम दीदार पाताजा ।।
पहुँचना खास खिलबत में, जुदाई दूर हो तेरी ।
चलाचल आशिकों के संग, क़दम आगे बढाताजा ।।
सरस रस का तू पी प्याला, रहा कर यार मतवाला ।
दुई के परदे को प्यारे, सफे दिल से उठाता जा ।।

।। गजल राम पीलू वरवा ।।

इश्न बाजों से मिलाकर, इश्क जो दरकार है ।।
इश्क आशिक से मिलेगा, जिस के बस दिलदार है ।।
आशकी का फन ए मन तू, सीख मुरशद से जरूर ।
इश्क बाजी से तुझे, मिलजावे मोहन यार है ।।
इश्क कर दिल में न डर, खोफो खतर सब छोडदे ।
इश्क के मैदान में, मिलने को हरि तैयार है ।।
सरको कर पहिले क़लम, फिर धर कदम इश्के चमन ।
देख ले बैठा वहां, माशूक खुश गुफतार है ।।
दिलरुवा की देख सूरत, होगा जिसदम तू निसार ।
तुझ को सीने से लगा, प्यारा करे अति प्यार है ।।

नाजवरदारी बिहारी, करके दे सरको झुका ।
सिजदा कर कदमो में हरदम, जो तेरा सरदार है ।।
रहो सदा खिलवत में बन खादिम करो खिदमत मुदाम ।
सरस तेरा खास कर, श्रीकृष्ण ही गम ख्वार है ।।

इति श्रीसरस सागर दूसरा भाग सम्पूर्णम्